हं
सि
नी

# परिचय

जिंदगी कई बार ऐसे अजीब मोड़ लेती है कि सच झूठ और झूठ सच लगने लगता है.. बड़े से बड़ा आस्तिक नास्तिक और बड़े से बड़ा नास्तिक आस्तिक होने को मजबूर हो जाता है.. सिर्फ़ यही क्यू, कुछ ऐसे हादसे भी जिंदगी में घट जाते है कि आख़िर तक हमें समझ नही आता कि वो सब कैसे हुआ, क्यू हुआ. सच कोई नही जान पाता.. कि आख़िर वो सब किसी प्रेतात्मा का किया धरा है, या भगवान का चमत्कार है या फिर किसी 'अपने' की साज़िश... हम सिर्फ़ कल्पना ही करते रहते हैं और आख़िर तक सोचते रहते हैं कि ऐसा हमारे साथ ही क्यू हुआ? किसी और के साथ क्यू नही.. हालात तब और बिगड़ जाते हैं जब हम वो हादसे किसी के साथ बाँट भी नही पाते.. क्यूंकी लोग विश्वास नही करेंगे.. और हमें अकेला ही निकलना पड़ता है, अपनी अंजान मंज़िल की तरफ.. मन में उठ रहे उत्सुकता के अज्ञात भंवर के पटाक्षेप की खातिर....

कुछ ऐसा ही प्रतिक के साथ कहानी में हुआ.. हमेशा अपनी मस्ती में ही मस्त रहने वाला एक करोड़पति बाप का बेटा अचानक अपने आपको गहरी असमनजस में घिरा महसूस करता है जब कोई अंजान सुंदरी उसके सपनों में आकर उसको प्यार की दुहाई देकर अपने पास बुलाती है.. और जब ये सिलसिला हर रोज़ का बन जाता है तो अपनी बिगड़ती मनोदशा की वजह से मजबूर होकर निकलना ही पड़ता है.. उसकी तलाश में.. उसके बताए आधे अधूरे रास्ते पर.. लड़की उसको आख़िरकार मिलती भी है, पर तब तक उसको अहसास हो चुका होता है कि 'वो' लड़की कोई और है.. और फिर से मजबूरन उसकी तलाश शुरू होती है, एक अनदेखी अंजानी लड़की के लिए.. जो ना जाने कैसी है...

इस अंजानी डगर पर चला प्रतिक जाने कितनी ही बार हताश होकर उसके सपने में आने वाली लड़की से सवाल करता है," मैं विश्वास क्यू करूँ?" .. तो उसकी चाहत में तड़प रही लड़की का हमेशा एक ही जवाब होता है:

"मुर्दे कभी झूठ नही बोलते "

# १

नीचे महफ़िल जम चुकी थी.. कुछ देर धीरज का इंतजार करने के बाद संकेत ने वहीं प्रोग्राम जमा लिया.. गिलासों को खड़खड़ाते अब करीब आधा घंटा हो चुका था.. शराब के नशे में प्रतिक वो सब कुछ बोलने लगा था जिसको बताने में अब तक वो हिचक रहा था...

"ओह तेरी.. फिर क्या हुआ?" संकेत जिज्ञासु होकर आगे झुक गया...

"छोड़ो यार.. क्यू टाइम खोटा कर रहे हो.. आइ डोंटबिलीव इन ऑल दीज़ फूलिश थिंग्स.. एक सपने को लेकर इतना सीरीयस और इमोशनल होने की ज़रूरत नही है.. " सौरभ सूपरस्टिशस किस्म की बातों में विश्वास नही कर पा रहा था...

"पूरी बात तो सुन ले डमरू... प्रतिक ने सौरभ को डांटा और कहानी सुनाने लगा....

"कौन डमरू.. मैं.. हा हा हा...!" सौरभ ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा...," डमरू.. हा हा हा!"

"तुझे नही सुननी ना.. चल.. जाकर सामने बैठ.. और अपना मुँह बंद रख.. मैं मानता हूँ.. और मुझे सुननी हैं..." संकेत आकर सामने वाले सोफे पर सौरभ और प्रतिक के बीच में फँस गया.. सौरभ उठा और बड़बड़ाता हुआ सामने चला गया," डमरू.. हा हा हा!"

बातें अभी चल ही रही थी की मुस्कुराते हुए धीरज ने कमरे में प्रवेश किया..," अच्छा.. अकेले अकेले..!"

सौरभ उसके आते ही खड़ा हो गया," साले डमरू! अकेले अकेले तू फोड़ के आया है या हम.. ? बात करता है...

"भाई तू मेरे को डमरू कैसे बोल रहा है.. वो तो प्रतिक बोरंभा है..." धीरज ने उसके पास बैठते हुए कहा...

"क्यूंकी मेरे अंदर प्रतिक का भूत घुस आया है.. हे हे हा हा हो हो!" सौरभ ने भूतों वाली बात का मज़ाक बना लिया....

"चुप कर ओये जलील इंसान.. ऐसी बातों को मज़ाक में नही लेते.. किसी के साथ भी कुछ भी हो सकता है..." संकेत ने प्यार से उसको दुतकारा...

"किस के साथ क्या हो गया भाई? मुझे भी तो बता दो.." धीरज ने अपना गिलास उठाया और सबके साथ चियर्स किया...

"वो बात बाद में शुरू से शुरू करेंगे.. अब सबको सीरीयस होकर सुननी हैं.. पहले तू बता.. दी भी या नही.. मुझे तो उसकी चीख सुनकर ऐसा लगा जैसे तू अपना हाथ में पकड़े उसके पिछे दौड़ रहा है.. और वो बचने के लिए चिल्लाती हुई कमरे में इधर उधर भाग रही है...हा हा हा.. साली ने नखरे बहुत किए थे पहले दिन... मैं ऐसी नही हूँ.. मैं वैसी नही हूँ.. पर डालने के बाद पता लगा वो तो पकई पकाई है..." संकेत ने अपना अनुभव सुनाया....

धीरज ने छाती चौड़ी करके अपने कॉलर उपर कर लिए," देती कैसे नही... !"

"अरे... सच में.. चल आ गले लग जा.. बधाई हो बधाई.." संकेत आकर उसके गले लग गया..," हां.. यार.. बात तो तू सही कह रहा है.. रुबीना की खुश्बू आ रही है तेरे में से.... पर वो चिल्लाई क्यू यार.. साली एक नंबर. की नौटंकी है.. तुझे भी यही कह रही थी क्या कि पहली बार मरवा रही हूँ.." संकेत ने वापस प्रतिक के पास बैठते हुए कहा...

" नही यार.. वो तो शमीना की चीख थी... उसकी पहली बार फटी है ना आज!" धीरज ने अपनी बात भी पूरी नही की थी कि संकेत ने गिलास रखा और उछल कर खड़ा हो गया..," तूने शमीना की मार ली????"

"हां.. कुछ ग़लत हो गया क्या?" धीरज ने मरा सा मुँह बनाकर कहा...

"ग़लत क्या यार..? ये तो कमाल हो गया.. साली को तीन बार बुला चुका हूँ.. रुबीना के हाथों.. पर वो तो हाथ ही नही लगाने देती थी यार.. तूने किया कैसे.. अब तो ज़ोर की पार्टी होनी चाहिए यार.. ज़ोर की.. तूने मेरा काम आसान कर दिया...!" संकेत जोश में पूरा पैग एक साथ पी गया...

"वो कैसे? " धीरज की समझ में नही आई बात....

"क्या बताऊं यार.. तुझे तो पता होगा.. वो और रुबीना दोनो सग़ी बेहन हैं..!"

संकेत को धीरज ने बीच में ही टोक दिया," क्या? सग़ी बेहन हैं.. ?"

"हां.. चल छोड़ यार.. लंबी कहानी है.. उसके बारे में बाद में बात करेंगे... पहले प्रतिक भाई की सुनते हैं.. चल भाई प्रतिक.. अब सब इकट्ठे हो गये हैं.. शुरू से शुरू करके आख़िर तक सुना दे.. पहले बोल रहा हूँ सौरभ.. बीच में नही बोलेगा.. देख ले नही तो...!" संकेत सौरभ को चेतावनी सी देते हुए बोला..

"नही बोलूँगा यार... चलो सूनाओ!" कहकर सौरभ भी प्रतिक की और देखने लगा....

# २

## प्रतिक ने कहानी सुननी शुरू कर दी.....

अरे, ये क्या था?" प्रतिक अचानक ही आसपास की घनी झाड़ियों से अपनी और उछल कर आए गिलहरी नुमा जानवर को देखकर उछल कर तीव्रता से एक और हट गया.. जानवर की उछाल में जिस प्रकार की तीव्रता थी, उससे यही प्रतीत हुआ की उसने उन पर हमला करने का प्रयास किया था...," तूने इसके दाँत देखे?"

करीब १० - १० फीट की लंबी छलांग लगाता हुआ वो उस उबड़ खाबड़ रास्ते के दूसरी तरफ की झाड़ियों में खो गया..

दोनो २ पल वहीं खड़े होकर उस अजीबोगरीब गिलहरी को आँखों से औझल होते देखते रहे.. और फिर से अपनी अंजान मंज़िल की और बढ़ चले..

"अफ.. कहाँ ले आया यार...? कितना सन्नाटा है यहाँ? यहाँ पर तो आदमी की जात भी नज़र नही आती... कितना अजीब सा लग रहा है यहाँ सब कुछ... तुझे लगता है यहाँ तुझे तेरी तनवी मिल जाएगी..? ... देख मुझे तो लगता है किसी ने तेरा उल्लू बनाया है.. क्यू बेवजह अपनी रात बर्बाद कर रहा है... और मेरी भी.. चल वापस चल!" विपिन ने बोलते हुए सावधानी बरतने के इरादे से रिवॉल्वर निकाल कर अपने हाथ में ले ली..

"ऐसी बात नही है यार.. वो यहीं रहती है.. आसपास, देखना! कोशिश करेंगे तो वो हमें ज़रूर मिलेगी.. वो अगर नही मिली तो मैं पागल हो जाऊंगा यार!" प्रतिक ने आगे चलते चलते ही बात कही...

विपिन आगे आगे बहुत चौकन्ना होकर चल रहा था.. चौकन्ना होना लाजिमी भी था.. जहाँ इस समय वो थे, उस जगह के आसपास कोई शहर या गाँव नही था.. हर तरफ सन्नाटे की भयावह सी चादर पसरी हुई थी... आवाज़ें अगर आ रही थी तो मेंढकों के टर्रने की, और रह रह कर झाड़ियों के झुरपुट में कुछ रेंगते होने की...दूर दूर तक कृत्रिम रोशनी का नामोनिशान तक नही था.. बस आधे चाँद और टिमटिमाते हुए तारों की हल्की फुल्की रोशनी ही थी जो उनको रास्ता दिखा रही थी.. रास्ता भी ऐसा जो ना होने के ही बराबर था.. कहीं उँचा, कहीं नीचा.. बीच बीच में गहरे गहरे गड्ढे.. इतने गहरे की ध्यान से ना चला जाए

तो अचानक पूरा आदमी ही उनमें गायब हो जाए.. दोनो और करीब चार - चार फीट ऊँची झाड़ियाँ थी...

"अब रास्ता साफ होता तो गाड़ी ही ले आते.. तुझे क्या लगता है..? यहाँ पर कोई इंसान रहता होगा.. और वो भी लड़की.. सच बताना, खुद तुझे डर नही लग रहा, यहाँ का माहौल देख कर..." विपिन ने चलते चलते प्रतिक से सवाल किया...

"डर लग रहा है तभी तो तुम्हे लेकर आया हूँ भाई.. नही तो मैं अकेले ही ना चला आता.." प्रतिक ने जवाब दिया..और अचानक ही उछल पड़ा," विपिन देख.. आगे पक्की सड़क दिखाई दे रही है.. मैं ना कहता था.. हम ज़रूर कामयाब होंगे... आगे ज़रूर कोई बस्ती मिलेगी... देख लेना!"

"अबे बस्ती के बच्चे.. उससे कोई ढंग का रास्ता भी तो पूछ सकता था तू.. आख़िर वो लोग भी तो शहर जाते होंगे..?" विपिन को भी आगे का रास्ता पिछले रास्ते के मुक़ाबले बेहतर देख कर कुछ उम्मीद बँधी....

"यार, क्या करूँ, जब यही एक रास्ता बताया उसने...!" प्रतिक ने तेज़ी से चलना शुरू कर चुके विपिन के कदमों से कदम मिलाते हुए कहा....

"अजीब प्रेमिका है तेरी.. एक तो रात में मिलने की ज़िद करी और उपर से रास्ता ऐसा बताया.. चल देख.. लगता है हम पहुँचने ही वाले हैं.. उधर लाइट दिखाई दे रही है.." विपिन ने अपनी बाई तरफ हाथ उठा कर इशारा करते हुए कहा...

दोनो बाई तरफ मुड़े ही थे की अचानक ठिठक गये..," यहाँ तो पानी है..यार!" प्रतिक ने अपने कदम वापस खींचते हुए कहा..

"हम्मम.. कोई तालाब लगता है..चल.. आगे से रास्ता होगा... !" विपिन ने प्रतिक से कहा और दोनो फिर से सीधे रास्ते पर चल पड़े..

कुछ आगे जाकर उनको एक पगडंडी सी बाई और जाती दिखाई दी.. दोनो ने आँखों ही आँखों में उस रास्ते पर सहमति जताई और उस और बढ़ चले...

"ओह तेरी मा की आँख.. यहाँ तो कीचड़ है..! चल वापस चल.. ये रास्ता नही है.." मन ही मन विपिन उस लड़की को कोस रहा था जिसके प्यार में पागल प्रतिक अपने साथ साथ उसकी भी दुर्गति कर रहा था...

"यार, आधे रास्ते तो आ ही चुके हैं... आगे चलकर तालाब में धो लेंगे पैर.. अब वो लाइट भी नज़दीक ही दिखाई दे रही है..." प्रतिक ने मायूसी से विपिन को देखते हुए कहा..

"चल साले.. अगर फिर भी लड़की नही मिली तो देख लेना... ऐसी बकवास जगह मैने आज तक नही देखी" बड़बड़ाता हुआ विपिन फिर से प्रतिक के आगे आगे चलने लगा...

"देखी क्यू नही है? तू तो मास्टर है ऐसे ठिकानो का... आधी जिंदगी तो तूने जंगलों में गुज़ार दी.. मुझ पर अहसान करने के लिए बोल रहा है क्या?" प्रतिक ने उस पर मजाकिया व्यंग्य किया...

"हां.. गुज़ारी है.. मगर ऐसे थोड़े ही.. पूरे बंदोबस्त के साथ चलना पड़ता है.. तू तो मुझे ऐसे ले आया जैसे हम उनके जमाई हैं और हमारे इंतज़ार में वो किसी एअरपोर्ट पर पलकें बिछाए बैठे होंगे.. राम जाने किस घड़ी कौन जानवर बाहर निकल आए? वो तो अच्छा हुआ में कम से कम अपनी रिवॉल्वर साथ रखता हूँ.. कोई भरोसा है ऐसी बीहड़ सुनसान जगह का.." विपिन ने संभाल संभाल कर पैर रखते हुए बोला... दोनो की पेंट कीचड़ के छिंटो से घुटनो तक सन गयी थी..

उसके बाद ज़्यादा देर उनको चलना नही पड़ा.. कुछ दूर और चलने पर वो एक साफ सुथरे रास्ते पर पहुँच गये.. रास्ता पुराने जमाने की छोटी छोटी ईंटों से बना हुआ था.. वो जगह कोई चौराहा लग रही थी.... पानी का 'वो' तालाब यहाँ तक भी फैला हुआ था.. " चल, अपने पैर साफ करके आगे चलते हैं.. अब वो घर भी ज़्यादा दूर नही लगता..." प्रतिक ने गहरी साँस लेते हुए कहा..

दोनो ने वहाँ पानी में अपने पैर धोए और फिर से आगे बढ़ गये...

"यार, यहाँ गलियाँ और दीवारें तो इतनी दिखाई दे रही हैं.. पर घर कहाँ हैं.. ? क्या इस गाँव में वो एक ही घर है जहाँ लाइट जल रही है...?" विपिन ने हैरानी से प्रतिक की और देखा...

"मैने पूछा नही यार.. क्या पता एक ही हो.. चल.. तू चरंभा रह!" प्रतिक ने खिसियाई हुई बिल्ली की तरह से बेतुका सा तर्क दिया और अपने प्यार को पाने की उम्मीद में आगे बढ़ता रहा.. विपिन के साथ साथ..

बड़े ही विस्मयकारी अनुभव का सामना दोनो को करना पड़ रहा था.. काफ़ी देर तक चलने के बाद भी वो 'रोशनी' उनसे अभी भी उतना ही दूर लग रही थी.. उन्होने गलियाँ भी बदली, पर हर बार कुछ दूर चलते ही फिर से वो रोशनी ठीक उनके सामने आ जाती.. और फिर से उनको उसी रास्ते पर चलते रहने का अहसास होता...

"धात तेरे की... देख.. प्रतिक.. मुझे तो सब कुछ गड़बड़ लग रहा है.. भला ऐसी जगह पर भी आजकल कोई घर बनाता है.. 'वो' लड़की सच में यहाँ होगी ना...?" विपिन थक हार कर खड़ा हो गया...

"है ना भाई.. तू मेरा.. अरे.. देख बच्चा!" प्रतिक एक दम उछल पड़ा..

प्रतिक की बात सुनते ही विपिन का दिल उसकी बल्लियों पर आ गया..," छोटा सा बच्चा.. रात के ११ बजे.. घर से बाहर, वो भी ऐसी सुनसान जगह पर? आख़िर तू मुझे बात क्लियर क्यू नही कर रहा.. कौन है वो लड़की.. यहाँ आख़िर करते क्या होंगे उसके घर वाले..!" विपिन का दिमाग़ चकराने लगा था.. जिस तरह सी परिस्थितियाँ वहाँ उत्पन्न हो रही थी.. ऐसा होना लाजिमी ही था...

प्रतिक ने बिना कुछ बोले विपिन का हाथ पकड़ा और उस 'बच्चे' की और लपका..

दीवार के साथ खड़ा वो बच्चा झुक कर कुछ कर रहा था.. जैसे ही वो दोनो उसके करीब पहुँचे.. वो पलट कर मुस्कुराया...

बड़ा ही मासूम सा बच्चा था.. करीब ८ साल की ही उमर होगी.. दोनो उसकी शकल देखते ही हैरान रह गये.. उसके मुँह पर ऐसा लगता था जैसे किसी चोट का घाव बना हुआ हो.. ताज़ा घाव.. उसके होंटो के पास से खून रिस रहा था.. उसकी आँखों में गहरी चमक थी.. और चेहरे पर अजीब सा मैलापन...

दोनो उससे कुछ दूरी पर ठिठक गये.. बच्चा उनकी और लगातार, बिना पलकें झपकाए देख रहा था.. उसकी आँखों में ना तो आश्चर्य का भाव था.. ना ही किसी तरह के भय का.. पर आँखों की तेज चमक में भी अजीब से सूनेपन ने उनको चौंका दिया...

विपिन ने उससे फासला बनाए हुए ही सवाल किया," यहाँ क्या कर रहे हो, बेटा.. इतनी रात को...?"

"अपने पैरों का कीचड़ साफ कर रहा हूँ अंकल.." बड़ी ही मासूमियत से बच्चे ने जवाब दिया.. उसकी आवाज़ और बात करने के ढंग से उनको कहीं से भी ये अहसास नही हुआ की उसकी उमर चार साल से उपर होगी.. हालाँकि कद काठी से पहले उन्होने उसके ७-८ साल का होने का अनुमान लगाया था...

"यहाँ कोई तनवी रहती है.. ? बता सकते हो उसका घर कौनसा है?" प्रतिक का दिल बैठने लगा था.. यहाँ तो सब कुछ अजीब ही हो रहा था.. उसने जल्दी से वहाँ से टलने में ही भलाई समझी...

लड़के ने उंगली उठा कर रोशनी की और इशारा कर दिया..," वहाँ! हम सब वहीं रहते हैं.. उस हवेली में!"

"मतलब... मतलब तुम.. तुम्हारी कुछ लगती है क्या वो?" प्रतिक को रह रह कर झटके से लग रहे थे....

"पर उस 'हवेली' का रास्ता किधर से है.. हम तो ढूँढते ढूँढते थक गये.. और तुम घर क्यू नही गये अभी तक.. यहाँ क्या कर रहे हो..?" विपिन ने बच्चे से सवाल किया..

"मैं खो गया हूँ अंकल.. मुझे भी रास्ता नही मिल रहा.. इतने दीनो से ढूँढ रहा हूँ.." लड़के ने उतनी ही मासूमियत से जवाब दिया..

"क..क..क.. कितने दीनो से..?" लड़के के हर जवाब के साथ दोनो के दिल की गति बढ़ती जा रही थी..

" ७४ साल से....?"

"भाग विपिन.. भाग.. हम यहां फँस गये हे.... भाग नही तो.. समझ ले मारे गये.." प्रतिक ने विपिन का हाथ पकड़ कर अपनी और खींचा.. भागने के लिए.. पर जाने क्यू विपिन वहाँ से हिल नही पाया...शायद उत्सुकतावश," क्यू मज़ाक कर रहे हो यार? क्यू झूठ बोल रहे हो..?"

इस बार लड़के के चेहरे पर शिकन और सदियों पुरानी तड़प उभर आई," मैं मज़ाक क्यू करूँगा अंकल? मरे हुए लोग झूठ नही बोलते!"

प्रतिक की वहीं खड़े खड़े घिघी बाँध गयी.. जिस तरह की अजीबोगरीब परिस्थितियाँ वहाँ उत्पन्न हो रही थी, जिस तरह से वो बच्चा उन्हे मिला और जो कुछ उसने बोला.. दोनो के कलेजे बाहर निकल आने पर उतारू हो गये.. प्रतिक को अहसास हो रहा था की उसने यूँ पागलपन में यहाँ आकर कितनी बड़ी भूल की है.. वो खड़े पैर वहाँ से भागना चाहता था, पर विपिन को वहाँ छोड़कर कैसे भागे.. वो बस विपिन के इशारा करने का इंतज़ार कर रहा था, जिसने घबराहट में अपनी रिवॉल्वर उस बच्चे पर तान दी," गेट आऊट फ्रॉम हियर?"

"क्या अंकल?" नन्हे से बच्चे के चेहरे से नादानी और मासूमियत छू छू कर टपक रही थी..

"दफ़ा हो जाओ यहाँ से! भाग जाओ..."

" पर मुझे एक बार घर छोड़ आओ ना.. मुझे घर नही मिल रहा है..!" बच्चे ने विनम्रता से प्रार्थना की...

सिर्फ़ उस लड़के की वो प्यारी सी आवाज़ ही थी जो अब तक उन्हे पैरों पर खड़े रहने लायक साहस दे रही थी.. पर आगे बढ़ने की तो बात सोचना भी अब दुश्वार था.. विपिन ने प्रतिक की आँखों में देखा और वो उल्टे पाँव हो लिए.. कुछ दूर तक यूँही सावधानी पूर्वक पिछे देखते देखते जब वो उस बच्चे की आँखों से औझल हो गये तब जाकर प्रतिक की आवाज़ निकली," रास्ता याद है ना भाई...?"

"सीधा चरंभा रह.. अब अपनी बकबक बंद रख थोड़ी देर" विपिन ने गुस्से से उसको झिड़क दिया..

उसके बाद तो उन्होने कीचड़ वाले रास्ते से होते हुए सड़क पर जाकर ही दम लिया.. तब तक तो शायद साँस भी गिन गिन कर ले रहे थे... दोनो तेज़ी से एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए आगे बढ़ने लगे.. अब मेंढकों का टर्राना उनको किसी भूत नगरी में चल रहे रहस्यमयी संगीत से कम नही लग रहा था.. झाड़ियों में ज़रा सी भी सरसराहट होते ही दोनो की साँसे जम जाती थी.. राम का नाम जपते जपते आख़िरकार वो अपनी गाड़ी तक पहुँच ही गये... पर जहाँ पैदल जाने में उनको एक घंटे से भी ज़्यादा का समय लगा था.. वापस आने में आधा घंटा भी नही लगा...

"साले, कहाँ मौत के मुँह में ले गया था तू मुझे..?" विपिन ने गाड़ी स्टार्ट करके बे-इंतहा पसीने से सना अपना चेहरा पोछा..

"सॉरी भाई.. मुझे नही पता था कि...." प्रतिक भी अब ढंग से साँसे ले पा रहा था..

"अबे सॉरी के बच्चे.. ये बता आख़िर तनवी है कौन? क्या लफड़ा है तेरा उससे.. और उसने तुझे यहाँ क्यू बुलाया था..." विपिन ने बनावटी गुस्से से कहा.. उसको इस बात का सुखद अहसास था कि वो सकुशल वापस लौट आए.. 'वहाँ से'

गाड़ी ने जैसे ही रफ़्तार पकड़ी.. उसको अहसास हो गया की कुछ ना कुछ गड़बड़ ज़रूर है," गाड़ी पंक्चर हो गयी है.. शायद.. अब क्या करें?" कहकर विपिन ने गाड़ी की रफ़्तार धीमी करते हुए उसको साइड में रोक दिया...

प्रतिक सहमी हुई नज़रों से विपिन को देखने लगा," सॉरी यार.. मेरी वजह से..."

विपिन उसकी बात पर ध्यान दिए बिना गाड़ी से उतरा और टायर चेक किए.. चारों टायर ज़मीन में धंसे हुए से थे.. सबकी हवा गायब थी.. विपिन वापस गाड़ी में आया और अपना सिर पकड़ कर बैठ गया...," अब क्या करें.. एक में पंक्चर होता तो.."

"अगला गाँव कितनी दूर है भाई.." प्रतिक खुद की नासमझी से विपिन को भी परेशानी में डाल देने के कारण शर्मिंदा था..

"होगा कोई ५-७ किलोमीटर और.. क्यू?" विपिन अब सामान्य हो चुका था.. जो होना था वह तो हो ही चुका था.. गनीमत थी जो हो सकता था, वह नही हुआ..

"वहाँ तक ले चलो किसी तरह.. शायद वहाँ कोई पंक्चर लगाने वाला मिल जाए.."

और कोई चारा भी नही था.. विपिन ने गाड़ी धीरे धीरे लुढ़कानी शुरू की...

गाँव आते ही उन्होने पहले ही घर के सामने गाड़ी रोक दी.. ये घर गाँव से बाहर था.. कुछ अलग हटकर," यहाँ पूछते हैं.. गाँव में कोई पंक्चर लगाने वाला हो तो..."

दोनो गाड़ी से उतरे और दरवाजे के सामने जाकर उस पर थपकी लगाई..

"कौन?" घर के अंदर से आई निहायत ही मीठी आवाज़ ने उनके कानो में मिशरी सी घोल दी... आवाज़ किसी नवयौवना की लगती थी..

"जी.. हम बाहर से आए हैं.. थोड़ी मदद चाहिए..!" विपिन ने प्रतिक के बोलने से पहले ही जवाब दे दिया...

"बापू! वो आ गये.." अंदर से लड़की की वही सुरीली आवाज़ बाहर तक आ रही थी..

यहाँ तो रह रह कर झटके लग रहे थे.. विपिन ने प्रतिक की और देखा और धीरे से बोला," ये तो इस तरह से कह रही है जैसे ये हमारा इंतजार ही कर रहे थे.." कहकर दोनो सावधान हो गये....

'छर्र्र्र्र्र्र्ररर..' दरवाजा पुराना था.. इसी आवाज़ के साथ खुला.. एक बार को तो इस आवाज़ ने भी उनको डरा दिया था.. कहते हैं ना 'दूध का जला छाछ को भी फूँक फूँक कर पीता है...

करीब ६० साल के अधेड़ आदमी ने दरवाजा खोला.. उसकी आवाज़ में भी उतनी ही मधुरता थी.. उपर से नीचे तक दोनो को देखा और बोला," पुराने टीले से आए हो ना...?"

"जी.. क्या मतलब? पुराना टीला? हम कुछ समझे नही..." दोनो की हालत देखने लायक थी.. प्रतिक मन ही मन सोच रहा था.. ये रात किसी तरह से गुजर जाए..

"तुम्हारे पैरों में ये चिपचिपा सा कीचड़ लगा है ना.. इसीलिए पूछा.. ये वहीं का कीचड़ है!" बुड्ढे ने बिना किसी शंका के उनसे कहा..

दोनो ने जैसे ही नीचे झुक कर देखा..," हां पर..?"

"तुमने खूनी तालाब के पास से गुज़रे होगे बेटा... आ जाओ.. अंदर आ जाओ!" बूढ़ा कहकर पिछे घूमने लगा...

"ज ज.. जी.. नही.. धन्यवाद.. वो.. हमें बस.. यही पूछना था कि.. यहाँ पंक्चर कोई लगाता हो तो.. हमारी गाड़ी.." प्रतिक के लिए पल पल काटना मुश्किल हो रहा था...

"हे हे हे हे.. आ जाओ.. अंदर आ जाओ..!" बुड्ढे ने बड़े प्यार से प्रतिक की बाँह पकड़ी और हौले से अंदर खींच लिया... प्रतिक में जैसे प्रतिरोध करने की ताक़त बची ही ना हो.. कठपुतली की तरह वो अंदर उसके साथ घुस गया...

अब विपिन के पास भी कोई चारा नही बचा.. प्रतिक को यूँ छोड़कर भागता कैसे? नही तो हालत अब तक उसकी भी पतली हो चुकी थी.... वो भी पिछे पिछे हो लिया....

"आओ बैठो! यहाँ आ जाओ..अर्रे भाई शर्मा क्यू रहे हो? आओ बैठो ना!" बुड्ढे ने उनको कमरे में ले जाते हुए पूरी शराफ़त के साथ उन पर हक़ जताते हुए बात कही.. पर शराफ़त और मासूमियत के पिछे छिपी भयावहता को उन्होने घंटा भर पहले ही महसूस किया था.. इसीलिए दोनो के मन में उथलपुथल जारी थी.. दोनो ने एक दूसरे की आँखों में देखा और पूरी सतर्कता बरतते हुए दीवार के साथ बिछे पलंग पर जा बैठे.. उनकी कमर के पिछे सिर्फ़ एक सपाट दीवार थी.. वो वहाँ इसीलिए बैठे ताकि कमरे में होने वाली हर गतिविधि पर नज़र रख सकें...

" गीता बेटा.. ज़रा कुछ पानी वानी ले आओ.. इतनी देर क्यू लगा रही हो..?" बुड्ढे ने उन दोनो के सामने बैठते हुए बाहर मुँह करके आवाज़ लगाई...

"लाई बापू..!" बाहर से वही सुरीली आवाज़ दोनो के कानो में पड़ी...

"तो.. वहाँ क्या करने गये थे तुम लोग? शहरी मालूम होते हो..!" बुड्ढे ने बड़ी ही आत्मीयता से दोनो से पूछा..

"ज्जई.. हम रास्ता भटक गये थे..!" विपिन ने बात को गोलमोल करते हुए जवाब दिया.. ये कहना उनको कतई मुनासिब नही लगा की वो किसी लड़की की तलाश में वहाँ अपनी ऐसी तैसी करने गये थे...

"हम्मम.. तुम दो ही गये थे या कोई वहीं रह गया...?" बुड्ढे ने सहजता से बात कही...

"जी.. क्या मतलब?.. हम दो ही थे बस..!" इस बार भी विपिन ने ही जवाब दिया.. प्रतिक तो चुपचाप ही उनकी बातें सुन रहा था.. वो इसी उधेड़बुन में था की यहाँ से निकलेंगे कब...

"शुक्र है.. दोनो ठीक ठाक वापस आ गये..!" बुड्ढे ने गहरी लंबी साँस लेते हुए बीड़ी सुलगा ली," पीते हो क्या?" कहकर बुड्ढे ने बीडीयों का बंड्ल उनकी और बढ़ाया..

"जी नही.. शुक्रिया...!" विपिन ने विनम्रता से मना कर दिया..

तभी प्रतिक पलंग से लगभग उछल कर खड़ा हो गया," नी...?"

विपिन ने चौंकते हुए पहले प्रतिक की और देखा और फिर उसकी नज़रों का अनुसरण करते हुए निगाहें दरवाजे पर जमा दी..

"क्या हुआ बेटा? तुम खड़े क्यू हो गये...?" बुड्ढे ने भी प्रतिक से बात कहकर दरवाजे की और देखा," ये मेरी बेटी है.. गीता.. आ जाओ बेटी.. "

प्रतिक की साँसें उसके हलक में ही अटकी हुई थी अभी तक.. दरवाजे से अंदर आने वाली लड़की तनवी ही तो थी.. वही तनवी जिसके लिए प्रतिक पागल हुआ जा रहा था.. सुंदरता की अद्भुत मिसाल थी वो.. सिर से लेकर पाँव तक.. छरहरा लंबा बदन, हल्की सी लंबाई लिए हुए लगभग गोलाकार गोरे चेहरे पर अद्भुत कशिश लिए हुए लंबी कजरारी आँखें.. हल्का गुलाबीपन लिए हुए रसीले होंठ, सुराईदार लंबी गर्दन.. और..

खैर यूँ कहें की सौंदर्या रस उसके बदन में सिर्फ़ दिख ही नही रहा था.. मानो टपक रहा हो.. उसकी मासूमियत से, उसके शर्मीले पन से, उसके यौवन से.. उसकी हर अदा से..

बिना एक बार भी पलकें उठाए उसने उनके सामने टेबल पर पानी रखा और वापस चलने लगी..

"बेटी.. खाना बना देना.. जाने कब से भूखे होंगे बेचारे..!"

"जी बापू.. मैने सब्जी रख दी है.." नज़रें झुकाए हुए ही उसने मुड़कर अपने लरजते होंटो से बात कही और बाहर निकल गयी..

"जी नही.. हमें भूख नही है.. हम अब बस निकलेंगे.. आप बस किसी टायर पंक्चर वाले का घर बता दें" विपिन ने खड़ा होते हुए कहा.. दरअसल प्रतिक को इस तरह चौंकते देख विपिन के मन में अनेक सवाल खड़े हो गये थे.. और वह जल्द से जल्द बाहर निकल कर सब क्लियर करना चाहता था...

"नही भाई.. ऐसे कैसे जाने दूँगा तुम्हे? ये भी कोई जाने का टाइम है.. और इस गाँव में कोई पंक्चर लगाने वाला भी नही है.. अभी आराम से खाना खाकर सो जाओ.. सुबह देख लेना.." बुड्ढे ने विपिन का हाथ पकड़ कर उसको वापस चारपाई पर बैठा दिया...

विपिन ने प्रतिक की और देखा.. उसकी आँखों की चमक बता रही थी की उसको अपनी मंज़िल मिल गयी है..

" ठीक है अंकल जी.. जब आप इतना दबाव डाल रहे हैं तो यही सही.. आपका बड़ा अहसान होगा.." प्रतिक को मानो मुँह माँगा मिल गया...

"इसमें अहसान की क्या बात है बेटा..! आदमी ही आदमी के काम आता है.. और फिर मेहमान तो भगवान होता है अपने देश में.. किसी बात की चिंता मत करो.. इसे अपना ही घर समझो!" बुड्ढे ने बड़ी आत्मीयता से मुस्कुराते हुए कहा...

बुड्ढे की बातों ने दोनो को तसल्ली सी दी.. कम से कम यहाँ अब तक कुछ वैसा नही हुआ था, जिससे उन्हे यहाँ भी कुछ अजीबोगरीब होने का डर रहे..

"अंकल जी.. ये खूनी तालाब का क्या चक्कर है?" विपिन ने हिचकिचाते हुए बात चला ही दी...

विपिन के ज़िक्र करते ही बुड्ढे की आँखें अतीत का कुछ याद सा करने के अंदाज में सिकुड सी गयी," उसके बारे में हम गाँव के लोग किसी को बताते नही बेटा.. बस इतना ख़याल रखना की दोबारा कभी उस तरफ भूल कर भी मत जाना.. और ना ही किसी से इसका जिकर करना.. तुम सही सलामत वापस आ गये, इसके लिए भगवान का धन्यवाद करो..!"

" हम किसी से नही कहेंगे.. पर बताने में हर्ज़ क्या है? कुछ तो बताइए..!" विपिन और प्रतिक दोनो उत्सुकता से कुछ बताने का मूड बना रहे बुड्ढे की और देख रहे थे...

"हम्म.. किसी से भूल कर भी जिकर मत करना.. हमारे बड़े कहते थे कि पुराने टीले की 'आत्मायें' बाहर के लोगों से नफ़रत करती हैं.. एक बार कोई अंग्रेज तुम्हारी ही तरह भटक कर वहाँ चला गया था.. सुबह उसकी लाश तालाब के किनारे पर मिली थी.. इतने बड़े बड़े कीड़े चल रहे थे उसकी आधी खाई हुई लाश में.." बुड्ढे ने कीड़ों का आकार बताने के लिए अपनी उंगली को लंबा कर दिया.. लाश का सिर तो बिल्कुल ही गायब था.. उसके पेट को चीर सा दिया गया था.. और दिल छाती से बाहर लटक रहा था.. बस फिर क्या था.. उसकी मौत का कारण जानने के लिए अँग्रेज़ों ने वहाँ डेरा डाल लिया... बहुत कोशिश की पर किसी को कुछ हासिल ना हुआ.. पर उसके बाद मौत बहुत हुई.. पर सारी बाहर के लोगों की.. इसीलिए अब हम किसी को कुछ नही बताते.. पढ़े लिखे लोग इन बातों में विश्वास नही करते ना.. फिर कोई वहाँ का राज जानने जाएगा और खामखा मारा जाएगा.. क्या फायदा..?" कहकर बूढ़ा अपने चेहरे पर पीड़ा के भाव लिए चुप हो गया..

"हम ऐसी ग़लती नही करेंगे अंकल जी.. किसी से कुछ कहेंगे भी नही.. बताइए ना.. और.. ऐसा क्या है वहाँ? और वो खूनी तालाब..?" विपिन की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी...

"तुम अब मानोगे नही पूछे बिना.. दरअसल वो तालाब बहुत पुराना है.. हज़ारों साल पुराना.. उसका पानी कभी नही सूखता.. पर जो वहाँ से तुम्हारी तरह बचकर वापस आ जाते हैं.. वो बताते हैं कि रात को तालाब का पानी लाल हो जाता है.. खून के जैसा.. इसीलिए हम उसको खूनी तालाब कहते हैं... आत्मा के प्रकोप से बचने के लिए गाँव वाले वहाँ खड़े पीपल के पेड़ की पूजा करते हैं.. देखने वाले बताते हैं की रात भर पेड़ पर रोशनी रहती है.. पर रात में आज तक कोई उसके पास पहुँच नही पाया.. या जो पहुँचा होगा.. मर गया होगा.. सुना है वहाँ एक छोटे बच्चे की आत्मा भी भटकती रहती है.."

"हाँ.." प्रतिक बच्चे के बारे में बोलने ही वाला था की विपिन ने उसका हाथ दबा दिया और उसने अपनी बात पलट दी," हां.. आत्मा होती हैं.. मैने भी सुना है!"

"सुना क्या है बेटा.. गाँव वालों ने तो उस बच्चे को देखा भी है.. बताते हैं की वो बच्चा वहाँ जाने वाले लोगों को उसके घर छोड़ आने को कहता है.. पीपल के पेड़ पर....

" पर वो आत्मायें आख़िर हैं कौन? और बाहर वाले लोगों से ही नफ़रत क्यू करती हैं वो?" बुड्ढे के हर खुलासे के साथ विपिन की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी.. सब कुछ जान लेने के लिए.. हालाँकि वो आत्मा के चक्कर को नही मानता था.. पर आज रात का अनुभव उसको उनके बारे में और सुनने को विवश कर रहा था...

"अब सच्चाई तो भगवान ही जानता है बेटा.. हमारे पास तो सुनी सुनाई बाते हैं.. कहते हैं कि उस पीपल के पेड़ की जगह पहले किसी राजा का महल हुआ करता था.. तीन रानियाँ थी उसकी.. तीनो एक से एक सुंदर.. फिर किसी मुघल सम्राट ने उस राजा को हरा कर रानियों के सामने ही उस पर हाथी चलवा कर मरवा दिया और उस महल को अपना हरम बना लिया.. तीनो रानियों समेत महल की सभी औरतों को अपना बंदी बनाकर रखा... जो कुछ 'वो' उन रानियों और औरतों के साथ करता था वो बताने लायक है नही.. तुम मेरे बेटों के जैसे हो.. पर हां.. हर सुबह एक अर्थी उठती थी महल से.. ये सिलसिला तब तक जारी रहा जब तक की महल में एक भी औरत बची... कहते हैं की ये आत्मायें उसी राजा और उन्ही रानियों की हैं..."

"हुश्श्श....!" विपिन ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा...

तभी गीता खाना ले आई और उसको टेबल पर सजाने लगी.. प्रतिक लगातार उसकी आँखों की और देख रहा था.. इस ताक में की गीता उसकी और देखे और वो उसकी आँखों में अपने लिए 'अपनापन' ढूँढ सके.. पर बदक़िस्मती से ऐसा हुआ नही.. गीता ने नज़रें उपर ही नही उठाई और खाना लगाकर बोली," आपके लिए भी ले आऊ बापू?" आवाज़ में इतनी मिठास थी की प्रतिक उसके मुँह से अपना नाम सुनने को तरस गया.. अगर बापू ना होता तो वो कब का उसको टोक चुका होता...

"नही बेटी.. थोड़ी देर पहले ही तो खाया था.. तुम जाओ.. जाकर सो जाओ.. मैं आता हूँ थोड़ी देर में..."

"अच्छा बापू.. मैं कुण्डी नही लगाउन्गी.. आप आकर बंद कर लेना.." गीता ने अपने पिता की और देखते हुए कहा और फिर वापस मूड गयी...

"आपके घर में और कौन कौन हैं अंकल जी?" प्रतिक का इंटेरेस्ट सिर्फ़ तनवी के बारे में जानने को ही था..

"बस हम दो जान ही हैं बेटा.. बीवी इसको जनम देते ही गुजर गयी थी.. सो और कोई औलाद नही है.. कुछ दिन बाद तो मैं अकेला ही रह जाऊंगा.." बुड्ढे ने जवाब दिया..

"वो क्यू?" खाना खाते हुए ही प्रतिक ने उसकी और देखा...

" शादी नही करूँगा क्या बेटा.. लड़की तो पराया धन होती है.."

रोटी का टुकड़ा प्रतिक के हलक में ही अटक गया," कब.. कब कर रहे हैं शादी..?"

"अभी तो ये मन ही नही रही.. कहती है पढ़ाई पूरी करने के बाद सोचूँगी... नादान और भोली है पर जिद्दी भी बहुत है.. जो सोच लिया वो सोच लिया.. फिर किसी की नही सुनती ये.."

"श्श.. " प्रतिक की जान में जान आई.. पहले उसको लगा था कि कहीं शादी पक्की ना हो गयी हो इसकी..

खाना खाने के बाद बुड्ढे ने बर्तन उठाए और उनको सुबह मिलने को कहकर चला गया..

उसके जाते ही प्रतिक ने आँखें मटकाते हुए विपिन की और देखा," क्यू..? कैसी लगी..?"

"यही है वो?" विपिन को शक तो था.. पर ताज्जुब उससे कहीं ज़्यादा...

"हम्मम.." प्रतिक खुशी से फूला नही समा रहा था.. अजीब सी खुमारी में उसने तकिये को अपनी छाती के नीचे दबाया और पेट के बल लेट गया..

"पर इसका नाम तो गीता है.. तू तो तनवी कह रहा था..?" विपिन ने दूसरे पलंग पर लेटते हुए दूसरा सवाल किया...

"नाम में क्या रखा है यार.. बस.. इतना जान ले, जिसके लिए मैं आया था.. मुझे मिल गया है.. मैं तेरे इस अहसान का बदला कभी नही चुका पाऊंगा.. मैं ना कहता था.. मेरी तनवी मुझे ज़रूर मिलेगी.." प्रतिक पर प्यार का भूत सवार था..

"अबे साले.. इसने तेरे को देखा तक नही और तू ऐसे उछल रहा है.. कहीं तुझे भूल ना गयी हो... कितने टाइम पहले मिली थी..?" विपिन उठकर बैठ गया..

"वो सब मैं तेरे को बाद में बताऊंगा.. पर तू ये तो बता की लगी कैसी तुझे..?"

"बहुत प्यारी है.. सच बोलूं तो.. इसके जैसी कोई लड़की मैने आज तक नही देखी.. अगर ये तनवी ना होती तो मैं इसके बारे में अपने लिए सोच रहा था.. और अब भी क्या पता.. ये गीता ही हो.. तेरी तनवी की हमशकल.. तेरी तनवी तो तुझे वहीं मिलेगी.. पुराने टीले पर... हे हे हे" विपिन ने शरारती मुस्कान अपने चेहरे पर लाते हुए कहा...

" ऐसी बात मत कर यार.. मुझे अच्छा नही लगता.." प्रतिक ने मुँह बनाकर कहा..

"मज़ाक कर रहा हूँ बे.. पर एक बात मेरी समझ में नही आई...!" विपिन ने को जैसे कुछ अचानक याद आ गया हो..

"वो क्या?" प्रतिक भी उठकर बैठ गया..

"इसने तेरे को वहाँ क्यू बुलाया..? और बुलाया भी तो वहाँ मिलना चाहिए था.. अब किसको पता था कि हमारी गाड़ी में पंक्चर हो जाएगा और हम वापस आकर इसी घर का दरवाजा खटखटाएंगे.. अगर हम सीधे निकल जाते तो शायद ही कभी दोबारा आते.. यहाँ पर.." विपिन की बात में दम था...

"हां यार.. वो तो है.. जब बात करेगी तो ज़रूर पूछूंगा ये बात..." प्रतिक ने जवाब दिया...

" पर अब तो बता दे ये तुझे कहाँ मिली? कैसे मिली.. और कैसे पटी?" विपिन जानने के लिए उत्सुक था...

"एक बार बात हो जाने दे.. फिर सब कुछ बताऊंगा.. हमारा मिलना अंकल जी की भूतो वाली कहानी से कम दिलचस्प नही है.. मुझे खुद विश्वास नही था कि मैं इससे मिल पाऊंगा..."

"अभी बता दे ना.. अभी क्या दिक्कत है..?" विपिन ने इस बार ज़ोर देकर कहा था..

"ना.. अभी नही.. बहुत दिलचस्प बात है.. पर अभी कुछ नही कह सकता.. पहले इससे बात कर लूँ...!" प्रतिक ने कहा और वापस लेट गया," चल अब सो जाते हैं.. सुबह जल्दी उठना है.."

"ठीक है बेटा.. लोग मतलब निकल जाने के बाद किस कदर रंग बदलते हैं.. ये मैं देख रहा हूँ.. चल अच्छा है.. मैं इंतजार करूँगा, तेरी इससे बात होने की.. गुड नाइट!"

"गुड नाइट भाई गुड नाइट!" प्रतिक ने कहा और सिर के नीचे से तकिया निकाल कर सीने पर रख लिया.. दोनो हाथों में दबोच कर.....

# ३

## रात करीब २ बजकर १७ मिनिट......

प्रतिक दरवाजे पर पैरों की आहट सुनकर चौंक गया.. उसकी उम्मीद को पूरी तरह पंख लगे भी ना थे की कमरे में रोशनी छा गयी.. हल्की सी नाराज़गी जताती हुई तनवी उसकी आँखों में आँखें डाले उसको घूर रही थी.. हौले हौले चलती हुई वो उसके पैरों के पास आकर उसके पलंग पर बैठ गयी..

"ये कौन है?" तनवी ने झुकते हुए धीरे से विपिन की और इशारा करते हुए पूछा..

"मेरा दोस्त है.. मेरे भाई जैसा है.. क्यू?" प्रतिक ने भी उसी के अंदाज में जवाब दिया..

"इसको क्यू लेकर आए..? मैने अकेले आने को बोला था ना..?" नाराज़गी अब भी तनवी की नाक पर बैठी थी..

"कमाल करती हो? ऐसी ख़तरनाक जगह पर अकेले.. जान लेने का इरादा था क्या?" प्रतिक ने लेटे लेटे ही जवाब दिया...

"जान तो मैं तुम्हारी लूँगी ही.. एक बार समय आने दो" कहकर तनवी कातिल अदा से मुस्कुराने लगी.. उसकी इसी अदा का तो प्रतिक दीवाना था," चलो ठीक है.. तुम्हारी ये बात मान लेती हूँ.. इसको लेकर आ जाओ.. पर इसको दूर ही खड़ा कर देना.. मुझे तुमसे ज़रूरी बातें करनी हैं.. जाने कब से तुम्हारे लिए तड़प रही हूँ.. तुम्हे तो अहसास भी नही होगा, मेरी मोहब्बत का.."

"तुम्हारी यही बात मेरी समझ में नही आ रही.. कहती हो मुझसे प्यार करती हो.. पर आज तक कभी छूने की इजाज़त नही दी.. मैं भी तुम्हारे लिए पागल हो चला हूँ.. प्लीज़ एक बार.. एक बार मुझे तुम्हे छू कर महसूस कर लेने दो.. कितनी प्यारी हो तुम.. तुम्हारे लिए मैं यहाँ तक भी आ गया.. एक बार मेरे आगोश में आ जाओ ना.. प्लीज़!" प्रतिक उसके शरीर से उत्सर्जित हो रही यौवन को अपने अंदर तक महसूस करने को तड़प उठा...

"मैं भी तो उतनी ही तड़प रही हूँ चंद्रभान! तुम्हे क्या पता, मेरा एक एक पल कैसे बीतता है.. उस पल के लिए जब मैं और तुम 'हम' होंगे.. ये फ़ासले कितना तड़पते हैं, मुझसे ज़्यादा कौन समझेगा.. बस इंतज़ार करो... " तनवी की आँखों से उसके लिए बे-इंतहा ज़ज्बात झलक रहे थे...

"कितनी बार बताऊं कि मैं प्रतिक हूँ.. अगर तुम किसी चंद्रभान के धोखे में मेरे पिछे पड़ी हो तो माफी चाहता हूँ.. पर फिर भी यही कहूँगा कि अब मैं तुम्हारे बिना रह नही पाऊंगा.. तुम्हारे प्यार में जाने.... तुमने मुझे पागल सा कर दिया है.."

"दुनिया के लिए तुम चाहे कुछ भी हो.. पर मेरे लिए तो मेरे चंद्रभान ही हो.. मुझे तुम्हारा यही नाम अच्छा लगता है.. मैं तो यही कहूँगी.." आँखों में गहरी प्यास और मादक अहसास लिए तनवी उसकी और टकटकी लगाकर देखती रही...

"तुम मुझे पूरी तरह पागल बना कर ही छोड़ोगी.. मुझ प्रतिक को तुम चंद्रभान कहती हो और अपना नाम तनवी बता रही हो जबकि तुम्हारे पिताजी तुम्हे गीता कहते हैं.. मैं क्या समझू और क्या नही.." प्रतिक नाम के चक्कर से अभी तक भी निकल नही पाया था..

"वहाँ आओगे तो सब समझ आ जाएगा.. अब यहाँ मैं तुम्हे क्या बताऊं?" तनवी ने बेबस नज़रों से उसको देखते हुए कहा..

"अजीब लड़की हो.. यहाँ मेरे सामने बैठी हो.. उस वक़्त नज़र उठा कर भी तुमने नही देखा.. और अब ये छोटी सी बात बताने के लिए मुझे वहाँ बुला रही हो.. इतनी ख़तरनाक और डरावनी जगह मैने आज तक नही देखी.. पता है.. ?" प्रतिक के चेहरे पर उस अजीबोगरीब जगह की डरावनी यादों की टीस छा गयी..

"क्या? तुम वहाँ गये थे? पर मैने तुम्हे १२ बजे के बाद आने को कहा था ना.. रुके क्यू नही वहाँ पर..." तनवी अधीर होते हुए बोली...

" कैसे रुकते..हम वहाँ गये तो हमें वहाँ एक बच्चा मिला.. इतना खौफनाक मंज़र था कि मेरी तो जान ही निकल गयी होती.. और तुम्हे पता भी है.. वहाँ भूत रहते हैं.. तुम्हारे पिताजी ने ही बताया था.." प्रतिक ने स्पष्ट किया...

"असमय गुजर चुके लोगों को भूत कहकर उनका मज़ाक ना बनाओ चंद्रभान.. तुम्हे हम... उनकी पीडाओं का अहसास नही है.. हर पल किस वेदना और दर्द की भट्टी में तपते रहना पड़ता है.. ये तुम्हे क्या मालूम.. तुम तो आज़ाद हो.. कहीं भी आ जा सकते हो.. पर वो हर तरह से एक दायरे में बँधे हैं.. हरपल उसी दर्दनाक मंज़र को आँखों में लिए तड़पते रहते हैं.. जिस घड़ी जिंदगी ने बड़ी क्रूरता से उनके सिर से अपना हाथ हटा लिया.. वो हर पल इसी इंतज़ार में रहते हैं कि कब कोई रहनुमा आएगा और उनको वहाँ से, उस जहन्नुम से मुक्ति दिलाएगा.. आ जाओ ना चंद्रभान.. सिर्फ़ एक बार आ जाओ.. मैं हर पल तुम्हारा इंतजार करती हूँ.. एक बार वहाँ आ जाओ मेरी जान.. मुझे जहन्नुम से निकल कर जन्नत में ले चलो.." तनवी बोलते बोलते भावुक होकर गिड़गिड़ाने सी लगी..

"ऐसे क्यू कर रही हो.. मुझसे तुम्हारी ये बेचैनी देखी नही जाती.. पर ऐसा क्या है जो यहाँ नही बता सकती.. वहीं जाना क्यू ज़रूरी है तनवी..?"

"वहाँ जाना ज़रूरी नही है चंद्रभान.. पर मुझे डर है.. मैने यहाँ बता दिया तो तुम वहाँ शायद कभी नही आओगे.." मायूस तनवी की आँखों से आँसू छलक उठे..

"इसका मतलब तुम्हे मेरे प्यार पर भरोसा नही है.. इसका मतलब कुछ ऐसा ज़रूर है जो तुम मुझसे छिपा रही हो.. जब तुम मुझ पर विश्वास नही करती तो मैं तुम पर क्यू करूँ..?" प्रतिक बात जानने को लालायित लग रहा था..

"तुम्हारे अंदर के चंद्रभान पर मुझे पूरा विश्वास है.. पर बाहर के प्रतिक पर नही.. वक़्त जाने कितनी करवटें बदरंभा है.. इस दरमियाँ जाने तुम कितनी बार बदले होगे.. मैं इसीलिए डर रही हूँ.." तनवी अपना हाथ बढ़कर उसके चेहरे को छूने को हुई पर कुछ याद आते ही तुरंत वापस खीच लिया...

"देखो तनवी या गीता, तुम जो भी हो.. तुमने अपने प्यार में तो मुझे पागल कर ही दिया है.. अब असलियत में पागल होना नही चाहता.. पहेलियाँ मत बुझाओ.. पर इतना जान लो कि जब तक तुम मुझे सब कुछ सच सच नही बताती, मैं वहाँ वापस नही जाऊंगा.. हरगिज़ नही.." प्रतिक ने दो टुक जवाब दिया..

"ऐसा क्यू कह रहे हो चंद्रभान.. क्या मैं यूँही तड़पति रहूंगी..? तुम मेरी बात समझते क्यू नही हो.. आ जाओ ना प्लीज़..." तनवी की हालत दयनीय हो चली थी..

"मैं तो सब समझ रहा हूँ.. अगर समझता नही तो यहाँ तक आता ही क्यू.. अच्छा चलो.. मैं वादा करता हूँ कि अगर तुम अभी सब कुछ बता दोगे तो तुम जहाँ कहोगी, वहाँ आने के लिए तैयार हूँ.."

कुछ देर सोचते रहने के बाद तनवी बोली," ये प्रतिक का वादा है या फिर चंद्रभान का.."

प्रतिक झल्ला उठा..," क्या है यार.. चंद्रभान.. प्रतिक.. दोनो का वादा रहा.. चंद्रभान का भी.. और प्रतिक का भी.. अब तो बता दो..."

"सोच लो.. चंद्रभान के वादे सूली पर जाकर भी नही टूटते.." तनवी को कुछ उम्मीद सी बँधी..

"हम्मम.. सोच लिया... वादा रहा.. चंद्रभान का!" प्रतिक ने कहते हुए अपना हाथ बढ़ाया पर तनवी की तरफ से कोई प्रतिक्रिया ना मिली....

तनवी ने लंबी साँस छोड़ते हुए छत की और देखा.. और अचानक ही बोलना शुरू कर दिया..," वो बच्चा.. जिसकी तुम बात कर रहे हो.. मेरा छोटा भाई है..

"क्या ?" प्रतिक तनवी की इस बात को पचा नही पाया और नींद में ही अंदर तक काँप गया.. हड़बड़ा कर लगभग चीखते हुए वह उठ बैठा.. चीख के साथ ही विपिन एक पल में ही उठ कर पलंग से खड़ा हो गया..," क्या हुआ?"

"ये.. ये लाइट क्यू बंद कर दी.. तनवी कहाँ गयी.." प्रतिक का सिर चकरा रहा था.. बंद आँखों में जहाँ उसको उजाला ही उजाला दिख रहा था.. आँखें खोलते ही.. अंधेरे के सिवा उसको कुछ नज़र ना आया.. वहाँ तो पहले से ही अंधेरा था.. उजाला तो सपने में तनवी साथ लेकर आई थी...

"तनवी, यहाँ? साले तू पागल हो गया है क्या? सपना देख रहा था या?" विपिन ने प्रतिक को कंधे से पकड़ कर हिला दिया...

प्रतिक ने जैसे तैसे खुद को संभाला," हां भाई.. सपना ही था.. सॉरी.. सो जा.."

"अब थोड़ी बहुत रात बची है.. उसमें तो चैन से सो लेने दे तू.. क्या हो गया है तुझे.. बता ना.. तू खुलकर क्यू नही बताता..?" विपिन ने उसके कंधे पर हाथ रख कर प्यार से पूछा...

"कुछ नही यार, सो जा.. सुबह बात करेंगे..!" कहते हुए प्रतिक मुँह ढक कर लेट गया..

"देख.. कोई बात मन में नही रखनी चाहिए.. गाँठ बन जाती है.. और फिर मुझसे छिपा कर तुझे मिलेगा क्या? बाकी तेरी मर्ज़ी है.. सुबह का इंतजार करूँगा.." विपिन ने कहा और दूसरी और करवट लेकर सो गया...

प्रतिक की समझ में कुछ नही आ रहा था.. पिछले करीब २ महीने से उसकी रातों की नींद और दिन का चैन हराम था.. कारण तनवी ही थी.. हर रात को वो उसके सपनो में आती और दिन भर वो उसके सपनो में खोया रहता.. जिंदगी अचानक कितनी बदल गयी थी उसकी.. हमेशा मस्त कलंदर की तरह जींसे वाला प्रतिक शुरू शुरू में तो इन्न सपनो का आनंद लेता और रात को उसके पास आकर उसको पुकार रही इस हसीना के बारे में दिन भर सोच कर आनंदित होता रहता.. विपिन की बात सच ही थी.. तनवी के जितनी प्यारी लड़की उसने भी आज तक नही देखी थी.. पर जल्द ही ये आनंद बेचैनी में और फिर वो बेचैनी एक अंजाने से लगाव में बदल गयी.. आख़िर यही लड़की रोज उसके सपनो में क्यू आती है.. क्या रिश्ता है इस लड़की का उसके साथ.. लड़की का सिर्फ़ सपने में आना भर ही होता तो बात अलग थी.. पर वो तो उसको दोनो के प्यार की दुहाई देती थी.. अपने पास बुलाती थी.. सपने में उसकी आवाज़ यूँ लगती थी जैसे किसी गहरी खाई से बोल रही हो.. रुक रुक कर कही गयी उसकी बातें प्रतिध्वनित होकर बार बार उसके कानों में गूँजती रहती थी.. रात भर.. दिन भर...

अपने मस्त अंदाज का मलिक प्रतिक दोस्तों में उसके हँसी मज़ाक और लड़कियों को भाव ना देने के कारण हमेशा छाया रहता था.. पर अचानक ही वो गुमसुम सा रहने लगा.. पूछने की कोशिश बहुतों ने की.. पर बताता भी तो क्या बताता प्रतिक.. अंत में जब उसकी बेचैनी और अपने आपको तनवी कहने वाली लड़की के प्रति उसका लगाव चरम को पार कर गया तो उसने एक बार उसके पास जाने की ठान ली.. पर तनवी की एक शर्त ने उसको विपिन का सहारा लेने पर मजबूर कर दिया.. एक तो सिर्फ़ रात को ही मिल पाने की बेबसी और दूसरा उसके पास आने के लिए बताए गये रास्ते की.....

विपिन उसके सबसे नज़दीकी दोस्तों में से एक था.. वो अज्ञात जगह पर जाने, घूमने फिरने और बीहड़ और दूर दराज के इलाक़ों में जाकर वहाँ के लोगों की दिन चर्या जानने का

शौकीन था.. दरअसल एडवेंचर उसकी लाइफ का एक हिस्सा था...

प्रतिक ने विपिन को एक कहानी बनाकर सुनाई.. उसको यकीन था अगर सपने वाली बात उसको बताएगा तो साथ देना तो दूर.. उल्टा दोस्तों मैं उसकी किरकिरी करने में भी कसर नही छोड़ेगा.. उसने विपिन को बताया कि बहुत पहले एक लड़की से वो मिला था और अब उसको पता चला है कि वो लड़की उससे बे-इंतहा प्यार करती है.. और उसको मिलने के लिए बुला रही है.. पहले पहल तो विपिन ने उसको इन्न खाम-खाँ के चक्करों से दूर रहने की हिदायत देकर साफ मना कर दिया.. पर जब उसको कई दीनो तक लगातार प्रतिक का चेहरा उतरा हुआ दिखाई दिया तो एक दिन उसने खुद ही प्रतिक को टोक दिया," कहाँ है वो लड़की.. चल मिला लाता हूँ.."

"यार.. उनका घर गाँव से दूर है.. काफ़ी आगे चलकर.. " प्रतिक इस बात को खा गया कि लड़की ने उसको बताया था कि उसको काफ़ी दूर पैदल चलना पड़ेगा....

"अच्छा.. फटती है तेरी.. इसीलिए मुझको बोला.. है ना.. नही तो तू मुझे बताता भी नही कि तू मजनू बन गया है आजकल..." विपिन ने मज़ाक किया...

"कुछ भी समझ ले यार.. पर मुझे उससे एक बार मिलकर आना है...!"

"हम्म.. चल फिर कल ही चलते हैं..!" विपिन तैयार हो गया उसके साथ जाने को...

और वो कल 'आज रात' ही थी...

पर जो कुछ भी आज रात को उन्होने देखा.. उसने उसकी व्याकुरंभा कम करने की बजाय और बढ़ा दी.. खास तौर से तब, जब उसने सपनो में रोज आने वाली लड़की को साक्षात अपनी नज़रों के सामने देखा.. गीता के रूप में.. उस वक़्त तक तो टीले से वापस आते हुए वह यही सोच रहा था कि ये सब महज उसके दिमाग़ के फीतूर के अलावा कुछ नही था.. पर अब; अब तो वो कतई ऐसा नही सोच सकता था.. उसके सपनो की रानी यथार्थ बनकर उससे रूबरू हो चुकी थी.. भले ही उसका अंदाज बेरूख़ा रहा हो.. भले ही उसका नाम गीता रहा हो.. कुछ ना कुछ तो बात ज़रूर है.. वरना इसी गाँव की लड़की उसके सपने में क्यू आती...

पर अब.. आज रात के सपने को वो कैसे ले.. कहीं 'तनवी' सच में कोई भूत तो नही.. उसने टीले पर मिलने वाले बच्चे को 'अपना भाई बताया.. चक्कर क्या है.. और फिर भूत तो डराते हैं.. प्यार थोड़े ही करते हैं.. फिर भूत भी माने तो कैसे माने.. लड़की तो उसके सामने थी ही.. प्रतिक को लग रहा था जैसे वो भी उस लड़की के प्यार में बुरी तरह जकड़ा जा चुका हो.. वो फिर से उसको अपने सपने में लाना चाहता था.. अपने अनगिनत सवालों के जवाब लेने के लिए.. उससेउसका संबंध क्या है.. ये जानने के लिए... इसी उधेड़बुन में वो कब खो गया और कब खुद को तनवी बताने वाली गीता फिर उसके सपने में आ गयी उसको पता ही नही चला...

"क्या हो गया था.. तुम चले क्यू गये थे, बीच में ही.." तनवी वहीं बैठी थी.. उसके पैरों के पास..

"मैं कहाँ गया था.. चली तो तुम गयी थी.. मेरे सपने से.." प्रतिक नींद में बड़बड़ाया...

"हां.. मगर सपना तो तुम्हारा ही था ना.. तुमने वो तोड़ दिया.. मुझे जाना पड़ा..!"

"तुम सपने में ही क्यू आती हो..? उठकर आ जाओ ना.. बराबर वाले कमरे में ही तो हो..." प्रतिक ने जवाब दिया...

तनवी ने यहीं पर उसको सब कुछ बताने का इरादा कर लिया था.. उसके चंद्रभान ने वादा जो किया था.. इस जनम में उसका साथ देने का... " समझने की कोशिश करो चंद्रभान.. मैं वो नही हूँ.. जो तुम समझ रहे हो.. वो तो गीता ही है जिसे तुम अपने सामने बैठी देख रहे हो.... मैं चंद्रभान की दुर्गावती हूँ.. और इस जनम की तुम्हारी तनवी.."

प्रतिक किसी तरह अपने आप पर काबू पाए रहा.. उसको सब कुछ जान लेना था.. आज ही,"मतलब हमारा पिछले जनम का कोई संबंध है?"

"पिछले जनम का नही.. पिछले कई जन्मो का.. दुर्गावती के हर जनम में मैने तुम्हारा इंतजार किया.. पर मैं तुम्हे इसी जनम में ढूँढ सकी.." तनवी ने जवाब दिया..

"पर तुम मुझे पहले भी तो ढूँढ सकती थी.. मतलब पिछले जन्मों में.." प्रतिक ने तर्क दिया...

"हां.. और मैने बहुत ढूँढा भी.. पर मेरी एक सीमा है... हम एक दायरे से बाहर नही निकल सकते.. २ महीने पहले तुम इस गाँव के पास से गुज़रे.. और मैने तुम्हे पहचान लिया.. तब से मैं इस बात का इंतजार कर रही हूँ कि तुम कब आओगे मेरे पास.. मतलब तनवी के पास.. कब हमारा मिलन होगा.. इसी वजह से मैने इस घर में रहने वाली लड़की का रूप चुराया.. ताकि तुम्हे इसके आकर्षण में बाँध कर अपने पास ला सकूँ... क्यूंकी इससे सुंदर कोई और लड़की मुझे आसपास दिखाई नही दी.." तनवी लगातार बोल रही थी कि प्रतिक ने उसको टोक दिया..

"पर अगर तुम आत्मा हो तो हम कैसे मिल सकते हैं.. बताओ.."

"नही मैं आत्मा नही हूँ.. मैं भी जनम ले चुकी हूँ.. कई बार.. इस बार भी.. तनवी के रूप में.. सिर्फ़ उसका दिल उस लॉकेट में अटक कर वहीं महल में ही रह गया था जो चंद्रभान ने दुर्गावती को दिया था.. यानी तुमने मुझे.. प्यार की पहली और आख़िरी निशानी के रूप में.."

"ये लॉकेट का क्या चक्कर है?" प्रतिक ने उसको फिर टोका..

"वो एक लंबी कहानी है.. हमारे प्यार की.. हमारे मिलने की और मिलन पूरा होने से पहले ही हमारी जुदाई की.. कभी फ़ुरसत में बताऊंगी.." तनवी अब उसका जवाब सुनने को उतावली थी...

प्रतिक को कुछ कुछ पल्ले पड़ रहा था.. पर बहुत कुछ नही," और अब असली तनवी को कौन ढूंढेगा? कहाँ कहाँ भटकू मैं.. और क्यू भटकू?"

"तुम्हे भटकने की ज़रूरत नही है.. हर जनम में वो मेरे संपर्क में रही है.. आख़िर मैं भी उसका हिस्सा हूँ.. अमृतसर से ५० किलोमीटर दूर बतला कस्बे में रहती है वो.. गवरमेंट कॉलेज के आसपास घर है उसका...मुझे इस बात पर गर्व है कि हर जनम में वो अंजाने में ही सही पर कुँवारी ही रही.. तुम्हारे अलावा मैने किसी के बारे में सोचा तक नही चंद्रभान.. तुम्हारे अलावा मुझे कोई छू भी नही पाया.." तनवी का गला भर आया..

"ओह.. और मैं..?" प्रतिक को उसकी अजीब मगर मीठी सी कहानी में मज़ा आने लगा था...

"तुम्हारा मुझे नही पता.. और इस जनम की तो तुम खुद ही जानते होगे..." तनवी ने उसको प्यार से देखते हुए कहा...

"तो क्या वो मुझे देखते ही पहचान लेगी..?" प्रतिक के मन में सवालों की झड़ी लगी हुई थी....

"बस यही एक समस्या है.. उसके लिए तुम्हे उसको वहीं लाना होगा.. महल में.." तनवी के चेहरे पर उदासी छा गयी..

"अब ये महल का क्या चक्कर है?" सवालों में से ही इतने सवाल निकल रहे थे कि पुराने सवाल प्रतिक भूरंभा जा रहा था...

"जहाँ तुम गये थे.. वहाँ एक पीपल का पेड़ है.. उसके नीचे ही हमारा महल है.. तुम्हे तनवी को वहीं लेकर आना होगा.."

"एक मिनिट.. एक मिनिट.. जो लड़की मुझे जानती नही, पहचानती नही.. उसको मैं कैसे ला सकता हूँ.. और वो भी ऐसी जगह पर जहाँ के बच्चे भी इतने ख़तरनाक हैं.." प्रतिक का सिर चकरा गया..

"इसका जवाब मेरे पास नही है.. पर अगर तुम उसके दिल में प्यार जगाओगे तो वो आ सकती है.. तुम्हारे साथ.. तुम्हे उसका प्यार भी जीतना होगा और भरोसा भी... ये काम तुम्हे अपने तरीके से करना होगा...."

" मुझे नही पता कि लड़कियों का दिल कैसे जीतते हैं.. इस मामले में एकदम अनाड़ी हूँ... तुम ही कुछ बताओ!" प्रतिक की समझ में कुछ नही आ रहा था..

"तुम जब चंद्रभान थे, तब भी ऐसे ही थे.. शर्मीले और झेंपू.. पर तुम्हे कुछ ना कुछ तो करना ही होगा..." तनवी अपने चंद्रभान की यादों में खोकर मुस्कुराने लगी....

" सॉरी तनवी.. ये सब मैं नही कर सकता.. किसी अंजान लड़की से मैने आज तक बात भी नही की है.. और तुम उसको यहाँ लाने को कह रही हो.. ये नही हो सकता.. और फिर उसको भी रात को ही लाना होगा.. है ना?"

"हाँ चंद्रभान.. ये मेरी मजबूरी है.."

"शिट.. नेवेर पासिबल.. ऐसा कभी नही हो सकता.. और फिर तुम ही बताओ.. मैं तुम्हारी बातों पर क्यू विश्वास करूँ.. और विश्वास कर भी लूँ तो मैं इतनी बड़ी टेंशन मोल क्यू लूँ..? ये जानने के बाद की तुम कोई भटकती हुई आत्मा हो; मेरे दिल में तुम्हारे लिए सहानुभूति के अलावा कुछ नही है.. पर फिर भी मैं माफी चाहता हूँ.. मेरी जिंदगी से निकल जाओ.. तुमने मेरी हँसती खेलती जिंदगी बर्बाद कर दी है.. मैं पागल सा हो गया हू.. तुम्हारी बात को सच मान भी लूँ तो मुझे अब कुछ याद नही है.. फिर मैं तो किसी भी लड़की से प्यार कर सकता हूँ.. शादी कर सकता हूँ.. सच बोलूं तो मैं सुबह गीता के पापा से अपने रिश्ते के बारे में बात करना चाहता हूँ.. मैने अपनी जिंदगी में इसी लड़की के सपने देखे हैं, जिसका चोला पहने अभी तुम मेरे सामने बैठी हो.. मुझे इससे प्यार हो गया है.. तो क्यू ना मैं तनवी के आगे पिछे बेवजह चक्कर लगाने की बजाय गीता पर ही डोरे डाल लूँ..? प्लीज़.. मेरा पिछा छोड़ दो.. आज के बाद मेरी जिंदगी में मत आना.. मैं तंग आ गया हूँ तुम्हारी बातें सुनकर... मैं और कुछ जानना नही चाहता.." प्रतिक ने सीधे और निर्दयी शब्दों में अपनी बात कह दी...

तनवी का चेहरा सफेद पड़ गया.. प्रतिक को इस बार पाकर भी खो देने के भय और गुस्से के वो काँपने सी लगी," चंद्रभान.. तुम्हारे वादे का क्या होगा..?" तनवी के मुँह से कहते ही सिसकी सी निकली...

"भाड़ में गया वादा.. आइ डोंट केयर.. मुझे मरना नही है अभी.. जींसा है.. अपने लिए.. घर वालों के लिए..!"

तनवी खड़ी हो गयी," ठीक है चंद्रभान.. मैं जा रही हूँ.. आइन्दा कभी नही आऊंगी.. मैने तो ये सोचकर तुम्हे कभी खुद को हाथ भी नही लगाने दिया कि मेरे द्वारा धारण की गयी देह किसी और की है.. उसको हाथ लगवाकर मैं तुम्हे दूषित करके खुद को पाप का भागी नही बनाना चाहती थी.. अगर तुम्हे यही पसंद है तो लो, नोच डालो अभी इसको, कर लो अपनी हवस पूरी..." कहते हुए तनवी ने गुस्से से अपना गले से पकड़ कर अपना कमीज़ खींच कर तार तार कर डाला.. गीता बनी तनवी अर्धनग्न अवस्था में नज़रें झुकाए सिसकियाँ ले रही थी..

प्रतिक की आँखें शर्म से झुक गयी.. उसको यूँ नज़रें झुकाए देख तनवी ने खड़े खड़े ही बोलना शुरू कर दिया," काश तुम्हे अहसास करवा सकती कि तुम क्या थे, काश तुम्हे

चंद्रभान और दुर्गावती की मोहब्बत से रूबरू करवा पाती.. तुम्हे चंद्रभान के वादे की कीमत का अहसास होता तो तुम कभी ऐसा ना कहते, जान पर खेल जाते अपनी तनवी को अपने गले से लगाकर उसको कम से कम इस जनम में पूर्ण नारी बनाने के लिए.. बेशक उसके पास दुर्गावती का दिल नही.. फिर भी उसने चंद्रभान को किया वादा हर जनम में निभाया है.. बेशक वो तुम्हारा इंतजार नही करती.. पर किसी का भी इंतजार नही करती वो.. इस जनम में भी ऐसे ही जाएगी.. और मेरा क्या है? काश मुझे तुम्हारे दिए गये लॉकेट से भी उतनी ही मोहब्बत ना होती जितनी कि तुमसे है.. तो मेरी आत्मा मेरे दिल को भी साथ लेकर निकल जाती.. यूँ ना तड़पता रहना पड़ता मुझे.. जनम जनम तुम्हारे आने के इंतज़ार में... " तनवी ने भरभराते गले से कहा और चुपचाप सिसकियाँ लेती उसके सपने से गायब हो गयी.....

# ४

अगली सुबह बुड्ढे ने आकर प्रतिक और विपिन को उठाया.. प्रतिक के सिर में दर्द था.. रात के सपने की बातें उसके दिमाग़ में अब हतोडे की तरह बज रही थी..

"क्या बात है? ठीक तो है ना?" विपिन ने उसको इस तरह सिर पकड़ कर बैठे देखा तो पूछ लिया..

"नही भाई.. सब ठीक है.. बस ऐसे ही सिर में दर्द हो रहा है.." प्रतिक ने विपिन की और देखते हुए कहा..

"तो अब चलें या तेरी तनवी से मिलने की तमन्ना है.." बुड्ढे के वापस जाते ही विपिन ने प्रतिक को छेड़ा...

"उसका नाम भी मत ले यार मेरे सामने.." प्रतिक फट पड़ा...

"अरे मैं तुझे फोन करके टीले पर बुलाने वाली लड़की की बात नही कर रहा.. मैं इसकी बात कर रहा हूँ; गीता की.. मिली तो यही थी ना तुमसे.. काफ़ी पहले.. तू कह रहा था..." विपिन ने उसको खंगालना शुरू किया...

"अभी कुछ मत बोल यार.. प्लीज़.. मेरे सिर में दर्द है.." प्रतिक अब भी अपना सिर पकड़े बैठा था...

"चल छोड़.. तू टेंशन क्यू लेता है.. अभी निकलते ही हैं बस यहाँ से.." प्रतिक ने उस वक़्त बात को टाल दिया..

"मैं फ्रेश होकर आता हूँ यार.. टॉयलेट किधर है.. कुछ आइडिया है..?" प्रतिक खड़ा होते हुए बोला...

"बाहर निकल कर दाई तरफ सीधा चला जा.."

"शुक्रिया.." कहकर जैसे ही प्रतिक बाहर निकलने को हुआ, उनके लिए चाय बनाकर ला रही गीता उससे टकराते टकराते बची..,"ओह सॉरी..!" प्रतिक ठिठक कर खड़ा हो गया..

गीता उसके सामने सिर झुका कर खड़ी हो गयी.. क्या गजब की मिठास थी उसके चेहरे पर.. सुंदरता का प्रतीक कहें तो कोई अतिशयोक्ति ना होगी.. मारे लज्जा के उसने अभी तक अपनी आँखें उठाई ही ना थी उपेर.. एक बार भी उनसे आँखें चार नही की... काफ़ी देर तक जब प्रतिक उसको ठगा सा खड़ा देखता रहा तो उसको बोलना ही पड़ा," जी.. चाय.."

"श.. अंदर रख दो.. मैं आता हूँ अभी.. शुक्रिया!" कहकर प्रतिक उसको रास्ता देकर आगे निकल गया..

गीता चाय लेकर अंदर गयी और टेबल विपिन की और सरका कर चाय उस पर रख दी.. मुड़कर जैसे ही वा बाहर जाने के लिए पलटी.. विपिन ने उसको टोक दिया," क्या नाम है तुम्हारा?"

गीता के कदम वहीं ठिठक गये... शर्मीली थी पर पागल नही थी.. उसके बापू ने कितनी ही बार उसका नाम लिया उनके सामने.. वो समझ गयी.. लाइन मारने की फिराक में है... वह दो पल रुकी और फिर से आगे बढ़ने लगी..

"तनवी.. ये भी तुम्हारा ही नाम है ना..!" विपिन ने उसके बढ़ते कदमों पर फिर से विराम लगा दिया..

"जी.. जी नही.." गीता ने जवाब दिया..

"प्रतिक तुम्हारे लिए ही यहाँ आया है.. कोई तुम्हारा नाम लेकर उसको यहाँ बुला रही थी.. तुम मिले हो ना पहले.. वो ... तुम दोनो प्यार भी तो करते हो.." विपिन को जितना पता था.. उतना बोल दिया...

गीता को विपिन की बातें समझ में नही आई थी.. वह पलट कर कुछ बोलना चाहती थी.. पर उसकी हिम्मत ना हुई.. बिना पलटे, बिना रुके वा बाहर निकल गयी...

"अजीब लड़की है.." विपिन बड़बड़ाया... और न्यूजपेपर उठाकर पढ़ने लगा... गीता ने विपिन की आख़िर में कही गयी बातों को सुन लिया...

कुछ देर बाद प्रतिक वापस आया तो बुड्ढ़ा वहीं बैठा था... प्रतिक आते ही ठंडी हो चुकी चाय उठाने लगा तो बुड्ढे ने उसको रोक दिया," रहने दो बेटा.. ठंडी हो गयी होगी.. गीता कह रही थी वो और बनाकर ला रही है..

"ओह अंकल जी.. क्या ज़रूरत थी परेशान होने की..." प्रतिक ने अपनी बात ख़तम भी नही की थी गीता वहाँ हाजिर हो गयी.. ट्रे में एक कप चाय लेकर..

विपिन ने आँखों ही आँखों में प्रतिक की और इशारा किया.. मानो कह रहा हो.. "क्या बात है.. तुम पर तो बड़ी मेहरबान है.."

इस बार गीता सीधी आकर प्रतिक के सामने खड़ी हो गयी और ट्रे उसकी और बढ़ा दी... प्रतिक ने चेहरा उठाकर उसकी नज़रों में झाँका.. इस बार आश्चर्यजनक रूप से वो उसकी ही और देख रही थी.. आँखों में आँखें डाले.. प्रतिक उसकी आँखों में देखते ही सम्मोहित सा हो गया.. अपनी आँखों में ही जहाँ भर की खुशियाँ समेटे वा उसकी और टकटकी लगाए खड़ी रही.. जब काफ़ी देर तक प्रतिक ने ट्रे नही पकड़ी तो गीता को बोलना ही पड़ा," चाय लीजिए...!"

"हां.. शुक्रिया!" प्रतिक झेंप सा गया.. गीता के बापू वहाँ नही बैठे होते तो विपिन कोई ना कोई कॉमेंट ज़रूर करता.. उनके आँखे चार करने के अंदाज पर..

"अच्छा अंकल जी.. हम अभी निकलेंगे... बता सकते हैं कि पंक्चर लगाने वाला कहाँ मिल सकता है...?"

"क्या जल्दी है बेटा.. खाना वाना खाकर निकल जाते.." बुड्ढे ने अतिथि धर्म के नाते बात कही..

"नही अंकल जी.. पहले ही आप.. वैसे भी हम लेट हो रहे हैं.. पंक्चर भी लगवाना है.. जाने कहाँ मिलेगा... हमें आज्ञा दीजिए अब.."

"ठीक है बेटा.. जैसी तुम्हारी मर्ज़ी.. पंक्चर की एक दुकान अगले गाँव में है.." बुड्ढे ने बताया ही था कि बाहर से गीता की आवाज़ आई," बापू.. एक बार आना!"

" एक मिनिट.." बुड्ढ़ा कहकर बाहर निकल गया... प्रतिक के कप रखते ही वो दोनो भी यूँही बाहर निकल कर गाड़ी के पास आ गये..

"विपिन.. ये कैसे हुआ? तूने ढंग से देखा था ना रात को..." प्रतिक उछल पड़ा..

"क्या हुआ?"

"हवा तो देख टायर्स की..." प्रतिक जैसे चिल्ला सा रहा था...

"ओह माइ गॉड.. कमाल है.. हां मैने मोबाइल की लाइट जला कर देखा था.. तब तो किसी टायर में हवा नही थी.. हद हो गयी यार.. यहाँ भी?"

"क्या हुआ बेटा..?" प्रतिक की चीख सी सुनकर बुड्ढ़ा लगभग भागता हुआ बाहर आया..

"अंकल जी.. ये.. हवा.. रात को तो बिल्कुल गायब थी.. अब कहाँ से आ गयी...? प्रतिक ने टायर्स की और इशारा करते हुए कहा...

बुड्ढे के चेहरे पर शिकन तक नही आई," हम ऐसे चमत्कारों के आदि हो चुके हैं बेटा.. आज रात ही... गीता सुबह उठी तो उसका कमीज़ गले से फटा हुआ था.. नीचे तक.. बुरा मत मानना.. पर अगर कमरे की कुण्डी बंद ना होती तो मैं तुम लोगों के बारे में भी जाने क्या क्या सोचता... पर यहाँ कुछ भी हो सकता है.. "

विपिन ने आश्चर्य से एक बार फिर प्रतिक की और देखा.. वो रात को सपने में आई तनवी के बारे में सोच रहा था.. सुन्न सा खड़ा खड़ा...

"चल ठीक है अंकल जी.. अब हम निकलें..." विपिन सब कुछ भूल कर जाने की तैयारी करने लगा...

"शहर की और ही जाओगे ना बेटा.." बुड्ढे ने विनम्रता से सवाल किया...

"हां.. शहर से होकर ही गुजरेंगे... क्यू?" विपिन ने जवाब देते हुए सवाल किया..

"नही.. कुछ खास बात तो नही थी.. पर वो.. गीता को भी शहर ही जाना है.. कॉलेज में.. अगर तुम ज़्यादा लेट ना हो रहे होते तो वो भी साथ ही चली जाती.. बस के इंतजार में बहुत टाइम खराब हो जाता है.. वो कह रही थी..." बुड्ढे ने कहा..

विपिन मन ही मन उछल पड़ा... खुशी से.. पर खुशी को मन में दबाकर रखते हुए बोला," ये भी कोई कहने की बात है.. वैसे हमें कोई जल्दी भी नही है.. अब तो पंक्चर भी नही लगवाना.. जितनी देर कहें हम रुकने को तैयार हैं.. "

"अच्छा बेटा!.. वैसे तो उसका कॉलेज अभी २-३ घंटे बाद है.. पर मैं उसको कह देता हूँ.. वह जल्दी से तैयार हो जाएगी..." बुड्ढ़ा खुश होते हुए बोला..

"नही अंकल जी.. कोई जल्दी नही है.. हम तब तक एक काम कर आते हैं.. घंटे भर में आ जाएँगे.. तब तक वो भी तैयार हो लेंगी..." विपिन का मन सातवें आसमान पर था...

"ठीक है बेटा.. जैसी तुम्हारी इच्छा.. मैं गीता को बोल देता हूँ...." बुड्ढ़ा बड़ा ही खुश लग रहा था....

# ५

"हम बस घंटे भर में आते हैं अंकल जी..." विपिन कहते हुए गाड़ी में बैठ गया.. प्रतिक भी उसके साथ जा बैठा.. पर उसकी समझ में नही आ रहा था की ये विपिन आख़िर जा कहाँ रहा है... विपिन ने बुड्ढे के अंदर जाते ही गाड़ी स्टार्ट करके घुमा दी," क्यू बे.. अब तो खुश हो जा.. तेरे मन की हो गयी.. जी भर कर बात कर लेना.. मुझसे तो बात की नही ढंग से.." कहकर विपिन ने बत्तीसी निकाल दी..

"पर अभी तुम वापस कहाँ जा रहे हो?" प्रतिक ने पूछा...

"पुराने टीले पर.. देखें तो सही आख़िर क्या ड्रामा है वहाँ.." विपिन ने गाड़ी की स्पीड तेज कर दी..

"तू.. पागल हो गया है क्या..? मुझे नही जाना वहाँ..." प्रतिक लगभग उछलते हुए बोला...

"तुझे लगता है.. कोई दम है बुड्ढे की बातों में.. मुझे तो बहुत बड़ा नाटक लग रहा है.. और मुझे लगता है कि बूढ़ा भी इस नाटक में शामिल है.. देखा.. उसको गाड़ी में अपने आप हवा भरी जाने पर भी आश्चर्य नही हुआ.. उल्टा कहानी बनाने लगा.. बेटी का कमीज़ फट गया रात को.. हुन्ह.. और अब देख.. कैसे अपनी बेटी को हम जवान मुस्टंडो के साथ भेज रहा है.. भला इतना भी नादान है क्या कोई आज की दुनिया में... मुझे लगता है कि गीता ही तनवी बनकर तुझे फोन करती होगी.. कुछ ना कुछ चक्कर तो ज़रूर है प्यारे.. कहीं ये तेरी करोड़ों की संपत्ति हथियाने की तो नही सोच रहे.. तेरा उल्लू बनाकर..." विपिन बोरंभा ही जाता अगर प्रतिक उसको बीच में ही ना टोकता..

" चुप हो जा यार.. ऐसा कुछ नही है.. ये सब महज इत्तिफ़ाक़ है.. तू गाड़ी वापस मोड़ ले..." प्रतिक झल्लाया...

"गाड़ी तो अब खूनी तालाब पर ही जाकर रुकेगी बेटा.. मुझे वो पीपल का पेड़ देख कर आना है.. और उस बच्चे को भी ढूँढना है.. तुझे उतरना है तो उतर जा.. रोकू क्या?"

प्रतिक कुछ नही बोला.. कुछ सोचता हुआ गाड़ी के बाहर देखने लगा....

"लेट नही हो जाएँगे क्या? अब पैदल चलना पड़ेगा..." प्रतिक ने आगे रास्ते पर गहरा गड्ढा सा देखते हुए कहा..

"यहाँ से गाड़ी को रास्ते से नीचे उतार कर ट्राइ करता हूँ.. उसके बाद ज़्यादा दिक्कत नही आएगी... शायद निकल जाए... चलो यहाँ से तो पार हुए... चल तू बता अब.. क्या चक्कर है तेरा गीता के साथ.. अब तो मुझे लग रहा है कि आज तू कुँवारा नही रहेगा..तुझे क्या लगता है?" वो गाड़ी समेत धीरे धीरे चलते हुए बढ़ते जा रहे थे..

"कुछ नही लगता भाई.. मेरी समझ में तो कुछ नही आ रहा.. अब मैं तुझे कैसे बताऊं?" प्रतिक ने उसकी और देखते हुए कहा...

"क्यू? मुझे नही बताएगा तो किसको बताएगा.. साले, दोस्त हूँ मैं तेरा... भाई हूँ..." विपिन ने उसपर बताने के लिए ज़ोर डाला..," अगर आज तूने सब कुछ नही बताया तो समझ ले.. फिर तेरा मेरा मामला यहीं ख़तम है..."

"तो ये तालाब है वो.. इसमें तो अच्छा ख़ासा साफ सुथरा पानी है... रात को लाल कैसे हो जाता होगा.." विपिन तालाब को देखते ही प्रतिक से कुछ भी पूछना भूल गाड़ी रोक कर वहीं उतर गया.. प्रतिक भी साथ ही नीचे आ गया..," चल ना यार.. वापस चलते हैं.."

"अबे क्यू फट रही है.. ताऊ की बात मान भी लें तो दिन में तो यहाँ कुछ नही होता.. चल आजा.." कहकर विपिन एक रास्ता देख दाई और बढ़ चला..

"वो बात नही है यार.. पर मेरा मन नही है.. आगे चलने का.. मूड ऑफ है.." प्रतिक उसके पिछे पिछे चरंभा रहा...

"कमाल है यार.. अब तो कीचड़ नही है.. लगता है हम दूसरे रास्ते से आए हैं आज.."

प्रतिक कुछ नही बोला.. उसके दिमाग़ में तनवी की बातें कौंध रही थी.. अगर सपने में कुछ सच्चाई है तो वो उसको देख रही होगी ज़रूर.. कम से कम उसको पता तो चल ही गया होगा की मैं आया हूँ.. सोच कर ही प्रतिक चौकन्ना हो गया...

चलते हुए वो तालाब के पार जाकर उसी जगह खड़े हो गये जहाँ कल रात वो उस बच्चे से मिले थे... सूनापन वहाँ अब भी वातावरण में मौजूद था पर वो सूनापन अब भयावह नही था.. इसके उलट अजीब सी शांति वहाँ पसरी हुई थी.. इंसानो से रहित, हल्की हल्की बह रही हवा माहौल को और भी चित्ताकर्षक बना रही थी... ऐसा लगता था की यहाँ पहले कोई गाँव बस्ता होगा.. पर अब वहाँ कुछ नही था.. सिवाय पुरानी ईंटों की गलियों, टूटी फूटी आधी गिरी हुई दीवारों और एकाध आवारा जानवरों के...

"कहाँ मिल सकता है वो बच्चा.. साले ने रात को खूब उल्लू बनाया.. सच में डर गया था मैं.." विपिन एक जगह जाकर खड़ा हो गया...

"मैं भी.." प्रतिक के मुँह से निकला...

"मुझे लगता है वो किसी घूमंतू जाती का रहा होगा.. ये लोग ऐसी ही जगहों पर जाकर रहते हैं..." विपिन बच्चे के बारे में आइडिया लगाने लगा...

"तुझे वो आदिवासी लगता है.. कितना प्यारा था दिखने में.. क्या पता वो भी कोई आत्मा ही हो " प्रतिक धीरे धीरे उसको लाइन पर लाना चाहता था.. ताकि जब वो उसकी कहानी सुने तो हँसे नही...

"अब तू भी शुरू हो गया ताऊ की तरह... और मुझे जेनेटिक्स मत सीखा.. आदिवासी क्या खूबसूरत नही हो सकते.. क्या पता किसी देसी आदमी का टांका फिट बैठ गया हो किसी आदिवासी औरत के साथ.. होता है यार... पर अब कहाँ गये वो..?" विपिन चारों और घूम घूम कर कुछ तलाश कर रहा था...

"कौन?" प्रतिक ने पूछा..

"आदिवासी यार.. और कौन मिलेगा यहाँ.. अर्रे देख.. वही पीपल का पेड़.. जिसके बारे में ताऊ बात कर रहा था.. आ.." विपिन उसकी और बढ़ चला...

"रहने भी दे अब.. चल वापस चल.. लेट हो रहे हैं..." प्रतिक वहीं खड़ा खड़ा बोला.. मन ही मन तनवी की याद और उसकी बताई गयी वो जगह प्रतिक को अजीब सा अहसास दे रही थी.. उसका मन नही कर रहा था.. एक पल भी वहाँ खड़ा रहने को..

"अबे आ ना.. २ मिनिट में कुछ नही होता.. " विपिन ने वापस आकर प्रतिक का हाथ पकड़ कर अपने साथ खींच लिया..," वैसे भी देरी किस बात की.. उसको आज कॉलेज थोड़े ही जाना है.. तेरे साथ चौन्च भिड़ाएगी आज तो.. प्यार भरी बतियां करेगी.. सच में बहुत प्यारी है.. अगर इनकी तरफ से कोई साजिश ना हुई तो तू बेशक इससे शादी कर लेना.. और नही तो होली पर तो.." कहकर विपिन खिलखिला कर हंस पड़ा...

"मुझे नही जाना यार आगे.. तुझे जाना है तो जा.." प्रतिक अपना हाथ छुड़ा कर वहीं खड़ा हो गया... तनवी की बातें उसके दिमाग़ में अब हतोडे की तरह बजने लगी थी.. उसका सिर भारी सा होने लगा...," मैं यहीं रुक जाता हूँ.."

"साले डरपोक.. मुझे नही पता था तेरी भी... चल तू यहीं रुक.. मैं अभी आया देखूं तो सही कैसा पेड़ है और कितने वॉट का बल्ब टंगा है उस पर.. जो सारी रात उस पर रोशनी रहती है..." कहते हुए विपिन उसको वहीं छोड़कर आगे बढ़ गया...

प्रतिक अब अकेला रह गया था.. पर जाने क्यू उसको हवा की साय साय में से छन छन कर आ रही कुछ अजीब सी हलचल सुनाई दे रही थी.. वो सच में ही मानने लगा था की कुछ ना कुछ तो ज़रूर गड़बड़ है उसकी लाइफ में...तनवी की रात को कही गयी बातें रह रह कर उसके दिमाग़ में गूँज रही थी.. बेशक प्रतिक को वहाँ डर नही लग रहा था.. पर दिमाग़ में लगातार अजीबोगरीब तरीके से रात की यादों का भंवर उसके दिलो दिमाग़ को शिथिल सा कर रहा था...

अचानक प्रतिक को अहसास हुआ कि उसको पिछे से किसी ने छू लिया है.. घबराकर उसने पिछे पलट कर देखा.. पर वहाँ कुछ नही था.. कुछ भी नही..," शिट.. ये मुझे क्या हो गया है...?" मन ही मन प्रतिक बड़बड़ाया.. और वापस मूड कर विपिन को देखने लगा.. विपिन पेड़ के पास ही खड़ा था...

तभी छोटी सी दीवार पर रखा पत्थर वहाँ से लुढ़क कर नीचे गिर गया.. इत्तिफाक से प्रतिक उधर ही देख रहा था.. अपने आप ही प्रतिक की धड़कने बढ़ गयी.. धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए उसने दीवार के दूसरी तरफ झाँका.. पर वहाँ कुछ नही था...

सब कुछ अजीब था.. पर प्रतिक को अब वो सब अजीब नही बल्कि एक इशारा लग रहा था.. तनवी की तरफ से, उसके वहाँ पर होने का...

"तुम यहीं हो क्या?" प्रतिक ने धीरे से कहा... पर उसको कोई जवाब नही मिला...

"तनवी... तनवी.. अगर यहाँ हो तो जवाब दो..." प्रतिक ने फिर पुकार कर देखा.. पर कोई होता तो जवाब मिरंभा ना...

तभी उसको विपिन अपनी और आता दिखाई दिया.. प्रतिक चुप हो गया और उसकी ही और देखने लगा...

"मुझे विश्वास नही था तुम यहाँ आओगे.." विपिन आकर उसके पास खड़ा हो गया..

"हाँ.. मैं आना नही चाहता था.. पर तू ही ले आया ज़बरदस्ती.. चल अब.." प्रतिक ने घूमते हुए जवाब दिया और चलने लगा...

"यानी तुम मेरे लिए यहाँ नही आए..!" विपिन वहीं खड़ा हो गया..

"अब चल यार.. तेरे लिए ही तो आया हूँ.. वरना तू मुँह फूला लेता.. और मुझे अगली बार काम पड़ता तो नखरे दिखाता.. चल अब.." प्रतिक वापस आकर उसके पास खड़ा हो गया...

"पर.. क्या तुमने सोचा नही की मेरा क्या होगा..." विपिन अपनी जगह से हिला नही.. वहीं खड़ा खड़ा बोरंभा रहा...

"क्या अनाप शनाप बक रहा है.. अब चल भी..." प्रतिक झल्ला उठा.. उसको वहाँ से निकलने की जल्दी थी...

"पर तुम समझने की कोशिश क्यू नही करते.. चंद्रभान.." विपिन के मुँह से 'चंद्रभान' निकलते ही प्रतिक उछल पड़ा..

"व्हाट.. क्या बोला तू..?"

"मेरा क्या होगा चंद्रभान.. तुम्हारे वादे का क्या होगा.. बोलो"

" माइ गॉड.. तनवी.." प्रतिक के आश्चर्य का ठिकाना ना था..

"हाँ चंद्रभान.. मैं अब भी तुम्हारा इंतजार कर रही हूँ.. प्लीज़.. तनवी को ले आओ यहाँ.. मुझे मुक्ति दे दो.. फिर जो मन में आए करना.. मैं कब से तुम्हारे इंतजार में तड़प रही थी.. कम से कम...... मुझे .....यहाँ .....से .....निकाल तो दो...." कहते ही विपिन धड़ाम से पीठ के बल गिर पड़ा," चंद्रभान.. मुझे वापस ले चलो.. पीपल के पास.."

"विपिन.. क्या हो गया तुम्हे..?" प्रतिक ने घुटनो के बल बैठ कर उसका सिर अपने हाथों में उठा लिया.. सब कुछ पलटता दिखाई दिया उसको.. धरती घूमती सी दिखाई देने लगी..

"मुझे.. वापस ले चलो चंद्रभान.. धूप में मुझे... इंफेक्शन होता है.. उसका जहर तुम्हारे दोस्त की रगों.... में फैलना शुरू... हो गया है... मुझे जल्दी से.. वहीं ले चलो.. मैं वापस.... चली जाऊंगी..." विपिन अटक अटक कर बोल रहा था.. उसकी साँस फूलती जा रही थी..

प्रतिक की समझ में और कुछ ना आया.. उसने बड़ी मुश्किल से विपिन को उठाकर कंधे पर डाला और पीपल की तरफ दौड़ पड़ा...

"हाँ.. यहीं लिटा दो.. पेड़ के साथ.."

प्रतिक ने वैसा ही किया...

"मुझे मुक्ति दिलाना चंद्रभान.. इसको ले जाओ यहाँ से.." कहते हुए विपिन की आँखें बंद हो गयी और प्रतिक ने वैसा ही किया जैसी उसको इंस्ट्रक्शन मिली थी.. वह पहले की तरह विपिन को कंधे पर उठा कर तेज़ी से चलने लगा...

"अबे.. मुझे यूँ क्यू उठा रखा है उल्लू..उतार नीचे..." विपिन के बोलते ही प्रतिक की जान में जान आई और उसने विपिन को कंधे से उतार कर खड़ा कर दिया...

विपिन की साँसे तेज़ी से चल रही थी.. मानो बहुत लंबी रेस लगाकर आया हो..," क्या था ये.. कहाँ उठा ले जा रहा था मुझे.. ?"

"तुझे मालूम भी है तू कहाँ है..?" प्रतिक ने उसका हाथ पकड़ कर खींच लिया और आगे बढ़ने लगा...

"बता तो क्या हुआ..?" विपिन अब सामान्य होने लगा था..

"चल बाहर चल कर बताता हूँ..." प्रतिक ने कहा और कुछ समय के बाद ही वो गाड़ी के पास थे..

"तुझमें भूत आ गये थे...." प्रतिक ने उसकी और देखते हुए कहा...

"हा हा हा हा हा... तुझे पता नही.. मैं अब भी भूत ही हूँ...भयंकर भूत..." विपिन ने गुर्रकार कहा और फिर बोला..," चुप बे साले.. मुझे ये मज़ाक एक दम घटिया लगते हैं.. चल गाड़ी में बैठ.." कहकर विपिन ड्राइविंग सीट पर आ गया..

"तुझे विश्वास नही होता ना.. तुझे पता भी है मैं तुझे कहाँ से लाया हूँ.." प्रतिक उसके साथ वाली सीट पर बैठता हुआ बोला...

"हाँ.. पता है.. मैं पेड़ के साथ लेटा हुआ था जब तुमने मुझे उठाया..." विपिन ने गाड़ी स्टार्ट करके जवाब दिया..

"क्यू... क्यू लेटा था तू वहाँ.." प्रतिक ने फिर सवाल किया..

विपिन एक पल के लिए चुप हो गया.. फिर प्रतिक के चेहरे पर नज़रें थाम कर बोला," पता नही.. कमाल है यार.. विश्वास नही होता.. क्या पता नींद आ गयी हो.. छाव देखकर......."

" हम्मम.. हो सकता है..." प्रतिक ने बात को बढ़ाना नही चाहा.. उसको विपिन के नेचर का पता था.. अगर वो अभी विपिन को वो बातें बता देता जो अभी थोड़ी देर पहले हुई तो विपिन को वापस वहीं जा कर छानबीन शुरू कर देनी थी..," अब तो सीधे चल रहे हैं ना.. गीता के घर?"

"आए हाए.. क्या बात है मेरी जान..? तू तो बड़ा उतावला हो रहा है.. चिंता ना कर.. आज सारा दिन वो तेरे साथ ही रहेगी.. बस हल्का सा इशारा कर देना उसको..." विपिन शरारती

सुर में बोलते हुए मुस्कुराने लगा...

"तुझे वो कैसी लगती है...?" प्रतिक ने विपिन से पूछा...

"क्या मतलब?"

"बस ऐसे ही.. बता ना.. कैसी लगती है...?" प्रतिक ने फिर ज़ोर दिया...

"स्वीट है, सुंदर है, शर्मीली है.. कुल मिलकर मेरी भाभी बनने के लायक है.. पर अगर टीले पर बुला कर डराने की साज़िश में उसका या उसके बाप का कुछ हाथ मिला तो मैं उनको छोड़ूँगा नही.. पहले बता रहा हूँ.. मुझे धोखेबाज़ी से सख़्त नफ़रत है..." विपिन ने सामने आ गये गड्ढे को देख कर गाड़ी नीचे उतार दी...

"मैं क्या पूछ रहा हूँ.. और तू क्या जवाब दे रहा है..?" प्रतिक ने कहा..

"अबे दे तो दिया जवाब.. झकास है एकदम... ले लेना आज... बाहों में.. हा हा हा.." विपिन ने मसखरा किया...

"और अगर... मुझे किसी और से प्यार हो तो.....?" प्रतिक ने उसके चेहरे की और देखते हुए कहा...

"साले.. अपने साथ मेरी भी दुर्गति क्यू करवा रहा है.. कितनी 'बसंती' हैं तेरे पास.. कल इसके लिए फट रही थी और आज.. अब मुझे मत बताना वो नयी लड़की कौन है.. समझा..!" विपिन ने झल्ला कर बनावटी गुस्से से उसकी और देखा...

"म् म्म.मै..तो मज़ाक कर रहा हूँ यार...!" प्रतिक ने हिचकिचाते हुए बात कही और बाहर देखने लगा.. गाँव करीब आ गया था..

"मज़ाक कर रहा हूँ.." विपिन ने अजीब सा मुँह बनाकर उसकी नकल उतारी.. और घर के सामने गाड़ी रोक कर हॉर्न दिया... बुड्ढ़ा लगभग भागता हुआ बाहर आया..

"वो.. तैयार हो गयी क्या अंकल जी..?" विपिन ने गाड़ी का शीशा नीचे करते हुए पूछा...

"हां.. बेटा.. वो तो तैयार है.. तुम खाना खा लो एक बार.. गीता ने बना रखा है.. तुम दोनो के लिए..."

प्रतिक कुछ बोलने ही वाला था कि विपिन ने पहले ही बोल दिया," ठीक है अंकल जी.. एक बार और सही..." कहकर दोनो गाड़ी से उतर कर अंदर आ गये...

अंदर जाते हुए, खाना खाते हुए और फिर बाहर आते हुए.. विपिन अपनी बारीक नज़र से घर के कोने कोने का मुआयना कर रहा था.. शायद उनके साथ पिछली रात हुई घटना से संबंधित किसी भी सुराग की तलाश में.. पर कुछ होता तो मिरंभा.. आख़िरकार चारों घर से बाहर निकल आए.. गीता के लिए प्रतिक ने पिछली खिड़की खोल दी और वो चुपचाप गाड़ी में जा बैठी," अच्छा बापू.. मैं चार बजे तक आऊँगी..!"

"ठीक है बेटी.." और फिर विपिन से मुखातिब होते हुए बोला," अच्छा बेटा.. आराम से जाना.. और इसको बस-स्टँड उतार देना.. वहाँ से चली जाएगी.. अपने आप.."

"क्यू चिंता करते हो अंकल जी.. हम कॉलेज ही छोड़ जाएँगे.. अच्छा.. नमस्ते.."

"भगवान तुम्हारा भला करे बेटा..." बुड्ढे के ऐसा कहते ही विपिन ने गाड़ी को रफ़्तार दे दी.....

वहाँ से रवाना होने के बाद जब प्रतिक और गीता में से कोई कुछ नही बोला तो मजबूरन विपिन को ही अपना मुँह खोलना पड़ा," जा प्रतिक.. पीछे बैठ जा.."

"म्मैई.. कक्यू?" प्रतिक हकला सा गया...

विपिन ने बॅक व्यू मिरर को सेट करके गीता के चेहरे पर नज़र डाली.. लगता था उस पर उसकी बात का कोई असर नही हुआ.. या शायद उसका ध्यान उंनपर था ही नही.. अपनी लंबी काली जुल्फो को बार बार कानो के पिछे ले जाने की कोशिश सी करती हुई वह बाहर निहार रही थी... उसका चेहरा एकदम शांत था.. ठहरे हुए जल की तरह, ना तो मुस्कान ही उसके चेहरे पर थी और ना ही कोई शिकन..

"अबे तू नही तो क्या मैं जाऊंगा.. सेट्टिंग तेरी है या मेरी..?" इस बार विपिन ने जान बूझकर तेज बोला था, गीता ने उसकी बात सुनकर तुरंत प्रतिक्रिया दी.. पर बोल कर नही.. अचानक उसने नज़रें घूमकर विपिन को देखा और अपनी गर्दन झुका ली..

" भाई तू गाड़ी चलाता रह ना.. कहीं नही जाना मुझे..!" प्रतिक ने खिसियकर जवाब दिया.. उसका मन ही नही था गीता से बात करने का... होता भी तो अंजान लड़की से क्या बात करता.. अब तो सब साफ हो ही चुका था... कम से कम प्रतिक के दिमाग़ में...

"अजीब किस्म का प्राणी निकला तू.. २ दिन से मुझे गधे की तरह हांक रहा है और अब कहता है कि... देख ले.. अगर तुझे कोई प्राब्लम नही है तो मैं शुरू हो जाऊ?" विपिन अपनी बात का मतलब आँखों ही आँखों में प्रतिक को समझाता हुआ बोला...

उनको इस तरह की बातें करते देख गीता के कान खड़े हो गये थे.. उसका चेहरा कुछ फीका सा पड़ गया था.. जब उससे रहा ना गया तो वो उनकी ही और देखकर ध्यान से बातें सुनने लगी....

"तू चरंभा रह ना भाई.. बता तो रहा हूँ.. ऐसा कुछ नही है.. वो मेरी ग़लतफहमी थी.. तू जो समझ रहा है, यहाँ वो मामला नही है..." प्रतिक ने उसको चुप करने का प्रयास किया...

"ठीक है फिर.. तेरा मामला नही है तो मैं फिर कर लेता हूँ मामला.. अब बीच में मत बोलना.." शहर को नज़दीक आते देख विपिन ने अचानक नहर के साथ साथ बने कच्चे रास्ते पर गाड़ी मोड़ दी...

गीता सिहर गयी और कपकपाती हुई आवाज़ में बोली," ये.. ये कहाँ लेकर.... जा रहे हैं आप.. गाड़ी रोकिए....!"

"चिंता मत करो तनवी जी.. ये रास्ता सीधा शॉर्टकट वहीं जाता है.. जहाँ आप जाना चाहती थी.. हा हा हा" कहकर विपिन ने सिटी बजानी शुरू कर दी..

गीता बदहवासी में गाड़ी की खिड़की पीटने लगी..," मुझे उतार दो.. मैं चली जाऊंगी.. अपने आप!"

प्रतिक को विपिन के व्यवहार पर ताज्जुब हो रहा था.. इतनी बचकानी हरकत विपिन भी कर सकता है.. प्रतिक को कतई उम्मीद नही थी," क्या कर रहा है यार.. ये वो लड़की नही है.. समझा कर.. इसका कोई कुसूर नही..."

विपिन ने प्रतिक को देखते हुए अपनी दाई आँख मारी.. मजबूरन प्रतिक को चुप हो जाना पड़ा.. जाने क्या करना चाहता था विपिन...

"ययएए.. आप लोग कहाँ लेकर जा रहे हैं.. गाड़ी रोकिए प्लीज़.." गीता गिड-गिडाने लगी..

विपिन ने उसकी बात पर कोई ध्यान नही दिया.. गाड़ी उसी गति से आगे दौड़ती रही..

"हमने सुना है किसी ने तुम्हारा कमीज़ फाड़ दिया रात को.. कौन आशिक था भला.."

गीता को उसकी बातों से ज़्यादा अपनी जान की फिकर हो रही थी..," मुझे नही पता.. आप गाड़ी रोक दीजिए प्लीज़.."

"बताइए तो सही.. फिर मैं आपको वापस छोड़ आऊंगा.. वादा रहा.. वैसे किसी का भी कुसूर नही है.. आप हैं ही इतनी गरम की आपके साथ ज़बरदस्ती करने का मौका मिले तो कोई फाँसी की भी परवाह नही करेगा.. क्यू प्रतिक?"

"प्रतिक ने मुँह पिचका लिया.. उसको गीता पर बड़ी दया आ रही थी..

"रोक दीजिए प्लीज़.. गाड़ी वापस ले चलिए.. मैं.. आपके हाथ जोड़ती हूँ.." सच में ही हाथ जोड़ कर गीता रोने लगी थी...

"देखिए मिस.. मुझ पर आँसू असर नही करते.. लड़कियों का तो शिकारी हूँ मैं.. ५ रेप केसेस भी हैं मुझ पर.. इसीलिए सलामती इसी में है कि आप वो बोलना शुरू कर दें जो मैं पूछ रहा हूँ.. वरना.. मुझे अपने जज्बातों पर काबू करने की आदत नही है.. और आपके मामले में तो मैं रियायत देने के मूड में कतई नही हूँ.. " विपिन ने फिल्मी लहजे में बात कही...

गीता का गला सूख गया था उसकी बातें सुनकर.. धीरे धीरे अपनी सिसकियों पर काबू पाती हुई सी बोली," क्या...?"

"क्या ये सच है कि रात को किसी ने आपकी कमीज़ फाड़कर उपर से नंगी कर दिया था...?" विपिन ने पूछताछ शुरू की..

गीता का सिर शरम के मारे झुक गया.. पर उसने अपनी गर्दन हां में हिला ही दी...

विपिन ने हालाँकि उसका हिरंभा हुआ सिर देख लिया था.. पर फिर भी वो बोला," बोलो!"

"हां.." बड़ी मुश्किल से गीता के गले से आवाज़ निकली...

"किसने?" विपिन का अगला सवाल था...

"पता नही.." गीता ने सिर झुकाए हुए ही जवाब दिया...

"मतलब कोई आपको नंगी कर गया और आपको पता भी ना चला.. आपको लगता है मुझे विश्वास हो जाएगा.."

"वो हमारे गाँव में अक्सर कुछ भी अजीब हो जाता है.. इसीलिए हमें आदत हो गयी है.." गीता ने संयम से जवाब देने में ही भलाई समझी...

"आदत? यूँ.. नंगी होने की.."

गीता ने इस बात का कोई जवाब नही दिया...

"फिर तो मैं भी ट्राइ कर सकता हूँ.. नही?" विपिन ने बेबाकी से कहा...

गीता सुबकने लगी.. उसके पास बोलने के लिए कुछ नही बचा था..

"चलिए छोड़िए.. ये बता दो कि मेरे शेर से आप कब मिली थी.." विपिन ने अपना लहज़ा अपेक्षाकृत नरम करते हुए पूछा...

"जी..?" गीता कुछ समझी नही..

"इससे.. प्रतिक से आपकी मुलाक़ात कब हुई थी..?" विपिन ने प्रतिक की कमर पर हाथ मारते हुए पूछा...

"मेरी..? मैने तो इनको अब से पहले कभी देखा भी नही...." सहज सवालों का जवाब देते हुए गीता का सुबकना कम हो गया था.. पर अंजाने डर से वो अब भी काँप रही थी...

"अच्छा? तुम्हे पता नही ये आपका कितना बड़ा दीवाना है.. तुम्हारे पास जाने के लिए ये मुझे रात को वो.. पुराने टीले पर ले गया.. इतना पागल हो चुका है ये.. और आप कहती हैं इससे आप कभी मिली ही नही... ये कैसे हो सकता है?" विपिन ने चलते चलते ही कहा...

गीता ने हैरानी से प्रतिक के चेहरे की और गौर से देखा.. पर १००-१०० कोस तक भी उसके पहले देखे होने का अहसास अपने दिल में जगा नही पाई," मेरा विश्वास कीजिए.. मैने इनको पहले कभी देखा नही है... मैं तो इस शहर के अलावा कभी कहीं गयी ही नही..."

"मैं कह तो रहा हूँ यार की ये वो लड़की नही है.. मुझे ग़लत फ़हमी हो गयी थी... वो कोई और है...!" प्रतिक से अब चुप बैठा नही गया...

"तू चुप हो जा बस.. आज के बाद तेरी शकल भी नही देखनी मुझे.. अब कौनसे टीले पर ले जाने की सोच रहा है मुझे.. तेरा तो दिमाग़ खराब हो ही गया है.. मुझे भी पागल करके छोड़ेगा तू.... लीजिए मिस.. गीता.. आपका कॉलेज आ गया.. यही होगा ना...?"

सुनते ही गीता की भय के मारे सिकुड़ी हुई आँखों में चमक सी आ गयी.. अपना चेहरा उठाकर उसने चौंक कर बाहर की तरफ देखा..." हाँ.. आप.. श.. पर आपको कैसे पता मेरे कॉलेज का..." खिड़की खोलने की कोशिश करती हुई वो बोली.. पर खिड़की खुली नही..

"इस शहर में यही एक कॉलेज है.. मेरे ख़याल से... खैर.. माफ़ करना.. मैं कुछ जानना चाहता था.. इसीलिए मुझे आपको डराने के लिए घटिया बातें कहनी पड़ी... पिछली खिड़की का लॉक खोलना प्रतिक..

गीता कुछ ना बोली.. उसका मन अब उछल रहा था.. बचने की कम ही उम्मीद थी उसको.. गाड़ी खोलते ही वह तेज़ी से बाहर निकली और बिना बोले रोड पार करने लगी...

"ये सब क्या बकवास थी विपिन... ? चल अब..." प्रतिक की आँखें कॉलेज के गेट की तरफ बढ़ रही गीता का पीछा करती रही...

"अबे रुक तो सही.." विपिन भी बड़े गौर से गीता को देखे जा रहा था...

गेट पर पहुँच कर गीता तिठकि और पीछे मुड़कर देखा.. गाड़ी की और.. विपिन मुस्कुराने लगा और उसकी और अपना हाथ हिला दिया.. गीता अपनी नज़रें झुकाती हुई मूडी और सीधी आगे बढ़ गयी...

# ६

"ये क्या था भाई.. तू ऐसा भी है क्या? क्या कर रहा था तू...?" प्रतिक ने गीता के नज़रों से औझल होते हुए पूछा...

"एक तीर से दो शिकार.." कहकर विपिन प्रतिक की और मुस्कुराया और गाड़ी चला दी....

"क्या मतलब?" प्रतिक उसकी बात समझ नही पाया....

"तू अब मेरी बातों का मतलब पूछना छोड़ और अपने इस वाहयात नाटक का मंचन शुरू कर.. पहले तू मुझे ज़िद करके वहाँ ले गया जहाँ आदमी तो क्या आदमी की जात भी नही रहती.. फिर वापस आते हुए तुझे वो लड़की मिल भी गयी.. अब इस लड़की ने इनकार कर दिया तो तू कह रहा है कि वो ये नही कोई और है.. मतलब क्या है तेरी बातों का.. एडा समझा है क्या?" विपिन उसकी और गुर्राता हुआ सा बोला..

"नही भाई.. मैं तुझसे झूठ क्यू बोलूँगा.. हमेशा मैने तुझे बड़े भाई की तरह माना है.. पर सच में, मेरी खुद समझ में नही आ रहा क़ि ये सब आख़िर हो क्या रहा है.. मेरे सिर में हमेशा चक्कर सा रहता है.. ये बातें सोचकर.. तू ही बता मैं करूँ तो क्या करूँ.." प्रतिक ने सीट से सिर टीका अपनी आँखें बंद कर ली...

"हम्मम.. पर अब ये तू किस आधार पर कह रहा है कि 'वो' लड़की कोई और है.. फिर से फोन आया था क्या...?" विपिन ने उससे पूछा...

"उम्म्म.. हां..!" प्रतिक ने यूँही कह दिया...

"लात मार ना यार बात को.. ये लड़की कितनी मस्त है.. कहे तो इसको पटवा दूं.. चलेगी ना...?" विपिन ने सारी बात छोड़ कर गीता की बात उठा दी...

"कैसे?" प्रतिक आँखें बंद किए हुए ही बोला...

"वो तू मुझ पर छोड़ दे.. सिर्फ़ ये बता, उसके बाद तो तू ठीक हो जाएगा ना.. मतलब तेरे दिमाग़ का फितूर..." विपिन ने गाड़ी रोक कर उसके कंधे पर हाथ रख दिया...

प्रतिक कुछ देर चुप बैठा रहा, फिर बोला," नही यार.. मुझे उससे मिलना है एक बार.. उसके बाद तू जो कहेगा मैं कर लूँगा..."

"उस लड़की को देखा है तूने?" विपिन ने सवाल किया...

"नही.." प्रतिक ने फिर अपनी आँखें बंद कर ली...

"यही बात... इसी बात पर इतना गुस्सा आता है कि.. क्यू अपनी अच्छी ख़ासी जिंदगी को गधे पर लादना चाहता है.. तूने उसको देखा तक नही है.. फिर क्यू उसके पीछे पागल हुआ जा रहा है.. मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि वो लड़की शर्तिया इससे सुंदर नही हो सकती.. देखा है कभी नज़र भर कर इसको.. कितनी ठंडक मिलती है कलेजे को.." विपिन ने कहते हुए दिल पर हाथ रख लिया..

"तुझे ठंडक मिलती है तो तू ही ले आ ना भाई..!" प्रतिक उसकी बातों से तंग आ गया.. उसका दिमाग़ तो अब वहीं घूम रहा था.. !

"और तू क्या समझता है.. आज भी मैं इसीलिए चुप रहा कि ये तेरी है.. वरना मैं तो टिकेट काट कर रहूँगा.. कम से कम एक बार..." विपिन ने विश्वास के साथ कहा..

"हुन्ह.. बड़ा चुप रहा तू आज.. बातों ही बातों में बलात्कार कर डाला बेचारी का.. और कह रहा है.. मैं चुप था.. अपने साथ मेरी भी ढीली करवा दी...तुझे लगता है की ये लड़की अब तेरी तरफ देखना भी पसंद करेगी...?" प्रतिक ने व्यंग्य किया..

"तूने मुझे क्या अपनी तरह लल्लू समझ रखा है.. एक एक दिन में दो दो लड़कियाँ पटाई हैं मैने.. और फिर ये तो बेचारी बहुत नादान है.. इसका तो घंटे भर का भी काम नही.. लड़कियों की साइकॉलजी, जियोग्रफी, केमिस्ट्री.. सब जानता हूँ मैं.." विपिन ने सीना फुलाते हुए कहा...

प्रतिक विपिन की इस बात पर हँसे बिना नही रह सका.. विपिन ने ग़लत नही कहा था.. प्रतिक के नेचर के उलट वो एकदम टी- ट्वेंटी स्टाइल का खिलाड़ी था.. जिस लड़की पर मन आ गया, उसको बिस्तर पर लाए बिना नही छोड़ा.. और फिर अगले मॅच की तैयारी.. यहीं पर विपिन और प्रतिक में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ था..

"चल तू जो मर्ज़ी कर लेना.. पर मेरा तो कुछ हल कर..."

" अब वो लड़की कहाँ मिलेगी..?" विपिन तुरंत सीरीयस हो गया...

"बतला!" प्रतिक ने तुरंत जवाब दिया...

"बताता? ये कौनसी जगह है? और वो तुझे कैसे जानती है...?" विपिन ने शायद नाम ढंग से नही सुना था...

"बताता नही बतला.. और हम कभी मिले नही हैं.." प्रतिक ने बात स्पष्ट कर दी...

"ये ले.. तो क्या सपना आया था?" विपिन ने मज़ाक में कहा..

"सच बताऊं की झूठ..?" प्रतिक ने आँखें खोलकर उसकी और देखा...

"अब भी झूठ बोलेगा तो कान के नीचे दूँगा.. समझा क्या है मुझको..? चल शुरू हो जा..." विपिन ने उसको प्यार से झिड़की दी...

"हां.. सपना आया था...!" प्रतिक ने बिना रुके कह दिया...

"वॉट..?" विपिन को उसकी बात मज़ाक लगी थी..

"सपना ही आया था भाई.. तुम्हारी कसम...!" प्रतिक को आख़िरकार किसी ना किसी से तो अपनी विडंबना शेअर करनी ही थी.. सो अपने सबसे अच्छे दोस्त से कर ली..

"लगता है तुझे नशा हो गया है.. चल आ.. बियर पीते हैं.. बाद में बात करेंगे.." कहकर हंसते हुए विपिन ने गाड़ी स्टार्ट करके वापस शहर की और घुमा दी...

"ये सब क्या है यार..? तूने मुझे पहले क्यू नही बताया? तुझे उस लड़की की नही किसी अच्छे साइकॉलजिस्ट की तलाश करने की ज़रूरत है..." सारी बात चुपचाप सुनने के बाद विपिन की यही प्रतिक्रिया थी.. वो और प्रतिक बार में बैठे बियर पी रहे थे...

"तू ऐसा बोल सकता है भाई.. क्यूंकी तेरे साथ ऐसा हुआ नही है.. तू नही समझ सकता.. अगर ये सब मेरे दिमाग़ का फितूर होता तो बता वही लड़की जो मुझे दिखाई देती थी सपनों में, वो असलियत में कैसे मिल गयी.. जबकि हम दोनो ने कभी एक दूसरे को देखा तक नही है.. फिर अंकल जी ने जो कुछ पुराने टीले के बारे में बताया.. उस लड़की ने भी तो मुझे वहीं बुलाया था.. हमारी गाड़ी की अपने आप हवा निकल गयी.. सुबह अपने आप भर गयी.. सपने में उसने मेरे सामने अपनी कमीज़ फाडी.. और सुबह वो भी सच था... सबसे बड़ी बात तो मैने तुम्हारे मुँह से भी तनवी की पुकार सुनी.. जब हम टीले पर गये थे.. क्या अब भी तू कहेगा की ये सब वहाँ है..?" प्रतिक ने अपनी बात को पुख़्ता तरीके से पेश करने के लिए इन्न बातों को फिर से दोहराया...

"हम्म.. तभी तो मुझे लग रहा है की इसमें बाप बेटी की साजिश की बू आ रही है.. हर सपने का इसी लड़की से ताल्लुक है... जिसने कहानी सुनाई.. वो उसका बाप है.. टीला भी उनके गाँव का ही है.. बच्चा वो खड़ा कर सकते हैं वहाँ... और टायर्स की हवा भी निकाल सकते हैं.. क्यूंकी उन्हे विश्वास होगा कि वापस आते हुए हम उनका ही दरवाजा खटखटाएंगे... सुबह जागने से पहले टायर्स में हवा भी भर सकते हैं.. तुम्हे याद है.. जब हमने उनका दरवाजा खटखटाया तो गीता ने क्या कहा था.. 'बापू' वो आ गये....' क्या मतलब था इसका? यही ना की वो हमारा इंतजार कर रहे थे... शर्तिया ये इनकी ही साज़िश है.. तू मान या ना मान.." विपिन ने निष्कर्ष निकाला...

"और तू जो मुझे चंद्रभान.. चंद्रभान करके पुकार रहा था.. वो?" प्रतिक उसकी सारी बात सुनने के बाद बोला...

"अब तेरी दिमागी हालत ही ऐसी हो गयी है तो ये तेरा वेहम भी हो सकता है.. मुझे तो यही याद आ रहा है कि पीपल के पेड़ की ठंडी छाया देख कर एक बार लेटने का मन हुआ था.. फिर तू मुझे वहाँ से कंधे पर उठाकर भाग लिया...." विपिन अब भी प्रतिक की पुनर्जन्म और आत्मा वाली बात पर विश्वास करने को तैयार नही था...

"तुझसे इस बारे में बात करना ही बेकार है.. इसीलिए तो मैने इतने दिन तक तुझे कुछ नही बताया.. सिर्फ़ रॉकी को ही बताया था.. पर वो डर गया और साथ आने से इनकार कर दिया...."कुछ रुक कर प्रतिक ने फिर बोलना शुरू किया," चल तेरी बात मान भी लेता हूँ.. पर एक बार बतला जाकर उस लड़की का पता लगाने में क्या हर्ज़ है.. अगर कोई तनवी वहाँ मिल गयी तो फिर तो तुझे यकीन हो जाएगा ना..." प्रतिक उसको समझा समझा कर थक चुका था.. पर विपिन इसको अब तक साज़िश ही मान रहा था...

"देख.. अलबत्ता तो कोई लड़की तुझे वहाँ मिलनी नही है.. इन्होने सोचा होगा की बस तू एक बार यहाँ तक आ जाए.. उसके बाद शराफ़त और नज़ाकत का चोला पहन कर गीता तुझे अपने आप फँसा लेगी.. पर अगर कोई लड़की वहाँ मिल भी गयी तो कौनसी बड़ी बात है.. इतना बड़ा नाटक करने वालों के लिए.. बोल.. हो सकता है कि वहाँ बैठी तनवी भी इस साज़िश में शामिल हो.."

"पर तू ये क्यू भूल रहा है कि सपने तो खुद मुझे आते हैं ना... अब मेरा सपना भी क्या किसी की साज़िश का नतीजा हो सकता है? या तुझे कहीं ये तो नही लग रहा कि मैं भी साजिश में शामिल हूँ.. और झूठ बोल रहा हूँ, सपने के बारे में..." प्रतिक ने झल्लाते हुए कहा...

"ना.. तू साजिश का हिस्सा कैसे हो सकता है.. अगर ये साज़िश है तो तेरे ही खिलाफ है.. पर मुझे लगता है कि सपना साज़िश का हिस्सा हो सकता है.. हमें किसी नूरॉलजिस्ट से बात करनी पड़ेगी..." विपिन ने एक और तर्क ठोंक दिया...

"शिट यार.. तू बात को बार बार वहीं लाकर छोड़ देता है.. आख़िरी बात ये है की किसी को.. खास तौर से इन्न बाप बेटी को मेरे खिलाफ साज़िश से मिलेगा क्या?" प्रतिक के सब्र का बाँध टूटता जा रहा था...

"तेरी दौलत.. तुझे प्यार के जाल में फँसाकर ये या वो तनवी तुझसे शादी कर सकती हैं.. और फिर आधी जायदाद की मालिक बन सकती हैं.. इसमें किसी और का हिस्सा भी हो सकता है.. मसलन तेरे किसी खास दोस्त या रिश्तेदार का.. क्यूंकी इन्न लोगों के वश में नही है इतनी बड़ी प्लॅनिंग.. हमें इनकी जड़ें टटोलनी होंगी.... कोई ना कोई तो ज़रूर है.. इस सब के पीछे... और मैं आज ही पता लगाकर रहूँगा..." विपिन ने बीअर की केन ख़तम करके एक और फैंक दी..

प्रतिक ने अपना माथा पीट लिया," अच्छा.. आज ही पता कर लेगा? पूछ सकता हूँ कैसे?" प्रतिक ने व्यंग्य सा किया...

"क्या टाइम हुआ है?" विपिन ने पूछा...

"१:३० हो गये.. क्यू?"

"गीता आते हुए बोल रही थी कि वो चार बजे तक आएगी.. घर बस से जाने में उसको १:३० घंटा तो लगता ही होगा.. जल्दी से एक एक और मंगवा ले.. फिर कॉलेज के सामने चलते हैं?" विपिन ने वेटर को इशारा किया...

"आख़िर क्या करने की सोच रहा है भाई तू?" प्रतिक अजीब तरीके से उसको देखता हुआ बोला...

" गीता को सब कुछ बताना ही पड़ेगा..." फिर वेटर की और मुँह करके बोला," २ चिल्ड और......."

“तू क्या फिर से गीता को ज़बरदस्ती गाड़ी में डालने की सोच रहा है?” प्रतिक ने आश्चर्य से पूछा…

“श्ह्ह्ह्ह्ह्ह्ह..” विपिन ने अपने होंटो पर उंगली रख दी…

प्रतिक के सोचकर ही रोंगटे खड़े हो गये,” और अगर वो बेकसूर निकली तो?”

“तो क्या? सुबह उसको वापस कॉलेज छोड़ देंगे.. हमें कौन जानता है?” विपिन ने सहजता से कह दिया.. मानो कोई बात ही ना हो..

“तेरी गाड़ी का नंबर.?” प्रतिक किसी तरह उसको इस खुरापात से दूर करना चाहता था..

“मैने आज तक अपनी गाड़ी पर ओरिजिनल नंबर. प्लेट लगाई है क्या?” विपिन शैतानी से मुस्कुराने लगा………

"मैं आज ही चला जाऊ घर? मम्मी भी चिंता कर रही होंगी.." प्रतिक उसके खुरापाति दिमाग़ की कारस्तानियों के चक्कर में नही पड़ना चाहता था...

"ये तो और भी अच्छा रहेगा.. वैसे भी मुझे आज तुझे वापस भेजना ही था... गाड़ी देकर.. पर अब तो तुझे टॅक्सी करनी पड़ेगी..." विपिन ने खुश होते हुए कहा....

"वो कोई प्राब्लम नही है... बस तू ध्यान रखना.. उसका नाजायज़ फ़ायदा उठाने की कोशिश मत करना.. बेचारी बहुत मासूम है.." प्रतिक ने गाड़ी से निकलते हुए कहा...

"तू चुप रह ना यार.. मैं कौनसा उसका बलात्कार करने वाला हूँ.. कुछ पूछना ही तो है.. हाँ.. अपनी मर्ज़ी से देगी तो फिर तुझे कोई प्राब्लम नही होनी चाहिए.. ठीक है ना..." विपिन हंसते हुए बोला...

प्रतिक ने कोई जवाब नही दिया.. वो चुपचाप विपिन की और देखता रहा... बेशक विपिन ने कोई ग़लत काम ना करने का वादा किया था.. पर उसको ज़बरदस्ती रात भर रोके रखना भी तो बलात्कार से कम नही था.. कितनी नाज़ुक और कमसिन है बेचारी.. सोच कर ही प्रतिक का मन रह रह कर गाड़ी से उतर जाने को कर रहा था.. पर 'तनवी' की सच्चाई जानने की उत्सुकता उसको कुछ भी करने या कहने से रोक रही थी.. विपिन ने जो तर्क उसको इस मायवी रहस्य को साज़िश साबित करने के लिए दिए थे.. कहीं ना कहीं उसके मन में भी कहीं कोई गड़बड़ी होने की आशंका घर करने लगी थी....

"फिर भी यार.." प्रतिक अब भी विपिन की ज़िद के खिलाफ था...

"चिंता मत कर यार.. तुझे पता है.. मैं दिल का बुरा नही हूँ..." विपिन ने प्रतिक से हाथ मिलाया और गाड़ी स्टार्ट कर दी....

## ७

कॉलेज के गेट पर घंटा भर इंतजार करने के बाद उसको गीता बाहर आती दिखाई दी....

"ओये.. आ गयी...." विपिन ने मंन ही मंन कहा और गाड़ी स्टार्ट कर दी...

"चख ले बेटा.." बड़बड़ाते हुए विपिन ने गाड़ी थोड़ा और आगे करके उसी तरफ ले गया जहाँ गीता रोड क्रॉस करके आने वाली थी...

गीता ने गेट से बाहर निकलते हुए ही उनकी गाड़ी पहचान ली थी और विपिन को भी अपनी और ताकते देख लिया था.. उसने अपना सिर झुकाया और उसको नज़रअंदाज सा करके कॉलेज से थोड़ा आगे गयी ही थी की विपिन ने गाड़ी उसकी बराबर में रोक दी,"हाई गीता!"

गीता ने तिरछी नज़र से विपिन को देखा और बिना कुछ बोले आगे बढ़ गयी.. विपिन ने एक पल भी नही गँवाया.. फटाफट गाड़ी से उतरा और तेज़ी से चलकर उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो गया," मैं भी गाँव ही जा रहा हूँ.. आओ ना.. बैठ जाओ.."

"गीता ने नज़रें उठाकर विपिन को घूरा," मुझे जाने दो.. मैं बस में ही चली जाऊंगी.. हटो मेरे रास्ते से.."

"तुम तो बेवजह उस बात को दिल पर ले रही हो.. वो सिर्फ़ हल्का सा मज़ाक था.. अगर मैं सीरीयस होता तो तुम्हे यहाँ क्यू छोड़ता.. मान भी जाओ.. मैं वहीं जा रहा हूँ.. गाँव में.." विपिन ने उसको प्यार से मनाने की कोशिश की..

विपिन की बात का हल्का सा असर उसको गीता पर होता दिखाई दिया.. उसकी आँखों के झुक जाने से ..

"तुम समझ क्यू नही रहे हो? ये मेरा कॉलेज है.. यहाँ सब मुझे जानते हैं.. कोई क्या सोचेगा..? प्लीज़ हट जाओ और जहाँ जाना है चले जाओ.. मैं बस में जा सकती हूँ.. रोज़ ही जाती हूँ... प्लीज़ मुझे जाने दो.." कहते हुए गीता ने अनुनय की मुद्रा में हाथ बाँध लिए...

विपिन को भी उसकी बातों से बात बनती दिखाई दी..," मुझे पता नही था कि तुम इतनी कोमल हृदय हो कि ज़रा से मज़ाक से तुम आहत हो जाओगी.. मैने तो सिर्फ़ 'अपना' मानकर मज़ाक किया था.. यूँही.. तुम्हारे स्वीट से चेहरे पर गुस्सा बिल्कुल भी अच्छा नही लगता.. कहो तो मैं यहाँ सबके सामने कान पकड़ने को तैयार हूँ.. पर प्लीज़.. माफ़ कर दो.. और मान जाओ.. आइन्दा कभी ऐसी ग़लती नही करूँगा.. तुम्हारी कसम...!" और विपिन सच में ही अपने कानो को हाथ लगाकर खड़ा हो गया...

गीता शर्मिंदा सी हो गयी.. हालाँकि विपिन की कही बातों ने उसका दिल छू लिया था.. फिर भी.. वहाँ सबके सामने गाड़ी में बैठना असंभव था.. पहले ही उसको अपना तमाशा बनता नज़र आ रहा था.. जाने क्या सोचकर गीता के मुँह से निकल गया," थोड़ी आगे आ जाओ प्लीज़.. यहाँ मेरा यूँ तमाशा ना बनाओ.. कहकर वो उसकी बगल से निकलकर आगे बढ़ गयी..

विपिन खुशी से उछलता हुआ गाड़ी की और बढ़ा..

विपिन धीरे धीरे करके गाड़ी आगे बढ़ा रहा था...

बस-स्टँड करीब आते ही गीता की चाल धीमी पड़ गयी थी.. शायद उसने मन बना ही लिया था, गाड़ी में बैठने का.. उसके विपिन के पक्ष में फ़ैसला करने में इस बात ने अहम प्रभाव डाला कि उन्होने सुबह उसको सही सलामत कॉलेज छोड़ दिया था...

"आ जाओ अब!" विपिन ने गाड़ी उसकी बराबर में रोक दी...

गीता ने झिझकते हुए सड़क पर मौजूद लोगों पर निगाह डाली.. किसी को भी जान कार ना पाकर उसने फट से खिड़की खोली और अंदर आ बैठी..

"जल्दी चलो प्लीज़... " एक लंबी साँस लेते हुए गीता ने कहा और आगे वाली सीट से सिर लगाकर बैठ गयी....

विपिन ने मौका देखते ही आगे से यु-टर्न लिया और अपने पहले से निर्धारित ठिकाने की और गाड़ी दौड़ा दी, बदक़िस्मती से सिर को सीट से लगाए आँखें बंद किए बैठी गीता उस दिशा परिवर्तन की भनक नही पा सकी....

"कौनसा साल चल रहा है तुम्हारा?" विपिन ने गीता के साथ बातों का सिलसिला शुरू कर दिया...

कुछ देर तक गीता बिन बोले बैठी रही.. पर जब काफ़ी देर तक विपिन की तरफ से दूसरा सवाल नही दागा गया तो उसने मुँह खोल ही दिया," २० वा..."

"हा हा हा हा... मैं तुम्हारी उमर नही पूछ रहा था.. फिर भी धन्यवाद.. वैसे कौनसे ईयर में हो कॉलेज में...?"

"जी, फर्स्ट ईयर...!" गीता ने नज़रें झुकाए हुए ही जवाब दिया...

"शादी कब कर रही हो..?" विपिन ने पहले सवाल का जवाब मिलते ही दूसरा दाग दिया.. पर गीता ने इसका जवाब देना ज़रूरी नही समझा....

"कोई लड़का देख रखा है या मैं अपने लिए कोशिश करूँ...?" विपिन ने रोमँटिक लहजे में अगला सवाल किया...

गीता इस तरह की बातें सुनकर लजा सी गयी.. उसको इस तरह की बातों की आदत ही नही थी शायद...

"क्या बात है? अभी तक नाराज़ हो क्या?" विपिन की अगली बात भी सवाल ही थी...

"कितना टाइम लगेगा घर तक पहुँचने में..." गीता ने इस बार पलटकर सवाल किया.. वह विपिन के बेढंगे सवालों का रुख़ मोड़ देना चाहती थी.. बेशक वह अपनी मर्ज़ी से गाड़ी में बैठ गयी थी.. पर अभी तक भी अपने इस निर्णय को लेकर वो असमंजस में लग रही थी.. पता नही किस मानसिक दबाव ने उसको विपिन की बात मानने पर मजबूर कर दिया था... उसके गोरे चित्ते चेहरे पर शिकन इस बात का सबूत थी कि वो अपने आप से खुश नही थी...

"बस उतना ही जितना तुम्हे बस से लगता है...." कुछ रुकते हुए विपिन ने अधूरी बात पूरी की...," अगर सब कुछ सही तरीके से हो गया तो....!"

गीता का माथा ठनका.. उसने तुरंत चेहरा उठाकर बैक व्यू मिरर से उसकी ही और देख रहे विपिन से नज़रें मिलाई," क्क...क्क्या मतलब?"

"तुम घबरा बहुत जल्दी जाती हो.. कभी कुछ ऐसा वैसा किया नही है क्या?" विपिन के चेहरे पर शरारती मुस्कान उभर आई...

गीता को अहसास भी नही था कि वो उसके गाँव से उल्टी दिशा में किसी अज्ञात स्थान की और जा रही है..," प्लीज़ ऐसी बातें मत करो.. मुझे बहुत डर लगने लगता है.. जल्दी से मुझे घर पहुँचा दो..." सच में वह डरी हुई थी.. बार बार अपने रुमाल से चेहरा पोंछती हुई वह मन ही मन खुद को कोस रही थी...

"कौनसे घर..? पुराने टीले पर...?" विपिन ने अबकी बार तो उसकी जान ही निकाल दी.. " ऐसे मज़ाक ना करें.. मुझे रोना आ जाएगा..."

"पहली बार तो हर लड़की रोती है.. ख़ासकर तुम्हारी तरह कच्ची उमर में सेक्स करना पड़ जाए तो.." विपिन ठहाका लगाकर हंस पड़ा...

गीता के चेहरे पर भय की बूंदे छलक उठी," यय.... ये क्या... बकवास कर रहे हैं आप..? मैने आप पर विश्वास करके बहुत बड़ी ग़लती की.. मुझे किसी भी स्टँड पर नीचे उतार दो.. मैं अपने आप चली जाऊंगी बस पकड़ कर..." गीता के शब्दों में गुस्सा था.. पर ज़ुबान उसकी डर के मारे लड़खड़ा रही थी...

"डोंट वरी स्वीट हार्ट.. ग़लती तो हमने की तुम पर विश्वास करके... प्रतिक के साथ तुमने जो करने की कोशिश की.. अब क्या उसका बदला ही ना लें.. आज रात तुम मेरे बिस्तर की शोभा बनोगी.. और तुम्हारी कसम.. तेरे जैसी लड़की बिस्तर में कितना मज़ा देगी.. मेरा तो सोच सोच कर ही बुरा हाल है... दम निकला जा रहा है.. मेरा" विपिन बात बात पर अश्लील बाते करने से बाज नही आ रहा था..

गीता की हालत सुबह के जैसी ही हो गयी.. पहली बार उसने नज़रों को खिड़की के पार किया.. सब कुछ अंजाना था.. अंजान रास्ते.. अंजान मर्द.. और अंजान भविष्य.. गीता अंदर तक काँप गयी...," कहाँ जा रहे हो तुम ?.. मुझे उतार दो प्लीज़.. मैं तुम्हारे हाथ

जोड़ती हूँ..." अब उसकी आवाज़ में रूखापन और कठोरता नही बल्कि दयनीय और कंपकँपता हुआ लहज़ा था...

"अब तुम्हे हमारा मकसद जानने में ज़्यादा समय नही लगेगा जानेमन.. मंज़िल बहुत करीब है..." विपिन के चेहरे पर कड़वी सी मुस्कान लगातार गीता के लिए माहौल को और भी भयावह बना रही थी...

"मुझे नही चलना तुम्हारे साथ.. जहाँ भी अभी मैं हूँ.. यहीं उतार दो.. मेरा बापू मर जाएगा.. अगर मैं समय पर नही पहुँची तो....!" गीता ने गिड-गिडाते हुए विपिन के कंधे पर हाथ रख दिया..

"आआहा.. कितना मीठा टच है तेरे हाथों का.. तेरी ये जवानी तो सच में... हाए.. क्या चीज़ है तू..? मेरे ऑफीस में नौकरी करेगी..? दोनो को रख लूँगा साथ में.. और तो कोई तुम्हारा है नही.. बाप बेटी का... सोच ले..."

गीता फफक फफक कर रोने लगी... उसको अहसास हो चुका था कि वो बहुत बड़े ख़तरे में आ गयी है.. कम से कम उसकी जवानी और इज़्ज़त तो ख़तरे में थी ही.. ये उसको विश्वास था...

विपिन ने गाड़ी को छोटे रास्ते पर दौड़ा दिया.. हाइवे से उतार कर.. गीता के हाथ में कुछ नही था.. सिवाय सुबकने के.. उसको मालूम था की अगर वो चिल्लाने की कोशिश भी करती है तो गाड़ी के तेज म्यूज़िक में ही उसकी आवाज़ घुट कर रह जाएगी.. और फिर उसको विपिन के और ज़्यादा क्रूर होने का भी डर था.. फिलहाल अपनी नासमझी पर आँसू बहाने के अलावा उसके पास कोई रास्ता ही नही था.. सो वह कर ही रही थी....

अचानक ही गाड़ी तेज़ी से मूडी और हल्की सी चढ़ाई चढ़ कर एक पुरानी जर्जर सी इमारत में घुस गयी... गीता की छातिया उसके दिल के धड़कने के साथ साथ खराब रास्ते पर बड़े ही कामुक अंदाज में उछल रही थी....

गाड़ी इमारत में काफ़ी अंदर जाकर बने गैराज सी दिखने वाली जगह पर जाकर रुकी.. विपिन तुरंत गाड़ी से उतर गया.. उतरने के साथ ही उसने अपनी पैंट में आ चुके उभार को छुपाने के लिए ठीक किया...

" आजा मेरी जान.. शर्मा क्यू रही है...? कहते हुए विपिन ने खिड़की खोलकर गीता को गाड़ी से बाहर खींच लिया....

"आओ.. नीचे चलते हैं...!" विपिन गीता के हाथ को पकड़े हुए आगे बढ़ गया.. बेचारी निरीह मासूम जानवर की तरह उसके हाथों की कठपुतली बनी उसके साथ साथ खींचती चली गयी...

बहुत ही तंग और बिना रोशनी वाले छोटे से टुकड़े को पार करके विपिन गीता का हाथ पकड़े नीचे की ओर जा रहे एक जींसे पर उतरने लगा.. करीब करीब १३-१४ घुमावदार पैडियो से होते हुए वो दोनो एक लॉबी में आ गये.. जिसके दोनो ओर कमरे बने हुए थे... आश्चर्यजनक रूप से उस जर्जर इमारत के नीचे बनी ये जगह काफ़ी नयी प्रतीत होती थी.. उसका हर कोना कृत्रिम प्रकाश से दमक रहा था...

"तुम्हे जो चाहिए मैं दे दूँगी.. जो पूछोगे, सब बता दूँगी.. प्लीज़.. मुझे हाथ मत लगाना..." साथ चलते हुए गीता रह रह कर गिड-गिडा रही थी.. पर विपिन को उस वक़्त बात करने में इंटेरेस्ट नही था.... लॉबी पार करके वो दाई तरफ मुड़ा और सबसे आख़िर में जाकर एक विशाल और अद्भुत रूप से सुसज्जित शयनकक्ष सी दिखने वाली जगह पर आ गया..

"किसी बात की चिंता मत करो.. जब तक तुम मेरा कहा मनोगी.. तुम्हे कुछ नही होगा... लेकिन चालाक बनने या नखरे करने की कोशिश की तो तुम्हारा भी यही हाल होगा, जो इनका हुआ था... कहते हुए विपिन ने एक जगह चाबी फँसाई और बेडरूम के अंदर बनी दीवार के एक खास हिस्से को खिसककर आराम से खोल दिया..

"शी. स्स..आआआ!" बदहवास सी आँखें फैलाए गीता सिर्फ़ इतना ही बोल पाई थी कि बेहोश हो गयी.. उसने तो कमरे के अंदर पड़ी ५ लड़कियों की नंगी लाशों को ढंग से देखा भी नही था.. उनके शरीर से निकल कर कमरे में फैली हुई तेज दुर्गंध ने ही उसको इतना लचर कर दिया कि वह अपने पैरों पर खड़ी ना रही सकी और विपिन की बाहों में झूल गयी.....

"बहुत मज़ा आएगा... तेरे अंग अंग में इतना रस भरा हुआ है कि तेरा कतरा कतरा पीने में मुझे महीने लग जाएँगे..." विपिन ने उसको बाहों में उठाया और बेड पर लेजाकर पटक

दिया.... और उसके पास बैठकर उसके नाज़ुक गुलाबी होंटो पर अपनी उंगली फिराने लगा....

विपिन हुस्न की बेपनाह दौलत को अपने कमसिन अनछुए बदन में समेटे बिस्तर पर अचेत अवस्था में लेती गीता को देख अपने होंटो को अपनी ही जीभ से बार बार तर करता रहा.. वह उसके पास ही बैठा उसकी यौवन मदमस्त छातियो को एकटक देखे जा रहा था... पर आश्चर्यजनक ढंग से उन्हे छूने की कोई कोशिश उसने नही की... अचानक वह उठा और कमरे से बाहर निकल गया...

कमरा बंद किए जाने की आवाज़ आते ही भय से चरमरा सी उठी गीता ने धीरे से अपनी आँखें खोल दी.. अपनी साँसों पर काबू पाने की असफल कोशिश करती हुई गीता ने गर्दन घूमाकर कमरे में देखा.. वहाँ कोई नही था... पर वहाँ पसरा सन्नाटा ही वहाँ किसी की मौजूदगी से भी भयानक था.. गीता की आँखों के सामने कुछ ही मिनिट पहले का अमानुषिक मंज़र रह रह कर कौंध रहा था.. उस दीवार की तरफ देखने तक की हिम्मत नही कर पा रही गीता अचानक उठी और बाहर निकलने के दरवाजे की और लपकी.. पर उसकी ये तेज़ी व्यर्थ ही थी; दरवाजा बाहर से बंद था...

"हे भगवान.. मैं क्या करूँ?" घुटनो के बल वहीं बैठकर सुबकने लगी गीता के पास और कोई चारा भी नही था...

"अभी आया मेम साहब!" अचानक कमरे में गूँजी एक मर्दानी आवाज़ ने लगभग उसको उछाल ही दिया..,"क्क्कौन.. कौन है?" भय के मारे गीता का कलेजा और आँखें दोनो बाहर निकलने को हो गये.. पर उसके बाद कोई आवाज़ उसको सुनाई नही दी...

इन्न हालत में तो बड़े से बड़े तीस्मारखा भी थर्रने को मजबूर हो जाते.. गीता तो फिर भी एक लड़की थी.. बदहवास सी कमरे में इधर उधर देखती वो एक दीवार के साथ चिपक कर खड़ी होकर हाँफने लगी...

अचानक दरवाजा खुला और करीब ३५-४० साल का भद्दी सी शकल का लंबा तगड़ा आदमी कमरे में दाखिल हुआ.. गीता दहशत के मारे सिमट कर कोने में जा खड़ी हुई...

"कुछ चाहिए मेम साहब!" आदमी की आवाज़ में अत्यधिक विनम्रता थी.. पर गीता के लिए उस पल कोई भी आवाज़ किसी यमराज की दहाड़ से कम नही थी...

"कौन हो तुम?.. मुझे यहाँ से जाने दो प्लीज़.." गीता कोने में चिपके हुए ही अपने दोनो हाथ प्रार्थना की मुद्रा में आगे ले आई..

"मैं भगवान हू मेम साहब.. भगवानदास.. साहब का सेवक हूँ.. और उनके मेहमानो का भी.. अभी साहब यहाँ नही हैं.. कुछ चाहिए तो फिर से मुझे आवाज़ लगा देना.. कुछ चाहिए क्या आपको अभी..?"

"मुझे जाने दो प्लीज़.. मुझे जाना है यहाँ से...!" गीता गिड-गिडाते हुए बोली...

"पर यहाँ से तो कोई जाता ही नही वापस.. जब साहब का काम हो जाएगा तो वो आपको मुझे गिफ्ट कर देंगे.... तब तक आप मेरी मालकिन हैं.. पर मेरे सामने दोबारा जाने का जीकर मत करना मेम साहब.. साहब ने बता रखा है मुझे क्या करना है, अगर आप जाने की कोशिश करो तो.. हे हे हे.." भगवानदास ने कहा और बाहर निकल गया.. दरवाजे की कुण्डी लगाकर...

गीता कोने में खड़ी खड़ी सूखे पत्ते की तरह काँप रही थी.. आतंक के मारे उसका गोरा चेहरा पीला पड़ने लगा था.. रह रह कर उसको घर में उसका इंतज़ार कर रहे अपने बापू की याद आ जाती और वा सिसकने लगती.. अब तक तो उसके लिए चिंता भी करने लग गये होंगे...

"मेम साहब खाना!" दरवाजा खोलकर अंदर आए भगवान दास ने टेबल पर एक थाली रखते हुए कहा.. एक बार गीता के मन में आया कि वह भागने की कोशिश करे.. पर उसके कदमों ने उसका साथ नही दिया.. उसको भगवान दास की बात याद आ गयी.. 'साहब ने मुझे बता रखा है कि आप भागनेकी कोशिश करें तो मुझे क्या करना है...'

सहमी हुई गीता ने खाने की और देखा तक नही.. भगवान दास के वापस जाते ही वा अपने आँसू पोंछते हुए बिस्तर पर जाकर बैठ गयी...

# ८

"तो क्या बात हुई उस लड़की से?" प्रतिक विपिन के पास अकेले में बैठा था...

"कुछ खास हासिल नही हो पाया... उसको घर जाने की जल्दी थी और वो गिड-गिडाने लगी.. मुझे उसपर दया आ गयी और मैने उसको जाने दिया... फिर मिलने का वादा लेकर..." विपिन ने बड़ी सफाई से झूठ बोला...

"मुझसे अब और इंतज़ार नही होता भाई.. मैं कल सुबह ही पंजाब जा रहा हूँ.. चल ना मेरे साथ.. मैने मम्मी पापा से भी पूछ लिया है..." प्रतिक ने विपिन से साथ चलने का आग्रह किया...

"क्या बताया तूने उनको? तुझे सपने में उनकी बहू मिल गयी है?" विपिन कहकर ज़ोर से हंसा...

"मैं पागल हूँ क्या?"प्रतिक ने विपिन की बात खारिज़ की..

"तो?"

"बस बोल दिया ऐसे ही कुछ.. तू बता ना.. साथ चल रहा है ना?" प्रतिक ने विपिन से फिर पूछा....

"क्यू? वहाँ भी भूत वूत मिलने के चान्स हैं क्या?" विपिन फिर से हंसा..

"मेरा मज़ाक मत बना यार.. तुझे पता है मुझसे इतनी लंबी ड्राइविंग नही होगी.. और ड्राइवर को मैं लेकर जाना नही चाहता... चल पडो ना भाई..." प्रतिक ने असली वजह बताई...

"देख मेरे पास एक दिन से ज़्यादा का टाइम नही है.. तुझे खुद ही कुछ करना पड़ेगा...." विपिन ने साफ मना कर दिया...

"वैसे तो मैने धीरजंदर को साथ चलने के लिए मना रखा है.. पर जाना पड़ेगा बस या ट्रेन में...." प्रतिक ने स्पष्ट किया...

"तो कौनसा पहाड़ टूट जाएगा.. चला जा.. ड्राइविंग का झंझट ही ख़तम.. चल अभी मैं चरंभा हूँ.. सुबह जल्दी उठकर एक काम निपटाना है..." विपिन कहते हुए उठ गया...

प्रतिक उसको दरवाजे तक छोड़ कर आया और वापस आकर अपने बिस्तर में दुबक गया....

रात के करीब ९ बज चुके थे, इस दौरान जानने कितनी ही बार गीता दिल पकड़ कर रोई थी. जाने कितनी ही बार उसका कलेजा मुँह को आने को हुआ था.. जाने कितनी ही बार अपने बापू के बारे में सोचकर वह सिसक उठी थी.. इतना तो उसका मन भी मन चुका था कि उसकी इज़्ज़त तार तार होने से अब कोई करिश्मा ही उसको बचा सकता है, उसके बाद वह जिंदा वापस चली जाए; गनीमत है...

जान बचाने के लिए विपिन की हर बात मान लेने के लिए वह खुद को मानसिक रूप से तैयार कर चुकी थी.. यही सोच सोच कर बार बार उसका कलेजा फट पड़ता था और आँसू रह रह कर उसके गालों पर निशान छोड़ जाते थे..

यूँही लेटी लेटी अपनी किस्मत को कोस रही गीता ने जैसे ही बाहर से विपिन की आवाज़ सुनी तो उसने अपने आँसू पौन्छे और आँखें बंद करके दम साधकर सोने का नाटक कर लिया...

विपिन दरवाजा खोलकर जैसे ही अंदर आया, उसने गीता को बिखरे हुए बालों में बिस्तर पर सोते हुए पाया.. टेबल पर दोपहर का खाना ज्यों का त्यों पड़ा था.. वह मुड़कर बाहर निकलने को हुआ तो भगवान दास दरवाजे पर प्रकट हो गया..

"इसने खाना नही खाया?" विपिन ने भगवान दास से पूछा...

"नही साहब.. मैने तो आपके कहे अनुसार बड़ी शिद्दत से बनाया था, मेम साहब की खातिर.. हे हे हे.." भगवान दास ने बत्तीसी निकालते हुए कहा..

"इधर आओ.. "कहते हुए विपिन ने बाहर निकल कर दरवाजा बंद कर दिया.. और कमरे से दूर जाने लगा.. भगवान दास उसके पिछे पिछे ही था..

"इसको कुछ शक तो नही हुआ?" विपिन ने भगवान दास से पूछा...

"नही साहब.. डर के मारे इसकी तो जान ही निकली जा रही थी.. आपके कहे अनुसार मैने रटे रताए डाइलॉग बोलने शुरू किए ही थे कि इसका बुरा हाल हो गया.. मुझे इसकी दया आ गयी साहब.. मुझसे सारी बातें बोली नही गयी..!" भगवानदास सिर झुका कर बोला...

"कोई बात नही.. डर तो पूरी तरह गयी है ना..?"

"डरने की छोड़ो साहब.. ये तो मर ही जाती अगर थोड़ी देर और मैं यहाँ रहता..."

"कोई बात नही.. वो लाशों वाला प्रोग्राम तुमने बहुत अच्छा किया था.. एक दम असली लग रही थी.. माँस किस चीज़ का था..?" विपिन ने मुस्कुराते हुए पूछा...

"हे हे हे.. बकरे का कच्चा माँस था साहब.. आपका फोन आते ही मैं बकरा ले आया था.. और काट कर डाल दिया था अंदर.."

"हम्मम.. गुड.. अब दूसरी तरफ से जाकर वो रब्बर के पुतले भी वहाँ से हटा दो और कमरा अच्छी तरह साफ कर दो..."

"जी अच्छा साहब...." भगवान दास ने अदब से सिर झुकाया और वहाँ से चला गया...

विपिन जैसे ही कमरे में घुसा.. उसने गीता को तेज़ी से अपनी आँखें बंद करते देख लिया..,"अच्छा.. तो अब मेरे चेहरे से इतनी नफ़रत हो गयी है कि देखना भी नही चाहती..." कहता हुआ विपिन बिस्तर के पास जाकर खड़ा हो गया..

सिर से लेकर पाँव तक डर के मारे गीता काँपने लगी.. उसकी आँखें बंद थी..

विपिन का हर शब्द उसको अपने सीने में चुभता हुआ महसूस हो रहा था.. वह चुपचाप लेटी रही..

"मैं सिर्फ़ तीन तक गिनूंगा...." विपिन ने अपनी बात पूरी भी नही कि थी कि गीता अचानक आँखें खोल कर उठ बैठी और विपिन से सबसे दूर वाले कोने पर जाकर उसको बेबसी से देखने लगी...

"बड़ी समझदार हो जानेमन.. अब क्या इरादा है?" विपिन ने बचकाने अंदाज में उसको और डराने की कोशिश की...

गीता कुछ नही बोली.. चुपचाप किसी मासूम मेम्ने की तरह उसको आँखें फाड़कर देखती रही जैसे खुद पर रहम करने की भीख माँग रही हो.. हालाँकि चेहरे के उड़े हुए रंग से साफ था की उसको रहम की उम्मीद थी नही...

"जिंदा रहना चाहती हो?" विपिन ने उसी रूखे स्वर में पूछा...

गीता ने तुरंत अपना चेहरा हिलाया.. अब तो बस जिंदगी बचने की ही आस थी.. इज़्ज़त के साथ तो वो कब का समझौता कर चुकी थी...

"शाबाश.. लेकिन उसके लिए बहुत ज़रूरी है की मैं जो कुछ भी कहूँ.. जो कुछ भी पूछू.. आज्ञा का तुरंत पालन होना चाहिए.. यदि एक बात भी तुमने नही मानी.. या एक बार भी झूठ बोला.. तो समझ लेना.. कमरे में पड़ी लाशों की तरह तुम्हे भी दूसरा मौका नही मिलेगा..."

"जी.." बड़ी मुश्किल से घुटि हुई आवाज़ गीता के गले से निकली...

"जाओ.. जाकर नहा लो.. तब तक मैं तुम्हारे लिए कपड़े निकारंभा हूँ.." विपिन ने शरारती आँखों से उसको उपर से नीचे घूरा..

"ज्जई.. यही ठीक हैं.." गीता ने हकलाते हुए कहा...

"क्या कहा था मैने? इतनी जल्दी भूल गयी..." विपिन ने उसको याद दिलाया की उसको उसकी हर बात माननी ही पड़ेगी...

"जी.. जी.. जाती हूँ.." कंपकँपति आवाज़ में बोलते हुए गीता ने तुरंत बाथरूम का रुख़ कर लिया... बाथरूम में घुसते हुए उसने मुड़कर विपिन की आँखों में देखा.. उसको विश्वास

नही हो रहा था की अत्यंत सभ्य दिखने वाले उस इंसान की चमड़ी के पिछे एक घिनौना जंगली जानवर छिपा हुआ है....

अंदर जाकर उसने दरवाजा बंद कर लिया...

करीब १५ मिनिट बाद बाथरूम के दरवाजे पर खटखट हुई.. गीता सहम गयी.. वह अभी नहा ही रही थी..,"ज्जई.."

"नहाना नही हो क्या अब तक..?" बाहर से विपिन की आवाज़ उसके कानो में पड़ी....

"जी.. नहा ली.." पानी का नल बंद करते हुए गीता ने मरी सी आवाज़ में कहा...

"दरवाजा खोलो..!" विपिन के स्वर में सहज आदेश था जिसे गीता तुरंत समझ गयी.. उसकी आँखों से आँसू लुढ़क कर उसके नंगे बदन पर मोतियों की तरह दमक रही पानी की बूँदों में समाहित हो गये.. अब हो ही क्या सकता था.. उसने दरवाजे के पास आकर एक बार अपने मजबूर बेपर्दा हुस्न को मायूसी से देखा और चीटकनी खोल कर विपिन के अंदर आने का इंतज़ार करने लगी...

"अपने कपड़े मुझे दो..." विपिन ने बाहर खड़े खड़े ही रूखे स्वर में कहा..

"जी.. एक मिनिट.." गीता ने काँपते हाथों से अपनी कमीज़ और सलवार हाथ बाहर निकाल कर उसको पकड़ा दी...

"और?" विपिन अभी कपड़ों की गिनती से संतुष्ट नही था...

"जी.. क्या?" गीता उसका मतलब समझ नही पाई....

"नाम लेने पड़ेंगे क्या?" बाकी कपड़े भी दो..." विपिन ने अपनी मंशा को विस्तार से प्रकट किया....

गीता की रूह तक काँप गयी.. कुँवारी जवान लड़कियाँ अपनी ब्रा और पैंटी को तो अपनी बेशक़ीमती अमानत की तरह छुपा कर रखती हैं.. पर जान बचने की हल्की सी उम्मीद लिए

गीता उसकी हर बात मानने को मजबूर थी..."जी.."

गीता ने कहा और सुबकते हुए अपने वो आख़िरी वस्त्र भी हाथ बढ़कर बाथरूम से बाहर निकल दिए... उसको विश्वास हो चुका था कि आज वो किसी हालत में कुँवारी नही रहने वाली है...

"बाहर आ जाओ.." विपिन पैंटी को नाक से लगाकर उसमें से आ रही खट्टी मीठी गंध का आनंद लेते हुए बोला...

"जी.. तौलिया..?" कुछ देर उसके नायाब हुस्न को शर्मसार होने से बचाने के लिए अब टॉवेल ही एकमत्रा सहारा हो सकता था...

"बाहर आकर ले लो..." विपिन ने उसको तड़पने में कोई कसर नही छोड़ी थी...

अब कहने को गीता के पास कुछ बचा ही नही था.. और ना ही कुछ छिपाने को.. बिलखती हुई वो घुटनो के बल वही बैठ गयी और अपनी सिसकियों को विपिन की नाराज़गी से बचने के लिए छिपाने की कोशिश करने लगी..

"मेरे पास ज़्यादा टाइम नही है..?" बाहर उसका इंतजार कर रहे विपिन ने ज़रा ऊँची आवाज़ में कहा....

बेबस गीता ने हल्का सा दरवाजा खोला और उसकी आड़ लेकर अपना चेहरा बाहर निकाला.. विपिन उससे दूसरी तरफ मुँह किए खड़ा था.. उसके कंधे पर तौलिया टंगा हुआ था और एक हाथ में गीता की ब्रा और पैंटी और दूसरे हाथ में कोई हल्की नीली ड्रेस थी..

"बाहर आकर टॉवेल ले लो.." विपिन का स्वर हल्का सा नरम पड़ा...

बाहर निकलने से पहले गीता ने आखरी बार अपने कुंवारे बदन को मायूसी से देखा.. उसका अंग अंग इतना प्यारा था कि विपिन की कुत्सित नज़रों से ही मैला हो जाना था.. गीता अंदर से टूट चुकी थी.. अपनी जांघों को चिपकाए हुए, जो कुछ छुपा सकती थी.. उसको छुपाकर; नज़रें झुकाए हुए उसके कदम अपने आप ही बाहर विपिन की और बढ़ गये.. अब वो विपिन के इतना करीब आ चुकी थी कि विपिन उसकी सिसकियाँ महसूस

कर सकता था... गीता ने अचानक तौलिए पर झपट्टा सा मारा और जितना बदन ढक सकती थी.. ढक लिया...

"अभी वो समय नही आया है.. चिंता मत करो.. आराम से अपना बदन पौंछ लो.." विपिन क़ी ये कुछ देर की दरियादिली गीता की समझ से बाहर थी.. मन ही मन डरी सहमी गीता धीरे धीरे तौलिए से अपना बदन पौंच्छने लगी.. इस डर के साथ की ना जाने कब विपिन पलट जाए...

"पौंच्छ लिया...?" विपिन ने पूछा...

"ज्जई.." मानो गीता को 'जी' के अलावा कुछ कहना आता ही ना था.. विपिन के बोलते ही उसने झट से तौलिए को अपनी सेब के आकर की छातियो पर लगाकर लटका लिया.. ताकि जितनी हो सकें.. जंघें भी ढक जायें...

"गुड..! ये लो.. पहन लो.." कहते हुए विपिन ने अपना हाथ पीछे करके नीली ड्रेस गीता की और बढ़ा दी...

ड्रेस लेते हुए गीता का हाथ विपिन के हाथ से टकरा गया और उसके पुर बदन में झंझनाहट सी दौड़ गयी.. कारण था उसका नन्गपन...

गीता ने एक हाथ को तौलिए के साथ ही अपनी स्तनों पर चिपकाए हुए दूसरे हाथ से ड्रेस को नीचे लटका कर देखा... निहायत ही खूबसूरत वन पीस स्कर्ट थी वो.. मखमली सी बारीक रेशे की बनी हुई.. एक दम मुलायम.. इस ड्रेस को गीता किसी और मौके पर अपने लिए देखती तो शायद उसके चेहरे पर अलग ही नूर होता.. पर अब वैसा नही था.. उसको लगा जैसे ये सब उसकी इज़्ज़त की बलि लेने से पहले की तैयारियाँ हैं... उसने ड्रेस को सीने से उपर लगाकर देखा.. ड्रेस उसके घुटनो तक आ रही थी...

"जी.. वो.." गीता को लगा बिना बोले कुछ नही होगा...

"वो क्या.." विपिन दूसरी और मुँह किए इस कल्पना में लीन था कि बेपनाह हुस्न की मालकिन उस शानदार ड्रेस में कैसी दिखेगी...

"मेरे कपड़े..!" अंजान मर्द से अपनी ब्रा और पैंटी माँगते हुए गीता का चेहरा भय में भी लज्जा से लाल हो गया...

"हां.. पहन लो.. दे तो दी.." विपिन जानता था कि वो क्या माँग रही है.. पर जानते बूझते भी उसने यही जवाब दिया...

"नही.. वो.. अंदर वाले.." गीता की जांघों के बीच अजीब सी हलचल हुई...

"जो तुम्हारे पास है.. वही पहन लो.." विपिन ने शरारत से कहा..

विपिन का लहज़ा नरम होता जान गीता ने थोड़ी सी हिमाकत कर ही दी.. और कहते हुए पूरी तरह पिघल सी गयी," सिर्फ़.. वो... पैंटी दे दो!"

" मैने बोल दिया ना...."

विपिन ने पूरी बात बोली भी नही थी की कठपुतली की माफिक एक दम से गीता ने वो ड्रेस अपने गले में डाल ली..," जी.. पहनती हूँ.."

"गुड! पहन ली.." विपिन ने अब तक भी मुड़कर नही देखा था...

"जी!" गीता बुदबुदाई... चेहरा झुकाते हुए उसने अपनी छातियो पर मानसिक उत्तेजना की वजह से उभर कर दिख रहे 'दानो' को देखा.. और वह अंदर तक पानी पानी हो गयी.. बिना ब्रा के वो ड्रेस निहायत ही कामुक लग रही थी.. स्तनों और उसकी पेट से चिपकी हुई सी उस ड्रेस ने उसके बदन को सिर्फ़ ढक रखा था.. पर छुपा हुआ मानो कुछ भी नही था....

जैसे ही गीता ने विपिन को पिछे मुड़ते देखा.. वो उसकी तरफ पीठ करके खड़ी हो गयी.. विपिन भौचक्का सा गीता को देखता रह गया.. ड्रेस में वो उसकी कल्पना से कहीं अधिक कामुक लग रही थी.. नितंबों से चिपका हुआ कपड़ा उनकी दोनो फांकों का एक दम सही सही आकार बता रहा था... उनके बीच की खाई की सौम्यता भी मानो बेपर्दा सी थी.. जाने क्यू विपिन अपने उपर काबू किया हुए था.. गीता का शर्मीला स्वाभाव विपिन की उत्तेजना को और बढ़ा रहा था.. कापते हुए पैरों की खनक कंपन के रूप में नितंबों तक जाकर

उसके गदराए हुस्न को यौवन प्रकस्था तक ले गयी थी... जैसे उसकी जवानी थिरक उठी हो...

"इधर आकर बैठो.. " विपिन एक कुर्सी के सामने जाकर बेड पर बैठ गया.. सकुचती हुई गीता अपने दोनो हाथों को कंधे से लगाकर अपने यौवन फलों को छुपाने का प्रयास करती हुई मूडी और विपिन का इशारा समझ कुर्सी पर जाकर बैठ गयी....

"क्या लगता है तुम्हे? तुम वापस जा पाओगी या नही...?" विपिन ने गीता से काम की बात शुरू कर दी...

गीता कुछ नही बोली.. पहले से झुके हुए अपने चेहरे को थोडा सा और झुकाया और आँसू लुढ़का दिए....

"मेरा ये रोज का काम है.. मुझे तुम्हारे आँसू प्रभावित नही कर सकते.. मैने तुम्हे बताया था कि तुम कैसे वापस जा सकती हो..? अब बताओ, क्या इरादा है?" विपिन ने अपनी आवाज़ में यथासंभव क्रूरता लाने की कोशिश करते हुए कहा..

"जी.. मैं... आपकी हर बात मानूँगी..." गीता को डराने के लिए किसी और नाटक की ज़रूरत ही ना थी.. अब तक जो कुछ हो चुका था.. वह काफ़ी से भी बहुत ज़्यादा था.. उसको अंदर तक हिलाने के लिए...

"शाबाश.. तो शुरू करें..?" विपिन ने उसी अंदाज में कहा...

"जी.." गीता के पास और कोई ऑप्शन था ही नही.. सिवाय उसकी हर बात मानने के...

"तुम्हे पता है कि तुम कितनी सुंदर हो?" विपिन ने इस सवाल से शुरुआत की...

क्या कहती गीता? पर कुछ तो कहना ही था," जी.." कहते हुए उसके दीन हीन चेहरे पर नारी सुलभ गर्वपरीलीक्षित होने लगा...

"कैसे पता?" विपिन ने इस बार निहायत ही बेतुका सवाल किया...

"जी.. !" गीता को कोई जवाब नही आया...

"तुम्हारे अंदर ऐसा क्या है कि तुम्हे लगता है तुम औरों से सुंदर हो..?" विपिन बात को पता नही कहाँ ले जाना चाहता था..

"जी.. कुछ नही.. और भी बहुत सुंदर हैं..." गीता को यही कहना मुनासिब लगा..

"नही.. मैने दुनिया देखी है.. बहुतों को अपने बिस्तर पर लाकर देखा परखा है.. पर सच कहता हूँ.. तुम जैसी मैने आज तक नही देखी.. मैं जानता हूँ.. पर बताना तुमको ही है कि तुम्हारे अंदर दूसरों से अलग क्या है?" विपिन ने कहा..

"जी.. पता नही.." गीता ने धीरे से कहा..

"मैं बताऊं?.. तुम्हारे एक एक अंग को छूकर..?" विपिन ने धमकी दी..

गीता अंदर तक सिहर गयी.. सवालों के जवाब देना उसको अपनी इज़्ज़त देने से भी अटपटा लग रहा था.. और वो भी उस हालत में जबकि इज़्ज़त तो जानी ही जानी थी... वो कुछ नही बोली...

"खड़ी होकर यहाँ आओ..!"

गीता ने अक्षरश: आज्ञा का पालन किया... खड़ी होते ही उसके हाथ फिर से उसकी छातियों को ढकते हुए कंधों पर टिक गये... नज़रें झुकाए वह विपिन के पास आकर खड़ी हो गयी...

"ये क्या छुपा रही हो?" विपिन ने उसकी आँखों में आँखें डाल कहा...

"ज्जई.. क्या?" गीता उसकी बात को भाँप गयी थी..

"यही.. हाथों के नीचे.. हाथ सीधे क्यू नही करती.. मैं चाहता तो तुम्हे बिना कपड़ों के भी यहाँ खड़ा कर सकता था.. है ना?" विपिन ने कहा..

"जी.."गीता की आँखें दबदबा गयी.. उसने विपिन के दोबारा बोलने से पहले ही हाथ नीचे लटका दिए...

विपिन ने अपने हाथ आगे करके उसकी २८" कमर पर दोनो और टीका दिए.. गीता का पेट काँपने सा लगा... भय और उत्तेजना की लहर तेज़ी से उसके पूरे बदन को कंपकँपति चली गयी..

ना चाहते हुए भी विपिन के मुँह से निकल गया," क्या चीज़ हो तुम..!"

गीता की आँखें पहले ही बंद हो चुकी थी...

"अच्छा चलो छोड़ो.. आओ.. मेरी गोद में बैठ जाओ.. !" विपिन को अपने आप पर काबू पाना मुश्किल हो रहा था..

गीता ने चौंक कर विपिन की आँखों में देखा.. कितनी आसानी से उसने ये बात कह दी.... पर विपिन की आँखों में आदेशात्मक इशारे से वह टूट गयी.. कुछ प्रतिक्रिया देने की उसमें हिम्मत ही ना हुई... उसने तुरंत नज़रें वापस झुकाई और मुँह फेर कर खड़ी हो गयी.. उसको यकीन था कि विपिन उसको अपने आप ही खींच लेगा... सोचकर ही उसके नितंबों में खून का संचार हो गया.. नितंबों की थिरकन उसकी स्कर्ट के बारीक रेशों के उपर से ज्यों की त्यों महसूस की जा सकती थी...

"बैठो!" विपिन ने पायजामा पहन रखा था.. उसने अपनी जांघों को हल्का सा खोल दिया...

इस बार देर करने की हिम्मत गीता की नही हुई.. वह झुकती चली गयी और हल्की सी टीस अपने मुँह से निकलती हुई उसकी जांघों के बीच बैठ गयी," आआअहह!"

"क्या हुआ?" विपिन ने अंजान सा बनते हुए पूछा...

अब गीता बताती भी तो क्या बताती.. विपिन एक साथ उसको दोनो तरह की चोट दे रहा था.. एक तरफ जान लेने का डर लगातार उसको थर्रए हुए था... और दूसरी तरफ उसकी अचेत जवानी की आग में घी डालता हुआ उसको और भड़का कर उसके जज्बातों को जिंदा करने की कोशिश की जा रही थी.. गीता को कपड़े के उपर से ही अपने नितंबों के

नीचे कुछ 'साँस' सा लेता हुआ महसूस हुआ.. तेज़ी से फैल रही इस आग को पूरे शरीर में फैलाकर उसका असर कम करने की कोशिश में गीता ने अपनी कमर विपिन की छाती से चिपका दी....

विपिन ने अपने हाथ आगे करके उसकी जांघों पर रख दिए.. गीता की पलकें बंद होनी शुरू हो गयी...

"तुम्हे तो कोई भी पसंद कर सकता है.. है ना?" विपिन ने अपनी उंगलियों को उसकी मांसल जांघों पर नचाते हुए पूछा...

इस हालत में गीता के लिए ऐसे सवालों का जवाब देना अपेक्षाकृत आसान था.. पर 'हां' कहते हुए भी उसके गले से 'हां' की बजाय 'अया' ही निकला..

विपिन का एक हाथ अब गीता के कमसिन पेट पर आग लगा रहा था...," प्रतिक को पटा सकती हो...?"

गीता के लिए अब उसकी जांघों के बीच लगातार ठोस होते जा रहे मर्दाना औजार की चुभन असहनीय होती जा रही थी... पर जवाब देना भी ज़रूरी था....," ज्जई.. पर्र..क्यू?"

"दौलत के लिए.. वो ८० करोड़ का अकेला मलिक है.. पर एकदम भोला है.. और तुम्हारे लिए पागल भी... सिर्फ़ तुम्हे उसको ये यकीन दिलाना है कि तुम ही उसकी तनवी हो...."

गीता को उसकी आधी बात ही समझ में आई.. उसकी जांघों के बीच बढ़ रही हलचल के कारण उसकी उत्तेजना लगातार अनियंत्रित होती जा रही थी,"पर.... मैं तो उनको जानती भी नही..." गीता ने अपनी जांघें थोड़ी सी और खोल दी..

विपिन का हाथ अब थोडा और उपर होकर गीता की गोल और मुलायम छातियो के निचले भाग से जा टकराया था..,"उसकी चिंता मत करो... मैं तुम्हे सब समझा दूँगा.. उससे मिलवा भी दूँगा.. तुम्हे कुछ नही करना.. बस मेरे हाथों का 'मोहरा' बनना है.. उससे शादी करके तलाक़ लेना है बस.. १० करोड़ तुम्हारे.. और ३० मेरे.. बोलो..."

गीता को तो अब तक सुनना भी बंद हो गया था.. उसके कानो में अजीब सी सीटियाँ बजने लगी थी... मारे कामुकता के उसने अपनी छातियो पर जा चढ़े विपिन के हाथों को वहीं दबोच लिया.. और छातियों में आ चुकी सख्ती को दबा दबा कर मुलायम करने की चेष्टा करने लगी.. उसकी साँसे अब जोरों से चलने लगी थी... नितंब विपिन की जांघों के बीच आगे पीछे होकर उस अंजानी खुजली को मिटाने का प्रयास करने लगे थे...

"थोड़ी देर बातें मत करो प्लीज़... मुझे कुछ सुनाई नही दे रहा.." गीता अब पूरी रंग में रंग चुकी थी....

"क्या हुआ?" विपिन ने अंजान बनते हुए पूछा...

"पता नही.. पर प्लीज़.. बाद में चाहे कुछ पूछ लेना.. अब सहन नही हो रहा.." गीता बदहवास हो चुकी थी..

"स्कर्ट निकाल दो.." विपिन ने कहते हुए उसके गालों को चूम लिया....

विपिन के इस आदेश को पूरा करने में गीता ने एक पल भी नही लगाया.. उसको तो पहले ही विपिन और उसकी जांघों के बीच कपड़े की वो बारीक सी दीवार अपनी सौतन लगने लगी थी.. इस आदेश को गीता ने उसकी जान बक्षणे की शर्त नही बल्कि निमंत्रण माना.. झटके के साथ वह उठी और जांघों से स्कर्ट को खिसका उसके नितंबों से उपर करके कमर तक चढ़ा लिया और तुरंत वापस बैठ गयी...

गीता के नितंब उसके गालों की तरह ही गोरे और एकदम चिकने थे.. उनको देख विपिन भी पागला सा गया और अपनी सारी प्लॅनिंग भूल कर उस पर टूट पड़ा.. गीता को अपनी गोद से उठाकर बेड पर पटका और उसके नितंबों की करारी खाई में अपनी उंगली फिराने लगा.. आनंद के मारे गीता ने उनको और उपर उठा चौड़ा करके उस गहराई को थोड़ा कम कर दिया...

"आआआहह बापू.. मैं तो गयी..." करारी और साफ किए हुए हल्के बालों वाली योनि के दाने पर जैसे ही विपिन की उंगली ने स्पर्श किया.. गीता के बदन में आनंद की एक मीठी सी लहर दौड़ गयी.. एक ही पल में विपिन का हाथ मीठी गंध के योनि रस से तरबतर हो गया... गीता बिस्तर पर अर्धमूर्छित अवस्था में लंबी लंबी साँसे ले रही थी...

पर विपिन अब उसको आराम देने के मूड में नही था... उसने अपना पायजामा उतार फैंका.. वह भी बिना अंडरवेर के ही सोच समझ कर आया था... पायजामा उतारते ही फन उठाकर खड़े हो गये उसके हथियार को उसने गीता के हाथ में दे दिया.. गीता उल्टी लेटी होने के कारण उसको ढंग से देख नही पा रही थी... पर हाथ में गरमागरम तने हुए विपिन के लिंग के आते ही वह पलट गयी," हाए राम.. इतना बड़ा..!" आश्चर्य से उसने कहा..

विपिन बिना कुछ बोले सिर्फ़ मुस्कुराया और बाकी बचा हुआ गीता का शरीर भी स्कर्ट से बेदखल कर दिया... स्कर्ट से बाहर आते ही गीता की गोरी मस्त छातीया कबूतरों की तरह फड़फड़ाने लगी.. सख़्त हो जाने के बावजूद प्यारी सी कोमरंभा समेटे हुए दोनो स्तनों को अपने हाथों से मसलकर उनका आनंद लेता हुआ विपिन गीता की छाती पर आ चढ़ा.. उसका लिंग अब गीता की स्तनों के बीच फूत्कार रहा था.. थोड़ा आगे झुक कर विपिन ने उसको गीता के होंटो से छुआ दिया.. पर गीता समझ नही पाई कि क्या करना है..?"

"मुँह खोलो..." पगलाए हुआ सा विपिन अब भी आदेशात्मक आवाज़ का इस्तेमाल कर रहा था..

गीता अब उसका इशारा समझ गयी.. अपना मुँह पूरा खोल कर उसने होंटो को गोल करके जितना हो सका उसने उनका दायरा बढ़ा दिया... विपिन ने झुक कर उसके मुँह में अपना सूपड़ा ठूस दिया...," चूसो इसे... और अंदर लेने की कोशिश करो.. गले तक.."

गीता को ये सब अजीब सा लगा.. पर बेहूदा बिल्कुल नही.. अपनी तरफ से वो पूरी कोशिश करने लगी.. जितना अंदर ले सकती थी लिया और फिर अपना मुँह हिलाकर उसको अंदर बाहर करने लगी.. विपिन आनंद के मारे मरा जा रहा था.. सच है कि इस खेल में अनुभव का अलग ही मज़ा है.. पर ये भी सच है कि पार्ट्नर अगर बिल्कुल अनाड़ी हो तो उत्तेजना अपने चरम पर रहती है...

अचानक विपिन को लगा कि वह अब कुछ पल का ही मेहमान है तो उसने गीता के हाथों को दबोचा और पूरी ताक़त से अपना लिंग उसके गले में उतार दिया...

गीता छटपटा उठी.. उसको अपना दम घुटता सा महसूस होने लगा और उसने उसको निकालने की भरसक कोशिश की.. पर जब तक वो सफल होती.. विपिन के लिंग से

निकले रस की धार उसके गले को तर करती चली गयी.. और उसके बाद अपने आप ही लिंग ने छोटा होकर उसको साँस लेने लायक जगह गले में दे दी...

विपिन मुस्कुराता हुआ उसके उपर से उठ गया.. गीता कुछ समझ नही पाई.. जिस पल विपिन ने उसके गले में लिंग फँसाया.. उसको तो यही अहसास हुआ था कि ये कोई मारने का तरीका है.. विपिन के अपने उपर से हट जाने के बाद वो उसको आँखें फाड़ कर देखने लगी...

"क्या हुआ..? विपिन ने उसको अपनी बाहों में उठा अपनी गोद में लिटा सा लिया.. इस स्थिति में गीता के नितंब एक बार फिर विपिन की जांघों के बीच थे.. पर इस बार नज़ारा दूसरा था.. गोद में सीधी लेटी हुई गीता की जांघों में छिपी बैठी कुँवारी तितली लाल होकर विपिन के मुँह में लार का कारण बन रही थी..

गीता को जब तक समझ में आता.. विपिन उसको बिस्तर पर लिटा मुख मैथुन की पोज़िशन में उसके उपर आ चुका था.. जैसे ही विपिन ने गीता की योनि को अपने होंटो से छुआ, उसकी सिसकी निकल गयी..,"अया.. ये क्या है?" कसमसाते हुए गीता ने कहा...

"बस देखती जाओ.. तुम्हारा दिल करे वो तुम करो.. मेरा दिल जो कर रहा है.. वो मैं करूँगा.." कहते ही विपिन ने वापस उसकी योनि से अपने होठ सटाए और उसकी पतली फांकों के बीच रास्ते को अपनी जीभ से कुरेदने लगा..

गीता उन्माद से पागल सी होती जा रही थी.. जब कुछ और उसकी समझ में नही आया तो अपनी आँखों के सामने झूल रहे उसके लिंग को अपने सिर के नीचे तकिया लेकर अपने मुँह में भर लिया.. और पहले की तरह चूसने लगी...

खेल करीब ५ मिनिट तक चला... दोनो पागल से होकर एक दूसरे के अंगों को काट खाने को उतावले से होने लगे.. जैसे ही गीता की सिसकियां बढ़ने लगी.. विपिन ने तैयार होकर अपने होंटो को पूरा खोलकर उसकी योनि को ढक लिया.. ताकि रस के एक भी कतरे से वह वंचित ना रह पाए... सखलन आरंभ होते ही गीता ने अपने नितंबों को उपर उठा लिया और हाँफने लगी.. बिस्तर पर निढाल पड़ी हुई गीता पहले ही दिन दूसरी बार यौन आनंद के सागर में गोते लगाने लगी...

साँसों की गति कम होने पर जैसे ही गीता ने आँखें खोली, विपिन को सामने बैठकर अपनी जांघों के बीच कुछ टटोलते पाया... वासना की खुमारी उतरने के बाद जब उसने विपिन को इस तरह अपनी कुँवारी योनि पर नज़रें गड़ाए देखा तो वह शरम से लाल हो गयी," क्या कर रहे हो?"

"अभी पता चल जाएगा..." विपिन ने इतना ही कहा और उसकी रस से तर योनि में अपनी उंगली घुसा दी.. हल्के पर अजीब से दर्द ने गीता को उछलने पर मजबूर कर दिया..," ऊओई.. "

विपिन उसकी और देखकर मुस्कुराया और बोला," सच में लड़कियाँ इतनी कमसिन और नादान होती हैं.. आज पहली बार पता लगा...!"

ज़बरदस्ती वहाँ लाकर उसको डरा धमका हर बात के लिए मजबूर करने को विपिन के द्वारा 'प्यार' का नाम देने पर गीता की आँखें डबडबा गयी..," प्यार ऐसे होता है क्या? जान से मारने की धमकी देकर.." गीता में जाने कहाँ से व्यंग्य करने का साहस आ गया...

"कौन मार रहा है तुमको जान से... तुम तो जान के करीब रखने वाली चीज़ हो जानेमन..." विपिन ने उंगली धीरे धीरे आगे पीछे करनी शुरू कर दी.. अब उंगली सररर से अंदर बाहर हो रही थी.. बिना रुकावट के..."

"अब तो मुझे बख्श दोगे ना..? जाने दोगे ना यहाँ से...?" गीता बहकति हुई साँसों के साथ भावुक हो उठी...

"तुम्हे कुछ नही होगा जान.. मैं बाद में बात करूँगा... अब प्लीज़ चुप हो जाओ और प्यार करने का आनंद लो.. मेरा वादा है.. तुम जो चाहोगी वैसा ही होगा..." विपिन इतने कोरे माल को पाकर धन्य हो उठा था...

गीता ने अपनी आँखें बंद कर ली और एक बार फिर विपिन की उंगली के साथ अपने नितंबों की थिरकन से ताल मिलाने लगी.. विपिन का जोश भी अब हिलौरे मार रहा था.. उसने अपनी उंगली निकाली और गीता की टाँगें उपर उठाकर योनि के होंटो पर अपना लिंग सटा दिया...

इसके साथ ही गीता को फिर से बेचैनी सी महसूस होने लगी.. उंगली की बजाय इस गरम और मोटी चीज़ का स्पर्श ज़्यादा आनंदकारी था.. पर इतना मोटा?.. यही सोचकर उसकी धड़कने बढ़ने लगी थी," प्लीज़.. आराम से.. तो... आआआआअहह.. मर गयी.. निकाल लो... प्लीज़.." गीता का लहज़ा बोलते बोलते अचानक बदल गया.. आनंद अचानक तीव्र पीड़ा में बदल गया और अंदर गये औजार को बाहर निकालने की अनुनय करती हुई वा छटपटाने सी लगी...

"अब निकालने का कोई फायदा नही जान.. उल्टा दर्द ज़्यादा ही होगा..." कहते हुए अपने सुपड़े को योनि मुख में डाले हुए ही उसने गीता को कसकर दबोचा और उसकी स्तनों पर झुक गया... गोल गोल छाती को एक हाथ से प्यार से मसरंभा हुआ विपिन जैसे ही उसकी दूसरी स्तन से रसपान सा करने लगा.. गीता का मन दावदोल हो गया.. आनंद और पीड़ा की एक साथ अनुभूति ने उसको अजीब से धर्मसंकट में डाल दिया... धीरे धीरे जब उसकी पीड़ा कम होनी शुरू हुई तो आनंद उस पर हावी हो गया और वो फिर से 'तीसरी' बार की तैयारी में मस्त होकर नितंब उपर उठाने लगी.. विपिन धीरे धीरे अंदर होता जा रहा था...

"आआआहह.." जैसे ही विपिन का लिंग पूरा गीता के अंदर समाया, गीता पागल सी हो गयी.. दर्द के मारे नही.. आनंद के मारे.. विपिन ने लगभग पूरा लिंग बाहर खींचा और इस बार ज़्यादा तेज़ी के साथ अंदर कर दिया.. तेज़ी बढ़ने से आनंद में भी वृधि हुई थी.. गीता ने विपिन की कमर पर हाथ ले जाकर उसको अपनी स्तनों पर चिपका लिया.. अब रास्ता एकदम साफ था.. विपिन के धक्कों की गति तेज हो गयी और हर धक्के के साथ वो बढ़ती ही गयी.. साथ में साँसें भी... साथ में धड़कने भी.. गीता के मंन का सारा डर निकल कर अब वासना के इस अजीबोगरीब सफ़र में विपिन का हमराही बन गया.. विपिन उपर से धक्का लगाता और एक उसी वक़्त गीता नीचे से... धक्कम धक्का की इस रेलाम पेल में उनको ये अहसास तक नही हुआ कि बिस्तर की चादर का एक छोटा सा हिस्सा खून के धब्बों से रंग चुका है... ये रेलाम पेल तब तक जारी रही, जब तक कि गीता ने तीसरी बार सखलित होकर अपनी जांघें भींचने की कोशिश शुरू नही कर दी... अब विपिन का ठहरना नामुमकिन था.. पर अंदर ही झड़ने की बजाय उसने गीता के योनि रस और खून से सना अपना लिंग निकाल कर उसके पेट पर धारदार पिचकारी छोड़ दी.... और फिर उसके उपर लेटकर ही अपनी साँस उतारने लगा....

गीता की आँखें नम हो गयी... विपिन ने देखा और पूछा," क्या हुआ?"

"अब तुम मुझे मारोगे तो नही ना....?" गीता ने उसकी आँखों में देखते हुए पूछा....

"तुम तो बिल्कुल पागल हो... जाओ.. जाकर नहा लो.. फिर बात करते हैं..." कहते हुए विपिन ने उसको बाहों में उठाया और बाथरूम के दरवाजे पर उतार दिया...," मैं भी नाहकार आता हूँ.. तब तक..."

गीता उसको गौर से देखती हुई पल पल में आ रहे उसमें बदलाव के कारण को समझने की कोशिश करने लगी... अटनाक से ग्रस्त उसके दिल के एक छोटे से हिस्से में अब जींसे की आस बढ़ गयी थी..

बाथरूम से नहा कर गीता ठहरे और थके हुए कदमों से बाहर निकली.. उत्तेजना का भूत दिमाग़ से उतरते ही उसको फिर से 'अपनी जान' और बापू की चिंता सताने लगी.. विपिन नहा धोकर बेड पर पसरा हुआ था.. गीता को देखते ही उसने बैठ कर अपनी बाहें फैला दी," आओ जानेमन!"

गीता किसी खिलौने की तरह उसके करीब आकर खड़ी हो गयी.. विपिन ने हाथ बढ़कर उसका हाथ पकड़ा और अपनी बाहों में खींच लिया.. गीता निढाल सी उसके उपर जा गिरी...

विपिन ने प्यार से उसके गालों को चूमा," तुम किसी बात की फिकर ना करो... वो सब सिर्फ़ एक नाटक था.. तुम्हे डराने के लिए.. ताकि तुम चुपचाप मेरी हर बात मान लो.."

विपिन के बात करने के लहजे में आए बदलाव से गीता कुछ हद तक निसचिंत हुई.. पर पूरी तसल्ली उसको नही हुई थी," पर.. वो लाशें?" याद करते हुए गीता का पूरा बदन झनझणा उठा...

"हा हा हा... एक मिनिट.. भगवान दास...!" विपिन ने ज़रा ज़ोर से आवाज़ लगाई...

"जी साहब.."भगवान दास दरवाजे के बाहर से बोला...

विपिन उठा और दरवाजा खोलते हुए बोला," ज़रा एक बार वो लाश उठाकर लाना..!"

भगवान को अहसास नही था कि नाटक ख़तम हो चुका है.. विपिन के करीब आते हुए धीरे से बोला..," पर साहब.. उनको तो मैने धो दिया है..."

"हां.. हां.. वही.." कहते हुए विपिन वापस बिस्तर पर आकर गीता से दूरी बनाकर बैठ गया...," दरअसल वो रब्बर के पुतले हैं.. शिकार के दौरान उन पर खून लगा मैं उनको जानवरों को आकर्षित करने के लिए यूज़ करता हूँ.. अभी तुम पूरी रोशनी में उनको देखोगी तो सब समझ जाओगी..."

गीता प्रतिक्रिया देने ही वाली थी कि भगवान दास 'एक लाश' को बालों से पकड़ कर खींचता हुआ कमरे में ले आया...

गीता हैरत के मारे उछल पड़ी," ये तो... नकली हैं...!"

"मैं क्या अभी फ़ारसी में बोल रहा था...!" विपिन ने मुस्कुराते हुए कहा...," मैं क्या तुम्हे आदमख़ोर दिखाई देता हूँ...?"

गीता ने खुद को ठगा सा महसूस किया... ये पुतले ही थे जिन्होने गीता को अपनी मर्ज़ी से बिना किसी प्रतिरोध के अपना शरीर विपिन को सौंपने पर मजबूर कर दिया.. वरना..," अब तो मुझे घर छोड़ आओ.. मैं कुछ भी कह दूँगी बापू को... सुबह तक नही गयी तो वो तो मर ही जाएँगे..."

"अभी कहाँ.. अभी तो तुम्हे लाने का असली मकसद पूरा करना है... बापू जी की चिंता मत करो.. मैने एक लड़की से घर फोन करवा दिया है कि तुम उसके पास हो..." विपिन ने गीता को धाँढस बँधाया...

"पर... तुम्हे घर का नंबर. कहाँ से मिला...?" गीता ने आश्चर्य से कहा...

" तुम्हारे बापू से लिया था.. जब मैं और वो अकेले बैठे थे... यूँही.." विपिन दरवाजा बंद करके उसके पास आकर बैठ गया...

गीता को अब अपने आप से ग्लानि हो रही थी.. जान बचने का भरोसा मिलने के बाद उसको अपने भंग हो चुके कौमार्य का गहरा पश्चाताप था... ये पीड़ा अब उसके दिल में टीस बनकर उभरने लगी...," पर आपने ऐसा क्यू किया.. मेरे साथ?" गीता ने भावुक होकर दर्द से भारी आँखों से विपिन की आँखों में देखा..

"तुम्हारे १० करोड़ और अपने ३० करोड़ के लिए.. अगर तुम मुझसे शादी करना चाहो तो ये हमारे ४० करोड़ भी हो सकते हैं..." शादी का जिकर करके विपिन ने उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया.. उसको कतई अहसास नही था कि उसको शादी के लिए प्रपोज़ करने वाला पहला शख्स इस अंदाज में उससे रूबरू होगा.... सोचकर ही गीता पूरी तरह टूट गयी और सुबकने लगी...

"डोंटबी इमोशनल यार.. जिंदगी में कुछ हासिल करने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है... और १० करोड़ के लिए ये कीमत कुछ भी नही.. तुम रोना धोना छोड़ ध्यान से मेरी बात सुनो...!" विपिन ने उसकी और गौर से देखते हुए कहा...

"क्या सुनू मैं अब?" गीता फट सी पड़ी..," आपको अहसास भी है कि एक लड़की के लिए उसकी इज़्ज़त क्या मायने रखती है.. ? आप मेरी कीमत लगा रहे हो.. मेरी जिंदगी की... अब अगर मैं जियूंगी तो सिर्फ़ बापू के लिए.. घुट घुट कर.. आपको नही पता की आपने मुझे क्या जखम दिया है..!" गीता सुबकने लगी...

"पर मैने कहा ना.. मैं तुमसे शादी तक करने को तैयार हूँ.. मेरी बात तो सुन लो..." विपिन एक पल के लिए गीता की नफ़रत उगलती आँखों को देख बॅकफुट पर आ गया...

" सीना तान कर कहते हो कि जाने कितनी ही लड़कियों को इस तरह बिस्तर पर लेकर आए हो! किस किस से शादी करोगे.. बलात्कार करने के बाद... बोलो!" गीता चिल्ला पड़ी.. उसके आँसू अब भी नही थम रहे थे...

"हे.. एक मिनिट.. मैने तुम्हारे साथ कोई ज़बरदस्ती नही की.. मेरे पास सबूत भी है.. अब मेरी नरमी का ज़्यादा फायदा उठाने की कोशिश मत करो.. शादी के लिए मैने सिर्फ़ इसीलिए ऑफर किया है कि तुम मुझे पसंद हो.. इसीलिए नही कि मैं तुमसे प्यार करने का हर्जाना भुगतना चाहता हूँ.. समझी.. चुप चाप मेरी बात सुनो.. वरना भगवान दास को भी नयी नयी लड़कियों का बड़ा शौक है... और उसका अंदाज तुमसे सहन नही हो पाएगा..." विपिन खिज कर गुर्राने सा लगा...

गीता को तो डरने के लिए हल्का सा इशारा ही काफ़ी था.. खुद को भगवान दास को सौंप दिए जाने की धमकी सुनकर तो वह थर्रा सी उठी... यहाँ वह उनका विरोध कर भी कैसे

सकती थी.. अपने आपको सिसकने से रोकने की कोशिश करते हुए उसने आँसुओं को पौंछा और चुप होकर बैठ गयी....

"मेरा एक काम तुम्हे करना होगा.. बदले में तुम्हे मैं इसकी कीमत भी दूँगा.. १० करोड़..." विपिन ने उसके हाथों को अपने हाथ में लेते हुए कहा....

"क्या? " गीता का जवाब १० करोड़ के लालच की वजह से नही आया.. पर जवाब देना ज़रूरी था.. बात सुनना ज़रूरी था..

"पहले तुम्हे मैं एक कहानी सुना दूं... प्रतिक अपने बाप का इकलौता लड़का है.. जाहिर है उसके बाप की ८० करोड़ की वसीयत सीधी उसके ही हिस्से आनी है... पर मुझे नही लगता वो इस दौलत को संभाल पाएगा.. बड़ा सीधा और सरल है बेचारा... कोई ना कोई उससे वो दौलत हथिया ही लगा.. तो क्यू ना मैं ही कुछ सोच लूँ.. हे हे हे.. वैसे मुझे बड़ा भाई मानता है बेचारा...!" कहते हुए विपिन रुक गया...

गीता के कोई प्रतिक्रिया ना देने पर उसने बोलना जारी किया..," दर असल कई महिने से उसको अजीब से सपने आ रहे हैं... उसके सपनो में तुम आती हो और अपने पास बुलाती हो.. पूर्व जनम का वास्ता देकर.. ये सब अजीब है और मेरी समझ से बाहर भी.. पर कुछ घटनाओ ने मुझे भी सोचने पर मजबूर कर दिया है.. रात को तुम्हारा जो कमीज़ फटा.. वो तुमने खुद उसके सपने में फाडा था.. कितना अजीब है ना.. खैर हमें उससे क्या लेना देना.. सिर्फ़ काम की बात सुनो.. तुम्हे देखकर वो तुम्हे ही अपने सपनो की रानी मानने लगा था.. पर फिर सपने में तुमने ही उसको ये बोला कि वो लड़की मैं नही हूँ.. कोई और है.. तनवी नाम की.. समझी कुछ?"

"नही..!" सच में गीता के मन में कुछ भी पल्ले नही पड़ा...

"चलो एक मिनिट.. तुम्हे सारी बात विस्तार से बताता हूँ.." कहकर विपिन उसको पूरी कहानी बताने लगा जो उनके टीले पर जाने से शुरू हुई और आज दोपहर प्रतिक द्वारा सारी सपना-कहानी का पटाक्षेप करने पर ख़तम....

"अगर उसकी सारी कहानी उसके दिमाग़ का वेहम है तो फिर तुम्हे वो पीपल के पास दौरा क्यू पड़ा..?" गीता ने कहानी में पूरी दिलचस्पी ली.. हालाँकि वह उसको उसके दिमाग़ का वेहम नही बल्कि पुनर्जन्म की कोई सच्ची अनकही कहानी मान रही थी...

"वो मैने नाटक किया था.. एक तरफ मैं उसको ये कह रहा था की ये सब कुछ नही है.. दूसरी तरफ उसके दिमाग़ में ठूस ठूस कर तनवी का भूत भर देना चाहता हूँ.. ताकि उसको मुझ पर रत्ती भर भी शक ना हो..." विपिन ने जैसे अपने मन की पूरी गंदगी निकाल कर उसके सामने रख दी...

गीता ने उसकी आँखों में देखा.. विपिन को अपने लिए गीता की आँखों में घृणा का संचार होते देखा," ऐसे क्या देख रही हो?"

"कुछ नही.. अब.. मुझसे क्या चाहते हो...?" गीता ने नज़रें झुकते हुए कहा...

"यही कि तुम इस प्लान में मेरा साथ दो... तुम प्रतिक को विश्वास दिलाओ की तुम्हे सब कुछ याद आ गया है.. और तुम्ही उसके पूर्वज़नम की दुर्गावती हो.. यानी इस जनम में प्रतिक की तनवी...!"

# ९

"समय की पाबंदी तो कोई तुमसे सीखे.. कितने बजे का टाइम दिया था तुझे?" प्रतिक धीरजंदर के आते ही उस पर गुर्राया...

"ओये होये.. क्या बात हो गयी यारा...? टेंशन ना ले.. आ तो गया ना मैं.. देख तेरी खातिर बिना नहाए ही भाग आया हूँ उठते ही... खाली ड्राईक्लीन की और पर्फ्यूम लगा लिया..," धीरजंदर ने अगली बात धीरे से उसके कान में कही," मैले कपड़ों में ही.. धुले हुए मिले ही नही यार.. तूने कल रात को ही बताया..."

"तू नही सुधरेगा...! ट्रेन निकाल दी ना.. ट्रेन से चलने का प्रोग्राम था.. अब बस से जाना पड़ेगा.." प्रतिक ने मुँह बनाया...

" ऐसी भी क्या जल्दी है? आने वाली अपने आप सुधार देगी.. कोई इस जैसी सोहनी.." पास से गुजर रही सुंदर सी मस्त फिगर वाली लड़की को देखकर धीरजंदर ने जुमला फैंका... लड़की ने शायद बात सुन ली.. अपनी चाल को धीमी करके लड़की ने धीरजंदर को घूरा और आगे निकल गयी..

"देख कैसे देख रही थी.. मुझे ऐसी ही किसी की ज़रूरत है.. लाल मिर्ची जैसी.. जो मुझे सुधार सके.. है ना!.. हे हे हे" धीरजंदर ने थोड़ी और तेज आवाज़ में बात कहकर लड़की तक अपनी फरियाद पहुँचा ही दी....

"अपनी ज़ुबान को फेविकोल से चिपका कर रखा कर.. नही तो किसी दिन ऐसी धुलाई होगी कि.." प्रतिक ने वापस मुड़कर देख रही लड़की की तरफ देख कर आँखों ही आँखों में खेद प्रकट किया..

"ओये धुलाई उलाई छोड़.. चल बस स्टँड ढूँढते हैं.. नही तो बस निकलने का ठीकरा भी मेरे ही सिर फोड़ेगा तू... बाकी लड़की पटाखा थी यार... नही?" धीरजंदर अब भी बाज नही आया...

"अबे ये क्या है चाचा... बस स्टँड ही तो है ये!" प्रतिक चिल्ला उठा...

"ओह माइ गॉड.. आइ'एम सो सॉरी.. मैं तो भूल ही गया था कि तूने मुझे दोबारा फोन करके बस-स्टॅंड पर आने को बोला था.. पर हम जा कहाँ रहे हैं.. ये तो बता दे..." धीरजंदर का बोलना बदस्तूर जारी था...

"जहन्नुम में.. अब तू चुप चाप खड़ा रह.. थोड़ी देर.. बस आने वाली है..."

"देख भाई.. जन्नत में चल या जहन्नुम में.. पर खटारा बस में में नही जाऊंगा.. नयी सी बस होनी चाहिए कोई... एक्सप्रेस!" धीरजंदर ने कहा...

"हम्मम.. तेरे बाप दादा ने एअरपोर्ट बनवा रखा है यहाँ... खैर.. उसकी चिंता मत कर.. ए.सी. कोच है.."

"फिर ठीक है.. देख भाई.. जहाँ भी चलना है.. मुझसे बात मत करना.. रास्ते भर सोता जाऊंगा.. आज ५ घंटे पहले उठना पड़ गया.. तेरी वजह से... वैसे चलना कहाँ है यार.. बता ना..."

"तू चुप होगा तभी तो मैं बात करूँगा....यहाँ से अमृतसर चल रहे हैं.. आगे की आगे बताऊंगा.. अब और कुछ मत पूछना...!" प्रतिक ने उसको कहा...

"अमृतसर? अमृतसर में तो एक बार मेरी दादी खो गयी थी यार... स्वरण मंदिर के आगे कुल्छे खाने के लिए गाड़ी से उतर गयी.. और मेरे दादा जी को याद ही नही रहा की उनके साथ दादी जी भी हैं.. बस.. फिर क्या था.. गाड़ी स्टार्ट करके चलते बने... बाद में ध्यान आया तो बड़े परेशान हुए.. पता है ढूँढते हुए वापस आए तो दादी क्या करती मिली...?" धीरजंदर तूफान मैल की तरह था....

"क्या यार?" प्रतिक ने खीजकर कहा...

"कुल्छे खाते मिली.. और क्या? कुल्छे खाने ही तो उतरी थी.. हे हे हे"

"बस अब चुप हो जा... बस आ गयी.. चल बॅग उठा...." प्रतिक ने उसका भोँपू बंद करवाया और बॅग उठाकर वो बस की तरफ चल पड़े....

"आहा.. अगर बस की सीट ऐसी हों तो फिर घर का पेट्रोल क्यू फूँकना....! सच में.. मस्त नींद आएगी यहाँ तो.." कहते हुए धीरजंदर ने अपने पैर उपर करके आगे वाली सीट पर रखकर सोने का प्रोग्राम सेट करना शुरू कर दिया..

आगे वाली सीट से एक सरदार जी ने पिछे मुँह निकल कर धीरजंदर को घूरा," ओये! पूरी बस को खरीद लिया है क्या तूने... पैर तो नीचे कर ले...!"

"अभी कहाँ सरदार जी.. अभी तो टेस्ट ड्राइव पर जा रहे हैं... हा हा हा.." कहते हुए धीरजंदर ने पैर नीचे रखे और अपनी बेल्ट ढीली करने लगा....

"क्या हुआ जी? क्यू सारा दिन सींग पीनाए घूमते रहते हो?.. सीधे नही बैठा जाता क्या?" सरदारनी अपने सरदार पर ही सवार हो गयी...

"मैने क्या कहा है लाडो.. मेरे कंधे पर पैर रखेगा तो क्या मैं बोलूं भी नही..... देख.. तेरी गिफ्टेड शर्ट पर मिट्टी लगा दी... बस.. इसीलिए गुस्सा आ गया था..." सरदार जी ने खीँसे निपोर्ते हुए सरदारनी के आगे घुटने टेक दिए..

अचानक बस में चढ़ि एक लड़की को देख प्रतिक की साँसे वहीं की वहीं थम गयी.. खुले बालों को सुलझती हुई सी वो लड़की नज़रें नीची किए हुए अपनी सीट का नंबर. ढूँढती हुई आ रही थी... गोरे रंग और सम्मोहित कर देने वाले नयन नख्स ने प्रतिक को कुछ पलों के लिए बाँध सा दिया.. ग्रे कलर की धरीदार जींस और राउंड नेक की वाइट टी-शर्ट के उपर कॉलर वाली लाइट वाय्लेट कलर की बिना बटन की जॅकेट पहने उस लड़की की आँखों में ऐसा जादू था कि बस में बैठा हर शक्स उसको निहारने लगा...प्रतिक का क्षणिक सम्मोहन तभी टूटा जब वो उनके पास आकर खड़ी हुई..,"एक्सक्यूस मे! ये हमारी सीट है...!"

धीरजंदर प्रतिक को कहाँ बोलने देता," अच्छा.. सीट साथ लानी पड़ती हैं क्या घर से? मैने सोचा बस में ही मिल जाती होंगी.... कोई ना जी.. आप भी आ जाओ.. काफ़ी चौड़ी सीट है.. वो क्या है कि हम सीट लाना भूल गये.. क्यू प्रतिक?" कहकर धीरजंदर एक तरफ को खिसक लिया....

लड़की को उसकी बात पर हँसी भी आई और गुस्सा भी.. उसकी बेढंगी बात से सहम सी गयी लड़की को अचानक समझ नही आया की क्या बोले.. वो कुछ बोलती, इससे पहले ही

प्रतिक बोल पड़ा...," सॉरी मिस! ये कभी बस में बैठा नही है.. इसीलिए.. पर मेरे ख़याल से ये हमारी ही सीट है....!"

"अच्छा.. मेरे मज़ाक को मेरी नासमझी बता कर तू मेरा ही मज़ाक उड़ा रहा है साअले.." फिर लड़की की और देखकर मुँह से निकल गयी ग़ाली को वापस खींचते हुए बोला," वो क्या है की.. जैसे मर्द कभी अपनी ज़ुबान नही बदलते.. वैसे ही सीट भी नही बदलते.. पर जाओ.. हमारी सीट ढूँढ कर उस पर बैठ जाओ.. हम बड़े ही नरम दिल वाले हैं.. कुछ नही कहेंगे.. क्यू प्रतिक?" कहकर धीरजंदर लड़की की और आँखें फाड़ कर देखने लगा...

लड़की को अचानक जाने क्या सूझा.. उसने खिड़की से बाहर झाँका और आवाज़ लगाई..," निहारिकायूवूयूयुयूवयू.. जल्दी आआआआ!"

"क्या हुआ?" लड़की कुछ इस अंदाज में उपर चढ़ि जैसे आपात स्थिति में किसी ने उसको मदद के लिए पुकारा हो... लड़की वही थी जिस पर धीरज ने बस-स्टँड पर खड़े होकर बातों ही बातों में जुमले कसे थे...," क्या हुआ? कोई प्राब्लम है क्या?"

निहारिका से अपने लिए इतनी हमदर्दी पाकर लड़की सुबकने लगी," ये हमारी सीट नही छोड़ रहे..."

"तुम? " निहारिका धीरज को पहचान कर गुस्से से आग बाबूला हो गयी...

"ओह्ह.. हम एक दूसरे को जानते हैं क्या? मेरी यादास्त थोड़ी कमजोर हैं.. पर देख लो.. तुम्हारा नाम अभी भी मुझे याद है.. निहारिका!.. वैसे.. कहाँ मिले हैं हम पहले..?" धीरज ने सीना तानते हुए बत्तीसी निकाल दी..

"अभी बताती हूँ... चलो.. उठो यहाँ से.. नही तो अभी पोलीस अंकल को बुलाती हूँ..." निहारिका ने तैश में आकर बाँह चढ़ा कर कुल्हों पर हाथ जमा लिए...

"पोलीस मामा तुम्हारे अंकल हैं क्या? हमारी तो वैसे ही रिश्तेदारी निकल आई... हे हे हे.." धीरज कहाँ काबू में आता....?

"चल उठ ना यार.. पिछे वाली सीट होगी हमारी.. सॉरी.. मिस.. डोंटमाइंड प्लीज़.." कहते हुए प्रतिक ने खड़ा होकर धीरज को खींच लिया... मजबूरन धीरज को उठना पड़ा... और दोनो पिछे वाली सीट पर जाकर बैठ गये...

"एय्यय.." लड़की ने पिछे देख कर धीरज को अपने नाज़ुक हाथों के डोले बना कर चिड़ाया," पता है निहारिका.. मर्द कभी अपनी सीट नही बदलते... हा हा हा हा..."

धीरज कुछ बोरंभा, इससे पहले ही प्रतिक ने उसके मुँह को अपने हाथ से दबा दिया," कुछ मत बोल यार.. लड़कियाँ हैं.. खामखा पंगा हो जाएगा..."

बेचारों को बैठे पूरा १ मिनिट भी नही बीता होगा की एक जोड़ा आकर उनके पास खड़ा हो गया," एक्सक्यूस मे.. ये हमारी सीट है..."

धीरज से रहा ना गया... अमिताभ की आवाज़ की नकल करते हुए बोला," जाओ.. पहले वो सीट देख कर आओ जिस पर हमारा नंबर. लिखा है.. ये लो हमारी टिकेट... हयें.."

मरियल से उस आधे गंजे हो चुके लड़के ने चुपचाप टिकेट्स पकड़ ली.. और नंबर. देखते ही बोला..," सर यही तो हैं आपकी सीट.. आगे वाली..."

"क्या? क्या कहा? फिर से बोलना मेरे यार.. प्लीज़..." धीरज उछल कर सीट से खड़ा हो गया..

"हां सर.. यही तो हैं.. १३-१४ नंबर.. ये लड़कियाँ ग़लती से बैठ गयी लगती हैं.." लड़के ने दोहराया..

"ओये होये.. लाले दी जान.. जी करता है तेरा सिर चूम लूँ.." धीरज ने एक पल भी नही लगाया आगे वाली सीट तक पहुँचने में," आ.. उठती है या पोलीस मामा को बुलाऊ? हा हा हा हा हा.. मर्द कभी अपनी सीट नही छोड़ते..."

अब लड़कियों को भी थोड़ा शक हुआ.. निहारिका ने कहा," ढंग से देख एक बार.. हमारी सीट का नंबर.."

लड़की ने अपनी जेब से टिकेट्स निकाली और बोली," यही तो हैं.. ८-९ नंबर."

"चल उठ यहाँ से.. ८-९ नंबर. अगली सीट्स का है... सीट नंबर. सीट के पिछे लिखा होता है पागल..." और दोनो लड़कियाँ झेंपते हुए सीट छोड़ने लगी...

"वा वा वा वा.. आजकल लड़कियाँ भी डोले शोले दिखाने लगी हैं.. क्या बात है.. वा वा!" धीरज से इस मौके का फायदा उठाए बिना रहा ना गया...

"चुप कर यार.. बहुत हो गया.. ग़लती किसी से भी हो सकती है..." प्रतिक ने उसको शांत रहने की सलाह दी....

बेचारी दोनो लड़कियाँ सरदार जी के पास पहुँच गयी," एक्सक्यूस मे अंकल.. ये सीट हमारी है..."

"ओये कमाल कर रही हो कूडियो.. अभी इन्न बच्चों के पिछे पड़ी थी.. अब हमें परेशान करने आ गयी.. सारी सीट तुम्हारी हैं क्या? ये देखो हमारे नंबर. ८-९. सीधे भटिंडा तक की हैं..." सरदार ने सीना ठोंक कर कहा...

धीरज जो उनकी बातें बड़े गौर से सुन रहा था, तपाक से बोला," पर ताऊ.. बस तो अमृतसर जा रही है...."

"हैं? क्या?" सरदारजी ने चौंकते हुए पूछा...

"और क्या? " कहकर लड़कियाँ भी हँसने लगी....

"ओह तेरी.. हमारी तो बस ही निकल गयी.. मैं भी कहूँ आज बस इतनी लेट कैसे है...?" सरदारजी सकपकाकर खड़े हुए और अपना सामान उतारने लगे....

"ले.. कब सीखेगा तू सीधे रास्ते चलना.. मेरे तो करम ही फुट गये तेरे साथ ब्याह करके.." सरदारनी सरदरजी को कोस्ती हुई उसके पिछे पिछे बस से उतर गयी...

# १०

सारी रात गीता बेड के एक कोने में सिमटी लेटी रही.. विपिन उसकी बराबर में ही चैन से सोया पड़ा था... पर गीता ने एक बार भी झपकी नही ली.. सोने से पहले विपिन ने वादा किया था कि कल उसको वो कॉलेज छोड़ देगा.. विपिन के द्वारा सुनाई गयी कहानी उसके दिमाग़ में किसी पिक्चर की तरह चल रही थी.. लेटे लेटे उसने कई बार प्रतिक के बारे में सोचा.. शकल से एक दम शरीफ और क्यूट से दिखने वाले प्रतिक से उसको पूरी हमदर्दी थी.. अगर उससे प्यार करने और शादी करने तक की ही बात होती तो गीता इसको अपना सौभाग्य ही मानती.. विपिन के कहे अनुसार प्रतिक उसका दीवाना था भी.. पर विपिन उसको जिस रास्ते पर लेकर जाना चाहता था उसके बारे में तो गीता को सोचना भी पाप लगता था.. धोखा देना तो उसने कभी सीखा ही नही.. या यूँ कहें कि उसके खून में ही नही था.. बचपन में ही उसकी मा के गुजर जाने के बाद उसके बापू ने दूसरी शादी तक नही की.. ये सिर्फ़ उसकी मा के प्रति उसके बापू की वफ़ा नही तो और क्या थी.. वरना वंश चलाना कौन नही चाहता.. ना.. वो ऐसा नही कर सकती.. और करेगी भी नही..

रात भर करवट बदलते बदलते गीता ने यही फ़ैसला लिया था, कि वो विपिन की हर हां में हां मिलाएगी.. जब तक की एक बार उसके चंगुल से आज़ाद नही हो जाती.. पर घर जाने के बाद वो सब कुछ अपने बापू को बता देगी.. सिर्फ़ अपना कौमार्य भंग होने की बात छोड़कर.... साथ ही कोशिश करेगी कि इस कमिने आदमी की मंशा कभी पूरी ना हो.. चाहे इसके लिए उसको पोलीस में खबर करनी पड़े.. चाहे उसको कॉलेज ही क्यू ना छोड़ना पड़े..

इन्ही विचारों की उथल पुथल में कब सवेरा हो गया, गीता को अहसास तक नही हुआ... अचानक विपिन के करवट बदलकर उसके सीने पर हाथ रखते ही वो उठ बैठी..

"जाग गयी तुम?" विपिन ने उठकर अंगड़ाई लेते हुए कहा...

"जी.." गीता ने घुटनो को मोड़कर अपनी छाती से लगा रखा था.. वो भूल गयी थी की उसने स्कर्ट पहन रखी है और उसकी चिकनी जांघें घुटने मोड़ने की वजह से काफ़ी उपर तक नंगी हो गयी हैं... जैसे ही नज़रें उठाकर उसने विपिन की और देखा.. वह सकपका गयी.. विपिन की आँखों का निशाना उसकी जांघें ही थी..

गीता ने तुरंत अपने पैर सीधे करके स्कर्ट नीचे खींच ली...

"तुम्हारी इसी अदा का दीवाना हूँ मैं", विपिन वापस बेड पर लेटकर स्कर्ट के उपर से उसकी चिकनी जांघों पर हाथ फेरने लगा," क्या चीज़ हो यार तुम.. तुमसे कभी दिल नही भरेगा..."

गीता को हद से ज़्यादा अजीब लग रहा था.. पर मजबूरी थी की सीधे तौर पर मना नही कर सकती थी," प्लीज़.. मुझे देर हो रही है.. कॉलेज भी जाना है.."

"हाँ हाँ.. छोड़ दूँगा.. चिंता क्यू करती हो मेरी जान.. पर तुमने ये तो बताया नही कि तुमने क्या फ़ैसला किया" विपिन ने उसको बेचैन होते देख अपना हाथ हटा लिया...

"ठीक है!" गीता ने इतना सा जवाब दिया...

"क्या ठीक है? उसके बारे में बताओ ना.. १० करोड़ के बारे में क्या सोचा..?" विपिन की घाघ आँखों में उसका अनमना सा जवाब चुभ गया...

"हां.. कह तो रही हूँ कि जैसा तुम कहोगे.. मैं वैसा ही करूँगी.." गीता ने इस बार शब्दों में कुछ इज़ाफा करके बोला...

"कहीं ऐसा तो नही की तुम सिर्फ़ यहाँ से वापस जाने के लिए ही ऐसा बोल रही हो.. ये भी तो हो सकता है ना.." विपिन ने पैनी निगाहों से उसके मन को टटोलने की कोशिश की..

गीता को उसकी बात में छिपी दृढ़ता को भाँप कर महसूस हुआ कि जैसे उसका झूठ पकड़ा गया हो.. पर वह संभालते हुए बोली.. ," १० करोड़ के लिए तो मैं १० लोगों का उल्लू बनाने को भी तैयार हूँ.. और फिर ये तो कोई काम भी नही है.. मुझे उससे प्यार का नाटक ही तो करना है.. या फिर वही करना है जो जो तुम कहोगे.."

"गुड.. दयाट्स लाइक अन इंटेलिजेंट गर्ल.. अक्सर खूबसूरत लड़कियों में दिमाग़ की कमी होती है.. मुझे खुशी है कि तुम्हारे अंदर बेपनाह हुस्न के साथ साथ दिमाग़ भी है.. देखना हम दोनो मिलकर कैसे प्रतिक को जाल में फाँसते है..." फिर कुछ रुकते हुए बोला," फिर भी.. हो सकता है की कल को तुम्हारा दिल उसकी नादानी और शराफ़त देखकर पिघल

जाए.. इसीलिए मैं ये पक्का कर देना चाहता हूँ कि अब तुम्हारा अपने बीच हुए इस करार से मुकरना तुम्हारी पूरी जिंदगी को मौत से भी बदतर बना सकता है... एक मिनिट"

विपिन उठकर कोने में रखे ल सी डी टीवी के पास गया और साथ रखे डी वी डी में सीडी डाल दी.. और वापस आकर बिस्तर पर बैठ गया...," ये कुछ हसीन पल हैं जो तुमने मेरे साथ गुज़ारे हैं..."

टी.वी. पर तस्वीर उभरते ही गीता का कलेजा मुँह को आ गया.. शुरुआत वहाँ से हुई थी जहाँ गीता अपना स्कर्ट उठा, कमर तक खुद को नंगा करके.. सिसकियाँ लेती हुई विपिन की जांघों के बीच बैठ गयी थी.. यहाँ से तो गीता की मर्ज़ी भी वासना के उस गंदे खेल में शामिल हो गयी थी जिसमें वो अन्यथा अपनी जान गँवाने के डर से शामिल हुई थी.. शुरुआती सहमति उसकी मजबूरी थी पर बाद में अनछुए यौवन पर वासना हावी हो जाने की वजह से वो भी पागल सी होकर उसका साथ देने लगी थी.. उससे लिपटने लगी थी... वीडियो में कहीं भी ऐसा नही लग रहा था कि उसमें गीता को डराया गया है या ज़बरदस्ती की गयी है..

कुछ देर बाद ही गीता टी.वी. से नज़रें हटाकर विपिन की और निरीह आँखों से देखने लगी.. उसकी आँखों से आँसू लुढ़कने लगे," ययए.. मुझे दे दो ...प्लीज़..!"

"हा हा हा हा!" विपिन ठहाका लगाकर हँसने लगा... फिर रुक कर बोला," क्या इतना प्यार है मुझसे.. या फिर अपने पहली रात को सहेज कर रखना चाहती हो.. डोंट वरी डार्लिंग.. अब तो हमारा मिलना लगा ही रहेगा.. इसकी एक कॉपी तुम्हे दे दूँगा.. ये भी वादा रहा.. एक मिनिट.. प्रतिक आज ही बतला जाने की बात कर रहा था.. मैं उसको फोन मिलाता हूँ.. उसको बोलो कि तुम्हारा आज ही उससे मिलना बहुत ज़रूरी है.. सपने के बारे में..." कहकर विपिन ने प्रतिक का नंबर. डाइयल किया...

सरदरजी वाली सीट, जहाँ अब वो दोनो लड़कियाँ बैठी थी, के नीचे पड़ा मोबाइल हिलने लगा... फोन 'वाइब्रेशन्स' पर सेट किया हुआ था.. विपिन ने कई बार नंबर. ट्राइ किया और अंत में गुस्से से अपने सेल को बेड पर पटक दिया..," लगता है अभी तक सो रहा है साला.. चलो.. बाद में ट्राइ करते हैं.. तुम जल्दी नहा लो.. नही तो कॉलेज में लेट हो जाने पर मुझसे नाराज़ हो जाओगी.. हे हे हे!"

# ११

"एक मिनिट रुक जा ना यार.. उनको उतरने दे" अमृतसर बस स्टँड पर उतरते ही धीरज ने प्रतिक के कंधे पर टंगा बॅग पकड़ कर खींच लिया...

"क्यू? अब क्या कसर रह गयी है? जल्दी चल और पता करके आ बतला के लिए बस कहाँ से मिलेगी.." प्रतिक ने उसको लगभग घसीटते हुए कहा," सारे रास्ते तूने उनकी नाक में दम रखा.. अब उनका इलाक़ा आ गया है.. यहाँ तुझे छोड़ेंगी नही..देख ले!"

"आए हाए.. क्या बात कही है मेरे यार.. इलाक़ा ही नही, सच पूछो तो मैं भी अब उनका ही हो गया हूँ.. खास तौर पर उस लाल मिर्ची का.. देखा नही तूने.. पिछे मुड़मुड़ कर ऐसे देख रही थी जैसे खा जाएगी वहीं.. अफ ये पंजाब की लड़कियाँ..." धीरज ने पिछे मुड़कर बस की और देखते हुए कहा...

लड़कियाँ अभी बस से उतरी नही थी.. जैसे ही निहारिका उठने लगी.. उसको पैर के नीचे कुछ महसूस हुआ.. ये मोबाइल था," ओह.. ये किसका रह गया..?"

"ड्राइवर को दे दो निहारिका.. शायद बिचारे सरदार जी का होगा.. वापस आएगा तो ड्राइवर से ही पूछेगा..." दूसरी लड़की ने निहारिका से कहा...

"तू पागल है क्या? इतना महँगा फोन.. कोई वापस नही करेगा इसको.. जिसका भी होगा वो इस नंबर. पर फोन तो करेगा ही... तभी हम बता देंगे की फोन हमारे पास है.. आकर ले लो..." निहारिका ने समझदारी की बात कही...

"हाँ.. ये बात भी ठीक है.. आ? उस लड़के का तो नही है ये फोन..? देख.. हमारी और ही आ रहा है.." लड़की बस से उतरते ही धीरज की और इशारा करते हुए बोली...

निहारिका धीरज को देख आग बाबूला हो गयी...," आने दे उसको.. उसको तो मैं ऐसा फोन दूँगी की सपने में भी याद करेगा मुझको.. तू चुप रहना बस.." निहारिका ने फोन अपनी बॅक पॉकेट में डाल लिया...

निहारिका के पास आते ही धीरज उसके तेवर देखकर सकपका सा गया.. वह लगातार उसको घूरे जा रही थी.. धीरज की टोन अचानक बदल गयी," आप तो बुरा मान गयी.. मैने तो यूँही अपना सा मानकर कह दिया था.."

पहली बार धीरज के मुँह से ऐसी बात सुनकर निहारिका के स्वर में भी नर्मी आई," अच्छा.. एक हम ही अपने से लगे आपको पूरी बस में?"

"अजी मेरा क्या है.. मैं तो अभी बिल्कुल कुँवारा हूँ..," धीरज ने 'बिल्कुल' पर कुछ खास ज़ोर दिया," अभी तो सभी 'अपनी' हैं.. जब तक कोई लपेटत्ति नही... वैसे ये बतला के लिए बस कहाँ से मिलेंगी..?"

"बतला? तुम.." दूसरी लड़की बोलने लगी थी कि निहारिका ने उसका हाथ पकड़ कर दबोच दिया," पहली बार आए हो क्या यहाँ..?" निहारिका ने रहस्यमयी ढंग से मुस्कुराते हुए पूछा...

" और नही तो क्या? बस यूँ समझ लो कि भगवान ने तुमसे मिलाने के लिए ही यहाँ खींच लिया.. उस प्रतिक की वजह से... मेरा नाम धीरज है.. आपका?" निहारिका के मीठा बोलते ही धीरज सीधा लिनेबाज़ी पर उतर आया...

"अनारकली.. अच्छा है ना.." निहारिका कहकर हँसने लगी..

"जी बहुत प्यारा है.. काश मेरा नाम सलीम होता.. और इनका.." धीरज दूसरी लड़की को निहारते हुए पूछा..

"! तुम रास्ता पूछने आए थे या..?" निहारिका अब पक गयी थी...

"जी प्लीज़.. आइ विल बी ओब्लाइज्ड!" धीरज ने अदब से झुकते हुए कहा..

"तुम्हे इंतजार करना पड़ेगा.. घंटे भर का.. उसके बाद वो सामने मिलेगी.. हो गया..?" निहारिका ने मुँह बनाकर कहा..

"अजी हमें तो पहली नज़र में ही हो गया था.. बस आपकी इनायत की ज़रूरत है.." धीरज जाते जाते भी मसखरी करने से बाज़ नही आया..

तनवी ने जाते ही निहारिका को घूरा..,"तूने उनको झूठ क्यू बोला.. बस तो चलने ही वाली होगी.. उसके बाद जाने कब आए..?"

"क्या बात है.. क्या बात है.. बड़ी चिंता हो रही है.. कौनसा पसंद आ गया?" निहारिका ने मज़ाक किया..

"तुझे पता है निहारिका.. मुझे ऐसी बातें बिल्कुल पसंद नही.. फिर क्यू?" तनवी नाराज़ सी होते हुए बोली...

"अरे यार.. मज़ाक भी नही कर सकती क्या? खैर मैं अगर उसका उल्लू नही बनाती तो फिर से वो हमें पकाते हुए चलते.. साथ साथ.. चल अब जल्दी चल.. बस निकल गयी तो..." और दोनो जाकर चलने को तैयार खड़ी बस में जाकर बैठ गये... और बस चल पड़ी... निहारिका ने बस में बैठे हुए ही धीरज को ठेंगा दिखाकर चिड़ाया और खिलखिलाकर हँसने लगी...

"यार.. अगर इनकी बस नही चलती तो ये अनारकली तो पाटी पटाई थी..." धीरज ने अपने हाथ मसल्ते हुए कहा...

"हुन्ह.. तुझे लगता है कि तू इस जनम में कोई लड़की पटा पाएगा..?" प्रतिक ने मुस्कुराते हुए व्यंग्य किया...

"अर्रे.. क्या बात कर रहा है यार..? तूने वो.. क्या कहते हैं.. वो श्लोक नही सुना क्या 'लड़की हँसी तो फँसी.. देखा नही क्या तूने.. मेरी तरफ उसको हंसते हुए..' धीरज ने ताल ठोकी...

"हम्मम हंस रही थी?.. चल छोड़.. यार अब घंटा भर इंतजार कैसे होगा.. और कोई वेहिकल नही जाता क्या बतला?" प्रतिक को बतला पहुँचने की जल्दी थी...

"यार ये अमृतसर तक की बात तो समझ में आती है.. पर ये बतला पतला में तेरी कौनसी अपायंटमेंट है..? जहाँ बसें भी नही जाती..." धीरज ने कहा और दूर न्यूजपेपर वाले को

आवाज़ दी... पेपर वाला भागा भागा आया," जी साहब.. कौनसा दूं?"

"ये बतला के लिए बस कब आएगी.. और कुछ नही जाता क्या वहाँ..?" धीरज ने पूछा...

"अभी आपके सामने ही तो गयी है साहब यहीं से.. पठानकोट वाली.. उधर से ही जाती है.. वैसे बाहर जाकर किसी को भी लिफ्ट के लिए टोक लो.. हम पंजाब वाले बड़े दिल के होते हैं साहब.. हे हे हे.. अख़बार कौनसा दूं..?"

"हम्मम.. बहुत बड़े दिल के होते हैं पंजाब वाले.. अगर तेरी किसी न्यूजपेपर से सेट्टिंग हो तो एक खबर छपवा देना.. एक सूकड़ी सी पंजाबन हमारा उल्लू बना गयी... चल ला.. कोई भी दे दे एक.." धीरज ने कहते हुए प्रतिक की और मायूसी से देखा...

"समझ गया?.. क्यू हंस रही थी वो..?.. बोरंभा है.. 'हँसी तो फँसी..' चल आजा बाहर.. अब लटक कर चलते हैं.. लिफ्ट लेकर.." प्रतिक खड़ा हो गया...

"मेरी क्या ग़लती है यार...?" धीरज संजीदा होते हुए उसके साथ चलने लगा..

"नही नही.. ग़लती तो मेरी है.. जो तुझे साथ ले आया.. अबे उनसे ही रास्ता पूछना था तुझे?" प्रतिक और धीरज बाहर आकर खड़े ही हुए थे की एक लंबी सी गाड़ी आकर उनके पास रुकी.. गाड़ी का शीशा नीचे हुआ और अंदर बैठे एक बहुत ही स्मार्ट युवक ने उनसे पूछा..," भाई साहब.. ये बतला और कितनी दूर है?"

प्रतिक बोलने ही वाला था कि धीरज ने झट से अंदर हाथ देकर खिड़की को अनलॉक किया और तपाक से अंदर बैठ गया...

"क्या है भाई साहब?" युवक ने अपने गॉगल्स आँखों से हटाते हुए पूछा...

धीरज ने उसकी बात पर कोई ध्यान नही दिया और पिछली खिड़की भी खोल दी," बैठ ना प्रतिक.. भाई साहब भी बतला जा रहे हैं.."

प्रतिक ने उस युवक से नज़रें मिलाई तो उसने अपने कंधे उचका दिए... प्रतिक पिछे जा बैठा... युवक ने गाड़ी दौड़ा दी...

"कितनी दूर होगा बतला यहाँ से...?" युवक ने फिर पूछा..

"आगे चलकर पूछ लेते हैं ना.. टेंशन ना ले भाई.. अब मैं साथ हूँ.." धीरज ने मुस्कुरकर उसकी और देखा...

"मतलब तुम्हे भी नही पता..?" युवक ने चेहरा घूमाकर धीरज की और गौर से देखा...

"उम्म्म.. ऐसा है भाई साहब.. एक्चुअली हम भी पहली बार ही आए हैं... मैने सोचा.. एक से भले तीन.. आपकी भी मदद हो जाएगी.. और हम भी पहुँच जाएँगे..." धीरज ने जवाब दिया...

"हा हा हा.. कमाल के आदमी हो यार... लो.. सिगरेट पीते हो?" युवक ने सिगरेट निकालते हुए पूछा...

"ना भाई ना.. और जब तक हम गाड़ी में हैं.. इसको सुलगाना भी मत.." धीरज ने गाड़ी पर ही कब्जा सा कर लिया...

युवक ने अचानक ब्रेक लगा दिए.. और धीरज को घूर कर देखने लगा..

"क्या हुआ भाई..? आगे चलकर पूछते हैं ना..." धीरज ने उसके हाथ से सिगरेट लेकर वापस पॅकेट में डाल दी...

गाड़ी में बैठा वो युवक अचंभित सा था.. अचानक ठहाका लगाकर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा और गाड़ी चला दी...

"नाम क्या है आपका?" धीरज से ज़्यादा देर चुप बैठा नही गया..

"सौरभ!" युवक ने हल्का सा मुस्कुराते हुए कहा और फिर पूछा," अपना भी बता दो यार.. तुम वैसे भी मानोगे नही.. बिना बताए...!"

"धीरज.. और ये जो पिछे बैठा मुझे घूर रहा है.. ये प्रतिक है.. मेरा सबसे प्यारा दोस्त.. ये मत समझना कि ये गुस्से में है.. दरअसल करीब २ महीने से इसकी शकल ही ऐसी रहती

है...

"ऐसा क्या हो गया भाई.. गर्लफ्रेंड रूठ गयी क्या?" सौरभ ने पिछे देखते हुए कहा..

"नही भाई.. आप अभी तक भी नही समझे क्या इसको! ये ऐसा ही है.. इसकी किसी बात का बुरा मत मानना.." प्रतिक गाड़ी में बैठने के बाद पहली बार बोला..

"हा हा हा.. वो तो मैं देख ही रहा हूँ.. वैसे बतला कोई रिश्तेदारी है क्या?" सौरभ ने पूछा...

प्रतिक के बोलने से पहले ही धीरज बोल पड़ा," रिश्तेदारी? अजी मुझे तो अभी ये भी नही पता की फूटपाथ पर सुलाएगा या कोई होटेल भी नसीब होगा कि नही..जाने क्या रखकर भूल गया है बतला.." धीरज ने मुँह बनाया..

"जहाँ मैं सो-उँगा वहाँ तो सुला ही लूँगा.. अब तेरे लिए वहाँ होटेल तो खोलने से रहा मैं.." प्रतिक ने कहा...

"वैसे बताओ तो यार.. जा किस काम से रहे हो.." सौरभ को जानने की उत्सुकता हुई...

"अभी मुझे ही नही बताया तो तुम्हे क्या बताएगा..? वैसे ५-७ दिन का काम बोल रहा है... अब बता भी दे यार.. क्यू दिमाग़ की दही कर रहा है..?" धीरज ने प्रतिक को देखते हुए कहा...

प्रतिक खिड़की से बाहर देखने लगा.. उसको कुछ ना बोरंभा देख सौरभ ही बोल पड़ा..," वैसे अगर ५-७ दिन की बात है तो तुम मेरे साथ रह सकते हो.. वहाँ मेरे दोस्त की कोठी है.. अकेला ही रहता है.. अगर तुम्हारे सीक्रेट मिशन पर कोई आँच ना आ रही हो तो?"

"शुक्रिया यार.. तू तो मुझसे भी कमाल का है.. बिना जाने पूछे ही साथ रहने का ऑफर कर दिया... अपनी खूब जमेगी लगता है.. " धीरज ने खुश होकर कहा...

"तुम्हे जानने में किसी को वक़्त ही कितना लग सकता है.." सौरभ ने कहा और हँसने लगा... प्रतिक भी मुस्कुराए बिना ना रह सका...

अचानक गाड़ी के ब्रेक लगते ही प्रतिक और धीरज का ध्यान आगे की और गया..

"ओह तेरी.. ये तो वही बस है.." धीरज ने कहा...

बस सड़क के बींचों बीच खड़ी थी... उसके सामने ट्रैक्टर खड़ा था.. शायद बस का आक्सिडेंट हो गया था.. बस के पास ही ८-१० सवारियाँ खड़ी थी.. उनमें ही धीरज की अनारकली और 'वो' तनवी भी थी... धीरज का ध्यान सीधा उन्ही पर गया..

"एक मिनिट रोकना सौरभ भाई" धीरज ने कहा और बाहर मुँह निकाल कर ज़ोर से आवाज़ लगाई...," आ जाओ.. आ जाओ.." जैसे उनकी पुरानी जान पहचान हो...

लेकिन सौरभ को अब की बार गुस्सा नही आया.. वा बस धीरज को देखकर मुस्कुराता रहा...

धीरज के आवाज़ लगते ही उन दोनो लड़कियों को छोड़कर सभी सवारियाँ भागी भागी आई...

"थँकआइयू भाई साहब!" उनमें से एक सवारी ने बाहर पास आते ही कहा...

"अरे भाई.. किराए की नही है.. अपनी है अपनी.." धीरज ने कहा और गाड़ी से उतर कर उन लड़कियों की और चला गया," आ भी जाओ.. कब तक खड़ी रहोगी.. बस तो एक घंटे के बाद आएगी ना..."

दोनो लड़कियों ने लज्जित होकर अपना मुँह फेर लिया.. कुछ देर पहले ही तो निहारिका ने उसका उल्लू बनाया था...

"सोच क्या रही हो अनारकली और पार्टी... ये सोचने का नही गाड़ी में बैठने का टाइम है.. जल्दी करो.. आ जाओ.. मैं गाड़ी को २ मिनिट से ज़्यादा रुकवा नही पाऊंगा.." धीरज ने कहा और घूम कर वापस चला गया....

"क्या करें? चलें?" निहारिका ने पूछा...

"तू पागल है क्या? दिमाग़ तो नही सटाक गया है..? अंजान लड़कों के साथ.. हम गाड़ी में बैठेंगे.. ज़रा सोच के बोला कर यार..." दूसरी लड़की ने साफ मना कर दिया...

"अर्रे अंजान वंजान कुछ नही हैं... और फिर अब अंधेरा भी होने लगेगा.. सारी बसें भरी हुई आ रही हैं... कब तक वेट करेंगे...? जहाँ तक इस लल्लू की बात है.. इसको मैं अच्छी तरह समझ गयी हूँ.. इसकी बस बोलने की आदत है.. कुछ करने वरने का दम नही है इसमें.. और दूसरा लड़का तो एकदम शरीफ है.. शोले के अमिताभ जैसा.. वो तो कुछ बोरंभा भी नही.. चल ना कुछ नही होता.." निहारिका ने उसका हाथ पकड़ते हुए बोला...

लड़की ने गर्दन घूमाकर गाड़ी की और देखा.. और कुछ देर रुककर साथ साथ चलने लगी.. उनके गाड़ी के पास जाते ही प्रतिक ने खिड़की खोल दी और एक तरफ हो गया..

"तू बैठ पहले.." लड़की ने निहारिका से कहा..

"ठीक है.." निहारिका प्रतिक के साथ बीच में बैठ गयी.. और उस लड़की के बैठने के साथ ही सौरभ ने गाड़ी चला दी.. उसकी समझ में अब तक नही आया था कि माजरा क्या है..

पर धीरज था ना.. गाड़ी के चलते ही शुरू हो गया," इनसे मिलिए भाई साहब.. एक है अनारकली और दूसरी तनवी.. अगर आज ये ना होती तो ना तो हम और आप मिल पाते.. और ना ही हमारा बतला में रहने का इतना अच्छा इंतज़ाम होता..." कहकर धीरज हँसने लगा...

"ऐसा क्यू?" सौरभ ने उत्सुकतावश पूछा...

"वो तो तुम इन्ही से पूछ लो.. वरना तो में बताऊंगा ही.. नमक मिर्च लगाकर.. बता दो अब.. अंजान मुसाफिरों के साथ की गयी अपनी करतूत..."

लड़कियाँ सिर झुकाए बैठी थी.. उनसे कुछ बोला ही नही जा रहा था... सौरभ ने बात को वहीं छोड़ दिया और पूछने लगा," वैसे जाना कहाँ तक है आपको?"

"जी बतला.." निहारिका ने सिर झुकाए हुए ही जवाब दिया...

"हम्म.. मतलब एक ही मंज़िल के मुसाफिर हैं.." सौरभ ने कहा और गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी....

"कहो तो घर छोड़ आयें.." बतला पहुँचते ही लड़कियों ने गाड़ी रोकने को कहा तो धीरज ने चटखारा लिया...

बिना कुछ बोले लड़कियाँ गाड़ी से उतर गयी.. फिर अचानक वापस मुड़ते हुए निहारिका आगे गयी और बोली," शुक्रिया..... एंड सॉरी!"

"क्या लड़कियाँ थी यार...? ये कहाँ मिल गयी तुम्हे?" सौरभ ने लड़कियों के जाते ही धीरज को देखते हुए सवाल किया..

"क्या लड़कियाँ थी यार...? अहसानमंद होना चाहिए था इनको.. मैं ले आया.. खाली शुक्रिया बोल कर चली गयी.. कम से कम अपना मोबाइल नंबर. तो देकर जाती..." धीरज ने कहते हुए इस तरह मुँह बनाया मानो सच में ही उसको उनका चले जाना अच्छा नही लगा हो...

मोबाइल शब्द सुनकर धीरज को एक फोन करने की सूझी.. और जेब को हाथ लगाते ही वह उछल पड़ा," ओये.. मेरा फोन?"

"क्या हुआ? सौरभ और धीरज एक साथ बोल पड़े...

"फोन गया.. कहीं निकल गया शायद.." अपनी शर्ट और जींस की सभी जेबों में टटोलने के बाद धीरज हताशा से भर गया....

"श..!" धीरज के मुँह से निकला..,"अब?"

"एक मिनिट.. नंबर. बताना.." सौरभ ने अपना मोबाइल निकालते हुए कहा...

प्रतिक के नंबर. बताने पर सौरभ ने डाइयल किया..," हम्मम.. फोन तो यार किसी ग़लत आदमी के हाथ लग गया.. स्विच्ड ऑफ आ रहा है..!" कहते हुए अचानक मोबाइल स्क्रीन पर देखते हुए सौरभ लगभग उछल ही पड़ा," आप.. प्रतिक हैं?"

"और मैं धीरज.. अभी बताया तो था भाई..." प्रतिक के बोलने से पहले ही धीरज ने जवाब दे दिया...

"नही.. मतलब मेरा मतलब आप स्काइ व्यू एस्टेट के मलिक प्रतिक हैं?" सौरभ ने चौंकते हुए गाड़ी को ब्रेक लगा दिए...

"मलिक तो मेरे पिताजी हैं.. मैं तो सिर्फ़ उनका वारिस हूँ.. अभी मैने ऑफीस देखना शुरू नही किया.. पढ़ ही रहा हूँ अभी... पर... आपको ये सब कैसे पता?" प्रतिक की दिलचस्पी अपने मोबाइल से हटकर सौरभ पर आ गयी...

"मेरी आपसे बात हुई थी.. कुछ दिन पहले.. गुड़गाँव में आपकी नयी कंस्ट्रक्शन में हिस्सेदारी को लेकर.. याद है? आपने अपने फादर का नंबर. दिया था.. और हां.. आपने अपना नाम भी प्रतिक ही बताया था..." सौरभ हतप्रभ सा उसको देख रहा था...

"सॉरी.. मुझे याद नही है.. एक्चुअली पिताजी ने मेरा नंबर. भी विज़िटिंग कार्ड्स पर डाल रखा है... इसीलिए अक्सर जब उनका फोन ऑफ रहता है तो मेरे पास कॉल आ जाते हैं..."

"हम्मम.. मैने भी आपका नंबर. कार्ड्स से ही निकाला था.. और आपके नाम बताने पर मैने नंबर. को प्रतिक एस.वी. एस्टेट नाम से सेव कर लिया था.. कमाल हो गया यार.. मुझे अब भी विश्वास नही हो रहा की मैं इतने बड़े आदमी के साथ बैठा हूँ..." सौरभ वास्तव में ही आश्चर्य चकित था... उसने अपना हाथ प्रतिक की और बढ़ा दिया जिसे प्रतिक ने दोनो हाथों से पकड़ लिया...

"फिर बात बनी की नही...?" धीरज ने सौरभ को टोका...

"किस बारे में?" सौरभ ने उसकी और देखते हुए पूछा...

"पार्ट्नरशिप के बारे में.. और क्या?"

"हां.. वो तो पहले ही डन थी.. सिर्फ़ कुछ फॉरमॅलिटीज बाकी थी..." सौरभ ने गाड़ी चला दी...

"फिर तो बहुत अच्छा हो गया यार... अब हम तीनो पार्ट्नर हैं.. अब तुम्हारे पास रहकर मुफ़्त का खाते हुए शर्म नही आएगी... हा हा हा!" धीरज ने अपना हाथ बढ़ा उससे हाथ मिलाया...

"पर एक बात समझ में नही आई यार... यहाँ बतला में? और वो भी बस से?" सौरभ के दिमाग़ में अभी भी काफ़ी सवाल थे....

"सब इसकी करतूत है.. बोला ड्राइवर को लेकर नही चलना.. और इतनी दूर गाड़ी चलाने में दिक्कत होगी...!" धीरज ने मुँह बनाते हुए कहा...

"पर फिर भी यार.. यहाँ इस छोटे से शहर में ऐसा क्या काम निकल आया..?" सौरभ ने पूछा...

धीरज ने पिछे मुड़कर प्रतिक की और हाथ जोड़कर चेहरा झुका लिया," अब तो बता दो गुरुचंद्रभान! अब तो आपका बतला भी आ गया..."

धीरज को तो बताना ही था.. अपने हम उमरा सौरभ को बताने में भी प्रतिक को कोई नुकसान नज़र नही आया...," दरअसल मैं एक लड़की के लिए यहाँ आया हूँ...!"

"ओये.. तेरी तो.. तूने लड़की के लिए मुझे इतनी दूर घसीटा... ये दुर्गति की.. वहाँ लड़कियों की कमी है क्या... जिसकी बोरंभा उसकी.... और कॉलेज में तुझ पर लट्टू लड़कियों की गिनती भी याद है तुझे..? वहाँ तो बाजर्भट्टू बना बैठा रहता है.. लड़की के लिए आया है यहाँ... मुझे नही चलना तेरे साथ.. उतार नीचे अभी... गाड़ी रोक सौरभ भाई.. अभी के अभी गाड़ी रोक..." धीरज जाने क्या क्या बोलने लगा...

सौरभ ने सच ही गाड़ी के ब्रेक लगा दिए..

"मज़ाक कर रहा हूँ यार... चल ना जल्दी.. बहुत भूख लगी है.. हे हे हे.. और प्यास भी..." धीरज ने सौरभ को चलने का इशारा किया और हँसने लगा....

सौरभ भी मुस्कुरा दिया...," और कहाँ चलें.. आ तो गये...!"

"श.. मुझे लगा अभी तुम दोनो मुझे ज़बरदस्ती उतार दोगे.." धीरज मुस्कुराया और गाड़ी से उतर गया... प्रतिक के बाहर निकलते ही धीरज उसके कंधे पर हाथ रख कर उसको एक तरफ ले गया," ये लड़की का क्या मामला है वीरे..?"

"बताता हूँ यार.. सब बताता हूँ..." प्रतिक ने कहा और तीनो मिलकर सामने वाली तीन मंजिला सफेद कोठी में चले गये... गेट पर ही उन्हे गेट्कीपर ने रोक लिया..," किससे मिलना है सर?"

"उसी उल्लू के पठे से... जो इस घर का मलिक है.. संकेत से.. खोल भी दे अब यार..." सौरभ ने चिड़ते हुए कहा.....

"पर.. पर साहब बिज़ी हैं सर.. किसी को भी नही आने देने के लिए बोला है.. एक घंटे तक और..."

"साला.. लड़की लिए पड़ा होगा.. दारू और लड़की के अलावा वो कुछ करता भी है.." सौरभ मंन ही मंन बड़बड़ाया और फोन निकाल कर उसका नंबर डाइयल करने लगा....

"ओये यार सौरभ!" संकेत तेज़ी से चरंभा हुआ नीचे उतर कर आ ही रहा था कि सौरभ उन दोनो को लेकर उपर ही पहुँच गया.. बरमूडे और बनियान में वह आते ही सौरभ से लिपट गया...

"साले .. आज तो कम से कम इंतजार कर लेता.. सुबह सुबह ही चालू हो गया था क्या?" सौरभ ने मज़ाक में कहा...

"हे हे हे.. नही तो!" संकेत ने हंसते हुए कहा...

"नही तो मतलब? और क्या शराब की स्मेल का पर्फ्यूम लगाने लगा है क्या?" सौरभ ने उसके मुँह के पास मुँह लाकर सूंघते हुए कहा...

"हां.. यार.. वो छोटा सा प्रोग्राम बन गया था..." संकेत ने कहा और प्रतिक और धीरज से हाथ मिलाता हुआ बोला," ये भाई?"

"भाई ही समझ ले.." सौरभ कहते हुए उसके बेडरूम की और जाने लगा...

"नही यार.. यहाँ नहीं.. चल.. नीचे ही बैठते हैं.." संकेत ने सौरभ का हाथ पकड़ लिया...

"क्यू? यहाँ क्यू नही? देखू तो सही.. ब्रांड कौनसा ले रहा है आजकल.." सौरभ ने कहा और ज़बरदस्ती बेडरूम में घुस गया.. अंदर जाते ही बाहर खड़े तीनो लोगों को उसके जोरदार ठहाके की आवाज़ सुनाई दी.. अगले ही पल वह वापस बाहर था.. उसकी हँसी थमने का नाम नही ले रही थी.. हंसते हंसते ही बोला," अबे.. २ -२ एक साथ.." फिर पास आकर धीरे से बोला," मुझे नही पता था तू इतना कमीना हो जाएगा एक दिन.. अब रंडिया भी लानी शुरू कर दी..."

संकेत धीरज और प्रतिक के सामने कुछ शर्मा सा रहा था," ऐसा मत बोल यार.. तुझे रंडिया लगती हैं वो.. गर्लफ्रेंड्स हैं मेरी..."

"मैने चेहरा नही देखा...!" सौरभ कहकर चुप हुआ ही था कि धीरज ने बीच में टाँग घुसा दी," २-२ गर्लफ्रेंड्स एक साथ? कैसे मनेज करता है भाई?"

"क्या करें यार... अपना दिल ही इतना बड़ा है! हा हा हा.. चलो नीचे चलते हैं.. इनको आराम करने दो यहीं" संकेत ने कहा और उनको लेकर नीचे चला आया..."

नीचे जाते ही उनको ड्रॉयिंग रूम में बैठते ही संकेत ने प्रतिक और धीरज से मुखातिब होते हुए पूछा," थोड़ी बहुत चलेगी क्या? या खाना लगाने को बोल दूँ..."

प्रतिक ने कोई प्रतिक्रिया नही दी पर धीरज का ध्यान उपर से नीचे नही आ पा रहा था,"वो दोनो पर्सनल है या टाइम पास?"

संकेत पर नशे का हल्का हल्का सुरूर तो था ही.. उसने किसी दार्शनिक की तरह से लंबा चौड़ा भाषण देना शुरू कर दिया," मेरा तो मैं खुद ही पर्सनल नही हूँ यार.. लड़कियाँ क्या खाक पर्सनल होंगी.. बस जिंदगी जैसे चला रही है.. वैसे चल रहा हूँ.. सूरत देखकर लड़कियाँ पट जाती हैं और पैसा देखकर नंगी हो जाती हैं.. लड़कियों के मामले में सीरीयस होना तो मैं एकदम पागलपन मानता हूँ..."

"ये हुई ना बात यार... तू एकदम सही आदमी है.. एक इसको देखो.. एक लड़की के चक्कर में धक्के ख़ाता हुआ यहाँ आ गया है..." प्रतिक के लाख इशारे करने पर भी धीरज कहे बिना नही माना...

पर संकेत समझदार लड़का था.. दो मिनिट पहले ही कही गयी अपनी बात से मुकर गया," वो तो अपनी अपनी मेनटॅलिटी होती है यार.. और हो सकता है इसको किस्मत से कोई सच्चा प्यार करने वाली मिल गयी हो.. पर ऐसी होती हज़ारों में एक आध ही है.. वरना तो.. अब बस क्या कहूँ.. इन्न उपर वाली लड़कियों को ही देख लो!"

"देख लूँ?" धीरज तो जैसे इसी बात को पकड़ने के लिए मुँह खोले बैठा था.. जैसे ही संकेत ने एग्ज़ँपल के तौर पर उन लड़कियों का नाम लिया.. झट से धीरज ने 'देख लो' पकड़ लिया...

"क्या?" संकेत ने धीरज की और देखा...

"लड़कियों को.. आपने ही तो कहा है.. अपर वाली लड़कियों को देख लो..." धीरज ने बत्तीसी निकालते हुए कहा...

"हाहहाहा.. तू एक नंबर. का आदमी है यार.. जाओ देख लो.. पर देख भाई.. कोई ऊँच नीच होती दिखाई दे तो चुप चाप वापस आ जाना... इन्न साली लड़कियों का कोई भरोसा नही होता.. कब साली नाटक करने लग जायें.. कब पिच्छड़ी मार दें..." संकेत ने हंसते हुए धीरज को अंदर से ही उपर जाने का रास्ता दिखा दिया... " मैं चलूं क्या एक बार साथ..?"

"नही यार.. तुम बैठो.. तुम्हारा दोस्त आया है.. मैं अकेला ही ट्राइ करके देखता हूँ.." धीरज ने कहा और मस्ती से गुनगुनाते हुए उपर चला गया...

"कमाल का आदमी है यार.. मेरी ऐसे लोगों से बहुत बनती है..." संकेत ने कहा और फिर प्रतिक को देखते हुए बोला," तुम ऐसे गुमसुम क्यू बैठ गये यार.. आज मस्ती करो.. कल लड़की से भी मिल लेना... ठीक है ना..?"

"ऐसी कोई बात नही है यार.. बस मैं ठीक हूँ.. धीरज की बातों का बुरा मत मानना यार.. ये ज़रा मुँहफट है.. जो मन में आए बोल देता है.." प्रतिक ने कहा...

"ये क्या बात कह दी यार.. अगर दोबारा ऐसा बोला तो तुझसे बुरा ज़रूर मान जाऊंगा.. हम तो यारों के यार हैं यार.. और फिर सौरभ के यार तो मुझे उससेभी अज़ीज होंगे कि नही... ये.. सौरभ कहाँ चला गया?" अचानक संकेत का ध्यान सौरभ पर गया," कहीं वो भी उपर ही तो नही पहुँच गया...?"

"यहीं हूँ बे.. फ्रेश हो रहा था.. सुबह से चला हुआ हूँ.. पेशाब तक नही किया था रास्ते भर.." सौरभ बाथरूम से निकलते हुए बोला...

"साले.. मुझे पता है तू अंदर क्या कर रहा होगा... लड़कियाँ देख कर खड़ा हो गया था क्या?" और संकेत कहते ही ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा...

"साला.. पियाक्कड़.. हमेशा बकवास करता रहता है... वो.. धीरज भाई कहाँ गया.." सौरभ ने प्रतिक के पास बैठते हुए पूछा....

"उपर..!" प्रतिक कहते हुए मुस्कुराहट को चेहरे पर आने से नही रोक पाया.....

धीरज दबे कदमों से चरंभा हुआ बेडरूम के करीब आया.. दरवाजे के सामने आते ही लड़कियों से उसकी टक्कर होते होते बची.. शायद वो निकलने की तैयारी कर ही रही थी.. अंजान लड़के को सामने पाकर वो चौंक उठी और एकदम से अपना चेहरा घुमा उसकी तरफ पीठ करके खड़ी हो गयी.. उधर लड़कियों का हुस्न और करारा बदन देखकर धीरज भी हक्का बक्का रह गया.. लगभग एक ही कद काठी की वो लड़कियाँ बमुश्किल २०-२१ साल की होंगी... एक दम गोरी चित्ति लंबी लड़कियों का भरा भरा बदन देख धीरज के मुँह में पानी आ गया..

दोनो ने जींस पहन रखी थी.. एक लड़की ने उपर जांघों तक का कुर्ता डाल रखा था.. इसीलिए वह उसके पिच्छवाड़े का निरीक्षण नही कर पाया पर दूसरी लड़की, जिसने स्लीवलेस टॉप डाल रखा था.. उसके नितंबों को देखते ही धीरज की मर्दानगी खड़खड़ा उठी.. आख़िर उम्मीद तो थी ही, कुछ हासिल होने की वहाँ से.... भरे भरे पिछे की और काफ़ी उभरे हुए उसके नितंब एकदम गोलाई में तराशे हुए से थे.. और जींस उनकी गोलाई और बीच की खाई से चिपकी हुई उसके जर्रे जर्रे के आकर का जायजा दे रही थी.. योनि से नीचे हल्की सी झिर्री के बाद कुछ इंच तक उसकी जांघें एक दूसरी से चिपकी हुई सी थी.. हाँ.. कमर दोनो की ही कहर ढा-ने वाली थी.. बमुश्किल २७" की होगी... यूँही मस्ती करने के लिए आया धीरज उनको 'उसे' करने को लालायित हो उठा...," हेलो!"

जब लड़कियों को निकलने का और कोई रास्ता नही सूझा तो मजबूरन उनको पलटना ही पड़ा.. जवाब में 'हाई' कहा और धीरज की बराबर से निकलने की कोशिश करने लगी..

धीरज ने बीचों बीच खड़े होकर दरवाजे की चौखट पर हाथ रख लिए," ऐसे कहाँ भागी जा रही हो यार.. इंट्रोडक्शन तो हो जाए एक बार..!"

कुर्ते वाली ने चेहरा नीचे किए हुए ही नज़रें उठाकर देखने की कोशिश की," हमें जाने दो.. हम लेट हो रही हैं...!" उनके चेहरे से साफ झलक रहा था कि वो सहमी हुई सी हैं...

"नाम क्या है तुम्हारा?" धीरज ने कुर्ते वाली की ही कलाई पकड़ ली... दूसरी डर कर पिछे हट गयी.. दोनो के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था...

" संकेत!" लड़की हल्की सी चीखी और कोई और रास्ता ना पाकर टोन बदल ली," प्लीज़.. जाने दो ना.. सच्ची में हम लेट हो रही हैं.. घर जाना है..!" कलाई मोड़ कर अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करते हुए उसने मायूसी से धीरज के चेहरे की और देखा....

"और अगर ये टूट गयी तो? इतनी नाज़ुक है.. क्यू परेशान हो रही हो..? २-४ मिनिट में कुछ नही होता.. आओ.." धीरज ने दूसरी लड़की का हाथ भी पकड़ लिया.. और ना चाहते हुए भी दोनो उसके साथ चलते हुए बिस्तर पर जाकर बैठ गयी.. तीनो के पैर लटके हुए थे.. धीरज दोनो के बीच बैठा था...

"प्लीज़.. हाथ हटाओ.. हम ऐसी लड़की नही हैं..!" टॉप वाली ने अपनी कमर को हिलाते हुए धीरज से दूर होने की कोशिश की.. पर धीरज ने एक ही झटके में दोनो को अपनी और खींच लिया..," आए हाए.. मैं सदके जावां.. और कैसी लड़की हो तुम?" धीरज ने टॉप वाली के गाल की चुम्मि ले ली.. गुस्से और अंजाने से डर की वजह से उसके आँसू निकल आए..

"तुम होते कौन हो हमसे ऐसी बात करने वाले.. हम आपको जानती भी नही हैं... संकेत किधर है? उसको बुलाओ.." कुर्ते वाली ने बंदर घुड़की दी....

"क्या? तुम सच में मुझे नही जानती.. संकेत ने तुम्हे बताया नही...?" धीरज ने आश्चर्य चकित सा होने का नाटक किया...

दोनो लड़कियों ने चौंक कर उसको देखा.. पर उनकी समझ में बात आई नही..," क्यू? हमें क्यू बताएगा..? हमें आपसे क्या लेना देना...?" वो लगातार उसकी बाहों के घेरे से छूटने की कोशिश कर रही थी..

"अरे.. तुम्हे मेरे लिए ही तो बुलाया था उसने.. और तुम्हे बताया भी नही? बताना चाहिए था यार उसको..." उनकी गरमागरम मस्त स्तनों का रह रह कर स्पर्श पाकर धीरज अधीर होता जा रहा था.. पर दोनो लड़कियाँ लगातार उससे बचे रहने की कोशिश कर रही थी... यूँ कहें की एक तरह की कसंकस सी चल रही थी... धीरज और लड़कियों के बारे में...

पर अचानक धीरज की ये बात सुनकर वो अजीब सी नज़रों से उसको देखते हुए विरोध करना भूल गयी..," आपके लिए? क्या बकवास कर रहे हो? वो.. वो मुझसे बहुत प्यार करता है..." कुर्ते वाली ने कहा...

"हां.. मुझे भी पता है.. और तुम भी उससे बहुत प्यार करती हो..इसीलिए तो तुम्हे मेरे लिए बुलाया है.. तुम्हारी खातिर ही.." धीरज ने बारी बारी से दोनो के चेहरों को देखा... पर बात शायद उनके सिर के उपर से निकल गयी थी....

"ये क्या बात हुई..? आप क्यू हमें परेशान कर रहे हैं... प्लीज़.. जाने दीजिए ना.." कुर्ते वाली लड़की ने अपना हाथ छुड़ाने की एक और कोशिश करते हुए कहा....

"हद है यार.. लगता है मुझे ही सब कुछ बताना पड़ेगा अब... वो क्या है की पिछली बार जब तुम आई थी तो मैने चुपके से पर्दे के पिछे खड़ा होकर तुम्हारी फिल्म बना ली थी..." धीरज ने अंधेरे में तीर छोड़ा जो सीधा निशाने पर जा लगा....उसकी बात सुनकर तो जैसे कुर्ते वाली लड़की को झटका सा लगा.. उसके चेहरे का रंग यकायक पीला पड़ गया...," क्कक्या?"

"हाँ.. और नही तो क्या? मैं तो आज फ्री भी नही था... एक दोस्त का उसकी गर्लफ्रेंड के साथ पार्क में एम एम एस बनाने जाना था मुझे.. पर संकेत अड़ गया.. बोला आज ही आ जाओ.. मैने बुला लिया लड़कियों को... अब वो तुमसे प्यार ही इतना करता है.. वो नही चाहता कि तुम्हारी 'वो' फिल्म घर घर में देखी जाए... मेरा नुकसान तो बहुत है.. पर क्या करूँ? संकेत भी खास यार है अपना.. उसकी और उसके 'प्यार' की इज़्ज़त का ख़याल तो रखना ही पड़ेगा...." कहता हुआ धीरज हँसने लगा..

"पर.. आप तो उस दिन यहाँ थे ही नही..!"

"हां.. पहले संकेत भी यही कह रहा था.. जब उसको मूवी दिखाई तब जाकर यकीन हुआ.. दरअसल मुझे संकेत ने बता रखा था कि उस दिन उसके साथ तुम आने वाली हो.. मैं पिछे से आया और गेट्कीपर को बोल दिया कि संकेत को कुछ ना बताए.. मुझे सरप्राइज देना है.. अब भला वो दोस्तों के बीच कैसे आता.. और मैं छिपकर अपना काम करके ले गया.." धीरज ने कलाकारी दिखाई...

लड़कियों को काटो तो खून नही.. कुर्ते वाली तो अपने सारे बदन को ढीला छोड़ उसपर ही झुक गयी.. और काँपने सी लगी...

टॉप वाली लड़की की मुश्किल से आवाज़ निकली," पर... पर मैं तो आज पहली बार आई हूँ.. बाइ गॉड! है ना रुबीना!"

"मुझे सब पता है यार.. मुझे क्यू बता रही हो.. मुझे तो वो मूवी देखे बिना नींद ही नही आती.. पर अब तो आज के दिन की यादें ही बची रहनी है बस.. सी.डी. तो मैं दे ही दूँगा आज संकेत को...!" धीरज ने कुर्ते वाली के गाल को चूमते हुए कहा.. पर वह तो बर्फ की तरह ठंडी हो चुकी थी.. उसने इस बार कतई बुरा नही माना," एक रिक्वेस्ट करूँ तो मान लोगे ना प्लीज़...!"

"हाँ हाँ.. क्यू नही जान.. हज़ार बातें बोलो...!" धीरज अब अपने हाथ से जींस के उपर से उसकी जांघों को सहलाने लगा.. मज़े से.. बिना किसी विरोध के...

"ववो.. सी.डी. संकेत को मत देना प्लीज़.. मुझे दे देना..." रुबीना ने अपनी शोख नज़रों का जादू उस पर चलाने की कोशिश की...

"क्या फ़र्क पड़ता है? संकेत तुम्हे इतना प्यार करता है.. एक ही बात है.. तुम रखो या वो..!" कहते कहते धीरज ने अपनी उंगलिया धीरे धीरे सरकाते हुए रुबीना की जांघों के बीच फँसा दी.. रुबीना ने कसमसकर अपनी जांघें भींच ली.. पर कुछ बोली नही..... पर जैसे ही धीरज ने दूसरा हाथ टॉप वाली लड़की की जांघों के बीच फँसना चाहा.. वह बिदक कर खड़ी हो गयी.. और उसको घूरते हुए सोफे पर जा बैठी..

"कमाल है यार.. गरम क्यू होती हो..?" धीरज ने मुस्कुराते हुए टॉप वाली लड़की को आँख मारी...

" छोड़ो ना... वो सी.डी. तुम मुझे ही दोगे ना प्लीज़..." रुबीना ने प्यार से धीरज के गाल पर हाथ रखकर चेहरा अपनी और घूमाते हुए कहा...

" हाँ मेरी जान...." धीरज ने कहा और अपने दोनो हाथों में उसका चेहरा लेकर उसके होंटो को चूसने लगा... रुबीना की अब क्या मज़ाल थी जो हल्का सा भी विरोध करती.. अपना शरीर ढीला छोड़ वह सी.डी. के बारे में सोचने लगी....

"मैं जाऊ रुबीना? तू आ जाना बाद में..." टॉप वाली लड़की का शरीर भारी भारी होने लगा था.. उसको अहसास हो चुका था की थोड़ी देर और यहाँ रुकी तो उसके लिए खुद को संभालना मुश्किल हो जाएगा...

"ना शमीना.. मुझे छोड़ कर मत जा प्लीज़.. सिर्फ़ २ मिनिट.." रुबीना ने कहा और धीरज की और देखते हुए बोली," अब तो वो सी.डी. दे दो प्लीज़.. मेरी जिंदगी तबाह हो जाएगी.. मैं मुँह दिखाने के लायक नही रहूंगी..."

"पहले शमीना को बोलो यहाँ से हिलने की कोशिश ना करे.. जब तक मैं ना कहूँ.. तभी मैं सी.डी. तुम्हे देने के बारे में सोचूँगा..." धीरज के हाथ शानदार हथियार लग गया था...

"बोल तो रही हूँ.. एक मिनिट.." रुबीना धीरज के पास से उठी और शमीना को एक कोने की तरफ ले गयी..," देख शमीना.. मेरी इज़्ज़त का सवाल है.. प्लीज़ यार.. थोड़ी देर की बात है... मान जा..मैं इसको चुम्मा चाटी में ही ढीला कर दूँगी... तू देखती जा.. और आइन्दा कभी तुझे यहाँ लेकर नही आऊंगी.. प्रोमिस!" रुबीना ने शमीना को भरोसा दिलाने की कोशिश की....

"वो तो ठीक है यार.. पर तुझे पता है कि मैने ये सब कभी नही किया... तुम्हारे कहने पर ही मैं यहाँ आ गयी.. अगर कहीं इसने मुझसे भी ज़बरदस्ती करने की कोशिश की तो?" शमीना ने कहा...

" नही यार.. तू देख तो मैं क्या करती हूँ....! बस ५ मिनिट में ही नही झाड़ गया तो मेरा नाम बदल देना... बैठ तू आराम से.. और देख मेरा कमाल..." रुबीना के कहने पर शमीना अजीब सी निगाहों से धीरज को देखती हुई सोफे पर जा बैठी....

"क्या करोगे?" रुबीना ने जाते ही धीरज से सीधा सीधा पूछ लिया कि उसका इरादा क्या है आख़िर...

"हे हे हे.. हिन्दी में बताऊं या अँग्रेज़ी में.." धीरज कहकर मुस्कुराने लगा...

"किसी में भी बताओ यार.. पर जल्दी करो प्लीज़..... हम सच में लेट हो रहे हैं..." रुबीना ने खीजते हुए पूछा.......

"नही, जिसमें तुम कहो!" धीरज ने उसके स्तनों को मसालते हुए बत्तीसी निकाल दी....

"ओह, कॉमऑन यार.. चलो हिन्दी में ही बता दो... बट बी फास्ट!" रुबीना जल्द से जल्द सी.डी. हासिल करना चाहती थी...

"ठोकुंगा!" धीरज के मुँह से बेबाक ढंग से कहे गये इस शब्द ने दूर बैठी शमीना की भी सीटी सी बजा दी... हालाँकि रुबीना को शायद ऐसे शब्द सुनने की आदत थी....

रुबीना ने एक बार शमीना की और देखा और फिर तपाक से बोली," चलो पैंट उतारो....!"

"कमाल है? मारनी मुझे है या तुझे.. कपड़े तो पहले तुम्हारे ही उतरेंगे...."

रुबीना खिन्न होकर खुद एकदम नीचे बैठ गयी.. और घुटनो के बल होकर धीरज की पैंट का हुक खोलने लगी... शमीना ने शर्मकार अपना चेहरा घुमा लिया.....

रुबीना ने पैंट की ज़िप खोली और बिना देर किए उसको नीचे सरका दिया. इतनी गरम लड़की के इस अदा से उनका नंगा करते ही धीरज के अंडरवेर में तंबू सा तन कर खड़ा हो गया.. जैसे ही रुबीना ने अंडरवेर के बाहर से ही धीरज के तने हुए लिंग को अपनी मुट्ठी में लेने की कोशिश की, धीरज सिसक उठा.. और अपनी एडियाँ उठाकर आँखें बंद कर ली.. रुबीना ने बाहर से ही महसूस कर लिया.. उसका भी संकेत की तरह अच्छा ख़ासा मोटा

और लंबा है.. धीरज को एक एक करके अपने पैर आगे पिछे सरकाते हुए सिसकियाँ लेते देख रुबीना समझ गयी की लोहा पहले ही काफ़ी गरम है.. पिघलने के लिए ज़्यादा आग नही जलानी पड़ेगी...

रुबीना ने अपनी नज़रें तिरछी करके एक बार शमीना को देखा.. वह भी कुछ इसी तरह से तिरछी नज़रों से उनकी ही और देख रही थी.. पर बहुत शरमाई हुई.. और थोड़ी ललचाई हुई.. कहने को तो उसने अपना चेहरा दूसरी और कर रखा था.. पर उसकी नज़रों का निशाना धीरज के कच्च्चे का उभार ही था..... उसके मन में वासना की हल्की हल्की लहरें उठने लगी थी.. यही कारण था कि अंजाने में ही उसने अपने दोनो हाथ जोड़ कर अपनी जांघों के बीच फँसा लिए थे..

रुबीना का हाथ अभी भी कच्च्चे के उपर से धीरज के लिंग को सहला रहा था.. उस ने अपनी गर्दन उठा आँखें बंद करके सिसक रहे धीरज को देखा और मुस्कुरा उठी.. वो तो अपने आपे में ही नही था..

वो झुकी और अंडरवेर के 'उस' खास उभरे हुए हिस्से पर अपने दाँत गाड़ने लगी..

"उफफफ़" मारे गुदगुदी और आनंद के धीरज उछल सा पड़ा और बिस्तर पर पैर नीचे करके जंघें चौड़ी करके बैठ गया.. पर रुबीना उसको जल्द से जल्द टपकाने के मूड में थी.. वह तपाक से उसकी जांघों के बीच आई और अपनी कोहनियाँ उसकी जांघों पर रख कर जितना करीब हो सकती थी हो गयी... अब वो दोनो बिल्कुल शमीना की नज़रों के सामने बैठे थे...

"क्या बात है छम्मक छल्लो.. अंदर ही रस निकालने का इरादा है क्या? रुबीना के गरम हाथों से २ पल के लिए निजात पा कर धीरज को ज़ुबान खोलने का मौका मिल गया..

रुबीना ने उसकी आँखों में आँखें डाली और कामुक ढंग से मुस्कुराने लगी," क्यू? अच्छा नही लग रहा क्या?" रुबीना ने कहते हुए उसका मोटा ताज़ा लिंग अंडरवेर की झिर्री से निकाल कर अपनी और शमीना की नज़रों के सामने बेपर्दा कर दिया.. शमीना खुद को एक लंबी साँस लेने से ना रोक सकी.. और जांघों के बीच छीपी बैठी उसकी कामुक तितली तड़प उठी....

हल्क भूरे रंग का धीरज का लिंग अब सीधे तौर पर रुबीना के हाथों की थिरकन महसूस कर रहा था... क्या गजब का अहसास था.. धीरज एक बार फिर मदहोश होने लगा... लगभग सिसकते हुए उसने कहा," हाईए.. मुँह में ले ले ना! और जो अंदर समान बच गया.. उसको तो बाहर निकाल.. वहाँ खुजली हो रही है..!"

"इतना मोटा मेरे मुँह में नही आएगा.." उपर नीचे करके रुबीना उसकी मोटाई का अंदाज़ा लेते हुए बोली.. और हाथ अंदर करके उसके 'गोलों' को भी बाहर निकाल लिया....

"आ जाएगा.. ट्राइ तो कारर्र...!" धीरज के लिंग में रह रह कर उफान सा आ रहा था...

शमीना ने शायद मर्द का लिंग या कम से कम इश्स तरह का लिंग पहली बार देखा था... लगातार उसकी और देखे जा रही शमीना की फटी हुई सी सेक्सी आँखों से तो यही अंदाज़ा लग रहा था...

धीरज के दबाव डालने पर रुबीना ने अपने मुँह को जितना हो सकता था उतना खोला और हाथ में पकड़े हुए धीरज के लिंग के सुपड़े को अंदर निगल लिया.. उसकी जीभ सुपड़े के नीचे थी और होठ लगभग फटने को हो गये..

अचानक सिसकियाँ ले रहे धीरज को शरारत सूझी.. उसने रुबीना का सिर अपने दोनो हाथों से पकड़ा और खुद थोड़ा आगे होते हुए रुबीना का चेहरा ज़ोर से अपनी तरफ खींच लिया...

रुबीना की तो जान निकल गयी होती.. उसके नथुने अचानक फूल गये और आँखों से आँसू निकल गये.. असहाया सी रुबीना ने 'गों..गों..गों..' की आवाज़ निकालते हुए धीरज को प्रार्थना की नज़र से देखा... लंबी सी आआआः भर कर धीरज ने उसको ढीला छोड़ दिया और हँसने लगा," चला गया था ना पूरा.. तुम तो खामखा डर रही थी... हे हे हे"

रुबीना लिंग से निजात पाते ही बुरी तरह खांसने लगी.. आँखों में अब भी नमी थी..," अब नही लूँगी..!" रुबीना ने एलान कर दिया...

"चाट तो सकती हो ना.. उपर से नीचे तक.." धीरज ने दया करते हुए उसको आसान रास्ता बता दिया...

"हम्म..!" बेचारा सा मुँह बनाकर रुबीना ने कहा और अपनी नज़रों के सामने फूत्कार रहे लिंग को देखने लगी.. उसकी लार से पूरा सना हुआ धीरज का लिंग ट्यूबलाइट की रोशनी में चमक सा रहा था.. रुबीना एक बार फिर झुकी और जीभ बाहर निकाल कर धीरज के लिंग पर लगी हुई अपनी ही लार साफ करने लगी.. उपर से नीचे तक.. ऐसा करते हुए उसने धीरज के गोलों को हाथों में पकड़ रखा था और हौले हुले सहला रही थी.. उत्तेजना की अग्नि में तड़प रहा धीरज पिछे बिस्तर पर लुढ़क गया और उसका लिंग सीधा तना हुआ छत की और निहारने लगा.. शमीना तब तक बुरी तरह मचलने सी लगी थी और समझ नही पा रही थी की अपने बदन में उठ रही इन्न झुझूरियों को कैसे शांत करे...

रुबीना ने धीरज को जैसे ही अपने आपे से बाहर देखा.. लिंग को चाटना छोड़ वा तेज़ी से उसको अपने हाथ में ले उपर नीचे करने लगी... गोले अभी भी उसके दूसरे हाथ की सेवा से अभिभूत से थे...

अचानक धीरज कोहनियाँ बिस्तर पर टीका आगे से थोड़ा उठ गया," ये तुमने कहाँ से सीखा.. आ?"

"क्या?" हिलाना छोड़ रुबीना ने उसकी आँखों में देखा...

"मूठ मारना.. और क्या?" और धीरज हँसने लगा...

रुबीना अचानक किए गये इस अप्रत्याशित सवाल से बौखला गयी," चुप रहो ना.. मुझे अपना काम करने दो...!"

"अरे वा.. खुद तो बेवजह देरी करने में लगी हो.. इसकी ज़रूरत क्या है.. ये तो पहले ही पूरी तरह खड़ा है.. और कितना खींचोगी इसको.. सीधे सीधे कपड़े निकल कर लेट क्यू नही जाती.. अगर काम जल्दी ख़तम करना है तो?" धीरज ने हंसते हुए कहा....

"और अगर मैं ऐसे ही निकलवां दूं तो..?" रुबीना की बात में प्रशन और प्रार्थना दोनो थे...

"ये भी कोई बात हुई भला.. ऐसे ही निकालना होता तो मेरे पास हाथ नही हैं क्या?"... और थोड़ा रुककर सोचते हुए बोला..," वैसे भी तुम्हारे ऐसे करने से इसमें से कुछ नही निकलने

वाला.. इसको मेरे हाथों की आदत पड़ी हुई है.. हे हे हे.. चाहो तो कोशिश करके देख लो.. पर इसमें तुम्हारा ही नुकसान होगा.. बेवजह की देरी होगी.. पहले बता रहा हूँ..."

रुबीना को उसकी बात में कोई दम नज़र नही आया.. उसको अपने हाथों की काबिलियत पर पूरा विश्वास था..," अब तक तो निकल चुका होता.. अगर तुम बीच में नही बोलते.. ठीक है.. मुझे ५ मिनिट और दे दो.. फिर जो चाहे कर लेना.."

"ठीक है.. जैसी तुम्हारी मर्ज़ी.. तुम्हारे ५ मिनिट और खराब सही..!" कहकर धीरज फिर से सीधा लेट गया...

"बस थोड़ी देर और शमीना...," कहते हुए उसने जैसे ही शमीना को देखा.. वह चौंक पड़ी," आ.. तुम्हे क्या हुआ ?"

पसीने से लथपथ शमीना ने अपनी जींसकी जीप खोलकर उंगली अंदर फँसा रखी थी और बुरी तरह हाफ रही थी," कुछ.. नही.. कुछ नही.. हाआआ.. हययाया... ह्बीयेययाया!"

रुबीना को एक बार हँसी आने को हुई पर मिले हुए पाँच मिनिट का पूरा फायदा उठाने के लिए वह उसको नज़रअंदाज करके तेज़ी से अपने काम में जुट गयी.. रुबीना ने अपने होंटो को धीरज के सुपड़े पर रखा और जीभ से वहाँ अठखेलियन करती हुई एक हाथ से तेज़ी से लिंग की खाल को उपर नीचे करने लगी.. कामोत्तेजना बढ़ाने के लिए वह रह रह कर सिसकियाँ ले रही थी.. हालाँकि उसका इसमें इतना इंटेरेस्ट नही था.. जितना सी.डी. पाने में था... धीरज भी अब तक बेकाबू हो चुका था.. कमसिन हाथों, होंटो और जीभ के एक साथ हमले ने उसको पागल सा कर दिया था... सिर घूमाते ही उसकी नज़र अपनी पैंट में उंगली अंदर बाहर कर रही शमीना पर पड़ी और इतना शानदार मंज़र देखते ही उसकी साँसें तक खिंचने लगी.. उसको लगा वह अब टिक नही पाएगा.. पर अब वो रुकना चाहता भी नही था.. अचानक उठा और फिर से उतनी ही बेदर्दी के साथ अपना लिंग रुबीना के मुँह में ठोक कर गहरी साँसें लेने लगा.. वीरया की तेज धार पिचकारियाँ रुबीना के गले को तर करती चली गयी... और रुबीना चाहते हुए भी अपना मुँह बाहर नही निकाल सकी.. जब तक की खुद धीरज ने उसको नही छोड़ा....

एक पल को मुँह खट्टा सा बनाती हुई रुबीना अचानक छाती तान कर बोली," देखा.. निकलवा दिया ना.. अब लाओ वो सी.डी."

"कौनसी सी.डी.?" बिस्तर पर निढाल पड़ा हुआ धीरज अचानक उठ बैठा...

"अब प्लीज़.. ऐसे मत करो.. मैने अपना काम कर दिया है.. " रुबीना खुद को ठगा हुआ सा महसूस करते हुए बोली....

"मैं तो मज़ाक कर रहा था यार.. मैं क्या तुम्हे ब्लू फिल्मों का दल्ला लगता हूँ.. सूरत तो देखो एक बार.. कितनी भोली है यार...!" धीरज ने मुस्कुराते हुए उसके दोनो हाथ पकड़ लिए....

"तो क्या वो सब...?" रुबीना ने हैरत से पूछा...

"हां.. झूठ था.. पर ये सच है कि तुम बहुत ही गरम और सेक्सी माल हो.. एक बार अंदर बाहर खेल लो यार... प्लीज़!" धीरज ने उसके हाथों को पकड़े हुए उसको अपनी और खींचने की कोशिश की....

"कुत्ता.. कमीना..!" रुबीना को अब पहले से कहीं अधिक अफ़सोस हो रहा था..," खाली फोकट में मेरे हाथ तुड़वा दिए... चल शमीना.. जल्दी चल..!"

"मान भी जाओ यार.. अब अगर मैं तुमको सच नही बताता, तब भी तो तुम सब कुछ करती.. जो मैं चाहता...!" धीरज ने शराफ़त से कहा...

"नही मुझे कुछ नही करना.. छोड़ो मेरा हाथ.." रुबीना ने गुस्से से कहा...

"मुझे करना है!" शमीना की आवाज़ सुनकर दोनो ने चौंक कर उसको देखा.. वह सिर झुकाए बैठी थी......

ओह वाउ.. ये तो कमाल ही हो गया.." धीरज झूमते हुए उठा और रुबीना को भूल कर शमीना को अपनी बाहों में उठा लिया.. उसका बदन तप रहा था.. आँखें बंद थी और पूरा बदन धीरज की बाहों में उसने ढीला छोड़ दिया था... धीरज ने उसको प्यार से बिस्तर पर लिटा दिया और उसके उपर आकर उसके होंटो को चूमने लगा...

"शमीना! ये क्या कर रही हो तुम?.. और वो भी...इस चीटर के साथ!" रुबीना को जलन सी महसूस हुई.. वह पहले सी.डी. के लिए जल्दबाज़ी कर रही थी और बाद में शमीना के लिए.. वरना जिसको देखकर शमीना गरम हो गयी थी, रुबीना ने तो उसका छुआ था.. चूमा था.. चॅटा था.. चूसा था.. और निगला भी..

पर जिसके लिए उसने अपने जज्बातों पर काबू रखा, खुद उसी को मैदान में कूदते पाया तो उसकी हैरानी का ठिकाना ना रहा.. उसने दो बार और शमीना को पुकारा.. पर शमीना तो जैसे वहाँ थी ही नही.. वह तो कहीं उपर मस्तियों के सागर में डुबकी सी लगा रही थी.. आसमान में तेर सी रही थी..

"इससे अच्छा तो मैं ही ना कर लेती..."रुबीना बड़बड़ाती हुई सोफे पर जाकर पसर गयी और अपने कपड़े निकालने लगी....

उधर धीरज का ध्यान अब पूरी तरह उसके नीचे लेटी सिसकियाँ ले रही शमीना पर था... उसके गालों, गर्दन, होंटो को चूमते हुए धीरे धीरे धीरज उसके मादक स्तनों से खेल रहा था.. उसकी हर हरकत के साथ शमीना की हालत खराब से और खराब होती जा रही थी... और अब वह इंतजार करने की हालत में नही थी... उसने अपना हाथ लंबा करके धीरज के अंडरवेर में हाथ घुसा लिंग को अपने हाथ में पकड़ लिया.. वह फिर से अकड़ चुका था...

"ज़्यादा जल्दी है क्या?" धीरज ने शमीना के होंटो पर उंगली फेरते हुए कहा....

"हां.. प्लीज़.. मुझे कुछ अजीब सा हो रहा है.. जल्दी कुछ करो.." २-३ लंबी लंबी साँसे लेती हुई शमीना ने इस छोटी सी बात को पूरा किया...

अब धीरज को टाइम बिताने का कोई फायदा लग भी नही रहा था.. उसने झट से बैठते हुए शमीना का टॉप उपर खिसकाकर निकाल दिया.. और पलटी खाकर उसको अपने उपर ले आया.. शमीना के गोल मटोल ब्रा में क़ैद संतरों की भीनी भीनी खुशबू पाकर निहाल हो गया... उसकी कमर में हाथ डालते हुए उसने उन कबूतर के बच्चों को ब्रा से भी निजात दिला दी...

नग्न होते ही शमीना की दोनो मस्त छातीया पेड़ से लटके फलों की भाँति धीरज के चेहरे के सामने लटक गयी.. ऐसे कुंवारे फल जिन्हे किसी ने आज तक चखा नही था.. तोड़ा नही

था.. आज टूटने ही थे!

धीरज ने शमीना की गोल स्तन के गुलाबी रंगत लिए हुए एक दाने को अपने होंटो में दबाया और उनसे रस निकालने की कोशिश करने लगा... वहाँ तो रस नही निकला, अलबत्ता शमीना को अपनी कुँवारी योनी फिर से बहती हुई महसूस हुई... लगातार तेज होती जा रही सिसकियों को काबू में रखने के चक्कर में शमीना पागल सी हो गयी थी.. उसने झट से बिस्तर पर घुटने टेक अपने नितंब उपर उठा लिए और अपना सीना धीरज भरोसे छोड़ती हुई दोनो हाथ पिछे लेजाकार अपनी पैंट का हुक खोला और हाथों से ही थोड़ा नीचे सरकाकर पैरों से खिसका खिसका कर बाहर निकाल दिया... अब सिर्फ़ उसकी नाभि रंग की पैंटी ही उसके नितंबों और योनि को ढके हुए थी..

जैसे ही धीरज के हाथों ने उसके नंगे बदन पर लहराते हुए शमीना के नितंबों की गोलाई और ठरकं को महसूस किया.. वह पागल सा हो गया.. उसके दाने से मुँह हटा उसने फिर से शमीना को नीचे गिरा लिया और लपकते हुए उसकी जांघों के बीच आ गया...

शमीना अब तक इतनी उत्तेजित हो रही थी कि धीरज के कुछ करने का इंतज़ार किए बगैर ही अपनी पैंटी में हाथ घुसा दिया.. धीरज की मौजूदगी का वहाँ अहसास होते ही लगातार मीठी सिसकियाँ अपने होंटो से उत्सर्जित करती हुई शमीना ने अपनी जांघों को पूरी तरह खोल दिया.. उसकी योनि के बराबर के उभार की लाली पैंटी से बाहर झाँकने लगी.. इसके साथ ही हल्के हल्के बॉल भी वहाँ से अपना सिर बाहर निकालने लगे...

धीरज ने झटका देते हुए उसके नितंबों को उठाया और पैंटी खींच ली.. योनि की सुंदरता और पतली झिर्री के बीच लाल रंग की खुल सी गयी फांकों को देखकर वह पागल सा हो गया.. पैंटी को पूरी तरह बाहर निकालने की जहमत उठाए बिना ही उसने शमीना की टाँगों को उपर उठाकर पिछे किया और थोड़ी और खुल चुकी योनि पर अपने होठ सटा दिए.. शमीना उछल पड़ी..," ऊओईईईई... आआआआहह!"

मादक रस की भीनी भीनी खुश्बू तो गजब ढा ही रही थी.. उस पर उसकी सिसकती हुई आवाज़ ने धीरज को और उकसा दिया... झट से उसने पूरी योनि को मुँह में लिया और अपनी जीभ गोल करके अंदर डालने की कोशिश करने लगा...

शमीना इस अभूतपूर्व आनंद को सहन नही कर पा रही थी.. बचने की कोशिश में उससने छटपटाते हुए अपने नितंबों को इधर उधर हिलाना शुरू कर दिया.. धीरज ने उसके नितंबों की दोनो फांकों को अपने हाथों में पकड़कर वहीं दबा लिया.. शमीना तो जैसे पागल ही हो रही थी.. पूरे कमरे में उसकी मादक सिसकियाँ गूंजने लगी... और बीच बीच में आधा अधूरा.. 'प्लीज़' भी उसकी आवाज़ में सुनाई देने लगा....

अचानक उसको अहसास हुआ कि रुबीना उसके लिंग को अंडरवेर से निकाल कर उसको चूसने में लगी हुई है.... रुबीना ने लिंग को पूरी तरह बाहर निकाल कर पिछे की तरफ घुमाया हुआ था और अब तो वो बार बार सुपड़े को मुँह में भी लेकर चूस रही थी... धीरज तो मानो धन्य हो गया.....

जी भरकर उसके रस का स्वाद लेते हुए उसको तडपा तडपा कर झड़ने के बाद जैसे ही धीरज होश में आया.. वह उठा और शमीना की पैंटी पूरी तरह उसकी जांघों से निकाल फर्श पर फैंक दी... जीभ को स्वाद चखा चखा कर उसकी योनि लाल हो चुकी थी और जैसे अंदर लेने को मरी जा रही थी... धीरज ने जैसे ही उसकी टाँगों को मोड़ उसकी छाती से लगाया.. योनि की फांकों ने पूरी तरह मुँह खोल उसके स्वागत के लिए खुद को तैयार करार दिया....

अब देर किस बात की थी.. किस्मत से मिले इस खजाने के चप्पे चप्पे को तो वो चूस ही चुका था.. अब अंदर जाने की तैयारी में वह आगे खिसका और अपना लिंग शमीना की फांकों के बीच रख दिया...

सुपड़े की मौजूदगी को शमीना सहन नही कर पाई और एक बार फिर रस छोड़ दिया.. सिसकते हुए..," आआआआअहूऊऊऊऊओ!"

"हम्मम.. ये ले.." धीरज ने जैसे ही दबाव बनाया.. शमीना की चीख निकल गयी.. इस चीख को यक़ीनन नीचे बैठे लोगों ने भी सुना होगा.. सूपड़ा 'पक' की आवाज़ के साथ योनि में जाकर फँस गया.. शमीना की आँखें निकल कर बाहर आने को हो गयी.. अगर धीरज उसके होंटो को अपने हाथ से दबा नही लेता तो उसकी चीखें अभी कई मिनिट तक गूँजनी थी...

मुँह पर हाथ रखे हुए ही धीरज उसकी छतियो पर झुक गया.. और बेदर्दी से उन्हे चूसने लगा...

रुबीना अपने आपको अकेला पाकर फिर से भनना गयी.. आख़िर उसके पास भी तो तराशा हुआ माल था.. बड़ी ही बेशर्मी के साथ वह उठकर धीरज के आगे शमीना के दोनो और घुटने टेक आगे की और झुक गयी.. और अपने मोटी मोटी हल्की सी खुली हुई फांकों वाले 'माल' का प्रदर्शन धीरज को रिझाने के लिए करने लगी...

नेकी और पूछ पूछ.. धीरज ने 'इस' माल का स्वागत भी उतनी ही इज़्ज़त और तत्परता के साथ किया... शमीना की जांघों में भी अब दर्द कम होने लगा था.. शमीना की छातियो को छोड़ वह थोड़ा उपर उठा और रुबीना को पीछे खींच लिया...नितंबों को मसालते हुए उसने रुबीना की बॉल कटी हुई योनि को अपने हाथ में लेकर मसल सा दिया.. रुबीना उछल पड़ी...," आ.. दर्द होता है ऐसे!"

"और ऐसे!" जैसे ही धीरज ने अपनी एक उंगली उसकी योनी में घुसाई.. वो पूरी थिरक उठी .. एक बार कमर को लारजते हुए उपर उठी और तुरंत ही नीचे झुक कर शमीना के मुँह में अपनी एक स्तन दे दी... शमीना पूरे मज़े से किसी बच्चे की तरह उसको चूसने लगी...

रस से सनी उंगली निकाल कर धीरज ने रस को रुबीना की नितंब के छेद पर लगा दिया.. रुबीना समझ गयी कि अब क्या होने वाला है.. दाँत भींच कर उसने अपने आपको इस आघात के लिए पहले ही तैयार कर लिया...

धीरज ने छेद को उंगली से उपर से ही कूरेदना शुरू कर दिया.. रुबीना निहाल हो गयी.. उसने अपने नितंबों को ढीला छोड़ दिया.. तब तक शमीना भी अपने नितंबों को थिरकने लगी थी.. धीरज ने धीरे धीरे वहाँ दबाव बनाना शुरू किया और जैसे ही मौका मिला.. एक दम से नीचे होकर पूरा लिंग घुसकर शमीना को उछालने की कोशिश करने पर मजबूर कर दिया.. पर अब चीख नही निकली.. उसके मुँह में तो रुबीना की स्तन फँसी हुई थी.... सो अंदर ही घुट कर रह गयी होगी....

अब उछलने की बारी रुबीना की थी.. अचानक धीरज की उंगली के दो परवे उसके छेद में घुस गये.. और झटके के साथ उसने अपने योनीदों को कस कर भींच लिया.. पर अब तो

उंगली जा ही चुकी थी..

रुबीना की टाँगों को एक एक करके धीरज ने हवा में उठी हुई शमीना की जांघों से पिछे कर दिया... शमीना की जांघें अब रुबीना की कमर से सटी हुई उपर की और उठी थी...

धीरज ने धीरे धीरे धक्के लगाने शुरू किए.. पर अब तक शमीना के बदन में इतनी गर्मी भर चुकी थी कि सहज धक्कों से कुछ नही होना था.. शमीना ने भी अपनी टाँगों को हिला हिला कर नितम्बो को धक्कों के साथ ले मिलाते हुए थिरकना शुरू कर दिया... इससे उत्तेजित होते हुए धीरज ने अपनी पूरी उंगली रुबीना के अंदर घुसेड दी.. रुबीना काँप उठी.. दर्द के मारे नही.. आनंद के मारे.. अपना हाथ नीचे लाकर वह खुद ही अपनी योनि को बुरी तरह मसले जा रही थी....

धीरे धीरे करते हुए धीरज ने धक्कों की रफ़्तार बढ़ा दी.. इसी बीच धीरज की उंगली की जगह उसका अंगूठा ले चुका था.. पर अब तो रुबीना पूरी तरह मस्त थी.. और भी कुछ होता तो शायद ले लेती....

एक बार और सखलन के करीब आकर शमीना बुरी तरह हाँफने लगी थी.. सारा शरीर अकड़ गया था और रुबीना की स्तन मुँह से निकाल अब वह छोड़ देने की गुहार लगाई...

धीरज ने २ पल के लिए धक्के लगाते हुए सोचा.. शमीना की योनी में अंदर आते जाते उसको अपनी कल्पना से भी कहीं अधिक आनंद आ रहा था... पर उसने शमीना पर अहसान करने का निर्णय कर ही लिया... आख़िर उसके पास स्पेर में दूसरा 'माल भी तो था....

जैसे ही धीरज ने अपना लिंग शमीना की योनि से बाहर निकाला.. वह गहरी साँस लेते हुए रुबीना के नीचे से निकल कर आँखें बंद करके बिस्तर पर सीधी पड़ी हुई लंबी लंबी साँसे लेने लगी....

अब धीरज का निशाना रुबीना थी.. पर जैसे ही उसको नीचे झुका धीरज ने लिंग उसकी नितंब के छेद पर रखने की कोशिश की.. रुबीना तड़प उठी," प्लीज़.. यहाँ ये नही.. नीचे घुसा दो.. मैं कब से तड़प रही हूँ...!"

"अच्छा.. पहले क्यू नही बताया..!" धीरज ने मुस्कुराते हुए अपना इरादा बदल दिया और उसको थोड़ा सा उपर उठा, एक ही धक्के में लिंग आधे से ज़्यादा उसकी योनि में उतार दिया...

"आआआहह!" रुबीना सिसक उठी... आनंद के मारे अपनी छातियो को अपने आप ही मसलने लगी..," कर दो नाआ!"

"ये ले..!" और अगले ही झटके में धीरज का लिंग पूरा अंदर गया और इसके साथ ही अंदर बाहर होने लगा... रुबीना पर मदहोशी का सुरूर छाया हुआ था.. हर धक्के का जवाब वह अपने पिछे की ओर धक्के और 'आह' के साथ दे रही थी... मुश्किल से ४-५ मिनिट हुए होंगे की उसने भी हिचकियाँ सी लेते हुए जवाब दे दिया... ," आ.. बस.. शुक्रिया याआआर!" और रुबीना अपने को छुड़ाने की कोशिश करने लगी....

"सीधी हो जाओ.. पर मेरा काम तो पूरा करवा दो.." धीरज ने मिन्नत सी करते हुए कहा....

"नही यार.. बस.. और सहन नही कर सकती..!" रुबीना ने साफ जवाब दे दिया...

धीरज ने मायूसी से शमीना की और देखा.. वह उसका इशारा समझते ही मुस्कुराइ और रुबीना वाली पोज़िशन में उसकी तरफ नितंब उठाकर घूम गयी... धीरज की बाँच्वें खिल गयी.. आख़िर पहली बार वाली तो पहली बार वाली ही होती है... वह घूमा और उसके पिछे जाकर खड़ा हो गया...

धीरज ने झुककर उसकी छतियो को दोनो हाथों में पकड़ा और कमर पर गर्दन के पास चुंबन अंकित करके अपना धन्यवाद प्रकट किया... इस स्थिति में लिंग को अपने योनि द्वार पर टक्कर मारते देख शमीना निहाल हो गयी..

धीरज ने उठकर उसकी कमर को झुकाया और उसके उपर की और उठ गये नितंबों को पकड़ कर एक दूसरे से दूर खींचा.. योनि का मुँह खुल गया.. धीरज ने छेद के मुँह पर लिंग का सूपड़ा रखा और उसकी मखमली जांघें कसकर पकड़ ली...

"आऊच..!" शमीना के मुँह से निकला...

"बस एक मिनिट... !" धीरज भी उत्तेजना की प्रकस्था तक पहुँचने ही वाला था.. जांघों को कसकर पकड़े हुए उसने लिंग पूरा उतारा और तुरंत ही बाहर खींचते हुए तेज़ी से अंदर ठोंक दिया.. शमीना तो अब मज़े के मारे मरी जा रही थी... हर झटका उसको आनंद सागर के पार लगा रहा था मानो... उसने पूरा सहयोग करना शुरू कर दिया और रुबीना की और मुस्कुराते हुए और ज़्यादा उत्तेजित होकर झटके लगाती रही.. लगवाती रही...

आख़िर कार धीरज के सखलन का समय आ गया... तेज़ी से धक्के लगाता लगाता वह एक दम रुक गया और शमीना के उपर झुक कर उसकी छातियो को कसकर मसालने लगा... शमीना ने उसके वीरया की बूँदों को अपने अंदर महसूस किया और धीरज के आलिंगन से मदहोश होकर किलकरियाँ सी लगानी शुरू कर दी... अब तो धीरज भी बुरी तरह हाँफ रहा था....

तीनो काफ़ी देर तक एक दूसरे के बाजू में आँखें बंद किए पड़े रहे.. अचानक रुबीना ने पूछा," सच में तुमने कोई सी.डी. नही बनाई है ना.....

"बनाई है... अगली बार दूँगा.." कहकर धीरज खिलखिला कर हँसने लगा....," नही यार.. ऐसा कुछ नही है.. बट शुक्रिया फॉर एवरीथिंग.. ये मेरे जीवन का पहला सेक्स था...

शमीना ने पलटे हुए अपनी छाती धीरज से सटाते हुए अपनी नंगी जाँघ उस'की जांघों पर रख ली," मेरा भी!" उसने कहा और धीरज के होंटो को चूसने लगी.......

# १३

नीचे महफ़िल जम चुकी थी.. कुछ देर धीरज का इंतजार करने के बाद संकेत ने वहीं प्रोग्राम जमा लिया.. गिलासों को खड़खड़ते अब करीब आधा घंटा हो चुका था.. शराब के नशे में प्रतिक वो सब कुछ बोलने लगा था जिसको बताने में अब तक वो हिचक रहा था...

"ओह तेरी.. फिर क्या हुआ?" संकेत जिज्ञासु होकर आगे झुक गया...

"छोड़ो यार.. क्यू टाइम खोटा कर रहे हो.. आइ डोंट बिलीव इन ऑल दीज़ फूलिश थिंग्स.. एक सपने को लेकर इतना सीरीयस और इमोशनल होने की ज़रूरत नही है.. " सौरभ सूपरस्टिशस किस्म की बातों में विश्वास नही कर पा रहा था...

"पूरी बात तो सुन ले डमरू... प्रतिक ने सौरभ को डांटा और कहानी सुनने लगा....

"कौन डमरू.. मैं.. हा हा हा...!" सौरभ ज़ोर ज़ोर से हँसने लगा...," डमरू.. हा हा हा!"

"तुझे नही सुननी ना.. चल.. जाकर सामने बैठ.. और अपना मुँह बंद रख.. मैं मानता हूँ.. और मुझे सुननी हैं..." संकेत आकर सामने वाले सोफे पर सौरभ और प्रतिक के बीच में फँस गया.. सौरभ उठा और बड़बड़ाता हुआ सामने चला गया," डमरू.. हा हा हा!"

बातें अभी चल ही रही थी कि मुस्कुराते हुए धीरज ने कमरे में प्रवेश किया..," अच्छा.. अकेले अकेले..!"

सौरभ उसके आते ही खड़ा हो गया," साले डमरू! अकेले अकेले तू फोड़ के आया है या हम.. ? बात करता है...

"भाई तू मेरे को डमरू कैसे बोल रहा है.. वो तो प्रतिक बोरंभा है..." धीरज ने उसके पास बैठते हुए कहा...

"क्यूंकी मेरे अंदर प्रतिक का भूत घुस आया है.. हे हे हा हा हो हो!" सौरभ ने भूतों वाली बात का मज़ाक बना लिया....

"चुप कर ओये जलील इंसान.. ऐसी बातों को मज़ाक में नही लेते.. किसी के साथ भी कुछ भी हो सकता है..." संकेत ने प्यार से उसको दुतकारा...

"किस के साथ क्या हो गया भाई? मुझे भी तो बता दो.." धीरज ने अपना गिलास उठाया और सबके साथ चियर्स किया...

"वो बात बाद में शुरू से शुरू करेंगे.. अब सबको सीरीयस होकर सुननी हैं.. पहले तू बता.. दी भी या नही.. मुझे तो उसकी चीख सुनकर ऐसा लगा जैसे तू अपना हाथ में पकड़े उसके पिछे दौड़ रहा है.. और वो बचने के लिए चिल्लती हुई कमरे में इधर उधर भाग रही है...हा हा हा.. साली ने नखरे बहुत किए थे पहले दिन... मैं ऐसी नही हूँ.. मैं वैसी नही हूँ.. पर डालने के बाद पता लगा वो तो पकई पकाई है..." संकेत ने अपना अनुभव सुनाया....

धीरज ने छाती चौड़ी करके अपने कॉलर उपर कर लिए," देती कैसे नही... !"

"अरे... सच में.. चल आ गले लग जा.. बधाई हो बधाई.." संकेत आकर उसके गले लग गया..," हां.. यार.. बात तो तू सही कह रहा है.. रुबीना की खुश्बू आ रही है तेरे में से.... पर वो चिल्लाई क्यू यार.. साली एक नंबर. की नौटंकी है.. तुझे भी यही कह रही थी क्या की पहली बार मरवा रही हूँ.." संकेत ने वापस प्रतिक के पास बैठते हुए कहा...

" नही यार.. वो तो शमीना की चीख थी... उसकी पहली बार फटी है ना आज!" धीरज ने अपनी बात भी पूरी नही की थी की संकेत ने गिलास रखा और उछल कर खड़ा हो गया..," तूने शमीना की मार ली????"

"हां.. कुछ ग़लत हो गया क्या?" धीरज ने मारा सा मुँह बनाकर कहा...

"ग़लत क्या यार..? ये तो कमाल हो गया.. साली को तीन बार बुला चुका हूँ.. रुबीना के हाथों.. पर वो तो हाथ ही नही लगाने देती थी यार.. तूने किया कैसे.. अब तो ज़ोर की पार्टी होनी चाहिए यार.. ज़ोर की.. तूने मेरा काम आसान कर दिया...!" संकेत जोश में पूरा पैग एक साथ पी गया...

"वो कैसे? " धीरज की समझ में नही आई बात....

"क्या बताऊं यार.. तुझे तो पता होगा.. वो और रुबीना दोनो सग़ी बेहन हैं..!"

संकेत को धीरज ने बीच में ही टोक दिया," क्या? सग़ी बेहन हैं.. ?"

"हां.. चल छोड़ यार.. लंबी कहानी है.. उसके बारे में बाद में बात करेंगे... पहले प्रतिक भाई की सुनते हैं.. चल भाई प्रतिक.. अब सब इकट्ठे हो गये हैं.. शुरू से शुरू करके आख़िर तक सुना दे.. पहले बोल रहा हूँ सौरभ.. बीच में नही बोलेगा.. देख ले नही तो...!" संकेत सौरभ को चेतावनी सी देते हुए बोला..

"नही बोलूँगा यार... चलो सूनाओ!" कहकर सौरभ भी प्रतिक की और देखने लगा....

प्रतिक ने कहानी सुननी शुरू कर दी.....

" ओह माइ गॉड! मतलब तुम्हारे लिए कोई लड़की सदियों से तड़प रही है.. आज तक!" संकेत ने पूरी कहानी सुनने के बाद ही प्रतिक्रिया दी..," मैने तो ऐसा सिर्फ़ कहानियों में ही सुना था.. आज पहली बार जीता जागता सबूत देख रहा हूँ..."

"अबे घोनचू! ये भी तो कहानी ही है.." नशे और मस्ती में झूल रहे सौरभ ने पनीर का टुकड़ा प्लेट से उठाकर उसके मुँह पर दे मारा...

"मतलब? ... ये कहानी है प्रतिक?" संकेत ने प्रतिक की और अचरज से देखा...

प्रतिक कुछ नही बोला.. पिछली बातें याद करते करते उसके चेहरे पर पसीना छलक आया था.. शरीर में रह रह कर अंजान सी सिहरन सी दौड़ जाती थी.... वह सिर झुकाए बैठा रहा....

"अरे यार.. सपने कहानियाँ ही तो होते हैं.. सपने में ही तो आती है ना वो.. और जो कुछ जीते जागते में हुआ है.. उसके बारे में विपिन भाई ठीक ही कह रहा है.. वो ज़रूर उस बुड्ढे और लौंडिया की साज़िश है.. ज़रूर किसी मंत्र तन्त्र का सहारा लेकर इसके सपने में आ जाती होगी... तू क्या कहता है धीरज?" सौरभ ने सबके लिए एक एक पैग और बना दिया.....

"साला! कुत्ता! कमीना.... २ महीने से ऐसे ही रोनी सी सूरत बनाए हुए है.. कभी मुझे दोस्त नही समझा... मुझे आज तक कुछ भी नही बताया इसने..!" अब तक चुप चाप गौर से सारी बातें सुन रहा धीरज उठा और प्रतिक के पास बैठकर उसकी छाती से लग गया...," पहले क्यू नही बताया यार... मैं चरंभा तुम्हारे साथ.. हर जगह.. तूने मुझे अपना नही माना यार... मुझे अपना नही माना ओये!"

"अब चुप भी कर यार.. ज़रा सी चढ़ते ही शुरू हो जाता है.." प्रतिक ने भी उसके गले लग कर उसकी कमर थपथपाई....

"आज मैं उस तरह से शुरू नही हुआ हूँ यार.. कितना हंसता था तू.. कितनी मस्ती करते थे हम दोनो.. पर दो महीने से तू पता नही कैसा हो गया है.. ना कहीं घूमने चरंभा.. ना कभी फोन उठता.. और मिरंभा भी है तो दिलीप कुमार की स्टाइल में.. मैं सोचता तो था कि कहीं तेरा कुछ चक्कर तो नही चल गया है.. पर ये तो मैने सपने में भी नही सोचा था की ये सारा चक्कर सपने का है... पर अब चिंता मत कर.. यहाँ बतला में ही है ना वो...?" धीरज भावुक होते हुए बोला...

"हम्म.." प्रतिक ने हामी भारी...

"उसको ढूँढना ही है ना बस.. बाकी काम तो तू कर लेगा?" धीरज ने पूछा...

"सिर्फ़ ढूँढना नही है यार... उसको वहाँ लेकर भी जाना है.. उसी टीले पर.." प्रतिक ने स्पष्ट किया...

"तो वो तो चल ही पड़ेगी ना... जब तुझसे इतना प्यार करती है.. तेरे लिए तो वो सारी दुनिया को छोड़ सकती है भाई.. फिर बतला में क्या रखा है? पुराने टीले पर रहेंगे चलकर.. एक छोटा सा मकान बना लेंगे यहाँ..." धीरज ने अपनी बटेर जैसी मोटी आँखें प्रतिक के सामने पूरी खोल दी....

"तुझसे तो बात करना ही बेकार है यार.. भेजे में तो मुर्गियों ने अंडे दे रखे हैं तेरे में.. कुछ समझ में तो आता नही .. तेरे को क्या घंटा बताता में...." प्रतिक उसकी ऊल-जलूल बातें सुनकर झल्ला उठा...

"ऐसे क्यू बोल रहा है यार.. चल अच्छे से एक बार और सुना दे पूरी कहानी.. इस बार में ज़रूरी बातें नोट करता रहूँगा अपनी डाइयरी में.. मेरी डाइयरी कहाँ गयी?" धीरज ने भोलेपन से कहा और सभी ठहाका लगाकर हंस पड़े..

"तुझे कहानी सुनने की कोई ज़रूरत नही है.. आगे की सुन ले बस.. पहले तनवी को ढूँढना है.. फिर उससे दोस्ती करनी है.. फिर सारी बातें उसको बतानी हैं और उसको अपने साथ एक बार पुराने टीले पर चलने के लिए मनाना है... समझ गया! और अब वहाँ मकान बनाने की प्लॅनिंग शुरू मत करना.. वहाँ रहना नही है हमें..." प्रतिक ने खास खास बातें दोहरा दी....

"रहना नही तो फिर क्यू चलना है वहाँ.. क्यू बेचारी भाभी को डरा रहे हो यार.." धीरज के दिमाग़ में एक और सवालों का लट्टू जगमगा उठा...

"अबे डमरू.. वहीं चलकर उसको सब कुछ याद आएगा.. समझा.." प्रतिक ने गुस्से से कहा...

"ऊहह.. अच्छा...... ठीक है...एक मिनिट.....पर तुझे कैसे पता कि उसको वहीं सब कुछ याद आएगा..." धीरज ने एक और सवाल दागा...

"खुद तनवी ने ही बताया है मुझे, सपने में.... याअर.." प्रतिक समझाते समझाते थक गया....

"जब उसको पता ही है तो याद दिलाने की क्या ज़रूरत है.. ? बस ये एक लास्ट बात और क्लियर कर दे..."

"साले.. तेरे दिमाग़ में चढ़ गयी है दारू.. यहाँ वाली तनवी को कुछ पता नही है... वो टीले पर जो है.. वो कयी जनम पहले की दुर्गावती का दिल है.. जो कहती है कि मैं चंद्रभान था और वो दुर्गावती.. हम एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे.. इस जनम में दुर्गावती तनवी है और और चंद्रभान प्रतिक.. यानी की मैं.. इससे ज़्यादा मुझे कुछ नही पता.. मैं सिर्फ़ देखना चाहता हूँ कि ये सब सच भी है या नही.. कल सुबह तनवी को ढूँढने चलेंगे.. अब इसके बाद कोई सवाल किया ना तो... देख ले फिर.." प्रतिक बोलते बोलते तक गया....

"एक मिनिट प्रतिक..मान लो तेरा सपना हक़ीकत है.... शहर में तो काई तनवी हो सकती हैं.. तू उसको ढूंढेगा कैसे...?"

"उसका घर गवरमेंट. कॉलेज के पास है.. वहीं पता करेंगे कोई तनवी वहाँ है भी या नही...." प्रतिक ने जवाब दिया....

"गवरनमेंट कॉलेज के पास? वहाँ का तो मैं अभी पता लगा सकता हूँ.. एक्चुअली रुबीना और शमीना वहीं रहती हैं...!"

प्रतिक और धीरज एक साथ बोल पड़े," पता कर ना यार..!"

"हां.. अभी पता करो यार.. पता चल जाएगा कि सपना हक़ीक़त है या फशमीना...!" सौरभ भी उत्सुक होकर मोबाइल निकाल रहे संकेत की और देखने लगा...

संकेत ने उनके बीच बैठे बैठे ही रुबीना को कॉल की ओर स्पीकर ऑन कर लिया.. काफ़ी लंबी बेल जाने के बाद रुबीना ने फोन उठाया," जानू.. अम्मी यहीं पर हैं.. मैं उपर जाती हूँ.. ५ मिनिट बाद फोन करना" खुस्फुसती हुई आवाज़ में कहते हुए रुबीना ने झट से फोन काट दिया..

"अम्मी! शमीना कहाँ है?" रुबीना ने फोन अपनी जेब में डाला और किचन से बाहर आते हुए बोली..

"उपर पढ़ रही होगी.. क्यू?" अम्मी ने काम करते करते ही जवाब दिया...

"मैने दूध गॅस पर रख दिया है अम्मी.. एक बार देख लेना.. मैं अभी आती हूँ.." रुबीना ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा...

रुबीना उपर गयी तो कमरे का दरवाजा अंदर से बंद मिला.. उसने झिर्री से अंदर झाँका.. बिस्तर पर टांगे लंबी किए हुए शमीना ने अपने लोवर को घुटनो तक नीचे किया हुआ था और झुक कर वहाँ कुछ ढूँढ सी रही थी.. अचानक रुबीना की हँसी सुनकर वह हड़बड़ाती हुई उछल सी गयी.. और झट से अपना लोवर उपर सरका लिया...

"क्या कर रही है बन्नो.. चल दरवाजा खोल!" रुबीना ने हंसते हुए कहा...

"क्कुछ नही.. वो पॅड बदल रही थी..!" शमीना ने दरवाजा खोलते हुए कहा...

"हाअ? थोड़ी देर पहले तो ठीक थी तू.. 'डेट्स' आ गयी क्या?" रुबीना जाकर बिस्तर पर दीवार के साथ सिरहाना लगाकर बैठ गयी और अपना मोबाइल निकाल लिया...

"पता नही.. पर 'उसके' बाद थोड़ी थोड़ी देर में खून आ रहा है.. 'डेट्स' तो अभी १० दिन पहले ही गयी हैं... ऐसा होता है क्या?" शमीना ने जिज्ञासा से पूछा...

"मुझे तो नही हुआ था... छिल विल गयी होगी.. हो जाएगी ठीक.. संकेत का फोन आया था.. मैं उसके पास कॉल कर रही हूँ.. एक बार...!" रुबीना ने जवाब दिया...

"मैं नही जाऊंगी वहाँ.. आज के बाद!" शमीना ने उसके पास बैठते हुए कहा...

"क्यू? मज़ा नही आया क्या?" रुबीना ने हंसते हुए पूछा...

"वो बात नही है.. पर अब में किसी और के साथ 'ये' नही करूँगी!" शमीना ने निश्चय सा करते हुए बोला...

"क्यू.. ? प्यार हो गया क्या उससे?" रुबीना ने उसकी आँखों में आँखें डालते हुए पूछा....

"नही... बस ऐसे ही.. मेरा मन नही मानता..." शमीना ने कहते हुए नज़रें फेर ली...

"निकाह के बाद तो करना ही पड़ेगा ना..? फिर २ से करो या १०० से.. क्या फरक पड़ता है अब?" रुबीना ने अपना नज़रिया उसपर थोंपा...

"मैं निकाह करूँगी ही नही!" शमीना की आँखों में आँसू आ गये...

"आ.. तू तो सेंटी हो गयी यार.. भूल जा.. आजकल ये सब तो चरंभा ही रहता है.. इसमें शादी ना करने वाली कौनसी बात हो गयी... 'वो' क्या अब शादी नही करेगा?" रुबीना ने उसको कंधों से पकड़ कर अपने सीने की और झुका लिया....

"मुझे उससे क्या मतलब? छोड़.. मुझे नींद आ रही है.." शमीना ने कहा और उसके सीने से हटकर दूसरी और करवट लेकर लेट गयी.....

रुबीना कुछ पल उसको अजीब सी प्यार भरी निगाहों से देखती रही.. तभी संकेत की कॉल दोबारा आ गयी...

"संकेत.. तुम्हे पता है? आज तुम्हारे दोस्त ने हमारा रेप कर दिया...

"किसने? कब" संकेत ने फोन पर आश्चर्य और गुस्सा सा दिखाते हुए वहाँ सबकी और देख कर बत्तीसी निकाली....

"मुझे नाम नही पता... पर जब तुम नीचे चले गये थे तो कोई दूसरा उपर आ गया था.. कहने लगा मैने तुम्हारी संकेत के साथ मूवी बना रखी है.. और फिर ब्लॅकमेल करने लगा.. मजबूरन उसने जो कुछ कहा, हमें करना पड़ा... शमीना तो अब तक रो रही है बेचारी..." रुबीना बात कर ही रही थी कि अचानक फोन पर सबको एक दूसरी आवाज़ सुनाई दी...," झूठ क्यू बोल रही है..? मैने तो अपनी मर्ज़ी से प्यार किया था उसके साथ... ज़बरदस्ती की होगी तुम्हारे साथ..."

"हां.. वो.. ज़बरदस्ती तो मेरे साथ ही की थी.. इसको पता नही क्या हो गया था अचानक.. ये भी बीच में कूद पड़ी.." रुबीना ने अपनी बात से पलट'ते हुए कहा...

" पर यार.. तुम इतनी पागल कैसे हो? ऐसे कैसे कोई हमारी मूवी बना लेगा.. वो भी सेकंड फ्लोर पर.. चल छोड़ अभी.. इसको बाद में देखेंगे.. मुझे तुमसे एक बात पूछनी है..." संकेत ने काम की बात करते हुए कहा....

"हम्मम.. बोलो जानू!" रुबीना की टोन अचानक बदल गयी....

"ये.. तुम्हारे आसपास कोई 'तनवी' नाम की लड़की रहती है क्या?" संकेत ने कहा...

"बड़े बेशर्म हो तुम.. मुझसे काम नही चरंभा क्या?" रुबीना ने आवाज़ में गुस्सा सा लाते हुए कहा...

"क्यू? लड़कियाँ क्या सिर्फ़ इसी काम के लिए होती हैं..? तुम बताओ ना जल्दी...." संकेत चिड़ता हुआ सा बोला....

"हम्म्ममम... ओके! किस एज की है..?" रुबीना ने पूछा...

संकेत ने हाथ से इशारा करके प्रतिक से एज का आइडिया पूछा.. और प्रतिक के 'ना' में गर्दन हिलने पर बोला," यही कोई.. तुम्हारी उमर की होगी...!"

रुबीना ने अपना दिमाग़ चारों और दौड़ाया और बोली," ना.... हमारी उमर की क्या? मेरे ख़याल से तो किसी उमर की लड़की इस नाम की नही है कोई...!"

रुबीना का जवाब सुनकर प्रतिक के अरमानो पर पानी सा फिर गया.. ," पक्का ये गवरमेंट कॉलेज के पास ही रहती है ना...!"

रुबीना ने उसकी आवाज़ सुन ली...," हां यार.. कुल मिलाकर ४०-५० घर ही तो हैं यहाँ.. सब एक दूसरे को जानते हैं... कोई इस नाम की नही है यहाँ पर..."

"चल ठीक है.. अभी रखता हूँ.. कल बात करूँगा... ओके! बाइ" और संकेत ने उसकी बात सुने बिना ही फोन काट दिया...

"मैने बोला नही था.. सपने सपने ही होते हैं यार.. जस्ट चिल एंड एंजाय दा लाइफ!" सौरभ ने कहा....

अब किसी के पास बोलने को कुछ बचा नही था.. प्रतिक ने सोफे पर सिर टीकाया और आँखें बंद कर ली... वहाँ एकदम सन्नाटा सा पसर गया....

"तूने ये क्यू बोला कि उसने रेप किया था..? अपनी मर्ज़ी से गयी थी मैं तो.. और तू भी तो बाद में अपनी मर्ज़ी से ही गयी थी उसके पास...!" शमीना ने रुबीना के फोन रखते ही गुस्से से कहा....

"तो क्या हो गया? तू तो ऐसे कर रही है जैसे तुझे उससे प्यार हो गया हो... उसके दोस्त ने भी तो बताया होगा उसको नीचे जाकर.. संकेत क्या सोचता मेरे बारे में.. मैने तो उसको

यकीन दिलाने के लिए कहा था कि हमने अपनी मर्ज़ी से वो सब नही किया.. उसने डरा दिया था हमको.. तू क्या सोच रही है? मुझे सी.डी. वाली बात पर यकीन हो गया था... मेरा तो दिल कर रहा था..पर तेरी वजह से शर्मा रही थी..." रुबीना बोलकर मुस्कुराने लगी...

"चल छोड़.. किस लड़की के बारे में पूछ रहा था संकेत?" शमीना ने बात को टालते हुए कहा..

"वो!.. पता नही.. याद नही आ रहा.. पर अपने लिए नही पूछ रहा था.. किसी और ने पुच्छवाया होगा.. पर अपनी कॉलोनी में तो कोई तनवी... हां.. तनवी नाम की लड़की पूछ रहा था... अपने यहाँ नही है ना कोई...?" रुबीना को बोलते बोलते नाम याद आ गया...

"अरे.. वो अक्षरा.. जो कोने वाले बड़े से घर में रहती है.. उसी का तो नाम है तनवी..!" शमीना कहते कहते बैठ गयी...

"अच्छा! ... पर तुझे कैसे पता? उसको यो सब अक्षरा ही कहते हैं... वो तो बहुत प्यारी है यार.. किसकी किस्मत जाग गयी? ... ना.. पर मुझे नही लगता ये बात होगी.. वो तो घर से ही बहुत कम निकलती है.. और लड़कों की और तो देखती तक नही.. वो तनवी नही होगी.. या फिर कोई दूसरी ही बात होगी.. इस चक्कर में तो कतई नही पूछा होगा संकेत ने... पक्का तनवी ही है ना वो?" रुबीना ने बोलते बोलते फोन निकाल लिया....

"अरे हां... पक्का पता है मुझे.. अपनी कॉलोनी में तो बस वही एक तनवी है.." शमीना ने ज़ोर देकर कहा....

"ठीक है.. एक मिनिट.. मैं संकेत को बता दूं.." कहकर रुबीना ने संकेत का नंबर. डाइयल कर दिया.....

संकेत ने फोन उठाकर देखा और वापस रख दिया....

"क्या हुआ? किसकी कॉल है?" सौरभ ने संकेत को कॉल रिसीव ना करते देख पूछा...

"वही यार.. रुबीना.. ये लड़कियाँ पका देती हैं फोन कर कर के.. नही? कई बार तो रात के २-२ बजे फोन करके पूछेंगी," क्या कर रहे हो जानू? हा हा हा..." संकेत हंसते हंसते प्रतिक

का गमगीन सा चेहरा देख कर चुप हो गया," तो क्या हो गया यार...? हो जाता है.. तू इतना सेंटी क्यू हो रहा है? तेरे को एक से एक अच्छी लड़की मिल जाएगी.. टाइम पास के लिए भी और पर्मनेंट भी.. कहो तो आज ही बुलाऊ एक टाइम पास.. मस्त लड़की है.. देखते ही घूँघरू बज़ेंगे दिल में..."

"हां.. बुला ले यार..!" धीरज चहकते हुए बोला...

"तेरा मन भरा नही अभी भी.. एक का तो आज रिब्बन काटा है साले ने... बोल प्रतिक! क्या कहता है..?" सौरभ ने धीरज को दुतकरते हुए प्रतिक से पूछा....

"सोना है मुझे..!" प्रतिक ने इतना ही कहा था कि संकेत का फोन फिर बज उठा...

"क्या है यार? तुम्हे पता है ना की आज यार दोस्त आए हैं.. दोबारा फोन मत करना.." संकेत ने कॉल रिसीव करते ही कहा...

"एक मिनिट.. एक मिनिट... वो तनवी है एक हमारी कॉलोनी में.. क्या करना था उसका..? रुबीना ने कहा ही था कि संकेत आश्चर्य और खुशी से उछलता हुआ खड़ा हो गया," व्हाट? तनवी मिल गयी?"

संकेत की प्रतिक्रिया सुन सबके चेहरे खिल उठे.. और वो सब भी संकेत के साथ खड़े हो गये.. प्रतिक का चेहरा अप्रत्याशित रूप से चमक उठा...

रुबीना उसके आश्चर्य को समझ नही पाई," ऐसा क्या हो गया?"

"पर पहले तुमने मना क्यू कर दिया था.. ?" संकेत ने उसकी ना सुनते हुए अपना सवाल किया...

"वो यहाँ सब उसको अक्षरा कहते हैं.. मुझे नही पता था कि उसका असली नाम तनवी है.. अभी शमीना ने बताया..." रुबीना ने अपनी बात पूरी भी नही की थी कि प्रतिक ने संकेत के हाथ से फोन छीन सा लिया," क..क..कैसी है वो.. मतलब दिखने में..?"

"कौन हो तुम?" आवाज़ बदली देख रुबीना ने पूछा...

"मैं.. प्रतिक!" प्रतिक का कलेजा उछल रहा था.. बोलते हुए...

"क्यू? रिश्ता आया है क्या उसका.. तुम्हारे लिए?" रुबीना ने सीरीयस होकर पूछा...

"नही.. वो.. पर..!" प्रतिक की समझ में नही आ रहा था कि वो क्या बोले...

"नही? तो ऐसा करो उसका ख़याल भी अपने दिमाग़ से निकाल दो.. वो ऐसी नही है.. बिल्कुल अलग टाइप की है.. सारी लड़कियों से अलग.. तुम समझ रहे हो ना... वो कभी कभार ही घर से निकलती है.. सीधी कॉलेज जाती है.. सीधी आती है... लड़कों की तरफ देखती भी नही.. और ना ही कभी उन्हे अपने पास भटकने देती... वहाँ कोशिश करोगे तो अपना टाइम ही बर्बाद करोगे.. समझ गये..?" रुबीना ने अपनी तरफ से कोई कसर नही छोड़ी.. प्रतिक को समझने में...

"हम्मम.. पर दिखती कैसी है? ये तो बता दो..?" प्रतिक का मन अब भी ना माना...

"लड़कियाँ लड़कों के सामने दूसरी लड़कियों की तारीफ़ नही किया करती.. खास तौर से जब वो उससे उपर हो.. हे हे हे.. ऑल दा बेस्ट! संकेत को फोन देना..." रुबीना ने कहा..

प्रतिक ने फोन संकेत को पकड़ाया और सोफे पर जाकर बैठ गया... संकेत ने फोन लेते ही कान से लगा लिया," हां...!"

"क्या मामला है? मेरी तो कुछ समझ में नही आया..." रुबीना ने संकेत से कहा...

"तुम इस बात को छोड़ो.. तुम्हे मेरा एक काम करना होगा..." संकेत ने रुबीना से कहा..

"क्या?" रुबीना ने पूछा...

"तनवी को बताना है कि उससे कोई मिलने आया है.. और हो सके तो उसको बुलाकर लाना है..." संकेत ने कहा....

"नही यार.. मैं बता तो रही हूँ.. बुलाकर लाना तो दूर.. अगर उसके सामने इस तरह की बात भी कर दी तो बात घर तक पहुँच जाएगी..... मैं कुछ नही कर सकती... सॉरी..!" रुबीना ने

मायूस सा होकर कहा...

"सॉरी का क्या मैं आचार डालूँगा अब!" संकेत ने गुस्सा होते हुए फोन काट दिया.....

ओये देखो ओये.. मेरे यार का चेहरा कितने दीनो बाद फिर से खिला है... अब तो तनवी भाभी को यहाँ से लेकर ही जाएँगे.. टीले पर.." प्रतिक के चेहरे पर खुशी देखकर नशे ने धीरज का सुरूर और बढ़ा दिया...

"पर यार, रुबीना ने तो साफ मना कर दिया.. हम उस तक पहुँचेंगे कैसे? आइ मीन.. बात कैसे करेंगे.. वैसे भी रुबीना बता रही थी कि वो तो निहायत ही शरीफ लड़की है.. कोई ना कोई तो लिंक ढूँढना ही पड़ेगा...!" संकेत ने अपने दिमाग़ पर ज़ोर देते हुए कहा...," चलो छोड़ो.. अब आराम से सो जाओ.. कल सुबह देखेंगे..!"

"संकेत भाई.. एक बार उसका घर पूछ लेते तो.. अभी जाकर देख आते...!" प्रतिक उतावला सा हो गया...

"कमाल करता है यार.. रात के ९:०० बजे.. और वो भी ऐसी लड़की जो बेवजह बाहर निकलती ही नही.. तुझे घर के बाहर मिलेगी.. तुझे शकल दिखाने के लिए..?" संकेत ने अपनी बात ज़ोर देकर कही....

"नही वो... बस ऐसे ही.. बाहर से यूँही देख आते..." प्रतिक ने अपना सिर खुजाते हुए सौरभ और संकेत को देखा....

"चलो भाई.. गाड़ी बाहर निकालो.. भाभी जी का घर देख कर आएँगे... अभी के अभी.." नशे में झूमते हुए धीरज खड़ा हो गया...

सौरभ ने भी कंधे उचका दिए तो संकेत खड़ा हो गया," चलो फिर.. बाहर की हवा खाकर आते हैं...

गाड़ी में चलते हुए संकेत ने रुबीना को फोन किया...," रुबीना!"

"अब कैसे आ गयी मेरी याद जानू? दोस्त गये क्या?" रुबीना ने अंगड़ाई लेते हुए सीधे लेट कर किताब अपनी छाती पर रखी और मस्ती सी करने लगी.. शमीना पास ही बैठी थी...

"मुझे थोड़ी जल्दी है.. वो तनवी के घर की लोकेशन बताना..?" संकेत सीधे मतलब की बात पर आ गया...

"यहाँ आ रहे हो क्या?" रुबीना खुशी से उछल पड़ी...

"हम्मम.. बताओ भी.."

"मुझे भी ले चलना अपने साथ..." रुबीना की जवानी अंगड़ाई ले उठी...

"पागल तो नही हो.. कैसे ले जा सकता हूँ मैं?" संकेत खिज सा उठा...

" उस दिन भी तो लेकर गये थे रात को.. शमीना यहाँ संभाल लेगी.. मुझे सवेरा होने से पहले छोड़ जाना...लगता है तुम्हारा अब मुझसे मंन भर गया है.." रुबीना का चेहरा उतर गया...

"यार, समझने की कोशिश करो.. मेरे दोस्त आए हुए हैं.. उन्हे छोड़ कर... आज सब्र कर लो.. एक दो दिन में वादा रहा.. अब तुम मुझे जल्दी से तनवी का घर बता दो.. हम गवरमेंट. कॉलेज के पास पहुँच गये..." संकेत ने आख़िरकार उसको वादा कर ही दिया...

"हमारा घर याद है ना?"

"हां...!"

"उसी गली में जब तुम हमारे घर की तरफ आओगे तो जो चौंक दूसरे नंबर. पर है.. उस चौंक के उपर ही उनका घर है.. बड़ा सा.. डार्क ग्रे कलर का पैंट है.. पर अभी वहाँ जाकर करोगे क्या?" रुबीना ने घर बताने के बाद सवाल किया...

"ओक, बाइ शुक्रिया" संकेत ने कहा और फोन काट दिया....

चौंक पर जाते ही संकेत को रुबीना के बताए अनुसार घर मिल गया.. दो गलियों से लगते हुए खूबसूरत २ मंज़िला घर के दोनो ओर गेट थे..," ले भाई प्रतिक.. मिल गया तनवी का घर.. अब बोल क्या करना है?" संकेत ने गाड़ी चौंक से पहले ही रोक दी...

तनवी का घर मिलने की बात सुनते ही प्रतिक सिहर सा गया.. उसकी धड़कने बढ़ने लगी.. उसको मन ही मन आभास हुआ जैसे वो पुराने टीले पर खड़ा है और तनवी दूर से उसको पुकार रही है.. प्रतिक ने घर देखते ही आँखें बंद कर ली.. पर तनवी की उसके दिमाग़ में जो तस्वीर उभरी, वह गीता की थी..," वापस चलो..!" प्रतिक के माथे पर पसीना छलक आया...

"अब क्या हुआ?" सौरभ ने पूछा...

"कुछ नही.. बस घर देखना था.. देख लिया.. चलो अब!" प्रतिक ने कहा और संकेत ने चौंक से गाड़ी घुमा दी....

# १४

" कहाँ है तू यार? कल सुबह से तेरा फोन ट्राइ कर रहा हूँ.. फोन ऑफ क्यू कर रखा है?" विपिन के पास जैसे ही सुबह उठते ही प्रतिक ने धीरज के नंबर. से फोन किया तो वह खुशी से झूम उठा...

"वो.. फोन खो गया है भाई.. मैने आपको बताया तो था कि मैं धीरज के साथ बतला जा रहा हूँ.. वहीं हूँ मैं अभी..." प्रतिक ने जवाब दिया...

"हां.. बताया था.. पर धीरज का नंबर. मेरे पास कहाँ है.. घर भी गया था.. वहाँ से भी नही मिला.. तू पहले भी तो फोन कर सकता था.. पता है कितना परेशान हूँ मैं तेरे लिए.." विपिन ने ढीली आवाज़ में प्रतिक के लिए फ़िकरमंद होने का नाटक किया...

"पता है भाई! पर यहाँ आने के बाद समय ही नही मिला.. अभी सुबह उठते ही सबसे पहले आपको फोन किया है... पता है..." प्रतिक चहकति हुई आवाज़ में बोलने लगा था कि विपिन ने उसको टोक दिया..," सुन.. वो मैने गीता से सब उगलवा लिया है.. दरअसल तेरे सपने के पिछे और कोई नही.. वही है.. मैं उस तांत्रिक से भी मिल आया हूँ, जिसने उसकी मदद की.... तू अपना वहाँ छोड़ और वापस आजा..!"

विपिन की बात ने प्रतिक को झटका सा दिया.. वह बौखरंभा हुआ सा बोला," पर... ये कैसे हो सकता है...?"

विपिन ने एक बार फिर उसको बीच में ही रोक दिया," हो सकता है नही यार.. यही हुआ है.. तू वापस आएगा तो मैं तुझे सब समझा दूँगा... पर यार उसकी नियत ग़लत नही है.. वो तुझसे बे-इंतहा प्यार करती है.. सच में... तुझ पर जान देती है वो.. कल जब बोल रही तो बिलख बिलख कर रो रही थी.. तुम्हारे लिए... अब तू जल्दी वापस आकर उससे मिल ले.. फिर मैं घर वालों से बात कर लूँगा.. आ रहा है ना.."

"पर भाई.. मुझे यहाँ तनवी मिल गयी है.. और जैसा मुझे सपना आया था.. ठीक उसी जगह.. !" प्रतिक की इस बात ने विपिन के प्लान पर जैसे घाड़ों पानी डाल दिया..," ये कैसे हो सकता है?" वह आश्चर्य चकित तो हुआ ही था....

"हां.. भाई.. बिल्कुल उसी जगह उसका घर है.. एक बात और बताऊं.. मुझे सपने में भी अक्सर यही घर दिखाई देता था.. एक दम डिटो.. मुझे तो पसीना आ गया था वो घर देखा जब कल...!" प्रतिक ने अपनी बात पूरी की...

"दिखने में कैसी है?" विपिन मन मसोस कर बोला...

"मैने देखा नही है भाई.. पर सब पता कर लिया है.. उसका नाम तनवी ही है.. पर सब यहाँ उसको अक्षरा कहते हैं.. बहुत शरीफ लड़की है.. कभी घर से बाहर नही निकलती बेवजह.. और कहते हैं कि बहुत सुंदर भी है..." कहते हुए प्रतिक की आँखें चमकने लगी....

"देख.. तू मुझे भाई कहता है.. इसीलिए बड़े भाई के नाते समझा रहा हूँ.. अभी के अभी वापस आ जा.. वरना किसी बड़े पंगे में फँस जाएगा... गीता कम सुंदर है यार? और मैं दावा कर सकता हूँ कि तेरी तनवी उससे सुंदर नही हो सकती.. तुझे इतना प्यार करती है कि क्या बताऊं... और उसकी शराफ़त तो तू देख ही चुका है.. उसका कुसूर सिर्फ़ इतना ही है कि वो तुझसे पागलों की तरह प्यार करती है.. बस कहने से शर्मा रही थी....." विपिन अपनी बात के पक्ष में तर्क देता ही जा रहा था कि प्रतिक ने उसको टोक दिया...," पर भाई.. उसने तो मुझे पहले कभी देखा भी नही था.. फिर वो मुझसे प्यार कब करने लगी.. और मान लो मुझे कहीं देखा भी होगा तो बिना जाने मेरे लिए तांत्रिक वांतरिक के पास क्यू जाएगी.. बता..!"

विपिन ने इन्न बातों का कोई जवाब तैयार नही किया था.. उसके मन में तो यही था की प्रतिक को कोई तनवी मिलने वाली नही है.. और जैसे ही उसको वह बताएगा कि गीता ही वो सब कर रही थी.. वह उस पर विश्वास करके दौड़ा चला आएगा वापस..

"तू आएगा तभी तो बताऊंगा ना.. यहाँ फोन पर कैसे समझाऊं.. बहुत लंबा मामला है.. चल रहा है ना आज ही...?"

प्रतिक की समझ में कुछ नही आ रहा था," मैं.. मैं थोड़ी देर बाद फोन करता हूँ भाई.."

"जैसी तेरी मर्ज़ी.. पर मैं इंतजार करूँगा तेरे फोन का..." विपिन ने फोन काटा और गुस्से और हताशा में बेड पर पटक दिया..," उसको आज फिर गीता से मिलने जाना था...

"क्या हुआ भाई!" प्रतिक के चेहरे पर असमंजस के भाव देखकर धीरज ने उससे पूछा...

"क्या बताऊं यार.. कुछ समझ में ही नही आ रहा" और प्रतिक ने उसको विपिन के साथ हुई पूरी बात का सर सुना दिया....

"एक बात बोलूं?" धीरज संजीदा होकर बोला....

"हां.. बोलो ना!" प्रतिक उसकी और देखने लगा...

"देख.. दिल से बड़ा कुछ नही होता.. तू अपने दिल की बात सुन.. और खुद डिसाइड कर.. विपिन भाई की बात मान भी लें तो फिर भी एक सवाल का जवाब तो नही मिरंभा ना!" धीरज ने कहा...

"वो क्या?" प्रतिक ने गौर से उसकी तरफ देखा...

"वो ये कि अगर मान भी लें कि गीता तुम्हारे प्यार में ये सब टोटके करवा रही थी.. तो वो अपना नाम तनवी क्यू बताती.. गीता ना बताती.. और बतला का अड्रेस क्यू देती.. बोल.. सोचने की बात है कि नही.. और यहीं बतला में हमें तनवी मिल भी गयी है.. और उसका घर.. सबसे बड़ी बात तो उसका घर मिलना है.. जिसके बारे में तूने कल आकर बताया था कि तुझे सपने में वही घर दिखाई देता था.. इसीलिए तुझे डर कर पसीना आ गया..." धीरज ने बात पूरी करके कहा," अब बोल.. क्या कहता है तेरा दिल...?"

"अपना फोन ऑफ कर दे!" कहकर प्रतिक मुस्कुराने लगा...," तुझमें इतनी अकल आई कहाँ से यार.. मैने तो ये सब सोचा ही नही.. फोन ऑफ कर दे.. अभी हमें वहीं चलना है.. नहा धो ले...!"

"कहाँ चलना है?" धीरज ने पूछा...

"वहीं यार.. मेरी ससुराल.. तेरी भाभी को देखकर आएँगे आज.. चाहे पूरा दिन वहीं बीत जाए..." प्रतिक हँसने लगा.. उसके चेहरे की खोई हुई रौनक लौट आई थी...

प्रतिक और धीरज चौंक पर खड़े थे.. संकेत और सौरभ को उन्होने जानबूझ कर गली के कोने से ही वाहा भेज दिया.. खिड़कियों के अंदर लहरा रहे पर्दे, कॉपर कलर का गेट और दीवारों पर पुता रंग.. सब कुछ प्रतिक का जाना पहचाना सा था.. इसीलिए थोड़ा विचलित था...

"यार किसी ना किसी को तो बाहर आना चाहिए था... पता नही अंदर कोई है भी या नही...!" प्रतिक ने हताश होते हुए कहा...

"आ जाएगा यार.. यहाँ बैठकर आराम से मूँगफली ख़ाता रह.. कभी ना कभी तो भाभी जी दिख ही जाएँगी...." धीरज ने कहा... एक मूँगफली की रेहदी के पास सामने वाले घर के चबूतरे पर दोनो बैठे थे...

अचानक घर के अंदर से आई आवाज़ ने दोनो को उछलने पर मजबूर कर दिया...

"तनवी बेटी.. मैं मार्केट जा रही हूँ.. आकर दरवाजा बंद कर ले...!"

"आई मम्मी... जाओ आप.. मैं कर लूँगी.. जल्दी आना.. मुझे ट्यूशन जाना है.." बाहर बैठकर आवाज़ पर कान लगाए बैठे प्रतिक और धीरज को अंदाज़ा लगाने में देर ना हुई कि बाद में आई निहायत ही सुरीली आवाज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ तनवी की ही थी..," यार.. आवाज़ तो बड़ी प्यारी है.. भगवान करे.. शकल भी आवाज़ के मुताबिक ही हो...!" धीरज ने दुआ की...

"पता है धीरज.. जब हम बतला के लिए चले थे तो मैं सिर्फ़ यही सोच रहा था कि एक बार सिर्फ़ देख कर आना है.. कि मेरे सपने में कुछ सच्चाई भी है या नही.. सीरियस्ली तनवी से मुझे कोई लेना देना नही था... पर यार.. यहाँ की आबो-हवा, ये घर.. ये चौंक.. और ये आवाज़.. सब कुछ अपना सा लग रहा है यार.. ऐसा लगता ही नही कि ये सब मेरे लिए नया है... ऐसा लग रहा है जैसे.. यहीं पर रहने लग जाऊ.. ये आवाज़ सुनता रहूं.. सच यार.. मुझे यहाँ बहुत अपनापन महसूस हो रहा है.. कोई तो बात होगी ना..? वो भी मेरा यूँही इंतजार कर रही होगी या नही? ... अगर उसने मेरी बात सुनने से साफ मना कर दिया तो...!" प्रतिक आँखों ही आँखों में कहीं और ही खोया हुआ था...

"अभी से इतनी लंबी मत सोच यार.. देख.. आंटी जी आ रही हैं... ये ही तेरी सासू मा है.. गौर से देख ले.." कहते ही धीरज खड़ा हो गया और सिर झुका कर दोनो हाथ जोड़ लिए," नमस्ते आंटी जी!" प्रतिक घबराकर पलटी मार गया

"नमस्ते बेटा जी!" कहकर माताजी रुक गयी..," कुछ काम है बेटा?"

"नही.. बस आंटीजी.. यूँ ही.. आप बड़े हैं.. बुजुर्ग हैं हमारे.. बस इसीलिए..." धीरज अभी भी हाथ जोड़े खड़ा था...

"भगवान तुम्हारा भला करे बेटा.. जुग जुग जियो!" कहकर माताजी मुस्कुराइ और आगे बढ़ गयी...

"ओये.. मरवाएगा क्या साले..? ऐसे क्यू टोका?" प्रतिक ने उनके जाते ही धीरज को रंभाड़ लगाई...

"हे हे हे.. भाई.. मैं तो अभी से जान पहचान कर रहा हूँ.. शादी के बाद भाभी जी को लेने तुम्हारे साथ मुझे ही तो आना है.. और फिर देख.. आशीर्वाद भी मिल गया..!" धीरज को प्रतिक की रंभाड़ से कोई फ़र्क़ नही पड़ा....

"तू भी घनचक्कर है पूरा.. अगर आज तनवी नही दिखाई दी तो? इन्होने अब तेरा चेहरा भी याद कर लिया होगा.. आज के बाद मेरे साथ यहाँ मत आना....!" प्रतिक ने गुस्सा होते हुए कहा....

"छोड़ ना यार.. आज के बाद यहाँ आना ही नही पड़ेगा तुझे.. बाहर ही मिलना भाभी जी से.. एक मिनिट.. मैं अभी आया...." धीरज ने कहा और दरवाजे की और बढ़ गया...

"ओये धीरज.. मरवाएगा क्या? कहाँ जा रहा है..? वापस आ..!" प्रतिक हड़बड़कर खड़ा हो गया...

धीरज ने वापस मुड़कर बत्तीसी दिखाई और प्रतिक की परवाह ना करते हुए गेट पर पहुँच गया और बेल बजा दी....

तभी उसको गेट की झिर्रियों के बीच से लड़की के आ रहे होने का अहसास हुआ.. मन ही मन उसने भगवान को याद किया और गेट खुलने का इंतजार करने लगा....

"हां जी.. तूमम्म्म?" हां जी सिर्फ़ लड़की ने बोला था.. पर 'तूमम्म्म' दोनो के मुँह से एक साथ निकला... धीरज दो कदम पिछे हट गया.. दरवाजे पर निहारिका खड़ी थी.. वही पतली और लंबी सुंदर सी लड़की जिसके साथ धीरज की बस में और फिर कार में मुठभेड़ हुई थी.....

"आ.. आ.. हांजी.. पर आपका नाम तो निहारिका है ना?" धीरज बौखलते हुए बोला...

"हां.. तो? यहाँ क्या लेने आए हो..? तुम्हे कैसे मिला ये घर..." निहारिका ने तुनक्ते हुए अपने दोनो हाथ कुल्हों पर जमा लिए....

"ववो.. हम तो.. ऐसे ही आ गये थे जी.. भटकते हुए.. माफ़ करना.. पर ववो.. कहाँ हैं?" धीरज ने गिरते पड़ते अपनी बात पूरी की....

"वो कौन? तुम्हे चाहिए क्या?" निहारिका की आवाज़ तेज होकर अब प्रतिक के भी कानो में पड़ने लगी थी....

निहारिका के गुस्से से बोलते रहने के कारण धीरज अभी तक संभाल नही पाया था..," ववो.. बभ.. भाभी जी!"

"कौन भाभी जी.. ? तुम्हारा दिमाग़ खराब है क्या? यहाँ कोई भाभी जी नही रहती... तुम आख़िर आए क्या लेने हो?" जैसे ही निहारिका ने उसको खरी खरी सुनाते हुए अपना हाथ आगे किया.. धीरज को गजब का बहाना मिल गया," हमारा फोन! ओये प्रतिक.. आजा.. मिल गया तेरा फोन.. मेरा शक सही था.. इन्होने ही चुराया है.. शकल से ही पता लग रहा था... कि इन्ही का काम है?" धीरज अब उसको हावी होने का मौका नही देना चाहता था..

"फोन?" प्रतिक की समझ में अभी तक नही आया था कि वो किसलिए गया था और अब क्या बक रहा है.. पर धीरज के बुलाने पर वह मन ही मन उसको गलियाँ देता हुआ गेट पर ही पहुँच गया," क्या हुआ?"

"अरे.. तेरा फोन.. ये देख इसके हाथ में..!" धीरज निहारिका के हाथ में प्रतिक के जैसा फोन देखा तो उसके सिर पर चढ़ने को उतारू हो गया...

अब हड़बड़ाने की बारी निहारिका की थी.. इस तरह से खुद पर गली में इल्ज़ाम लगते देख वह हड़बड़ा गयी..," हमें तो ये.. बस में मिला था...!" निहारिका की नज़रें झुक गयी...

"अच्छा.. बस में मिला था.. बस में तो मैं भी बैठा था... मुझे क्यू नही उठा लाई तुम.. बोलो.. कह देती मिल गया था बस में...!" धीरज लगातार उसके सिर पर चढ़ता जा रहा था...

"चुप भी कर यार अब.. इतना बोलने की ज़रूरत क्या है?" प्रतिक ने उसको शांत करने की कोशिश की....

"क्यू ना बोलूं मैं? घर आए मेहमान को पानी पूछना तो दूर.. इज़्ज़त उतारने पर उतर आई ये...! इसको तो ये भी याद नही रहा कि कैसे मैने इनको लिफ्ट दिलवाई थी...." धीरज की आवाज़ और ऊँची हो गयी....

"आ..आप प्लीज़ अंदर आ जाइए.. यहाँ तमाशा क्यू कर रहे हैं..?" निहारिका ने पूरी नज़ाकत के साथ कहा....

"नही.. हमें नही आना... " धीरज बोल ही रहा था कि प्रतिक ने उसको पिछे से धक्का मारा," चल रहा हूँ ना यार.. धक्का क्यू मार रहा है.." और फिर निहारिका को घूरते हुए इस अंदाज में उससेभी आगे बढ़ गया जैसे वो उनका नही, उसका घर हो...

"आ जाइए.. आप अंदर बैठिए.. मैं अभी आती हूँ..!" कहकर निहारिका उपर भाग गयी...

"तू इतना चिल्ला क्यू रहा था बे? मेरा पत्ता साफ करवाना है क्या?" प्रतिक ने अंदर जाकर सोफे पर बैठते ही धीरज को कोसा....

"अच्छा.. तुझे मेरा चिल्लाना सुन गया.. उसका नही सुना किस तरह मेरी इज़्ज़त तार तार कर रही थी.. फिर मुझे उसके हाथ में तेरा फोन दिख गया.. मैं इतना सुनहरा मौका कैसे जाने देता.. हे हे हे!" धीरज ने हंसते हुए अपनी छाती चौड़ी कर ली...

" ठीक है यार.. पर हम यहाँ तनवी के लिए आए थे.. भूल गया क्या?" प्रतिक ने शांत होते हुए कहा....

"ओह तेरी.. मैं तो सच में ही भूल गया था.. सॉरी यार.. अरी.. हम तो घर के अंदर आ गये.. देख!" धीरज सोफे से उछल पड़ा....

"चुप.. कोई आ रहा है.." प्रतिक के कहते ही दोनो शांत हो गये....

और तनवी के कमरे में कदम रखते ही प्रतिक सुध बुध खोकर खड़ा हो गया और उसको अपलक देखने लगा.. हालाँकि वो इस परी को पहले देख चुका था.. पर अब की तो बात ही दूसरी थी... पटियाला हल्का नीला कढ़ाई वाला सूट डाले हुए वो सचमुच किसी परी से कम नही लग रही थी.. उसके अंग अंग से नज़ाकत टपक रही थी... प्रतिक का मन मयूर थिरक उठा.. हुस्न ऐसा की कुर्बान होने को दिल करे.. फिर प्रतिक तो उसको देखने से पहले ही अपना मान चुका था.. इस असीम खुशी को सहन नही कर पा रहा उसका दिल बल्लियों पर आ टंगा..

धीमे धीमे कदमों से नज़रें झुकाए हुए वो चलकर उनके पास आई और जैसे ही झुक कर उसने ट्रे टेबल पर रखी.. रेशमी बालों की एक लट उसकी आँखों के सामने लुढ़क आई...

खड़ी होकर उसने अपनी लट को कान से पिछे ले जाते हुए मधुर आवाज़ में आग्रह किया..," बैठिए ना...!"

प्रतिक तो खड़ा होकर जैसे बैठना ही भूल गया..उसको देखते हुए बोला," जी.. शुक्रिया!" पर खड़ा ही रहा...

"अरे.. बैठिए तो सही.. ठंडा लीजिए...!" तनवी ने उसको फिर टोका....

"जी.. बैठ रहा हूँ..!" तनवी के चेहरे पर बरस रहे सौंदर्या के अनुपम नूर में प्रतिक इस कदर खो गया था कि इस बार भी खड़ा ही रहा... धीरज ने उसका हाथ पकड़ कर खींच लिया.." बैठ जा यार...!"

"ओह हां..!" प्रतिक तनवी के मोह्पाश से जैसे अभी मुक्त हुआ...

"आप लीजिए हम आते हैं.." कहकर तनवी जाने लगी....

"आप ही तनवी भ.. जी हैं ना..!" धीरज के मुँह से भाभी जी निकरंभा निकरंभा रह गया..

इतना सुनते ही तनवी चौंक कर पलटी...," आपको मेरा नाम कैसे मालूम? ये नाम तो कोई लेता ही नही.. यहाँ पर.. बचपन में था मेरा ये नाम...!" तनवी ने अचरज से धीरज के मुँह की और देखा....," मेरा नाम अब अक्षरा है.. प्लीज़ दोबारा वो नाम मत लेना....

"देख लो जी.. हैं ना हम कमाल के.. हम तो आपके पिछले जन्मों की बात भी जानते हैं...!" धीरज ने मुस्कुराते हुए कहा...

तनवी ने इस बात को मज़ाक में लिया.. धीरज के मज़ाक को इज़्ज़त देने के लिए हल्का सा मुस्कुराइ और बाहर निकल गयी....

"कैसी लगी भाभी जी?" उसके जाते ही धीरज ने प्रतिक के कंधे से कंधा भिड़ाया...

"ये तो मैने कभी सपने में भी नही सोचा था यार... इतनी सुंदर लड़की मैने आज तक नही देखी..!" प्रतिक सातवें आसमान पर था....

"देखी क्यू नही? उस दिन बस में नही देखी थी क्या?" धीरज ने याद दिलाया...

"हां पर.. उस दिन मैने इस नज़र से नही देखा था यार.. बस एक पल के लिए ही नज़रें ठहरी होंगी इस पर...!" प्रतिक ने अपनी बात भी पूरी नही की थी कि निहारिका और तनवी दोनो कमरे में आ गयी," ये लीजिए आपका फोन..!"

"शुक्रिया.." फोन लेते हुए जैसे ही प्रतिक की उंगलियों ने तनवी के हाथ को स्पर्श किया.. उसके दिल के सभी तार मानो झंझणा उठे.. इतना जादू था उसके हाथों में...

तभी निहारिका भरभराती हुई बोल पड़ी," हमने चोरी नही किया था.. सीट के नीचे पड़ा था.. हमने सोचा सरदार जी का होगा.. हमने वहीं ड्राइवर को भी देने की सोची थी.. पर हमें लगा ये ठीक नही.. जिसका भी होगा वो फोन तो करेगा ही.. तभी उसको बता देंगे.. घर

आकर देखा तो इसकी बॅटरी डेड हो चुकी थी.. हमारे पास चारजर भी नही था इसका... चाहो तो आंटिजी से पूछ लेना.. हमने आते ही उनको बता दिया था...."

"ओहो.. आप तो दिल पे ले गयी.. आपको पता है ना कि मेरी मज़ाक करने की आदत है.." धीरज कहकर मुस्कुराने लगा....

"तुमसे कौन बात कर रहा है?" निहारिका ने गुस्से से कहा तो तनवी हंस पड़ी...

"ठीक है.. शुक्रिया.. हम चलते हैं.." कहते हुए प्रतिक उठ खड़ा हुआ...

बाहर निकलने से पहले प्रतिक ने मुड़कर देखा.. पर तनवी तो उसको छोड़ने बाहर तक भी नही आई.. वह दूसरी ओर मुँह किए सीढ़ियाँ चढ़ रही थी.....

"अब क्या इरादा है बॉस?" सारी कहानी बड़ी दिलचस्पी से सुनने के बाद संकेत ने प्रतिक से पूछा....

"इरादा क्या होना है.. उसके सामने बार बार जाना है.. उसके दिल में उतर कर अपना बनाना है और साथ चलने के लिए मनाना है.. और क्या?" प्रतिक ने चहकते हुए जवाब दिया....

"मतलब आज से तू पूरा लड़कीबाज हो जाएगा.. हे हे हे!" धीरज ने जुमला ठोंका...

"लड़कीबाज नही.. नीरुबाज बोल.. मैने आज तक किसी लड़की के बारे में ऐसा वैसा सोचा भी है.. बता?" प्रतिक ने जाकर उसकी गर्दन पकड़ ली...

"छोड़ सा... जान लेगा क्या?" धीरज अपने आपको छुड़ाते हुए बोला," तो कौनसा तीस्मारखा बन गया तू.. तेरे उपर मरने वाली लड़कियाँ तुझे 'नल्ला' समझने लगी होंगी अब तक हाँ.. हा हा हा!" धीरज ताली बजाकर हँसने लगा...

"मेरी शराफ़त को कोई नल्लगिरी समझे तो समझे.. मैं तो शुरू से ही मानता आया हूँ कि अगर आदमी अपनी बीवी से वफ़ा की उम्मीद करता है तो उसको भी तो उसके लिए

वफ़ादार होना चाहिए.. इंतजार करना चाहिए...!" प्रतिक ने तर्क दिया...और चार्जिंग पर लगाया हुआ अपना फोन ऑन कर लिया....

"एक दम सॉलिड बात बोली प्रतिक भाई.. पर लड़कियाँ कहाँ कुँवारी रहती हैं आज कल.. शादी से पहले ही भोंपु बज जाता है बहुतों का.. तू किस्मत वाला है जो तुझे तनवी मिल गयी..!" संकेत ने भी बहस में ताल ठोनकी...

"अभी कहाँ मिल गयी यार.. अभी तो सिर्फ़ देखा है.. कहानी लंबी चलेगी लगता है!", सौरभ ने पटाक्षेप किया...

"हम्मम.. डोंटवरी प्रतिक.. जब तक तुम्हे मंज़िल नही मिल जाती.. तुम यहीं रहोगे.. मेहमान बनकर नही.. अपना घर समझकर.. मैं ज़रा बाहर जाकर आता हूँ.. एंजाय करो..!" कहकर संकेत खड़ा हो गया...

"और मैं? मैं कहाँ रहूँगा...!" धीरज ने मज़ाक किया...

"तुम रुबीना की बाहों में रहो यार.. मेरा उससेमन भर गया है.. बहुत पकाती है साली.. उसको संभालो तुम.. आज भी आने को बोल रही है.. बुला लूँ?"

"बुला लो यार.. नेक काम में देरी कैसी? हे हे हे" धीरज ने ताल से ताल ठोनकी...

संकेत बाहर निकला ही था कि प्रतिक का फोन बज उठा.. विपिन का नंबर. देख प्रतिक ने फोन उठा लिया," हां.. भाई.. वो तनवी मिल गयी..!"

"व्हाट? क्या बकवास कर रहे हो यार..? ये कैसे हो सकता है..?" विपिन की फटी हुई सी आवाज़ फोन पर उभरी....

"हाँ भाई सच में... मैने उसको देख भी लिया है.. जैसा उसने मुझे सपने में बताया था.. बिल्कुल उसी जगह पर है उसका घर...!" प्रतिक रोमांचित सा हो उठा...

"मुझे यकीन हो गया है कि इस सपने के चक्कर में अपनी जिंदगी बर्बाद कर लोगे... मैने बताया तो था की सब कुछ गीता का किया धरा था.. और तनवी नाम की हज़ार लड़कियाँ

दिखा सकता हूँ में.. क्या नाम के चक्कर में तुम किसी भी तनवी को अपना सब कुछ सौंप दोगे....?" विपिन का इशारा उसकी जायदाद की ओर था...

"पर भाई वो बहुत सुंदर है.. इतनी प्यारी है कि.. बस.. और उसका स्वभाव तो और भी खास है.. और..." प्रतिक कुछ बोल ही रहा था कि विपिन ने बीच में ही टोक दिया," मैं वहीं आ रहा हूँ.. गीता भी मेरे साथ ही आ रही है..!" विपिन ने कहा....

"क्या? पर यहाँ कैसे? ... और वो गीता कैसे आ गयी...? तुम लोग रहोगे कहाँ?" एक ही साँस में आश्चर्य चकित प्रतिक ने सवालों की झड़ी लगा दी....

"जहाँ तू रहेगा वहाँ हम नही रह सकते क्या? बाकी बातें आने के बाद बताऊंगा.. हम कल सुबह निकलेंगे.. घर से कुछ लेकर आना है ना..?" विपिन ने जल्दी में कहा....

"हां भाई.. मेरा पर्स लेते आना.. जल्दी में मैं घर ही भूल आया.. मेरे एटीएम वग़ैरह सभी कुछ उसमें है.. और हां.. ५-७ ड्रेस लेते आना.. पर गीता कैसे आ सकती है भाई.." प्रतिक की समझ में कुछ नही आ रहा था...

"बोला ना यार.. सबकुछ आकर बताऊंगा..!" विपिन ने कहते ही फोन काट दिया....

गीता उसके साथ ही बैठी थी..."मुझे बहुत डर लग रहा है.. बापू को अगर ये पता चल गया कि कॉलेज से कोई टूर नही जा रहा तो?" गीता का दिल बैठा हुआ था.. विपिन ने साथ चलने की बात जब से कही थी.. वह अंदर ही अंदर घुट रही थी..

"क्यू बेवजह अपना दिमाग़ खराब कर रही है..? इसका तुझे बतला में बहुत यूज़ करना है.. ले.. तेरा गाँव आ गया.. भूलना मत.. कल सुबह ८:३० पर.. यहीं.." कहते हुए विपिन ने उसकी जांघों पर चिकौती काट ली... गीता जैसे रो ही पड़ी थी.. पर आँसुओं को उसने सिसकियाँ ना बनने दिया... चुपचाप गाड़ी से उतरी और अपने घर की और चल पड़ी.. भारी भारी कदमों से...

# १५

संकेत शहर के बीचों बीच धीरे धीरे गाड़ी चलते हुए आगे बढ़ता जा रहा था.. उसके मन में रह रहकर प्रतिक के अजीब से सपने को लेकर ख़याल आ रहे थे.. और सपना भी ऐसा जो सच हो गया... पूर्वज़नम होता है.. ये उसने बहुतों से सुना था.. पर इसको साक्षात सच होता हुआ वो पहली बार ही देख रहा था.. उसको प्रतिक की किस्मत पर नाज़ था और इसीलिए शायद उससे लगाव सा भी हो गया था.. यादों के भंवर में उलझे संकेत को अचानक अपने पहले प्यार की याद आ गयी और बरबस ही उसकी आँखों से आँसू छलक उठे.. कितनी प्यारी थी वो! एक दम फूल सी नाज़ुक.. दोनो को एक दूसरे से प्यार हो गया था.. पर इकरार कभी नही कर पाए.. वो उसको देख कर रह जाता.. और वो उसको देख कर रह जाती.. घर की मुंडेर पर खड़े होकर घंटों एक दूसरे को निहारते रहने का सिलसिला एकदम बंद हो गया.. उस दिन संकेत रात होने तक वहीं खड़ा रहा था.. अगले दिन जब उसको पता चला क़ि 'वो' अपने मा बाप के साथ शहर छोड़कर चली गयी है तो संकेत तड़प उठा.. २ दिन तक खाना भी नही खा पाया.. कम से कम बता तो देती... पर हो भी क्या सकता था.. वो उसको रोक थोड़े ही लेता.. आख़िर उम्र ही क्या थी उनकी उस वक़्त.. पर प्यार उम्र देखकर थोड़े ही होता है.. 'वो' तो बस हो जाता है.. कहीं भी.. किसी से भी.. अचानक!

अचानक संकेत ने गाड़ी साइड में रोकी और एक फोटोकॉपी निकाल कर पढ़ने लगा...

"प्यारे, संकेत!

जिस दिन तुमने मुझे पहली बार छत पर खड़े देखा था.. शायद पहली बार देखा था... पर मैने पहली बार नही.. मैं तो तुम्हे कितने ही दीनो से गली में क्रिकेट खेलते हुए देखती आ रही थी.. अपने घर की खिड़की से तुम्हे छत पर खड़े हो पतंग उड़ाते हुए देखती आ रही थी... पतंग उड़ाते हुए तुम जब भी पिछे हट'ते हुए बिल्कुल मुंडेर के पास आ जाते थे तो मेरा नन्हा सा दिल धड़क उठता था.. कहीं तुम गिर ना जाओ.. मेरा तुम्हे पुकार कर वहाँ से हट जाने के लिए कहने को मन करता.. पर कभी आवाज़ ही नही निकल पाई.. तुम्हारा नाम लेना शायद मेरे वश में था ही नही.. और शायद मेरी किस्मत में भी नही...

तुम्हे याद है एक बार अंकल ने तुम्हे तुम्हारी छत पर आकर चांटा लगाया था.. (पता नही क्यू) तुम तो सिर्फ़ रोए थे.. पर मेरी चीख निकल गयी.. मेरी मम्मी दौड़ी हुई आई थी छत पर.. क्या बताती उनको?

साल पूरा होने को है.. तुम रोज़ छत पर आते हो.. पर हमेशा मुझसे लेट. हमेशा मैं ही तुम्हारा इंतजार करती हुई मिलती थी.. है ना? कई बार तो तुम आधा आधा घंटा इंतजार करवा कर आते.. मेरा तुमसे रूठने को मन करता.. पर फिर मनाता कौन? तुम्हे देखकर ही इतना सुकून मिरंभा था कि हर रोज़ नीचे जाते ही अगले दिन की शाम का इंतजार करना मुश्किल हो जाता था.. तुमसे मिलने को इतनी तड़प रही थी कि सोते हुए तकिया सिर से निकाल कर सीने पर चिपका लेती थी.. पर तुम्हारा सीना कभी उस 'तकिये' की जगह नही ले पाया...

कितनी ही बार तुम्हारे आगे से गुज़री.. पर तुमने रोका ही नही.. कितनी ही बार जानबूझ कर तुम्हारी बॅटिंग या बॉलिंग के टाइम विकेट्स के बीच जाकर खड़ी हुई.. पर कभी तुमने टोका ही नही...

तुम्हे याद है जब एक दिन हम दोनो एक ही कलर की शर्ट पहन कर छत पर आ गये थे तो दोनो कितना हँसे थे..? कलर याद होगा ना? उसके बाद तुम्हारी सभी शर्ट्स के कलर मैने याद कर लिए थे.. रोज़ सोचकर पहनती और उपर आती की तुमने शायद यही कलर डाल रखा हो.. पर उसके बाद कभी कलर नही मिले.. एक दिन तुम्हारे उपर आते ही मैं भाग कर नीचे गयी थी.. पता है क्यू? तुम्हारी शर्ट के कलर का सूट डालने.. हे हे..

तुम आज शाम आए ही नही छत पर.. आज तो तुम्हारा आना सब से ज़्यादा ज़रूरी था.. आज मैं तुमसे कुछ बोलना चाहती थी.. पहली बार.. और शायद आख़िरी बार भी.. पर मेरी किस्मत में शायद था ही नही.. एक बार तुमसे बोलना.. तुमहरा हाथ पकड़ कर रोना.. और बताना कि आँखों ही आँखों में तुम मेरे क्या बन गये हो....

मैं कल जा रही हूँ.. हमेशा के लिए.. पापा का ट्रान्स्फर हो गया है.. अब छत पर नज़र नही आऊँगी कभी.. पर तुम्हे भूल भी नही पाऊंगी.. तुम भी नही भूलोगे ना?

तुम सुबह देर से उठते हो.. इसीलिए लेटर तुम्हारे दोस्त श्रीकांत को देकर जाऊंगी.. उम्मीद है वो तुम्हे दे देगा..

कभी बोल नही पाई तुमसे.. बोलने का बड़ा मन करता था.. कभी मिल नही पाई.. मिलने का बड़ा मन करता था.. कभी कह नही पाई.. कहने का बड़ा मन करता था.. आइ लव यू!

मैं बिल्कुल भी नही रो रही.. तुम भी रोना मत प्लीज़!

तुम्हारी,

(नाम मिट गया था.. शायद आँसुओं ने मिटा दिया,)

संकेत कागज को वापस पर्स में रखते हुए मुस्कुरा उठा.. पर उसकी आँखें तो छलक आई थी.. मुस्कुराहट शायद बेबस आँखों को दिलासा देने के लिए ही आई होगी...

आँखों से आँसू पोंचछते हुए जैसे ही वो गवरमेंट. कॉलेज के सामने से गुजरा, उसकी नज़र श्रीकांत पर पड़ गयी," ओये श्रीकांत!" संकेत ने चिल्लाकर उसको पुकारा..

श्रीकांत भागा हुआ उसके पास आया और खिड़की खोलकर गाड़ी में बैठ गया," क्या चक्कर है यार.. आजकल अंदर ही अंदर रहता है?"

"तू बता पहले? यहाँ लड़कियों के कॉलेज के गेट पर क्या काम है तेरा.. नौकरी माँगने आया है क्या?" संकेत ने मज़ाक किया...

"अरे नौकरी करें हमारे दुश्मन.. मैं तो लाइन मार रहा हूँ... हे हे!"

"किस पर.. कोई दे रही है क्या..... लाइन?" संकेत हंसा...

"दे देगी यार.. मैं तो अपना कर्म कर रहा हूँ.. देना दिलवाना तो प्रभु के हाथ में है.. क्या पता किस घड़ी किसी नजनीन को तरस आ जाए.. मेरी भरी जवानी पर... हे हे हे.. बता ना.. कहाँ जा रहा है?" श्रीकांत ने आख़िर में पूछा...

"ओह तेरी भरी जवानी.. कहीं चलकर आना है.. तेरे कर्म तो फिर भी होते रहेंगे.. चलें?" संकेत ने पूछा...

"चलो यार.. कभी तुझे मना किया है?" श्रीकांत ने बाहर निकल कर वक़ार को पुकारा," मेरी गाड़ी ले जाना भाई.." फिर बैठकर खिड़की बंद कर ली और गाड़ी चल पड़ी.....

"अरे आंटी जी.. कोई है क्या?" संकेत ने एक घर के बाहर जाकर आवाज़ लगाई...

"कौन है?" अंदर से लगभग भागती हुई एक छर्हरे बदन की लंबी सी गोरी लड़की दरवाजे तक आते हुए बोली और संकेत को देखते ही खुश हो गयी,"संकेत! आज कैसे याद आ गयी इस घर की.. आज तो बारिश होनी चाहिए!" और खिलखिलाते हुए दरवाजा खोल दिया...," आओ!"

संकेत और श्रीकांत दोनो टहलते हुए घर के अंदर जा पहुँचे..," आंटी जी कहाँ है राधा?"

"वो तो नही हैं.. शाम तक आएँगी.. कुछ काम था?" राधा ने उनको पानी देते हुए कहा...

"नही.. कुछ खास नही था.. मैं फिर आ जाऊंगा.. अच्छा!" संकेत ने पानी पीकर गिलास टेबल पर रखा और खड़ा हो गया... श्रीकांत ने भी वैसा ही किया....

"अर्रे.. ये भी कोई बात हुई... अभी आए और चल भी दिए.. बैठो ना.. चाय लाती हूँ बनाकर.." राधा हक़ सा जताते हुए दरवाजे पर खड़ी हो गयी...

"नही राधा.. आज जल्दी में हूँ.. वो सौरभ आया है.. ज़्यादा देर अकेला छोड़ा तो बुरा मान जाएगा.. मैं बाद में आऊंगा..." संकेत ने उसको समझते हुए कहा..

सौरभ का नाम संकेत के मुँह से सुनकर राधा के कान खड़े हो गये.. अचानक ही आश्चर्य की एक मीठी सी लहर उसके चेहरे पर दौड़ गयी.. फिर संभालते हुए बोली," सौरभ आया है? कब? उसको क्यू नही लेकर आए..? कितने साल हो गये उसे शकल दिखाए हुए..?"

"वो.. दरअसल कुछ और भी दोस्त हैं वहाँ.. उनको अकेला छोड़ना तो बिल्कुल ही अच्छा नही लगता.. शाम को भेज दूँगा.. अगर आया तो.." राधा की बाजू से बाहर निकरंभा हुआ संकेत बोला..," दरवाजा बंद कर लो.. हम जा रहे हैं..."

"ठीक है.. " राधा चहकति हुई उनके साथ आई और दरवाजा बंद करते ही बदहवासी में अंदर की और दौड़ पड़ी... अंदर जाते ही उसने फोन उठाकर एक नंबर. मिलाया...

"राधा, मैं क्लास में हूँ.. बाद में बात करती हूँ..." खुस्फुसती हुई सी आवाज़ फोन पर उभरी...

"शीतल, सुन तो.. फोन मत रखना.. बाद में पछताएगी नही तो?" राधा ने कहा...

"क्या हुआ.. ? तुम्हारी साँसें तेज क्यू चल रही हैं.. सब ठीक तो है.." शीतल की आवाज़ अब भी बहुत धीमी थी....

राधा ने आँखें बंद करके अपनी छातियो पर हाथ रखा और बढ़ चली धड़कनो को काबू में करने की कोशिश की," हां.. बस क्या बताऊं...? सुन.. वो.. सौरभ आया हुआ है...!"

"क्य्आआअ?" सौरभ का नाम सुनकर शीतल भूल ही गयी कि वो क्लास में है.. फिर हड़बड़ते हुए उसने फोन को छिपाने की कोशिश की तो पूरी क्लास में ठहाका गूँज उठा...

"गेट आऊट ऑफ दा क्लास!" लेक्चरर ने पढ़ाना छोड़ उसको एक लाइन का आदेश सुना दिया...

पूरी क्लास उम्मीद कर रही थी कि शीतल अब माफ़ कर देने के लिए गिड़गिडाएगी.. सब उसी की और देख रहे थे.. पर उसका जवाब सुनकर सभी चौंक पड़े," शुक्रिया सर.. थँक यू वेरी मच!" शीतल ने ये सब भागते भागते ही कहा और क्लास से गायब हो गयी.. क्लास में सन्नाटा छा गया.. सब आँखें फाडे लेक्चरर की और देख रहे थे और लेक्चरर आँखें फाडे दरवाजे की और...

शीतल ने भागते भागते ही गेट पर आते ही ऑटो पकड़ी और बिना तोल मोल किए बोली," जल्दी चलो.. सीधे..!"

"कहाँ है वो?" गिरते पड़ते संभालते शीतल राधा के घर पहुँची.. बड़ी मुश्किल से धौकनी की तरह चल रही अपनी साँसों पर काबू पाने की कोशिश करती हुई वह अंदर पहुँची और राधा के अलावा किसी को भी वहाँ ना पाकर खिन्न हो गयी...

राधा लगातार उसकी और देख कर मुस्कुरा रही थी.. शीतल के सोफे पर पसरते ही वो बोली," पूरी बात सुन तो लेती.. मुझे पता था.. तुम अब सीधे यहीं आओगी...!"

"नही.. वो तो प्रोफेसर ने निकाल दिया.. पर है कहाँ सौरभ?" टेबल पर रखे जग को उठाकर गतगत पानी पीते हुए वो बोली....

"संकेत आया था.. उसी ने बताया कि सौरभ आया हुआ है.. अभी वो उसी के पास है.. शाम को आएगा शायद...!" राधा उठकर जग को फ्रीज़ के उपर रखते हुए बोली...

"कौन संकेत?" शीतल ने पूछा....

"अरे वही यार.. जो पहले हमारे घर के पास रहते थे... याद नही?"

"ओह हां... पर सौरभ उसका दोस्त है क्या?" शीतल ने उत्सुकतावश पूछा...

"हां.. वो तो बचपन से ही अच्छे दोस्त हैं.. तुझे संकेत का नाम याद नही है.. शकल से ज़रूर पहचान लोगि..." राधा ने बताया...

"अभी रहेगा क्या यहीं.. सौरभ!" शीतल उठकर उसके पास आ गयी...

"मुझे क्या पता? उसी से पूछ लेना...!" राधा शरारत से मुस्कुराने लगी....

शीतल ने अपने चेहरे पर तैर गयी शरम की लाली छिपाने के लिए तकिया उठाकर राधा के मुँह पर दे मारा," क्या अब भी वो इतना ही शर्मिला होगा? ३ साल हो गये उसको देखे हुए... तुझे याद है जब एक बार हम हाइड एंड सीक खेल रहे थे तो ग़लती से वो उसी रज़ाई में घुस गया था जिसमें मैं छिपी हुई थी.. हे हे हे हे.. पता है कैसे उछल पड़ा था.. जैसे उसको किसी बिच्छू ने काट लिया हो.. उसके बाद वो कभी हमारे साथ नही खेला... मैं वो दिन कभी नही भूल सकती राधा.. पूरी जिंदगी नही भूल सकती..." कहते हुए राधा ने पिछे सिर टीका मंद मंद मुस्कुराते हुए आँखें बंद कर ली..

"हां.. तूने बताया था.. वो पूरा का पूरा तेरे उपर लेट गया था... !" राधा ने कुछ और भी याद दिलाने की कोशिश की.. पर शायद शीतल तो पहले से ही उसी पल में खोई हुई थी... कैसे अंजाने में ही रज़ाई में घुसते हुए उसका एक हाथ सीधा शीतल की उभरती हुई छाती पर आकर जम गया था और उसके मुँह से कामुक सिसकी निकल गयी थी... पर वो झटका बिजली के झटके जैसा ही था.. जितनी तेज़ी से उसके हाथ ने उस के लड़कीपने के अहसास को जगाया था.. उतनी ही तेज़ी से वो वापस भी हट गया.. और शीतल तड़प उठी थी.. वो तड़प आज तक उसके सीने में आग लगाए हुए थी.. पर उस आग को बुझाने के लिए उसको २० की होने पर भी कोई और हाथ गवारा नही था.. उसको सिर्फ़ वही हाथ चाहिए था.. वो उससे तब भी प्यार करती थी.. और आज भी करती है.. सिर्फ़ कभी बोल नही पाई थी...

"चार साल बाद!" आँखें बंद किए हुए ही शीतल के मुँह से निकला...

"क्या?" राधा ने पूछा...

"आज चार साल बाद वो मुझे दिखाई देगा.. भूल तो नही गया होगा ना...!" शीतल ने दोहराया.. और आँखें खोल दी...

"तुझे कैसे भूल सकता है वो? तू ही तो उससे सबसे ज़्यादा झगड़ा करती थी.. और फिर मनाती भी तो तू ही थी... और भूल भी गया हो तो तू याद दिला देना.. रज़ाई वाली बात बताकर.. हे हे हे...!" राधा हँसने लगी....

"वो फिर भाग जाएगा.. रज़ाई वाली बात याद दिला दी तो.. झेँपू कहीं का.. हे हे.. कितना प्यारा था ना वो.." शीतल की आँखें चमक उठी....

"था क्यू बोल रही है पागल... वो तो अभी भी है.." राधा ने उसको टोका....

"हे हे हे.. पर क्या वो अब भी इतना ही क्यूट होगा.. लल्लूराम!" खुद ही कहकर शीतल खुद ही शर्मा गयी.. तकिया उठाकर अपने चेहरे को ढक लिया...

# १६

यार.. मेरी तो समझ में नही आ रहा कि विपिन आख़िर यहाँ आ क्यू रहा है? और वो भी गीता को लेकर?" प्रतिक विचलित सा बैठा कुछ सोचते सोचते अचानक बोल पड़ा...

"अरे भाई इसमें इतना दिमाग़ खपाने वाली बात कौनसी है.. आ रहा है तो आने दे.. उसकी भी सुन लेना.. दिक्कत क्या है?" सौरभ ने प्रतिक के पास बैठकर उसके कंधे पर हाथ रख लिया...

"वो बात नही है यार... पर वो रहेंगे कहाँ? विपिन को भी अड्जस्ट कर लेते.. पर गीता...!" बोलते बोलते वह अचानक रुक गया...

पास बैठा धीरज मौके का फायदा उठाने से नही चूका," यार, लड़की की इतनी दिक्कत मान रहा है तो मैं रख लूँगा ना, अपने रूम में.. हे हे हे...!"

"तुझे इसके अलावा भी कोई काम है कि नही.. जब देखो..." प्रतिक बौखला सा गया...

"यार, इस बात को तो भूल ही जाओ.. इतनी बड़ी कोठी मैं क्या ६ लोग भी नही रह सकते..?" सौरभ ने उसको फिर समझाने की कोशिश की...," अगर ज़रूरत हुई भी तो हम रूम शेर भी तो कर सकते हैं.. लड़की अकेली रह लेगी... क्या दिक्कत है.."

"वो बात नही है यार.. पहले ही आपने और संकेत भाई ने हम पर अहसान कर रखा है...." प्रतिक बोल ही रहा था कि सौरभ ने उसको प्यार से रंभाड़ लगाई..," तुमने खूब दोस्त माना भाई.. अहसान की बात कहकर तो मुझे शर्मिंदा ही कर दिया.. संकेत को तुम ठीक से जानते नही हो.. यारों का यार है वो.. अगर तुम पूरी जिंदगी भी यहाँ रहना चाहो तो उसके चेहरे पर शिकन नही आएगी.. बल्कि वो तो और भी खुश होगा.. अकेला रह रह कर ही तो वो शराब का सहारा लेने लग गया.. उस जैसा 'दोस्त' ना मैने कभी देखा है.. और शायद ना ही तुम कभी देख पाओगे.. जस्ट रिलॅक्स एंड कॉन्सेंट्रेट ऑन तनवी, ओके?"

"ठीक है यार... पर मैं कोशिश करूँगा उन्हे जल्द वापस भेजने की..." प्रतिक ने कहा ही था कि संकेत कमरे में आ गया," किसको जल्दी भेज रहे हो भाई?"

"वो यार.. मेरा एक दोस्त और आ रहा है कल.. एक लड़की भी है साथ में...!" प्रतिक ने जवाब दिया...

"अरे वाह.. फिर तो पार्टी होनी चाहिए यार... वो.. लड़की पर्सनल है क्या?" संकेत ने कुछ रुककर पूछा...

"नही यार.. वो ऐसी नही है.. बहुत ही शरीफ और भोली है.. उसके साथ कोई लफड़ा नही प्लीज़... मुझे तो यही समझ नही आ रहा की विपिन उसको लाएगा कैसे? मतलब उसके घर पर क्या कहेगा....?" प्रतिक ने संकेत की और देखते हुए कहा...

"शरीफ लड़कियों से तो मुझे वैसे ही डर लगता है भाई.. मैं तो चालू लड़कियों से ही काम चला लेता हूँ.. चल आने दे.. देखते हैं तेरी उस शरीफ और शर्मीली लड़की को भी.. आज का क्या प्रोग्राम है.. पार्टी करते होगे ना?" कहकर संकेत हँसने लगा...," और तेरा क्या ख़याल है.. रुबीना को बुलाऊ कि नही.. रात को आने को बोल रही है?" उसने धीरज की और आँख मारी....

"कितने बजे तक आ जाएगी..? हा हा हा!" धीरज ने कहकर ठहाका लगाया...

उसकी बात का जवाब देने ही वाला था कि संकेत को राधा की बात याद आ गयी, उसने सौरभ की और देखा और बोला," राधा याद है तुम्हे?"

"राधा? ... अच्छा राधा.. हा...हां.. याद है.. क्या हुआ?" सौरभ को अचानक याद आ गया...

"तुम्हे बुला रही थी.. घर पर..! शाम को चले जाना... एक बार.." संकेत ने कहा..

"मुझे? .. पर मुझे क्यू?" सौरभ ने अचंभित होते हुए पूछा...

"ये ले! ये भी मैं ही बताऊंगा.. कुछ चक्कर होगा तुम्हारा उसके साथ.. जाने से पहले...!" संकेत ने चटखारा लिया...

"नही यार.. ऐसी तो कोई बात थी ही नही... जहाँ तक मुझे याद है.. और एक और भी तो लड़की रहती थी उनके साथ वाले घर में.. उम्म्म्म...शीतल!" सौरभ को नाम अच्छी तरह

याद था.. पर जान बूझ कर उसने याद सा करने का नाटक किया.. नही तो संकेत उसकी अभी लेनी शुरू कर देता... 'रज़ाई' वाली बात वो भी आज तक नही भूला था.. आख़िर पहली बार उसने लड़की की नरम और गरम गोलाइयों को छुआ था.. पहला स्पर्श कौन भूल सकता है भला...

"हम्मम.. वो भी वहीं रहती होगी अब भी.. उसकी मम्मी को देखा था मैने.. गाड़ी से उतरते हुए.. उसके साथ कुछ पंगा था क्या?" संकेत ने पूछा...

"सबको अपने जैसा नंगा क्यू समझता है तू.. लड़की का नाम आते ही तुझे 'पंगा' नज़र आने लगता है.." सौरभ कहते ही हँसने लगा....

"ठीक है.. चला जाएगा ना... चला जाना यार एक बार.. नही तो वो समझेगी मैने बोला ही नही होगा...!" संकेत ने सीरीयस होते हुए कहा...

"हम्मम.. चला जाऊंगा...!" सौरभ की आँखों में शीतल को देखने की ललक उभर आई थी.....

करीब ५ बजे एक गाड़ी राधा के घर के सामने रुकी.. सौरभ का पलकें बिछायें इंतजार कर रही शीतल की दिल की धड़कने अचानक बढ़ गयी,"राधा, देख तो! आ गया क्या?"

"आया होगा तो अंदर ही आएगा.. वो क्या घर भूल गया होगा?" राधा ने मज़ाक में कहा और खिड़की खोल कर बाहर झाँकने लगी....

सौरभ ने गाड़ी से उतरते ही शीतल के घर पर निगाह डाली.. कोई नज़र नही आया.. बेताब निगाहों से बार बार उधर ही देखते हुए वो राधा के घर के दरवाजे पर जाकर खड़ा हो गया.. अपने कपड़े दुरुस्त किए और धीरे से नॉक किया...

"आ गया.. जा.. तू ही उसका स्वागत कर..!" राधा हँसने लगी...

"नही यार.. मुझे शर्म आ रही है.. जा ना.. जल्दी जा..!" शीतल ने हड़बड़ाहट में अपने आपको उपर से नीचे तक देखा.. उसका ध्यान सबसे पहले अपनी मस्त सुडौल स्तनों पर ही गया. चार साल पहले से सौरभ के हाथों के स्पर्श को संजोए उसके २ छोटे अमरूद अब

रसीले दानो वाले अनार बन चुके थे.. ब्रा ना होने की वजह से टॉप के उपर से ही दानो की सीधी नोक हल्की सी महसूस की जा सकती थी... "हाए राम.. मैं क्या करूँ..?" आनन फानन में खुद से ही सवाल करती हुई शीतल सौरभ को राधा के साथ आता देख ड्रॉयिंग रूम के साथ वाले कमरे में छिप गयी...

सौरभ को नज़र भर देखने से ही शीतल के दिल में हलचल सी मच गयी.. कल तक जिसको वो लल्लूराम कहकर चिढ़ाया करती थी, आज शारीरिक सौष्ठव और सौंदर्या में किसी फिल्मी हीरो से कम नही लग रहा था.. शीतल दरवाजे के पिछे छिप कर अपनी साँस रोक कर खड़ी हो गयी...

राधा सौरभ को शीतल के रूप में सर्प्राइज़ देना चाहती थी.. पर अंदर आते ही जब उसने शीतल को ही गायब पाया तो उसकी हँसी छूट गयी....

"क्या हुआ?" सौरभ ने बैठते हुए पूछा..," अंकल आंटी जी नही हैं क्या?"

"नही.. कोइ नही है..!" राधा ने मंद मंद मुस्कुराते हुए कहा," मम्मी बाहर गयी हैं.. और पापा तो हफ्ते में ही आते हैं.. ये लो!" राधा पानी लेकर आई थी..

"ओह शुक्रिया.. यहाँ तो कुछ भी नही बदला.. सब कुछ वैसा का वैसा ही है..!" सौरभ शीतल के बारे में पूछने के लिए भूमिका बनाने लगा...

"पर तुम तो बहुत बदल गये हो सौरभ.. मॉडेलिंग की तैयारी कर रहे हो क्या? हे हे हे..." राधा ने उसके सामने बैठते हुए अपरोक्ष रूप से सौरभ के डील डौल और शकल सूरत की सराहना की...

"अरे नही यार.. कहाँ मॉडेलिंग? इंसान तो बदलते ही रहते हैं.. वक़्त के साथ.." सौरभ ने दार्शनिक नज़रिए से कहा....

"सच! पर अगर कोई अब तक भी नही बदला हो तो?.." राधा के चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान तेर गयी...

"क्या मतलब? सौरभ सचमुच कुछ नही समझा था...

"एक मिनिट.." कहकर हंसते हुए राधा अंदर गयी और दरवाजे के पिछे खड़ी शीतल को पकड़ कर बाहर खींचने लगी... शीतल लज्जा से मरी जा रही थी," आ.. छोड़ मुझे.. प्लीज़.. छोड़ दे ना..!"

पर राधा पर शीतल की अनुनय का कोई असर नही हुआ.. ज़बरदस्ती खींचने की वजह से इस आपा धापी में शीतल का टॉप उसकी नाभि तक उपर खींच गया.. एक दूसरे से खींचतान में लगी दोनो लड़कियाँ जैसे ही सौरभ के सामने आई.. उसकी तो मानो धड़कन ही थम गयी..पहली ही नज़र में उसने शीतल को पहचान लिया... लंबे काले खुले हुए बालों में उसका चेहरा बादलों की आड़ में छिपे चाँद की सुंदरता को भी मात दे रहा था.. पूरा का पूरा बदन यौवन रस से लबरेज और एक दम लचीला था... सौरभ का ध्यान उसके नाभि स्थल पर भी गया.. पेट इतना चिकना और पतला था कि उसकी नशें भी बारीक रेशों के रूप में बाहर दृष्टिगोचर हो रही थी.. वो तो पूरी की पूरी ही चिकनी थी.. एकदम मस्त!

जैसे तैसे खुद को छुड़ा कर शीतल वापस अंदर भाग गयी... राधा हांफते हुए बाहर आई," पहचाना इसको?"

"हां.. शीतल थी ना?" सौरभ ने जवाब देने के साथ ही उसका कन्फर्मेशन भी लेना चाहा...

"हम्म.. बाहर आओ ना.. शीतल.. ये क्या बचपाना है?" राधा ने बाहर से ही उसको प्यार भरी फटकार लगाई...

"एक मिनिट.. अंदर आना राधा.." शीतल ने आवाज़ लगाई...

अंदर जाते ही राधा ने हल्के स्वर में उसको डांटा," क्या है ये? क्या समझेगा वो.. तू कोई बच्चि नही है अब.. चल बाहर..."

"बच्ची नही हूँ, तभी तो!" शीतल ने मन ही मन कहा और बोली," एक मिनिट.. यहाँ तेरी कोई ब्रा है क्या? मैं जल्दी में पहनना भूल गयी.." उसने सकुचते हुए कहा...

"कुछ नही होता.. सब ठीक है.. तू आ ना.." राधा ने उसका हाथ पकड़ा और बाहर खींच लाई...

शीतल का चेहरा देखने लायक था.. वह आकर बैठ तो गयी थी पर सौरभ से नज़रें नही मिला पा रही थी... यूँ ही पलकें झुकाए वह अपनी दोनो छातियो के उपर से एक हाथ ले जाकर अपनी दूसरी बाजू को पकड़े रही...

"हेलो!" सौरभ ने ही उसका मौन तोड़ने की कोशिश की...

"हाई!" बोलते हुए शीतल ने अपनी पलकों को उठाने की कोशिश की पर सौरभ से नज़रें मिलते ही हया के बोझ से वापस झुक गयी," कैसे हो? सौरभ!"

"नज़रें उठाकर खुद ही देख लो ना, कैसा हूँ! हा हा हा" सौरभ ने मज़ाक किया...

"मैं एक मिनिट में आई.." कहकर राधा वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गयी...

"तुम तो एकदम बदल गयी हो शीतल.. ये सब कैसे हुआ..?" सौरभ ने राधा के जाते ही उसको छेड़ा....

शीतल को महसूस हुआ कि सौरभ उसके स्तनों में बदलाब की ही बात कर रहा है शायद.. वह ऐसा कहते ही और भी ज़्यादा सिकुड गयी," और सूनाओ! क्या करते हो आजकल.. काफ़ी स्मार्ट हो गये हो.. पहले जैसे नही रहे.. लल्लूराम!" कहते ही शीतल ने अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया.. धीरे धीरे उसकी झिझक खुल रही थी...

"तुम भी तो शादी के लायक हो गयी हो.. कोई लड़का देखना है क्या?" सौरभ की इस बात ने उसके जज्बातों को झनझणा दिया.. वह भड़कना चाहती थी.. पर भड़क नही पाई... पहले भी सौरभ अक्सर यही मज़ाक उसके साथ किया करता था.. पर उस वक़्त तो वो कहने के साथ ही रफूचक्कर हो जाता था.. वरना उसको पता होता था कि शीतल रो रो कर.. सारे मोहल्ले को खड़ा कर लेगी....

"तुम बिल्कुल वैसे ही हो!" शीतल ने रूठने की एक्टिंग करते हुए अपने रसीले होंटो को बाहर निकाल लिया.. पर मुस्कान को अपने चेहरे से हटा नही पाई.. और ना ही नज़रें उठा पाई....

"पर तुम अब वैसी नही रही शीतल.. तुम तो शरमाने लगी हो... अब तो झगड़ा भी करना बंद कर दिया है शायद.. वरना इस बात पर तो मेरे उपर चढ़ कर बालों को नोचने लग जाती.." सौरभ ने मुस्कुराते हुए कहा...

क्या कहती शीतल, उपर तो वो अब भी चढ़ना चाहती थी.. पर बदन पर यौवन का बढ़ा हुआ वजन उसको आगे बढ़ने से रोक रहा था...," कितने दिन हो अभी.. यहाँ पर...?"

"पता नही.. सोचकर तो हफ्ते भर की आया था.. देखते हैं... " सौरभ ने बात पूरी भी नही की थी कि राधा अपनी मम्मी के साथ अंदर आती हुई दिखाई दी.. ये दोनो की पुरानी यादों को ताज़ा करते हुए एक दूसरे के नज़दीक आने की कोशिशों पर विराम जैसा था.. दोनो सामान्य हो गये...

"नमस्ते आंटी जी..!" सौरभ ने खड़े हो उसका अभिवादन किया...

"नमस्ते बेटा.. बड़े दीनो बाद याद किया अपना शहर.. अरे कुछ खाने पीने को भी दिया है कि नही तुम लोगों ने!" आंटी जी ने पूछा....

"वो.. मैं ठंडा लेने ही गयी थी मम्मी.. अभी देती हूँ....

# १७

संकेत की कोठी पर उपर बेडरूम में बैठी शमीना संकेत को अंदर आते देख चौंक गयी और खड़ी होकर एक कोने में जा सिमटी...

"क्या हुआ शमीना, मेरी जान? तुम्हे मुझसे क्या नाराज़गी है?" संकेत ने छक कर पी रखी थी... बिस्तर पर बैठते ही उसने उंगली का इशारा कर शमीना को अपने पास बुलाया...

"पर.. पर तुमने कहा था कि तुम मेरे पास नही आओगे.. तुमने वादा किया था!" शमीना नज़रें झुकाए कोने में ही खड़ी रही....

"छोड़ो ना ये वादे कस्में.. आओ ना डियर.. प्यार करते हैं.. लेट'स मेक लव, कम ऑन बेबी!" संकेत अब भी बिस्तर पर ही पसरा हुआ था....

"नही.. मुझे नही करना प्यार.. तुम प्लीज़ जाओ यहाँ से..." शमीना ने हाथ जोड़ लिए...

"कमाल है यार... प्यार नही करना तो रात को छुप कर घर से आने का ख़तरा क्यू मोल लिया.. वहीं सो जाती आराम से... बोलो?"

इस बात का शमीना के पास भी कोई जवाब नही था... ," ठीक है.. मुझे घर छोड़ आओ.. रुबीना कहाँ है? उसको बुला दो प्लीज़ एक बार.." शमीना लाचर सी वहाँ खड़ी थी....

"रुबीना धीरज के साथ ऐश कर रही है जानेमन.. उसने मुझे सब बता दिया है.. वो तुमको लाना नही चाहती थी..मैने भी तुम्हे नही बुलाया.. पर तुम ज़बरदस्ती करके आई हो.. अब प्राब्लम क्या है?" संकेत खड़ा होकर उसके पास आ गया....

शमीना कोने में और ज़्यादा दुबक गयी.. वह नही चाहती थी की संकेत उसको हाथ भी लगाए," हां.. पर मैने बोल दिया था कि तुम मेरे पास नही आओगे... पूछ लो उससे....!"

"अब ये तो हद हो गयी यार.. मैं तुम्हारे पास आता भी नही.. पर वो रुबीना ने बोला कि तुम सेक्स करना नही चाहती तो धीरज उसी के बेडरूम में घुस गया.. तो फिर मैं क्या अपने हाथ में लेकर हिलाता रहता.. एक बात बताओ.. आज तक मैने तुम्हे हाथ लगाया है?"

शमीना ने अपना सिर झुकाकर इनकार में हिला दिया....

"मैने आज तक किसी के साथ ज़बरदस्ती नही की.. हालाँकि मुझे तुम पहले दिन से ही प्यारी लगती हो.. पर तुम्हे तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ छू कर भी नही देखा मैने.. सच तो ये है कि मैने रुबीना से दोस्ती भी तुम्हारे ही कारण की थी.. ताकि तुम्हे हासिल कर सकूँ... पर देख लो.. आज ६ महीने के करीब हो गये हैं.. तुम यहाँ ३- ४ बार आ चुकी हो... तुमने मुझे हाथ लगाने की इजाज़त नही दी और मैने कभी लगाया भी नही.. है ना...?" संकेत अब भी उसके ठीक सामने खड़ा था...

"आ..हां!" शमीना सकुचती हुई बोली....

"पता है क्यू?" संकेत ने फिर सवाल किया...

शमीना ने नज़रें उठाकर झुका ली.. पर कोई जवाब नही दिया....

संकेत ने उसको अपनी गोद में उठा लिया.. वो छटपटाई; पर बलिष्ठ हाथों में कुछ और ना कर सकी.. संकेत ने उसको बिस्तर पर ले जाकर लिटा दिया.. पर उसके छोड़ते ही वह उठ कर खड़ी हो गयी..

"क्यूंकी तुम्हारा नाम मुझे किसी की याद दिलाता है.. जो मेरे दिल में उतर गयी थी.. और जिसके चाहने के बावजूद मैं उसको कभी छूकर नही देख पाया... हम यूँही जुदा हो गये.. एक दूसरे को देखते देखते.... मैं एक बार 'शमीना' को पाना चाहता हूँ.. पर ज़बरदस्ती नही..." संकेत नशे में भावुक हो गया और उसकी तरफ कमर किए खड़ी शमीना को बिस्तर पर बैठे बैठे ही अपनी बाहों में भर लिया.. शमीना के नितंब संकेत की छाती से लगते ही थिरक उठे.. इस थिरकन को संकेत ने भी महसूस किया और शमीना ने भी....

"पर... पर मैं तुम्हारी शमीना नही हूँ... सिर्फ़ नाम मिलने से क्या होता है...?" शमीना तड़प सी उठी और अपने आपको उसके बहुपाश से छुड़ाने की कोशिश में उसकी और ही घूम गयी..उसको संकेत की आँखों में आँसू तैरते नज़र आए...

"ठीक कहती हो.. नाम मिलने से कुछ नही होता... पर कुछ भी ना मिलने से कुछ मिल ही जाए, तो बेहतर है.. और तुम्हारा नाम ही नही मिरंभा उससे.. तुम्हारी आँखें भी मिलती हैं..

इनमें जो कशिश है वो मैने बहुत पहले शमीना की आँखों में देखी थी.. तुम्हारी आँखें मुझे अपनी और खींचती हैं.. जैसे कभी उसकी आँखें खींचती थी... मेरा जर्रा जर्रा उस पल को कोसता है जब वो अपने घर में अकेली थी.. और मुझे उसने इशारे भी किए.. पर मैं कभी उन इशारों को समझ नही पाया.. उसको कभी छू नही पाया... मुझे एक बार शमीना को छू कर देखने दो प्लीज़.. दोबारा कभी नही बोलूँगा...." संकेत ने शमीना को अपनी और खींचा और उसकी स्तनों के बीच चेहरा घुसा दिया..

संकेत की नशीली साँसों को अपने सीने में पेबस्त होता देख शमीना के शरीर में अजीब सी खलबली मच गयी.. पर वह अपने आपको संभाले हुए थी....," अब तो छू लिया ना.. छोड़ दो प्लीज़.. मैं और आगे बढ़ना नही चाहती....छोड़ दो मुझे.." वह अपने आपको छुड़ाने के लिए छट-पटाने लगी.. और अपने हाथ संकेत के चेहरे पर लगा उसको पिछे धकेलने लगी....

संकेत उसकी इस हरकत पर बौखला उठा.. नशे का सुरूर तो था ही," तूने मुझे समझ क्या रखा है लड़की.. मैं ६ महीने से तेरा इंतजार कर रहा हूँ.. और तू नखरे करती जा रही है... धीरज का तूने पहले ही दिन पूरा का पूरा अपनी योनी में उतरवा लिया.. और रुबीना बता रही थी कि तू खूब मज़े से उछल रही थी.. मेरे साथ क्या दुश्मनी है तुझे..?" संकेत उसकी कमर पर टिकाए हुए अपने हाथों को नीचे ले गया और उसके मदमस्त किसी तरबूज की तरह बाहर उभरे हुए उसके नितंबों को दोनो हाथों में पकड़ कर मसालने लगा....

शमीना सिसक उठी.. उसकी हालत खराब होती जा रही थी.. हालाँकि उसके पास संकेत के सवाल का कोई जवाब नही था.. फिर भी वो यही चाहती थी की संकेत उसको छोड़ दे," प्लीज़... अया.. ऐसा मत करो.. छोड़ दो मुझे...प्लीज़!"

पर संकेत के हाथ नही थामे... नितंबों को हथेलियों से मसालते हुए अब उसकी उंगलियाँ दरार के बीचों बीच सलवार और पैंटी के उपर से उसको काफ़ी अंदर तक कुरेदने लगी थी.... शमीना की सिसकियाँ अब उसके विरोध के साथ साथ सुनी जा सकती थी...," क्यू नही.... छोड़'ते हो मुझे.. जब मैं कुछ.. आआहह.. आअहह.. करना ही नही चाहती..... छोड़ो ना..!" शमीना मचल उठी और उसके हाथ अब अपने गुदज नितंबों को संकेत की क़ैद से मुक्त करवाने की कोशिश कर रहे थे....

"ना.. आज तुझे छोड़ूँगा नही बल्कि प्यार से ठोकुंगा... आज या तो तू नही या मैं नही.. अगर तू कुँवारी होती तो मैं तुझे तेरी मर्ज़ी के खिलाफ कभी हाथ ना लगाता... पर जब

धीरज पहले ही दिन तेरी नितंब मार सकता है तो फिर मुझसे तुझे क्या दिक्कत है..." संकेत की भाषा भी उसकी हरकतों की तरह अश्लीरंभा की हदों को पार करती जा रही थी.. सब नशे का असर था....

शमीना ने अपने आपको छुड़ाने का भरसक प्रयास किया, पर सफल ना हो सकी.. ज़ोर लगाते हुए जब उसने महसूस किया की संकेत की उंगलियों की पकड़ भी उसकी कोशिशों के साथ बढ़ती जा रही है तो उसने मजबूरन अपने आपको ढीला छोड़ दिया..," मान जाओ ना.. संकेत.. प्लीज़.." उसने अपने हाथ संकेत के कंधों पर टीका लिए...

"पर क्यू शमीना? जब धीरज कर सकता है तो मैं क्यू नही..?" संकेत तड़प कर बोला.. उसने शमीना के नितंबों को छोड़ कमर से उसको पकड़ लिया...

"एम्म..मुझे नही पता.. पर मैं तुमसे प्यार नही कर सकती.. सॉरी संकेत.. तुम बहुत अच्छे हो.. पर.. प्लीज़.. समझने की कोशिश करो..!" शमीना ने उसको प्यार से बोलकर मनाने की कोशिश की...

"मैं ये थोड़े ही कह रहा हूँ कि मुझसे प्यार करो.. मैं तो.. मैं तो तुम्हारे बेपनाह हुस्न में बस एक बार उतर कर देखना चाहता हूँ.. और तुम्हारे हर इनकार के साथ मेरी लालसा और बढ़ जाती है.. एक बार मुझे मनमर्ज़ी करने दो.. फिर नही टोकुंगा...." संकेत ने तर्क दिया...

"मैं.. इसी प्यार की बात कर रही हूँ.. मैं तुम्हारे साथ ये सब नही कर.. करना चाहती.. समझने की कोशिश करो...!" शमीना जाने क्या समझाने की कोशिश कर रही थी....

"ठीक है.. मैं तुम्हारी आधी बात मान लेता हूँ.. आधी बात तुम मेरी मान लो.. बोलो मंजूर है?" संकेत ने उसको छोड़ दिया...

"क्क्या?" शमीना असमंजस से उसकी आँखों में देखने लगी...

"मुझे तुम्हारा बदन देखने दो.. जी भर कर.. छूने दो.. मैं आगे नही बढ़ूंगा.. अगर तुम्हारी मर्ज़ी नही होगी तो..!"

"नही!" शमीना इस बात के लिए भी तैयार नही थी....

"नही तो फिर मुझे दोष मत देना.. अब कुछ भी हो सकता है..!" संकेत ने खड़ा हो अपनी शर्ट और बनियान उतार फैंकी..और उसकी और बढ़ा... गठीले बदन पर उसका फड़कता हुआ सीना शमीना को अहसास करा रहा था कि ज़बरदस्ती कुछ भी हो सकता है.. और वो कुछ नही कर पाएगी...

"एक.. मिनिट... ठीक है.. पर..." शमीना डरकर बोली...

"अब पर वर कुछ नही.. मंजूर है तो कपड़े निकालो.. वरना मैं इन्हे चीर दूँगा...!" संकेत की आँखें गुस्से, ज़ज्बात और वासना में से लाल हो चुकी थी...

शमीना के पास विरोध करने के लिए अब कोई रास्ता बचा भी नही था.. २ दिन पहले ही तो वो इसी रूम में धीरज के साथ हमबिस्तर हुई थी.. एकदम अंजान लड़के के साथ.. अब मना करती तो कैसे करती.. गनीमत थी कि संकेत 'कम कीमत' पर राज़ी हो गया था.. वरना वह तो हिम्मत छोड़ ही चुकी थी... उसने अपने कमीज़ के पल्लू पकड़े और आख़िरी बार संकेत की आँखों में देखते हुए रहम की भीख सी माँगी...

"क्या सोच रही हो.. निकालो भी अब!" संकेत तरस रहा था उसके अल्हड़ जिस्म को देखने के लिए...

शमीना ने एक लंबी साँस ली और घूम गयी.. अपनी लचीली कमर संकेत की और करते हुए उसने अपना कमीज़ उतार कर अपनी छाती से लगा लिया...

"वाउ! सो नाइस... !" संकेत उसके फिगर का दीवाना सा हो गया..गोरी और चिकनी उसकी कमर मुश्किल से २८" की होगी... संकेत ने नंगी कमर को हाथों में पकड़ा.. और अपनी तरफ खींच लिया.. लड़खड़ाते हुए शमीना उसकी जांघों में जा बैठी.. संकेत का तना हुआ लिंग पाजामे के अंदर से ही शमीना के नितंबों के बीच फूत्कारने लगा.. शमीना असहाय सी अपने दिमाग़ पर वासना के भूत सवार होने से रोकने की कोशिश करती हुई बोली," आ..तुमने सिर्फ़ देखने को बोला था...!"

संकेत ने उसको और पिछे खींचते हुए उसकी नंगी कमर को अपने नंगे जिस्म से सटा लिया..," मैने देखने और छूने की बात कही थी शमीना.. भूल गयी?" कहते हुए उसने अपने होठ शमीना की कमर पर चिपका दिए.. शमीना सिसक उठी..," आ.. नही प्लीज़.." बोलते

हुए शमीना ने उचक कर अपने नितंबों को संकेत के फड़फदते कहर से बचाने की कोशिश की.. पर दोबारा फिसल कर वहीं आ गयी...

संकेत ने अपने हाथ आगे ले जाते हुए शमीना की स्तनों को पकड़ने की कोशिश की.. पर शमीना वहाँ अपने हाथों की कुंडली मारे बैठी थी...," अब क्या....?" शमीना बोलती बोलती रुक गयी....

"देखो.. बगैर छूकर देखे तो मैं मानने वाला हूँ नही.. ज़बरदस्ती करनी पड़ी तो तुम्हारा ही नुकसान होगा... तुम्हारी मर्ज़ी है...!" संकेत ने स्पष्ट रूप से कहा..

"..... पर ऐसा वैसा कुछ नही करोगे ना!" शमीना ने अपनी गर्दन घूमकर प्रार्थना सी की.. और कुछ वह कर ही नही सकती थी....

" जब कह दिया कि छूने से ज़्यादा कुछ नही करूँगा तो अब और पूछने वाली बात क्या है..." शमीना के नितंबों की गर्मी से संकेत अपना धैर्य खोता जा रहा था...

"सिर्फ़ उपर ही..." कहते हुए शमीना ने अपने हाथ ढीले छोड़ दिए और उसके ऐसा करते ही संकेत के हाथों ने उसकी स्तनों पर कब्जा सा कर लिया... और संकेत के मर्दाने हाथों की गिरफ़्त में अपना यौवन सौंप कर शमीना छटपटा सी उठी....

दोनो हाथों में एक एक रसीली गोलाई थाम कर संकेत सिसकियाँ लेते हुए उनका मर्दन करने लगा.. शमीना की आँखें बंद हो गयी.. पर अपनी साँसों पर काबू रखने की वह कोशिश करती ही रही...

अचानक शमीना को पकड़े पकड़े संकेत बिस्तर पर पिछे की और लुढ़क गया.. और बिना एक भी पल गँवाए उसको पलट कर अपने सामने कर लिया.. शमीना की आँखें बंद थी.. पर अपनी छलक्ति जवानी को शर्म से उसने संकेत की निगाहों से बचाने के लिए अपने हाथों को वहाँ ले जाने की हल्की सी कोशिश की... पर संकेत ने हाथों को बीच में ही पकड़ लिया और शमीना को सीधी लिटाते हुए उसके उपर आ जमा...

शमीना के होठ कंपकपा रहे थे... चेहरे पर अब विरोध के भाव नही थे.. पर हया की लाली अब भी उसको समर्पण करने से रोक रही थी.. संकेत ने उसके दोनो हाथ पिछे करके

उसकी मस्ती से तन गयी स्तनों और गुलाबी दानो को निहारा और झुक कर एक दाने को अपने मुँह में दबा लिया... शमीना तड़प उठी... वासना की एक तेज लहर उसके पूरे जिस्म में पसर गयी और कसमसाते हुए वो अपने हाथों को छुड़ाने का प्रयास करने लगी... उसकी हालत लगातार बद से बदतर होती जा रही थी.. पर संकेत तो जैसे आज उसका कतरा कतरा पीने को व्याकुल था..

काफ़ी देर तक उसके अंगों को चूस्ते रहने के बाद जब संकेत से ना रहा गया तो वह उस पर से उठ बैठा और अपना पाजामा उतार कर फैंक दिया... ," लो.. तुम तो छू कर देखो इसे.. इसको क्यू तड़पा रही हो? कहते हुए आँखें बंद किए लेटी शमीना का हाथ संकेत ने पकड़ा और अंडरवेर से बाहर निकाल कर अपना मोटा तना हुआ लिंग उसको पकड़ा दिया...

शमीना ने तुरंत अपना हाथ वापस खींच लिया.. हाथ लगते ही वह समझ गयी थी कि 'वो' क्या है..," नही.. मुझे नही छूना कुछ..!" कहते हुए उसने फिर से अपनी स्तनों को ढक लिया....

"ये सब नही चलेगा देखो.. तुम्हे नही छूना तो मत छूओ.. पर मुझे क्यू रोक रही हो.. बैठकर पकड़ो इसको...!" संकेत के सख़्त आवाज़ में कहते ही शमीना झट से उठ बैठी.. और काँपते हाथों से उसका लिंग हाथ में पकड़ कर चेहरा दूसरी और घूमा लिया....

"अब ये नाटक बाजी बंद करो यार.. ये तुम्हे खा नही जाएगा.. और ना ही तुमने इसको पहली बार देखा है.. अभी तो तुम्हे इसके साथ बहुत कुछ करना है..." संकेत ने आवेग में अपने लिंग के उपर रखा शमीना का हाथ पकड़ कर मसल दिया....

"क्या?.. और क्या.. करना है..!" शमीना ने घबराकर उसकी आँखों में देखा...

"होठ खोलो अपने.. इनका रस तो लगा दो ज़रा इस पर याआअर.. कितनी कमसिन है तू.. सच्ची..!" संकेत कहते ही घुटनो के बल सरक कर थोड़ा आगे हो गया.. अब लिंग शमीना की आँखों के सामने उसके होंटो के पास लहरा रहा था....

शमीना उसका इशारा समझ गयी.. हल्की सी पिछे होकर उसने निगाहें झुकाई और लिंग को गौर से देखा.. उपर वाला हिस्सा किसी देशी टमाटर की तरह चमक रहा था.. और अंदर से निकल कर एक दो बूँद उसके मुँह पर रखी थी...

"क्या करूँ..?" शमीना ने बेचैनी से नज़रें उठाकर संकेत की तरफ देखा.. हालाँकि उसको पता था कि अब क्या करना है...

"चूसो मेरी जान.. इसको चख कर देखो.. लगता है धीरज ने तुम्हे पूरी ट्रैनिंग नही करवाई..." संकेत सिसकते हुए उसके और ज़्यादा करीब हो गया...

शमीना ने अटपटे ढंग से अपने हाथ से सुपड़े के मुँह पर लगी बूँदें पूछि और आँखें बंद करके अपने तपते होंठ खोल कर उस पर रख दिए.. संकेत बुरी तरह सिसक उठा," इसस्सकॉ मुँह में ले लो ना.." और कहते ही शमीना का सिर पकड़ कर अपना लिंग अंदर ठूस दिया.. सुपड़े समेत करीब ३ इंच लिंग अंदर जाते ही शमीना का दम सा घुट गया.. उसने अपनी फटी हुई आँखें उठाकर संकेत को देखा. संकेत को उस पर रहम आ गया.. लिंग को वापस खींचते हुए वह बोला," सॉरी.. मुझे लगा तुम्हे लेना आता होगा.. मैं तुम्हे परेशान नही करना चाहता.. इसको बाहर से ही चाट लो..!"

संकेत की बातों में हमदर्दी की महक आते ही शमीना की आँखों में आँसू आ गये.. पर उसने इस बार कोई शिकायत नही की और जीभ बाहर निकाल कर अपने काम में जुट गयी.. दरअसल वह भी अब तक नीचे से पूरी तरह गीली हो चुकी थी...

"ओके.. अब मेरी बारी.. सलवार निकाल दो.." जी भरकर आनंद के क्षणों को जी कर संकेत वापस हट गया... और अपना हथियार अंडरवेर में छिपा लिया.. तना हुआ ही..

"शमीना ने सहमी हुई निगाहों से उसकी और देखा.. पर कुछ बोली नही.. शायद वह भी अब खुद पर काबू रखने की सीमा से काफ़ी आगे निकल चुकी थी.. नाडे को खींचते हुए उसने सलवार को ढीला किया और उचक कर उसको घुटनो तक सरका, सिर झुका कर बैठ गयी.. बाकी काम संकेत ने खुद ही पूरा कर दिया.. सलवार निकाल कर बेड पर रख दी और उसकी टाँगें फैलाकर उनके बीच आ गया..... शमीना अपना शरीर ढीला छोड़ बेड पर लेट गयी.. उसकी साँसे धौकनी की तरह चल रही थी.. आँखें बंद थी और स्तन तेज़ी से उपर नीचे हो रही थी....

"वाउ यार.. सो स्वीट.. सच कहूँ तो मैने ऐसी आज तक नही देखी..." पैंटी के किनारों में उंगली डाल जैसे ही उसने शमीना की योनि को बेनकाब करके देखा.. उसके मुँह में पानी

भर आया.. शमीना तो आनंद के मारे उछल ही पड़ी थी... संकेत उसको बिल्कुल नंगी करने से खुद को रोक ना पाया और अगले ही पल पैंटी भी बिस्तर पर पड़ी नज़र आई...

संकेत शमीना की जांघों पर हाथ फेरता हुआ मुँह खोले उसकी योनि को देखता ही रह गया.... मुलायम हल्के बालों वाली उसकी योनि भी उतनी ही मुलायम थी.. मोटी मोटी फांकों के बीच पतली सी झिर्री और उसमें से झाँक रही योनि की पंखुड़ीयाँ रसीली और बहुत ही नाज़ुक सी थी... उसके गोरे शरीर की अपेक्षा योनि का रंग हल्का भूरा सा था.. और बहुत ही मादक ढंग से शमीना की सिसकियों के साथ ही योनि भी धीरे धीरे फुदाक रही थी...

संकेत ने टाँगों को पिछे किया और उनके बीच पूरा लेट गया... अब संकेत की साँसों के योनि में मच रही खलबली से शमीना पागल सी हो उठी थी.. और जैसे ही संकेत ने योनि की बंद फांकों को जीभ बाहर निकाल कर चाटा.. शमीना ने पागलपन में ही अपने हाथ को काट खाया.. अपनी निकल रही सिसकियों पर काबू पाने के लिए...

संकेत उसकी ये हालत देख कर फूला नही समा पा रहा था.. उत्साहित होकर उसने शमीना को और गरम करने के लिए योनि को पूरी तरह बाहर से अपने थूक से लथपथ कर दिया.. शमीना की मदहोश सिसकियां अब पूरे कमरे में गूँज रही थी...

अचानक की गयी संकेत की हरकत से तो वो पूरी तरह तिलमिला ही उठी... अपने हाथों की अंगुलियों से संकेत ने योनि की फांकों को अलग किया और योनि के छेद में अपनी जीभ घुसेड दी... शमीना अधमरी हो गयी," जल्दी कर लो प्लीज़.. जो करना है.. मैं मरी जा रही हूँ...!"

संकेत अपना सिर उठाकर बोला..," सच्ची.. कुछ भी कर लूँ?"

शमीना ने अपने हाथ नीचे ले जाकर वापस उसका सिर दबा अपनी योनि से सटा दिया.. मतलब साफ था.. उसकी तिलमिलाहट में, उसकी छटपटाहत में अब उसकी सहमति साथ थी.. और शमीना पूरी तरह बेसबरा हो चुकी थी....

अब संकेत ने भी देर करना उचित नही समझा.. एक बार और सखलन होने पर शमीना का मूड बदल सकता था... अपनी जांघों पर शमीना की गुदज जांघें चढ़ाते हुए संकेत ने अपना

लिंग योनि मुख पर रखा और शमीना की स्तनों को दबाता हुआ बोला," शमीना.. एक बार आँखें खोलो ना प्लीज़.."

शमीना ने एक पल के लिए अपनी अधखुली आँखों से संकेत की और देखा और सिसकी के साथ हल्की सी मुस्कुराहट उसकी और फैकते हुए आँखें फिर से बंद कर ली...

संकेत उस पर झुका और उसके अंदर उतरता चला गया.. शमीना के होंटो से निलकली कामुक चीख को संकेत ने अपने होंटो में ही क़ैद कर लिया...

संकेत जब बाहर निकला तो धीरज और रुबीना बाल्कनी में एक दूसरे से अठखेलिया कर रहे थे.. रुबीना भागते हुए जाकर उससे लिपट गयी,"ओह डार्लिंग! आइ मिस्ड यू सो मच.." और फिर अचानक ही संकेत के चेहरे पर शिकन देख उसके चेहरे के भाव बदल गये," क्या हुआ ? बात आज भी नही बनी क्या?"

संकेत उसको दूर सा करते हुए बोला," जाओ संभाल लो उसको.. और आइन्दा मेरा नाम और नंबर. दोनो भूल जाना!"

रुबीना उसकी बात सुनकर चौंक पड़ी," पर हुआ क्या? मैं तो कब से कह रही हूँ.. एक बार ज़बरदस्ती कर लो.. बाद में अपने आप दौड़ी चली आएगी.. आओ.. मैं बताती हूँ उसको!" रुबीना ने संकेत का हाथ पकड़ कर खींचा....

"हो गया यार.. सब कुछ हो गया.. रो रही है अब वो बैठी बैठी.. जाओ संभाल लो उसको और बाहर निकल लाओ.. छोड़ आता हूँ तुम्हे.. सोना भी है फिर..!" संकेत ने कहते हुए रुबीना से मुँह फेर लिया..

रुबीना संकेत के पास ही खड़ी रही.. पर शमीना के रोने की बात सुनकर उत्सुकतावश धीरज बिना कुछ कहे ही उसके रूम में चला गया.. शमीना ने कपड़े पहन लिए थे और बिस्तर पर बैठी घुटनो में सिर देकर सूबक रही थी..

"क्या हुआ?" धीरज बस यूँही उसके पास बैठ उसके बालों में हाथ फेरने लगा...

शमीना ने आवाज़ सुनते ही अपना चेहरा उपर उठा लिया.. धीरज की आँखों में देखा और अचानक उसका सुबकना बिलखने में बदल गया.. छोटे बच्चे की तरह धीरज की छाती से

जा चिपकी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी.. धीरज का मन द्धीरजत हो उठा," अगर तुम्हे ये सब पसंद नही है तो यहाँ आना ही नही चाहिए!"

ये बात का तो शमीना पर उल्टा ही असर हुआ.. कोई जानता ही नही था कि वा यहाँ आई क्यू थी.. किसके लिए आई थी.. शमीना ने अपने दोनो हाथ धीरज की कमर पर चिपका लिए और अपनी छातियो को धीरज की छाती में गाड़ा दिया.. वह अब भी रो रही थी.. लगातार...

तभी कमरे में रुबीना ने प्रवेश किया," क्या नाटक है शमीना? ये सब क्या है? चलो उठो.. देर हो रही है..!"

शमीना की तरफ से तनिक भी हलचल ना हुई.. वो धीरज ही था जो उससे जैसे तैसे अलग हुआ और बाहर चला गया...

"चलो भी अब! क्या हो जाता है तुम्हे? कल तो अपने आप ही बीच में कूद पड़ी थी और आज ऐसे रो रही हो.. चल आजा अब.. आजा यार.. संकेत ने कह दिया है कि अब वो कभी तुम्हे हाथ नही लगाएगा.. सॉरी भी बोल रहा था.. आजा.. आजा मेरी शमीना!" रुबीना ने उसको बातों ही बातों में उठाया और नीचे गाड़ी में इंतजार कर रहे संकेत के पास ले गयी.. धीरज शायद नीचे जाकर लेट चुका था.....

# १८

अगली दोपहर करीब १२:३० पर बतला हाइवे पर खड़े प्रतिक और सौरभ विपिन के आने का इंतजार कर रहा थे. विपिन की कार को प्रतिक ने दूर से ही पहचान लिया.. और सौरभ की कार से उतर कर उसको रुकने का इशारा किया.. विपिन ने कार रोक दी.. प्रतिक ने विपिन से हाथ मिलाया, साथ बैठी गीता को अटपटे ढंग से हेलो बोला और पिछे वाली सीट पर जा बैठा," अगली गाड़ी के पिछे पिछे चलाना भाई..."

"तो... आपका कहना ये है कि मेरे सपने की वजह आप ही हैं.." प्रतिक ने गीता से पूछा.. वो और गीता कोठी के ड्रॉयिंग रूम में अकेले आमने सामने बैठे थे.. विपिन धीरज को लेकर जानबूझ कर बाहर निकल गया था ताकि गीता भोले भाले प्रतिक को आसानी से उसके द्वारा रटाई गयी बातें बोल सके.. धीरज विपिन के प्लान में अड़ंगा डाल सकता था...

गीता प्रतिक के सवाल पर कुछ देर चुप्पी साधे रही.. फिर पहले हाँ में सिर हिलाया और नज़रें उठाकर बोली," हाँ!"

गीता की शकल सूरत इतनी प्यारी और मासूम थी कि अगर प्रतिक ने तनवी को ना देखा होता तो शायद वो उसके इसी जवाब को 'आख़िरी जवाब' मान लेता.. पर अब दुविधा में उसके पास पूछने के लिए और भी बहुत सारी बातें थी," पर क्यू? मेरा मतलब है कि मैने तुम्हे पहली बार तुम्हारे घर ही देखा था.. और शायद तुमने भी.. फिर ऐसा क्यू कर रही थी.. और ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई जिंदा लड़की किसी के सपने में आकर जो कहना चाहती है वो कह सके, उसके अपने पास बुलाने के लिए बाध्य कर सके..? प्लीज़ मुझे सारी बातें डीटेल में समझाओ.. मैं बहुत कन्फ्यूजन में हूँ..."

बोलने के लिए मुँह खोलते हुए गीता के चेहरे पर शिकन उभर आई. वह जानती थी कि अब जो कुछ भी वह बोलेगी, झूठ ही बोलेगी.. विपिन के कहे अनुसार.. जो कुछ उसने याद कर रखा था.. वह एक स्वर में बोलती चली गयी.. बिना रुके

"दरअसल जो कुछ भी हुआ है, वो आधा मैने किया है और आधा भगवान ने.. पहले मेरे सपनों में तुम दिखने लगे थे.. मैं बेचैन रहने लगी.. तुम भी अक्सर वही बातें कहा करते थे जो मैने तुम्हे सपनो में कही हैं अभी तक.. ये सिलसिला जब महीनो तक चरंभा रहा तो हार

कर में अपने गाँव के पास एक तांत्रिक के पास गयी.. इन्न सपनों की वजह जानने के लिए.. उस ने मुझे बताया की हमारा पिछले जन्मों का कोई संबंध है.. और इसीलिए मुझे ऐसे सपने आते हैं. साथ ही उन्होने कहा कि वो २१ दिन का अखंड यज्ञ करके हमारी आत्माओ को एक दूसरे से अलग कर सकते हैं ताकि फिर कभी मुझे ऐसे सपने ना आयें...." कहते हुए गीता अचानक चुप हो गयी.. विपिन ने उसको ऐसा ही करने के लिए बोला था..

"फिर?" प्रतिक बड़ी लगन से उसके हर शब्द पर विश्वास करता हुआ सुन रहा था.. गीता के रुकते ही वा बेचैन हो गया," आगे बताओ ना!"

"उन्होने तुम्हे हमेशा के लिए मेरी जिंदगी से दूर करने का आसवसन दिया था.. पर.." गीता फिर चुप हो गयी.. इस बार विपिन की मर्ज़ी के मुताबिक नही.. पर जो उसको बोलने को कहा गया था.. गीता उसकी हिम्मत नही जुटा पा रही थी...

"पर क्या? बोलो ना!" प्रतिक विचलित होते हुए बोला....

"पर.. मुझे तब तक तुमसे.. प्यार हो गया था.. रात को ही नही.. मैं दिन में भी तुम्हारे सपने देखने लगी थी.. मुझे पता नही चला की कब ऐसा हुआ.. पर जब तांत्रिक ने मेरी जिंदगी से तुम्हे निकाल देने की बात कही तो मैने मना कर दिया.." गीता ने कहा...

"तुम रुक क्यू रही हो बीच बीच में.. सारी बात बताओ ना.. आगे क्या हुआ?" प्रतिक खुद ऐसा सपने देख चुका था इसीलिए गीता की बातों पर विश्वास ना करने का कोई मतलब ही नही था...

"मैने उनको बताया की मैं आपसे प्यार करने लगी हूँ.. और अगर हमारा पिछले जन्मों का कोई संबंध है तो हम इस जनम में क्यू नही मिल सकते..? उन्होने कहा मिल सकते हो! मैने ज़रिया पूछा तो उन्होने एक ही रास्ता बताया.. उन्होने कहा कि वो मुझे सपनो में आपके पास भेज सकते हैं.. उन्होने कहा की मैं जो चाहो सपने में कह सकती हूँ.. बाकी आप पर निर्भर करता है कि आप सपने को कैसे लेते हैं... फिर मेरे कहने पर उन्होने यज्ञ शुरू कर दिया.. और मैं आपके सपनो में आने लगी.." गीता की आँखों से आँसू लुढ़क गये.. प्रतिक के प्यार में नही.. एक निहायत ही शरीफ लड़के के सामने झूठ पर झूठ बोलते हुए....

"श! आप ऐसे रो क्यू रही हैं..?" प्रतिक ने उसके रोने को उसके बे-इंतहा प्यार का परिणाम माना.. सच में! प्रतिक का दिल पिघल गया था उसकी बात सुनकर.. गीता ने रुमाल निकाला और अपने आँसुओं को पोंछ लिया.. पर पुराने आँसू अभी सूखे भी नही थे कि गीता अचानक फुट पड़ी.. अपने पैर सोफे पर चढ़ाए और सिर घुटनो में दे लिया...

प्रतिक उसके पास आया और उसके सिर पर हाथ रख कर समझाने लगा," प्लीज़.. आप रोइए मत.. मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ.. दरअसल मैं भी प्यार का मतलब कुछ दिन पहले ही समझा हूँ, तनवी.. सॉरी.. तुम्हारे सपने में आने के बाद.. आप रोइए मत प्लीज़.. मेरा भी दिल दुख रहा है आपको रोते देख कर..."

'कितना फ़र्क था प्रतिक और विपिन में; एक तो वो इंसान की खाल में छिपा भेड़िया, जिसके लिए ना तो दोस्ती के मायने हैं और ना ही ज़ज्बात की कोई कद्र.. एक तरफ प्रतिक, इंसान के रूप में चंद्रभानता! कितनी शराफ़त और इंसानियत भरी हुई है इसके दिल में..'

ये सब सोचती हुई गीता ने अपने शरीर को ढीला छोड़ सिर उसके कंधे पर टीका दिया.. आँखें यूँही बरसती रही...

प्रतिक ने उसके हाथ से रुमाल लिया और उसके गालों पर आँसुओं की बनी कतार को साफ करते हुए रोकने की कोशिश करने लगा.. गीता को उसकी नज़रों में वासना का कतरा भी दिखाई नही दिया.. उसके दिल में तो सिर्फ़ प्यार ही प्यार भरा हुआ था.. धीरे धीरे गीता की सुबाकियाँ बंद हो गयी और अपने हाथ का सहारा लेकर वह सीधी बैठ गयी...

गीता के सामान्य होते ही प्रतिक अपने मन में उपजे कुछ अनसुलझे सवालों का जवाब जानने की कोशिश करने लगा," अगर आप नॉर्मल हों तो एक बार पूछू.."

गीता उसको सब कुछ सच सच बता देना चाहती थी.. पर उसका मतलब सिर्फ़ उसकी जिंदगी बर्बाद होना ही होता.. थोड़ी देर चुप रहकर उसने संभालते हुए उन संभावित सवालों को याद किया और प्रतिक की आँखों में आँखें डाल बोली," हां.. मैं ठीक हूँ..!"

"आपने मुझे टीले पर क्यू बुलाया? घर क्यू नही..?" प्रतिक वापस उठकर सामने चला गया...

"वो मुझे उस तांत्रिक ने ही ऐसा करने के लिए बोला था.. दरअसल 'यज्ञ' वहीं चल रहा था.. और यज्ञ संपन्न करने के लिए एक बार आपकी उपस्थिति ज़रूरी थी... इसीलिए उन्होने आपको वहाँ बुलाया था..." इस सवाल का जवाब गीता पहले ही याद किए हुए थी.. इसीलिए बोलते हुए वह कहीं नही अटकी...

"श.. इसका मतलब जब हम वहाँ गये तो और कोई भी वहाँ आसपास था.. गाड़ी की हवा भी उसने ही निकाली होगी.. क्या नाम है तांत्रिक का?" प्रतिक ने यूँही पूछ लिया...

"पता नही...लोग उनको अज्ञात बाबा कहते हैं.. !" गीता ने पहले से ही याद किया हुआ नाम भी बता दिया...

"एक बात मेरी समझ में अभी तक नही आई.. जब आप ही मेरे सपनो में आती थी.. और आप ही मुझे बुलाना चाहती थी.. तो ये 'तनवी' नाम का क्या चक्कर है?" प्रतिक को ये सवाल सबसे अधिक कचोट रहा था...

"वो बाबा ने ही मुझे ऐसा करने को बोला था.. दरअसल उन्होने मुझे बताया था कि मेरा नाम पिछले जनम में तनवी था.. इस नाम के कारण आप ना चाहते हुए भी खींचे चले आएँगे.. इसीलिए.."

"फिर आपने सपने में ये क्यू कहा की मैं तनवी नही हूँ.. तनवी तो बतला में रहती है.. !" एक और सवाल गीता के सामने मुँह बाए खड़ा था...

कमाल की तैयारी कर रखी थी विपिन ने.. अपने कपटी तेज दिमाग़ का इस्तेमाल करते हुए उसने छोटी से छोटी बात पर गौर किया था.. गीता को मिशन पर लगाने से पहले.. गीता के पास हर सवाल का जवाब था; पहले ही तैयार किया हुआ," ऐसा भी मैने अज्ञात बाबा के कहने पर ही किया था.. उन्होने कहा था कि यज्ञ के दौरान मुझे आपके पास नही जाना है.. आपको छूना नही है.. इसीलिए.. इसीलिए उस दिन मैने आपको देखा तक नही.. सिर झुकाए ही रही हर वक़्त.. और रात को सपने में कहीं आप मुझे छू ना लें.. इसीलिए ऐसा कहा था..!"

"ओह्ह.. पर यहाँ भी मुझे तनवी मिल गयी.. बिल्कुल जैसा आपने सपने में बताया था.. और सपने में जैसे घर के बाहर आप मुझे खड़ी दिखाई देती थी.. बिल्कुल वैसा ही घर है उनका.. मैं तो हैरान हो गया था देख कर.. आपकी बात पर मुझे पूरा विश्वास है.. पर मेरी

समझ में ये नही आ रहा की ये संयोग कैसे हुआ.. या इसके पिछे भी अज्ञात बाबा का ही हाथ है...? प्रतिक के दिमाग़ में अब भी सवालों का अतः भंडार उथल पुथल मचाए हुए था...

प्रतिक के बात पूरी करने से पहले ही तनवी बोलना शुरू हो गयी थी.. विपिन को विश्वास था कि ये सवाल भी ज़रूर किया जाएगा..," हां.. उन्होने ही अपनी मंत्र शक्ति से 'किसी तनवी' का पता लगाया था.. यज्ञ की सफरंभा के लिए मुझे पिछले जनम के नाम का प्रयोग करना ज़रूरी था.. और मेरी कही हुई बात यज्ञ के नियमों के अनुसार सच होनी भी आवस्याक थी.. इसीलिए उन्होने 'मंत्र शक्ति' से यहाँ वाली तनवी का पता लगाया और मुझे सपने में इसी जगह का प्रयोग करने को बोला था..."

"हम्मम.. " तनवी के आख़िरी जवाब का मतलब उसको पूरी तरह समझ नही आया था.. पर क्यूंकी वह उस की किसी बात पर शक नही कर रहा था इसीलिए पचाने में कोई दिक्कत नही हुई.. बतला की तनवी पूरी तरह उसके दिमाग़ से निकल चुकी थी," अब तो मुझे सपनो में आकर नही डरा-ओगी ना!" प्रतिक उसकी तरफ देखकर मुस्कुराने लगा....

बेचारी गीता प्रतिक की मुस्कुराहट का भी जवाब अपनी मर्ज़ी से नही दे पाई," बाबा ने कहा है कि जब तक हम.. वो.. शादी नही कर लेते, आपको ऐसे ही सपने आते रहेंगे.. मैं यूँही आपको टीले पर बुलाती रहूंगी.. और यूँही कहती रहूंगी कि मैं बतला मैं हूँ.. मैं गीता नही हूँ.. तनवी हूँ.. " तनवी ने 'सेक्स' शब्द की जगह 'शादी' शब्द का इस्तेमाल किया.. इतने सभ्य इंसान के सामने 'सेक्स' वो बोल ही नही पाई...

"पर ऐसा क्यू?" प्रतिक ने उत्सुकता से पूछा...

यहाँ गीता हड़बड़ा गयी.. ये पहला ऐसा सवाल था जो उसके सामने पहले नही आया था.. पर जल्द ही वह संभालते हुए बोली," हम्मम.. पता नही.. शायद यज्ञ का असर तभी तक रहेगा, जब तक हम मिल नही जाते... वो.. मैं थोड़ी देर आराम कर लूँ क्या? मुझे थकान सी महसूस हो रही है..." गीता ने पिछा छुड़ाने के लिए कहा..

"ओह शुवर! सॉरी.. मुझे आपसे एकदम इतने सवाल नही करने चाहियें थे.. नीचे ३ बेडरूम हैं.. पहले वाले को छोड़ आप कहीं भी जाकर आराम कर लें.. तब तक मैं खाने पीने का बंदोबस्त करवाता हूँ...

"शुक्रिया!" गीता थके हारे कदमों से उठी और गॅलरी की तरफ बढ़ने लगी.. अचानक पीछे से उसको प्रतिक की आवाज़ सुनाई दी..,"गीता!"

"हां..?" गीता एकदम पलट गयी...

"कुछ नही.. बस ऐसे ही.. एक बार और तुम्हारा चेहरा देखने का दिल कर रहा था.." प्रतिक के चेहरे पर मुस्कान तेर गयी..

गीता ने फीकी मुस्कान के साथ उसकी मुस्कुराहट का स्वागत किया और मुड़कर अंदर चली गयी...

रात के करीब ११ बज चुके थे... सभी को अपने अपने रूम में गये आधे घंटे से उपर हो चुका था.. बिस्तर पर लेटी हुई गीता की आँखों में नींद का नामोनिशान तक नही था. वह प्रतिक के बारे में ही सोच रही थी.. दोपहर में बेडरूम की और जाते हुए प्रतिक का उसको रोकना और फिर मुस्कुराते हुए कहना कि 'एक बार सिर्फ़ तुम्हारा चेहरा देखना चाह रहा था..' ये बात उसके दिल को छू गयी थी.. यक़ीनन एक बात तो स्पष्ट हो ही चुकी थी.. प्रतिक एक सच्चा प्यार करने वाला था.. विपिन की तरह उसमें छल कपट या किसी तरह का लालच लेशमात्रा को भी नही था.. उसको महसूस हुआ कि प्रतिक उसके दिल में उतर चुका है.. ना उतरने की कोई वजह भी तो नही थी.. प्रतिक जैसा पति तो किस्मत वालियों को ही मिरंभा है..

करवट लेते हुए गीता तड़प उठी जब उसको ख़याल आया कि प्रतिक के प्रति उसका लगाव सिर्फ़ एक छलावा है.. वह तो विपिन के हाथों की कठपुतली बन चुकी है और शायद जिंदगी भर भी उससे निजात नही पा सकती.. प्रतिक के साथ शादी तो उसकी खुशकिस्मती ही होगी.. पर आगे क्या होगा? गीता ने गहरी साँस ली...

अचानक उसका फोन बज उठा.. जो आज ही विपिन ने उसको खरीद कर दिया था.. उसके अलावा किसी और की कॉल हो ही नही सकती थी.. उठकर उसने अपने पर्स में से फोन निकाल और कान से लगा लिया,"हेलो!"

"सो तो नही गयी हो ना जाने मन?" विपिन की आवाज़ फोन पर उभरी...

"हां.. सो ही गयी थी.. फोन की आवाज़ पर उठी हूँ..!" गीता ने जान बूझ कर नींद में होने का नाटक किया...

" ये सोने के दिन नही हैं ईडियट! कुछ करने के दिन हैं.. फिर तो सारी उमर ही चैन से सोना है.. जल्दी मेरे रूम में आओ!" विपिन ने आदेश सा देते हुए कहा..

"पर.. इस वक़्त.. यहाँ..." गीता तड़प सी उठी...

"तुम किंतु परंतु बहुत करती हो.. चुप चाप जल्दी बाहर निकल कर बीच वाले बेडरूम में आ जाओ.. सब सो चुके हैं..!" कहते ही विपिन ने फोन काट दिया...

अपने गुस्से को फोन पटक कर उतारने की कोशिश करती हुई गीता उठी और ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी होकर अपने कपड़ों और बालों को दुरुस्त करने के बाद बाहर निकल गयी...

"आओ मेरी जान.. ज़रा दरवाजा बंद कर लो!" विपिन अंडरवेर में ही बैठा था.. देखते ही ग्लानि में गीता ने मुँह फेर लिया..," मुझसे ये सब नही होगा.. प्लीज़!"

"अरे.. मैं कब कुछ करने को कह रहा हूँ अपने साथ.. हा हा हा.. ये बताओ, सब ठीक से लपेट लिया ना प्रतिक को...!" विपिन ने पूछा...

"नही.. उन्हे मेरी किसी बात का विश्वास नही हुआ मुझे लगता है.. तुम ये कोशिश छोड़ ही दो तो अच्छा है...!" गीता ने जानबूझ कर ऐसा कहा....

"पर.. मेरे सामने तो ऐसी कोई बात नही कही उसने.. इस बारे में कोई जिकर तक नही किया.. ना ही कोई और सवाल पूछा.. तुम ये कैसे कह रही हो कि उसको विश्वास नही हुआ?" विपिन विचलित सा होता हुआ बोला...

"हो सकता है उन्हे तुम पर भी शक हो गया हो.. इसीलिए ना कहा हो तुमसे.. पर उन्होने ऐसे बहुत से सवाल किए थे जिनका में जवाब नही दे पाई.. और तुम भी नही दे सकोगे.. आख़िर में देख लेना.. ना तुम कहीं के रहोगे और ना ही मैं.. प्लीज़.. ये नाटक बंद करो अब.. अभी तो हम ये भी कह सकते हैं कि तुम मज़ाक कर रहे थे.. अपने साथ मुझे भी

ग्लानि के दलदल में मत घसीटो प्लीज़.. जो होना था हो चुका.. मेरी इज़्ज़त से तुम खेल ही चुके हो.. क्यू मुझे जान देने पर मजबूर कर रहे हो..." गीता एक ही साँस में बोलती चली गयी...

"तुम्हे ग़लतफहमी है.. वो बातों को परख कर देखने के नज़रिए से नही सुनता... वो सबको अपने जैसा ही समझता है.. वैसे ऐसा कौनसा सवाल किया था उसने.. जिसका जवाब तुम नही दे पाई..." विपिन ने पूछा...

"मुझे याद नही है.. प्लीज़ मुझे जाने दो वापस.. अपने घर.. मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ.." गीता गिड़गिडती हुई घुटनो के बल बैठ गयी.. और सुबकने लगी...

"तुम ऐसे हार मान गयी तो मेरा क्या होगा..? बोलो.."विपिन ने उठकर उसके कंधे पकड़े और खड़ी कर दिया.. गीता पूरी तरह टूट चुकी थी," मैं अपनी जान दे दूँगी..!"

"तुम्हारे अकेले के जान देने से काम चल जाता तो मैं तुम्हे पहले ही मरने की सलाह दे देता... पर अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारी मूवी सबसे पहले में तुम्हारे ही इलाक़े में बेचूँगा.. सोचो तुम्हारे बापू पर क्या गुज़रेगी.. वो ना जी पाएँगे और ना मर पाएँगे.. उनकी भी तो कुछ सोचो!" विपिन के चेहरे पर कुत्सित मुस्कान उभर आई...

गीता का अंतर्मन बिलबिला उठा," बापू के बारे में ऐसा क्यू कह रहे हो.. ? मैं कर तो रही हूँ सब कुछ.."

"शाबाश! इसी हौंसले से काम करोगी, तभी बात बनेगी.." विपिन अलमारी के पास गया और वापस मुड़ते हुए बोला," लो! ये पहन लो!" कहते हुए उसने गाढ़े नीले कलर की एक झीनी सी नाइटी उसकी और उछाल दी.. नाइटी का कपड़ा बहुत ही हल्का और पतला था..

उसको देखते ही गीता बिलखती हुई बोली," पर तुमने वादा किया था कि दोबारा तुम मेरे साथ ये सब नही करोगे... क्यू मुझे जिंदा लाश बनाने पर तुले हुए हो.."

"जब तक तुम मेरा कहा मानती रहोगी, मैं अपना वादा नही तोड़ूँगा.. हां.. तुम्हारे सवाल और शिकायतें अगर यूँही बढ़ती रही तो एक बात बता देता हूँ.. 'वादे' मेरे लिए कोई खास मायने नही रखते.. मैं किसी भी वादे को तोड़ने से नही हिचकूंगा अगर तुमने मेरी एक भी

बात नही मानी तो... जाओ बाथरूम में जाकर इसको पहन लो.. हाँ.. ब्रा नही होनी चाहिए बदन पर!" विपिन ने कहा और दरवाजा बंद करने लगा....

आँखों में आँसुओं का समंदर समेटे गीता बाथरूम में चली गयी....

गीता बाहर आई तो उसके हुस्न का जलवा देखते ही बन रहा था.. नाइटी उसके बदन चिपकी हुई हर हिस्से को उजागर सी करती हुई उसके नितंबों से कुछ ही नीचे तक थी.. बिना ब्रा के मस्त छतियो का सौंदर्या नाइटी में से उभर कर अलग ही दिख रहा था... शर्मिंदगी और ज़िल्लत से तार तार हो चुकी गीता सिर झुकाए बार बार अपनी नाइटी को नीचे खींचने की कोशिस करती पर उसकी स्तनों का उठान नाइटी को वापस उपर खींच लेता... और उसकी लगभग नंगी चिकनी जांघें फिर से देखने वाले को पिघलने के लिए मजबूर सा करने लगती...

वह सूबक रही थी...

"हाए.. इस जवानी पर कौन नही मार मिटेगा.. मैं तो फाँसी पर भी चढ़ने को तैयार हूँ.." विपिन ने अचानक उभर आए अपने अंडरवेर के 'उस' हिस्से को सहलाते हुए कहा..," एक बार और बस!"

"नही.. मुझे हाथ भी मत लगाना प्लीज़.. मैं पहले ही टूट चुकी हूँ.. मुझे मरने पर मजबूर मत करो!" गीता बिलखते हुए बोली...

"मैं मज़ाक कर रहा था.. अब ये रोना धोना छोड़ो.. और प्रतिक के कमरे में जाओ!" विपिन अचानक सीरीयस हो गया....

"क्या? ऐसे?" गीता चौंक पड़ी.. और आश्चर्य से विपिन की आँखों में देखा...

"हाँ.. ऐसे.. आओ, बिस्तर पर आकर बैठ जाओ.. मैं समझाता हूँ की तुम्हे क्या करना है...आज मैने तुम्हे प्रतिक के लिए ही तैयार किया है.. अब ये मत कहना कि उसके साथ भी नही करूँगी कुछ.. मैं पहले ही बहुत सब्र कर चुका हूँ.. अब ज़्यादा सहन नही होगा मुझसे.. और ध्यान रखना ये हमारे प्लान का सबसे ज़रूरी हिस्सा है.." कहते हुए विपिन उसको सारी बात समझाने लगा... गीता निस्तब्ध सी वहीं खड़ी खड़ी उसकी बातें सुनती रही...

गीता काँपते हुए कदमों से बाहर निकल कर प्रतिक के बेडरूम की और बढ़ी.. कुछ दूर जाकर उसने पिछे मुड़कर देखा; विपिन दरवाजे पर खड़ा उसकी और ही देखकर मुस्कुरा रहा था.. नज़रें घुमा वा सीधा चलती हुई प्रतिक के बेडरूम के दरवाजे पर पहुँची और हल्क से दरवाजा खटखटाया..

"कौन?" अंदर से प्रतिक की आवाज़ आई..

"मैं हूँ गीता.. प्लीज़ दरवाजा खोलो!" गीता के बोलते ही विपिन ने अपना दरवाजा बंद कर लिया...

प्रतिक दरवाजा खोलते ही गीता को देखकर चौंक पड़ा.. रोने की वजह से उसकी आँखें लाल हो गयी थी और वह भय में काँप सी रही थी," क्या हुआ गीता? क्या हुआ तुम्हे?"

बिना इजाज़त लिए ही गीता अंदर घुसने लगी तो प्रतिक ने हटकर उसको रास्ता दे दिया. पर जैसे ही प्रतिक ने लाइट ऑन की वह दूसरी बार चौंका,"ये..." पर वह बात खा गया..

गीता का पहनावा देखकर और उस पहनावे में उसको अपने पास देख कर प्रतिक का अचंभित होना लाजिमी था. ड्रेस में वो जैसे बिना कुछ पहने ही खड़ी लग रही थी.. उसके अंग अंग की स्थिति का प्रतिक को अंदाज़ा उपर से ही हो रहा था और कमर से ज़रा नीचे के बाद तो अंदाज़ा लगाने की भी ज़रूरत नही थी.. वहाँ से तो वो थी ही नंगी. प्रतिक ने कभी गीता को इस तरह की लड़की के रूप में नही जाना था.. गीता तो उसके सामने पहले ही सिर झुकाए खड़ी थी.. शर्मिंदा सा होकर प्रतिक भी ज़्यादा देर तक उसको नही देख पाया.. अपना चेहरा दूसरी और करके बोला," क्या हुआ गीता? इस समय यहाँ...?"

"ववो.. मुझे बुरे सपने आ रहे हैं.. मुझे डर लग रहा है.." गीता ने जवाब दिया....

"श.. सपनो से डरने की क्या ज़रूरत है.. थोड़ा पानी पी लो और सो जाओ..." टेबल पर रखे जाग से प्रतिक ने गिलास में पानी डाला और एक तरफ देखते हुए गीता को पकड़ा दिया..

"मुझे सच में बहुत डर लग रहा है प्रतिक.. मैं.. मैं यही सो जाऊ क्या?" गीता ने थरथरते लबों से बात पूरी की...

"यहाँ? तुम्हे लगता है ये ठीक रहेगा?" प्रतिक अलमारी में कुछ ढूंढता हुआ बोला...

"पर मुझे डर लग रहा है.. मैं अकेली नही सो सकती...!" गीता ने ज़ोर सा देकर कहा.. विपिन ने उसको कहा था कि अगर वापस आ गयी तो उसके पास सोना पड़ेगा..

प्रतिक अलमारी से चादर निकाल कर लाया और उसको गीता के कंधों पर डाल कर उसके चारों और लपेट दिया..," आओ, बैठो!"

प्रतिक के चादर लपेटने का अभिप्राय जान गीता शर्म से पानी पानी हो गयी.. स्पष्ट था की प्रतिक को उसका 'ये' पहनावा हरगिज़ पसंद नही आया था.. टीस भरी एक साँस गीता के अंदर से बाहर निकली.. कहाँ प्रतिक है और कहाँ विपिन! प्रतिक की इस एक अदा ने गीता को हमेशा हमेशा के लिए उसकी दीवानी बना दिया.. हज़ारों दुवाए देता हुआ गीता का दिल उस पर न्योछावर हो गया...

पैर नीचे लटकाए हुए ही वह बिस्तर पर बैठ गयी.. काफ़ी देर तक कमरे में चुप्पी छाई रही.. गीता ने कमरे में चारों और नज़र दौड़ाई और उसको 'फॅन्सी लाइट' के साथ जुड़ा कैमेरा ढूँढने में कोई दिक्कत नही हुई.. कैमेरा बिस्तर पर ही फोकस किया हुआ प्रतीत हो रहा था... विपिन ने उसके बारे में पहले ही बताते हुए प्रतिक के साथ सेक्स ना करने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी भी दी थी..

गीता को अब प्रतिक से प्यार करने में किसी तरह की कोई दिक्कत नही थी.. बल्कि अब तो यह उसका सपना सा बन गया था.. अब प्रतिक ही उसका पहला और आख़िरी प्यार था.. पर प्रतिक का व्यक्तिताव ही ऐसा था की गीता को समझ नही आ रहा था की शुरुआत कैसे करे..

"सो जाओ!" प्रतिक ने कहा और दूसरी और करवट लेकर कर लेट गया..

"एक मिनिट..!" गीता ने दीवार के साथ लगते हुए अपनी टाँगें सीधी बिस्तर पर फैला ली.. ये सब उसने इस तरह से किया की चादर उसकी कमर तक रह गयी और उसकी नंगी चिकनी जांघें पूर्ण रूप से अनावृत हो गयी.. इतनी उपर कि प्रतिक अगर करवट उसकी और ले लेता तो वह गुलाबी पैंटी के किनारों को भी साफ देख सकता था..

"हम्मम.." प्रतिक दूसरी और मुँह किए हुए ही बोला..

"इधर घूम जाओ ना प्लीज़.." गीता ने कहते हुए प्रतिक की तरफ वाली टाँग को घुटने से मोड़ लिया.. नाइटी अब और उपर सरक गयी और गीता की पैंटी साफ झलकने लगी...

प्रतिक ने जैसे ही करवट बदली, गीता का ये रूप देखकर वो भड़क गया," गीता.. मुझे तुम्हारी ये हरकत कतई पसंद नही है.. मैने तुम्हे अच्छी लड़की समझा था.. ये सब बकवास बंद करो अब!"

"मुझसे 'प्यार' कर लो ना प्लीज़.. मैं तुम्हारे लिए तड़प रही हूँ.. जाने कितने दीनो से.." अपने दिल को पत्थर सा बनाते हुए गीता ने ये सब कहा और प्रतिक से लिपट जाने के लिए उसकी और लपकी.. प्रतिक उसकी इस हरकत पर हतप्रभ था.. धक्का सा देकर उसने गीता को वापस पटक दिया..,"प्यार! तुम जैसी लड़कियाँ समझती भी हैं कि प्यार आख़िर होता क्या है.. सेक्स की संतुष्टि को तुम प्यार मानती हो... और दावा करती हो कि हम जनम जनम के साथी हैं.. धिक्कार है तुम्हे.. विपिन भाई ने ठीक ही कहा था.. ये तुम बाप बेटी की ही साज़िश थी.. शर्म आनी चाहिए तुम्हे.. अपने शरीर को मुझे सौंप कर तुम ये साबित करना चाहती हो कि तुम मुझसे प्यार करती हो... अभी के अभी निकल जाओ यहाँ से" प्रतिक का चेहरा क्रोध के मारे तप गया था और आँखें जैसे अंगारे उगल रही थी..

गीता के पास बोलने के लिए कुछ था ही नही.. जो था वो वह बोल नही सकती थी.. शर्म से गर्दन झुक जाने पर भी वह हाथ जोड़ कर आँसू बहाती हुई यही प्रार्थना करती रही.." प्लीज़ प्रतिक.. मुझसे प्यार कर लो.. यहाँ से मत निकालो प्लीज़! मुझसे प्यार कर लो..."

प्रतिक के सब्र का बाँध टूट गया.. गुस्से से वह उठा और गीता का हाथ पकड़ कर लगभग खींचते हुए वह बाहर ले गया.. धक्का सा दिया और अपना दरवाजा बंद कर लिया.. एक दो बार गीता ने हल्का सा दरवाजा पीटा और कराहते हुए वहीं घुटनो के बल बैठ गयी.. विलाप सा करते हुए...

प्रतिक का दिमाग़ चकरा रहा था.. समझ में नही आया कि क्या करे.. अचानक उठा और बाहर निकल कर ज़बरदस्ती सा गीता को उठाकर उसके कमरे में छोड़ आया और बाहर से कुण्डी लगा दी.... गीता बिलखती रह गयी...

काफ़ी देर तक गीता यूँही आँसू बहाती दीवारों को घूरती रही.. उसके पास अब उसका कुछ नही बचा था.. प्यार मिला भी तो आधा अधूरा!

अचानक उसने अपने पर्स में से एक तरफ से कोरा एक कागज और एक पेन निकाला और आँसुओं से कागज गीला करते हुए उसपर कुछ लिखने लगी...

# १९

अगली सुबह सुबह एक चीख सुनकर बिस्तर से उठने की तैयारी कर रहा प्रतिक चौंक कर बाहर निकला.. नौकर गीता के कमरे के बाहर खड़ा था और अपने दोनो हाथों से अपना सिर पकड़ रखा था," साहब.. मेम साहब!"

प्रतिक भागता हुआ उस तरफ गया," क्या हुआ?" पर अंदर झाँकने के बाद उसको दोबारा पूछने की ज़रूरत ही ना पड़ी.. गीता की लाश अंदर पंखे से लटकी झूल रही थी....

अगले ही पल प्रतिक को अपना दिमाग़ चकराता हुआ महसूस हुआ. उसी एक पल में पिछली रात उसके और गीता के बीच में जो कुछ भी हुआ, सब उसकी आँखों के सामने घूम गया. शायद प्रतिक इसके लिए खुद को ज़िम्मेदार मान चुका था. जैसे तैसे उसने दीवार पकड़ी और अपने सिर को हाथों में दबोचे नीचे बैठता चला गया.

पास खड़ा नौकर हैरत से कभी गीता के शरीर की और; कभी प्रतिक की और देखता रहा. अचानक उसकी समझ में नही आया की क्या करे और क्या ना करे. धीरज, संकेत और सौरभ नीचे सोए हुए थे.

नौकर ने नीचे जाकर संकेत को बताने की सोची ही थी की विपिन अपने रूम से बाहर निकला. प्रतिक को इस हालत में बैठे देख वह तेज़ी से उसकी और आया और गीता के बेडरूम में झाँकते ही उसके मुँह से निकला,"ओह माइ गॉड!"

विपिन लगभग भाग कर बेड पर चढ़ा और गीता के शरीर को उसकी जांघो के करीब से पकड़ कर उपर उठा लिया," इधर आओ, मेरी मदद करो जल्दी!" उसने नौकर को आवाज़ दी.

"शिट! शी ईज़ नो मोर!" विपिन ने आह भारी और एक घुटना उसकी लाश के पास टीका अपनी आँखों से आँसू पौच्छे..

तब तक प्रतिक भी कमरे में आ चुका था. उसने विपिन के कंधे पर हाथ रखा. जैसे ही विपिन उसकी तरफ घूमा, प्रतिक उससे लिपट गया," भाई! ये मैने क्या कर दिया?"

नौकर प्रतिक की बात सुनते ही चौंका.. बिना देर किए वह नीचे की और खिसक लिया..

"क्या मतलब? मतलब तुमने ये सब...?.. मगर क्यू यार?" विपिन ने प्रतिक की आँखों में झाँका..," ये क्या किया तुमने?"

"हां भाई.. मैने ही.. मैने ही उसको मरने के लिए मजबूर कर दिया..!" प्रतिक आँसू बहाते हुए बोरंभा जा रहा था," रात ये मेरे कमरे में आई थी.. मैं खुद से मिलन की इसकी बेकरारी को हवस की भूख समझ बैठा.. 'ये' बेचारी तो अपने बरसों पुराने 'अधूरे प्यार' को पूरा करने आई थी.. और मैने इसको जाने क्या क्या कह दिया.. बे-इज़्ज़त करके निकाल दिया इसको, अपने कमरे से! " कहते हुए वह इस जहाँ से रुखसत हो चुकी गीता से लिपट गया...और फुट फुट कर रोने लगा...

"संभालो अपने आपको यार.. तुम खुद को इसके लिए दोषी क्यू मानते हो? तुमने सिर्फ़ इसको कमरे से ही निकाला था.. मरने के लिए तो नही बोला ना!" विपिन ने उसकी गीता के जिस्म से अलग किया..

"पर भाई! ये मुझसे कितना प्यार करती होगी.. क्या कर लिया इसने? देखो तो! आआआआअ..आआआआअ" प्रतिक का रुदन पूरी कोठी में फैल गया...

तभी कमरे में संकेत, सौरभ और धीरज ने प्रवेश किया.. सभी को खबर लग चुकी थी.. भन्नाये हुए सभी आकर बिस्तर के पास खड़े हो गये...

"ये क्या हो गया यार? कैसे हुआ ये सब?" संकेत ने झल्लते हुए बोला...

" ये मुझसे प्यार करती थी भाई.." प्रतिक ने बोलना शुरू किया ही था की विपिन उसकी आवाज़ को दबा खुद सब कुछ बताने लगा.. धीरज गौर से बोलते हुए विपिन के चेहरे की और ही देखता जा रहा था...

"ओह माइ गॉड!" पूरी बात सुनकर संकेत और सौरभ के मुँह से निकला...," ये तो बहुत बुरा हुआ? अब क्या करें!" संकेत गीता के बारे में बात कर रहा था...

"अब क्या कर सकते हैं?" अब तो इसको घर पहुँचने की तैयारी करो!" धीरज के मुँह से निकला....

"नही! इसको घर पर नही भेज सकते.. ये अपने बाप से झूठ बोलकर आई थी.. कि कॉलेज के टूर पर जा रही है.. इसका कुछ और ही करना पड़ेगा!" विपिन ने अपनी राई दी..

"नही.. मैं लेकर जाऊंगा इसको.. इसके घर! इसकी चिता को अग्नि दूँगा.. अब भी क्या मैं इसके प्यार को नज़रअंदाज कर दूं..!" प्रतिक भावुक हो गया था...

"अब फिल्मी बातें छोड़ दे यार.. जो होना था वह हो चुका.. विपिन सही कह रहा है.. हमें इसको ठिकाने लगाने के बारे में सोचना चाहिए.. वरना सब पर मुसीबत आ सकती है..." धीरज ने प्रतिक को कहा...

प्रतिक बिलखता हुआ फिर से गीता से लिपट गया," नही! जो कुछ होगा, मैं भुगत लूँगा.. पर इसको इसके घर तक मैं लेकर ही जाऊंगा.... इसकी आत्मा को फिर से नही भटकने नही दूँगा मैं...!"

"वेरी गुड!" दरवाजे पर सख्त और पैनी आवाज़ सुनकर सभी चौंक कर पलते.. वर्दीधारी इनस्पेक्टर एक प्यादे को साथ लिए दरवाजे पर खड़ा था.. सभी के खड़े होने पर वह टहरंभा हुआ अंदर आया और कुछ देर गौर से गीता की लाश को देखता रहा..," तो लड़कियों की आत्मा से खेलते हैं आप लोग?" इनस्पेक्टर ने बारी बारी चारों को सुर्ख नज़रों से घूरा....

"एक मिनिट.. सर.. आप मेरी बात सुनिए..!" विपिन ने कहा तो इनस्पेक्टर ने उसको अपनी उंगली सीधी कर रुकने का इशारा किया," काफ़ी देर से तुम सब की ही सुन रहा हूँ.. सवर्टें किधर है...?"

"एक मिनिट!.." संकेत कहते हुए बाहर निकल गया और बाल्कनी में खड़े होकर आवाज़ लगाई..

नौकर अगले ही पल इनस्पेक्टर के सामने था..," जी.. सर!" उसकी आवाज़ काँप रही थी..

"डरो मत रामपाल.. सब खुल कर बताओ क्या हुआ है यहाँ पर...!" इनस्पेक्टर ने पूछा...

"मुझे कुछ नही पता साहब.. मैं तो रात से नीचे था.. सच में!" नौकर ने बीच में गला साफ करके बात पूरी की...

"तो फोन क्यू किया था....? मैं कह रहा हूँ ना.. किसी से डरने की ज़रूरत नही है... मेरे अंदर किए हुए सज़ा पूरी करने से पहले बाहर नही आते.. और तब तक तो ये चेहरा भी भूल चुके होंगे तुम्हारा.. रही नौकरी की बात.. तो तुम्हारी चोरी की आदत के बावजूद मैं तुम्हे फिर से अपने घर रखने को तैयार हूँ.. अब सीधे सीधे सारी बात समझाओ मुझे.... वरना सबसे पहले तुम्हारी ठुकाई होगी अब!" इनस्पेक्टर ने दो टुक बात कही और नौकर की गर्दन नीचे हो गयी... उसने तो रिक्वेस्ट भी करी थी कि मेरा नाम सामने मत आने देना.. पर इनस्पेक्टर ने पोलीस और मुखबिर के रिश्ते को नही निभाया...

"आप हमारी भी बात सुन लीजिए एक बार.. इसको पूरी बात का नही पता..!" विपिन ने फिर से इनस्पेक्टर को टोका... बाकी चुपचाप खड़े नौकर और इनस्पेक्टर को देख रहे थे...

"सबकी सुनी जाएगी...! बोलो रामपाल!" इनस्पेक्टर ने विपिन की बात को तवज्जो नही दी...

"मुझे ज़्यादा नही पता साहब.. मैं सुबह मेम साहब को चाय देने आया था.. दरवाजा खटखटाया तो पता लगा कि वो तो खुला हुआ है.. फिर भी मैने २-४ बार आवाज़ देकर देखा.. पर मेडम ने कोई जवाब नही दिया..." कहकर नौकर रुक गया...

"फिर..?" इनस्पेक्टर ने रामपाल की छाती पर डंडा रख दिया...

"फिर साहब मैने दरवाजा धकेला तो.." रामपाल ने कहकर अपनी उंगली गीता की लाश की और उठा दी...

"मतलब दरवाजा अंदर से बंद नही था.. सही है ना?" इनस्पेक्टर ने रामपाल को रिलॅक्स करने के लिए उसका कंधा थपथपाया....

"जी साहब!" नौकर ने नज़रें उठाकर कहा...

"इसका मतलब ये खून भी हो सकता है.. हम्म!"

इनस्पेक्टर ने गीता की लाश के पास बैठे प्रतिक को देखा ही था की वह बोल पड़ा," एक मिनिट सर...... रामपाल! तुमने दरवाजे की कुण्डी बाहर से खोली थी या नही..."

"नही साहब.. दरवाजा तो पहले ही अंदर और बाहर दोनो तरफ से खुला था.. मेरे खटखटते ही खुल गया था.. अपने आप!" रामपाल ने बात इनस्पेक्टर की और देखते हुए कही....

"ये बाहर से कुण्डी लगाने का क्या मामला है? उसको ज़बरदस्ती रोक रखा था क्या?" इनस्पेक्टर ने प्रतिक को तिरछी निगाहों से देखते हुए कहा....

"मैं पूरी बात बताऊंगा सर! पर मैं रात को करीब एक बजे के आसपास तनवी को उसके कमरे में छोड़ बाहर से कुण्डी लगाकर गया था... फिर कुण्डी खोली किसने..?" प्रतिक ने आश्चर्य से वहाँ मौजूद सभी लोगों को देखा....

"हम्म.. अगर तुम्हारी बात सच्ची है तो ये एक बहुत बड़ा पॉइंट है... इसका मतलब कि तुम्हारे उसको क़ैद करने और नौकर के आने के बीच कोई और लाश को पहले ही देख चुका था.. या हो सकता है कि उसी ने इसका खून भी किया हो..तुम सब के अलावा अगर घर में कोई और भी है तो उसको भी बुला लो!" इनस्पेक्टर ने संकेत की और इशारा किया...

"नही.. बस हम ७ ही थे घर में.. रामपाल समेत!" संकेत ने जवाब दिया...

"मतलब खूनी तुम ही हो?"

"क्याआआ?" संकेत उछल पड़ा...

"मेरे कहने का मतलब तुम में से ही कोई है.. एक मिनिट.. इनस्पेक्टर ने मोबाइल निकाला और थाने में फोन किया," इनस्पेक्टर करनवीर बोल रहा हूँ.. ४३७ सेक्टर. ३ में लड़की की लाश है.. जल्दी से इसको हॉस्पिटल लेजाकर पंचनामे का प्रबंध करो...!" इनस्पेक्टर ने फोन काटा और प्रतिक की और इशारा करते हुए बोला," आ जाओ मेरे साथ.. बाकी सब यहीं रहेंगे... !" उसको प्रतिक ही गीता का सबसे नज़दीकी दिखाई दिया... फिर अपने

कांस्टेबल को हिदायत देते हुए बोला," २ लोगों को यहीं खड़ा करो और बाकी को पूरे मकान की तलाशी लेने को बोलो...!"

"हम्मम.. अब बताओ, कौनसी पूरी बात बता रहे थे..?" इनस्पेक्टर करनवीर ने प्रतिक के बेडरूम में जाकर उसके सामने बैठते हुए पूछा....

प्रतिक ने भावुक सा होते हुए अपने सपनो से लेकर टीले पर जाने की, गीता के घर पहुँचने की, बतला आने तक की और बाद में विपिन के साथ गीता को लेकर वहीं पहुँचने की, और गीता द्वारा बताई गयी सारी दास्तान सुना दी... पर अब उसने बतला में भी तनवी मिलने की बात का ज़िक्र करना ज़रूरी नही समझा.. क्यूंकी गीता की तांत्रिक वाली बात पर उसको पूरा यकीन हो गया था.. और मानने लगा था की उसके सपनो का कारण गीता ही थी...

"तुम्हे नही लगता कि कोई तुम्हारी मन-घड़ंत कहानी पर फिल्म बनाकर अच्छा पैसा कमा सकता है? हर किसी को ये स्क्रिप्ट मत सुनाया करो.. समझे! अब मुझे पागल समझना छोड़ो और काम की बात बताओ!" इनस्पेक्टर प्रतिक की बात बंद होते ही शुरू हो गया...

"मुझे भी यही लगता था की आप विश्वास नही करेंगे.. पर यही सच है.. कल रात उसकी हरकत से मेरे उसके बारे में विचार ही बदल गये थे.. और मैं उसको ज़बरदस्ती उसके कमरे में छोड़कर बाहर से कुण्डी लगा आया..!" प्रतिक अपनी बात पर अड़ा रहा...

"तुम्हारा कहना है कि कल वो खुद चलकर तुम्हारे कमरे में आई थी.. तुमसे सेक्स करने के लिए बेताब होकर..!" इनस्पेक्टर ने उसकी बात का निचोड़ निकालते हुए कहा...

"जी!"

"इससे उसको क्या मिरंभा.. अगर वह सेक्स की भूखी ही होती तो वो तो उसको कहीं भी मिल सकता था.. काफ़ी सुंदर थी वो!" इनस्पेक्टर ने तर्क दिया...

"जी.. पर जाने क्यू उस वक़्त मैं ये सोच नही पाया..!" प्रतिक ने कहा..

"वो तांत्रिक कौन है? कभी मिले हो?"

"जी नही.. पर विपिन मिला है.. उसने धीरज को बताया था.. कल!" प्रतिक ने स्पष्ट किया...

"हम्मम.. लेट'सी.. वैसे तुम्हे क्या लगता है.. अगर तुमने उसको नही मारा तो फिर किसने मारा होगा...!" इनस्पेक्टर ने प्रतिक के दिल को कुरेदने की कोशिश की...

"मैं ही उसकी मौत का कारण हूँ सर!" प्रतिक फिर से भावुकता में बहते हुए बोला...," मैने उसके प्यार और ज़ज्बात को समझने में भूल की..."

"पर वो कुण्डी किसने खोली.. किसीने कुछ बताया है?"

"जी नही.. नौकर के चिल्लाने के बाद में ही सबसे पहले वहाँ पहुँचा था.. बाद में विपिन भाई आए और सबसे बाद में नीचे सो रहे बाकी तीनो..!"

"ये.. विपिन पर कितना भरोसा है?"

"जब भाई ही कह रहा हूँ सर.. तो भरोसा ना करने वाली बात तो बेमानी हो गयी ना... वो 'सच' में ही मेरे भाई जैसा है... और यकीन मानिए.. गीता ने स्यूयिसाइड ही की है.. किसी के बारे में भी ऐसी बात सोची ही नही जा सकती...!"

"हम्मम.. पंचनामे के बाद सब क्लियर हो ही जाएगा.. चलो थाने चलकर आराम से बात करते हैं...बाकी लोगों को भी साथ ले लो....!"

इनस्पेक्टर प्रतिक के साथ रूम से बाहर निकला ही था की पोलीस वालों में से कुछ कपड़े उठाए उनकी ही और आता दिखाई दिया... करनवीर वहीं खड़ा हो गया!

"सर! सिर्फ़ ये लेडीज कपड़े मिले हैं.. एक रूम से.. बाकी कुछ खास नही था!" पोलीस वाले ने आते ही कपड़े इनस्पेक्टर करनवीर को दिखाए...

प्रतिक कपड़े देखते ही तपाक से बोला," ये गीता के ही कपड़े हैं.. कल उसने दिन में यही पहन रखे थे...

"हम्मम.. कहाँ से मिले ये?" करनवीर ने पूछा...

"सर.. वो लास्ट वाले बेडरूम के बाथरूम से..!"

प्रतिक आश्चर्य से बोला," क्या? पर...?" पोलीस वाला विपिन के कमरे की तरफ इशारा कर रहा था...

"पर क्या?" करनवीर ने उत्सुकता से प्रतिक की और देखा...

"नही.. कुछ खास नही सर!" प्रतिक अपने मन की बात को खा गया...

"देखो.. बात खास है या आम, ये मैं सोचूँगा.. दिल में कोई बात मत रखो.. जो कुछ भी है मन में.. सब निकाल दो..."

"सर, रियली कोई खास बात नही है.. मैं सिर्फ़ ये सोच रहा था कि गीता के कपड़े विपिन के बाथरूम में कैसे आए.." प्रतिक ने जवाब दिया..

"यही तो वो सवाल हैं बेटा, जिनके जवाब मुझे ढूँढने हैं.. विपिन ने तुम्हारी प्रेम कहानी में इतना इंटेरेस्ट क्यू लिया? वह वहीं रहकर तुम्हे बुलाने की बजाय गीता को यहाँ लेकर क्यू आया..? विपिन तांत्रिक से क्यू मिला? कुण्डी किसने खोली? और अब ये उसके कपड़े विपिन के बाथरूम में कैसे पहुँचे.. खैर.. रात को जब गीता तुम्हारे पास आई तो क्या यही कपड़े पहन रखे थे उसने??" करनवीर ने पूछा...

"जी नही.. वो कोई और ड्रेस थी..?" प्रतिक ने जवाब दिया...

"मतलब? क्या ये भी नही थी जो उसके शरीर पर अब है?" इनस्पेक्टर अपना सिर खुजाता हुआ बोला...

"जी नही.. दरअसल उस ड्रेस की वजह से ही मुझे गुस्सा आया था.. ऐसी ही ऊटपटांग डाल रखी थी..."

"आओ मेरे साथ..!" कहकर करनवीर ने सिपाही को ड्रेस साथ रखने को बोला और प्रतिक फिर से गीता वाले कमरे में ले गया.. गीता की लाश को हॉस्पिटल वाले ले जा चुके थे.. वहाँ खड़े सभी लोगों का चेहरा उतरा हुआ था... सभी के चेहरे पीले पड़ गये थे...

"ज़रा कमरे में ढुंढ़ो, वो कपड़े कौनसे हैं...?" करनवीर ने प्रतिक को इशारा किया....

प्रतिक को अलमारी में ज़्यादा ताकझांक नही करनी पड़ी.. निहायत ही अश्लील नाइटी ऐसे ही बीच वाले खाने में फैंकी हुई थी... प्रतिक उसको उठाने को झुका तो इनस्पेक्टर ने मना कर दिया," हाथ मत लगाओ तुम इसको..! और एक सिपाही से उसको सावधानी से उठा लेने को बोला...

"अब इसका बॅग खोलकर इसके सारे कपड़े निकालो...!" करनवीर ने सिपाही को बोला.. सिपाही ने बॅग उलट कर सारे कपड़े बिस्तर पर उलट दिए.. 'उस' एक नाइटी के अलावा गीता के पास इस तरह का कोई और उत्तेजक कपड़ा नही था.. बल्कि सारे कपड़े शरीर को लगभग पूरा ढकने वाले थे... इनस्पेक्टर ने इस बात पर गौर किया और सबको साथ लेकर चलने का इशारा पोलीस वालों को किया.

आधे घंटे बाद पाँचों करनवीर के सामने बैठे थे...

इनस्पेक्टर ने विपिन को कुर्सी बदल कर बीच में उसके सामने आने को बोला.. विपिन ने वैसा ही किया और प्रतिक लाइन में सबसे आख़िरी कुर्सी पर चला गया...

"तुम इतने थके हुए क्यू लग रहे हो? रात भर जागे हो क्या?" करनवीर ने विपिन से पूछा..

"जी नही तो.. मैं ठीक हूँ बिल्कुल.. और जो थोड़ा बहुत तनाव आप मेरे चेहरे पर देख रहे हैं.. वो 'बेचारी' गीता की लाश देखने के कारण है.. उसके साथ सच में ही बहुत बुरा हुआ?" विपिन ने सफाई के साथ जवाब देते हुए खुद को संभाला...

"तुम्ही गीता के कातिल हो!" करनवीर ने तपाक से कहा...

"क्कक्या बकवास कर रहे हैं आप? उसने ख़ुदकुशी की है.. सभी जानते हैं.. प्रतिक ने उसके साथ संबंध बनाने से इनकार कर दिया.. इससे वह हताश हो गयी..." विपिन एक

बार तो सकपका गया था..

लगभग यही एक्सप्रेशन प्रतिक के चेहरे पर भी आए थे," सर आप बेवजह विपिन पर शक कर रहे हैं..!"

"मुझे किसी पागल कुत्ते ने काटा है क्या जो मैं इस पर बेवजह शक कर रहा हूँ.. मैने तुम पर नही किया.. हालाँकि, तुम उसके साथ सबसे ज़्यादा देर तक थे.. मैं ये भी कह सकता था कि तुमने ही ज़बरदस्ती करने की कोशिश की और जब नही मानी तो उसको मारकर फाँसी पर टाँग दिया.. पर मैने नही कहा ना? हमारा रोज़ का यही काम होता है बच्चू.. हम कातिल को नज़रों से पहचान लेते हैं.."

इनस्पेक्टर बोलते बोलते उत्तेजित सा हो गया था.. टेबल पर रखा पानी का गिलास खाली करते हुए वह फिर बोलना शुरू हो गया..

"मेरे कहने का ये मतलब था कि अगर तुम उसको यहाँ लेकर नही आते तो उसके साथ ये सब नही होता.. है ना?

"ज्जई.. ये तो है.." विपिन ने नज़रें झुका ली...

"तो क्यू लेकर आए उसको? तुम्हारा क्या फायदा था इसमें..?" करनवीर ने ज़ोर देकर पूछा...

"मेरा क्या फायदा होता भला.. मैने तो जो किया, प्रतिक के लिए किया..!" विपिन ने सफाई दी..

"ऐसा क्या कर दिया तुमने, प्रतिक के लिए..." करनवीर ने फिर पूछा....

"जी.. वो प्रतिक यहाँ किसी लड़की के चक्कर में ही आया था.. गीता ने जब मुझे ये बताया कि... दरअसल प्रतिक को पिछले कई महीनो से सपने आ रहे थे.. तो इसने मुझे साथ लेकर उस लड़की के पास जाने का फैंसला किया.. लड़की ने हमें टीले.." बोलते हुए विपिन को करनवीर ने बीच में ही रोक दिया..," ये सब बकवास में सुन चुका हूँ... ये बताओ गीता ने तुम्हे क्या बताया?"

"जी यही कि सब उसने ही किया था.. एक तांत्रिक के साथ मिलकर... उसने मुझे बाते की.........." विपिन ने वही बातें दोहरा दी जो पहले दिन गीता ने प्रतिक को और आज प्रतिक ने इनस्पेक्टर को बताई थी....

"तुम्हे ये सब गीता ने कैसे बता दिया.. बताना होता तो उसी दिन बता देती जिस दिन तुमने उसको कॉलेज छोड़ा था... या तुमने बाद में उसके साथ कोई ज़बरदस्ती की थी...?" करनवीर ने पूछा...

सवाल पर एक बार तो विपिन बग्लें झाँकने लगा.. फिर सहज होते हुए जवाब दिया," अब ये तो वही बता सकती थी कि उन्होने मुझे क्यू बता दी.. मैने सिर्फ़ उसको ये बताया था कि प्रतिक किसी 'तनवी' के चक्कर में बतला गया है...

"क्क्या? क्या नाम बताया तुमने?" इनस्पेक्टर अचानक चौंक पड़ा..

"जी तनवी!" विपिन ने जवाब दिया...

"श.. अच्छा!" करनवीर ने घूर कर प्रतिक की और देखा और सामने देखते हुए बोला," फिर?"

"ये सुनकर वो बेचैन सी हो गयी और उसने प्रतिक ने बात करवाने को कहा.. पर जब प्रतिक का फोन नही मिला तो उसने मुझे ही सब कुछ बता दिया..." विपिन ने इतनी देर में ही बात बना ली थी....

"पर तुम उसके पास दोबारा करने क्या गये थे?" करनवीर ने फिर पूछा...

"जी.. वो मैं सच्चाई का पता लगाना चाहता था.. और जो कुछ भी हो रहा था.. मुझे किसी साजिश की बू आ रही थी..." विपिन ने लंबी साँस लेकर अपने आपको अगले सवाल के लिए तैयार किया....

"तांत्रिक से मिले हो तुम?" करनवीर ने पूछा..

"ज्जई.. नही!" विपिन के ऐसा कहते ही उसके साथ बैठे धीरज ने उसको हैरत से देखा.. विपिन ने उसका हाथ दबाकर चुप रहने का इशारा किया तो वह बिफर उठा," मेरा हाथ क्यू दबा रहे हो भाई.. जो सच है.. वही बताओ ना.. कल तुमने मुझे बताया था कि....."

विपिन ने सकपका कर उसकी और देखा.. ," वो मैने यूँही कह दिया था यार.. ताकि तुम्हे उसकी बात पर विश्वास हो जाए..."

"कमाल है ना? तुम सच्चाई का पता लगाना चाहते थे.. पर तांत्रिक से मिले बिना ही तुम्हे उसपर विश्वास हो गया.. तुम हर हालत में ये चाहते थे की प्रतिक को गीता की बात पर.. या मैं इसको सही करके कहूँ तो तुम्हारी बनाई हुई बात पर विश्वास हो जाए, इसीलिए तुमने इनको झूठ बोल दिया कि मैं तांत्रिक से मिल चुका हूँ.. जब तुम किसी से मिले ही नही तो छानबीन क्या घंटा की तुमने..!" करनवीर कुर्सी से खड़ा हो गया....

विपिन के पास कोई जवाब नही था.. वो चुप बैठा सामने देखता रहा...

"बोलते क्यू नही..?" करनवीर वापस कुर्सी पर बैठ गया..

सौरभ और संकेत जो अब तक परेशान से बैठे थे, वो भी मामले में दिलचस्पी लेने लगे थे...

"अब मैं क्या बोलूं सर.. आप बेवजह बात को घुमा फिरा कर देख रहे हैं..." विपिन हताश सा हो गया था...

"एक बात बोलूं? तुम पढ़े लिखे दिखाई देते हो इसीलिए अपना भेजा खपा रहा हूँ.. वरना यहाँ बातों को घुमाने की ज़रूरत नही पड़ती.. हाथ घूमने से काम जल्दी बन जाता है.. वो चीखें सुन रहे हो ना तुम?" करनवीर ने तैश में आकर कहा...

"जी!" विपिन और कुछ नही बोला...

"अब ध्यान से सुनो! जितनी कहानी मेरी समझ में आ गयी है.. वो मुझसे सुनते जाओ.. और बीच बीच में मेरे सवालों को नोट करते जाना और आख़िर में सबका जवाब एक साथ देना... वरना मैं भूल जाऊंगा की तुम भी मेरी तरह इंसान हो!" करनवीर ने कड़वे लहजे में बात कही और...शुरू हो गया..

"मुझे नही पता कि सपने वाला क्या ड्रामा था और ना ही मैं उनका जिकर करूँगा.. पर जब प्रतिक बतला आ गया तो जाने तुम्हे क्या खुजली शुरू हो गयी.. तुम गीता से मिले.. पता नही कैसे और क्यू, पर तुमने प्रतिक के सपने वाली बात का फायदा उठाने के लिए गीता को ज़बरदस्ती अपने साथ मिलाया और कहीं प्रतिक तुम्हारे हाथ से ना निकल जाए इसीलिए तुम गीता को यहीं ले आए.. तुमने उसको अश्लील सी नाइटी उसको पहनाई और प्रतिक के कमरे में भेज दिया.. उसके पास इस तरह का कोई और कपड़ा क्यू नही मिला..सबूत हैं उसके वो कपड़े, जो उसने कल दिन में पहन रखे थे और रात को तुम्हारे बाथरूम में मिले.. कुछ कहना चाहते हो इस बारे में...?"

"मुझे नही पता की उसके कपड़े मेरे बाथरूम में कैसे आए...? हो सकता है जब में बाहर था तो वो बाथरूम में कपड़े चेंज करके गयी हो... सर आप.." विपिन के माथे पर पसीना छलक आया.. उसको अहसास हो चुका था कि वो घिरता जा रहा है...," मैं उसको कोई भी नाइटी पहन'ने को क्यू दूँगा भला...? मेरा क्या फायदा होता इसमें..?"

"यही तो मुझे पता करना है कि तुम्हारा क्या फायदा होता? खैर.. गीता कोई बच्ची नही थी, अगर वह यूँही तुम्हारे कमरे में कपड़े बदलने गयी होती तो अपने कपड़े कभी वहाँ नही छोड़ती.. खास तौर पर वो ब्रा तो बिल्कुल नही जो वहाँ मिली... गीता एक ग़ैरतमंद लड़की थी जिसको तुमने वैश्या के तौर पर प्रतिक के सामने पेश किया".... इनस्पेक्टर की इस बात पर सामने बैठे सभी लोगों के चेहरे खुल गये..

"म्मै.. मेरी कुछ समझ में नही आ रहा सर आप कह क्या रहे हैं...!"

"अभी समझ में आ जाएगा..," वो गीता का लेटर लेकर आना!" करनवीर ने ऊँची आवाज़ में कहा. विपिन का चेहरा आश्चर्य और भय के मारे सफेद पड़ गया...

"जी.. लाया साहब!" और एक सिपाही आकर करनवीर को लेटर दे गया..

"सुनो.. गीता ने क्या लिखा है मरने से पहले..

**"प्यारे प्रतिक!**

**मुझे माफ़ करना.. मैने जो कुछ भी किया था.. वो तुम्हारे ही एक दोस्त के दबाव में आकर किया था... "**

करनवीर लेटर को पढ़ ही रहा था की विपिन ने झपट्टा मारा और इससे पहले कोई कुछ समझ पाता, वह लेटर को निगल चुका था... यह लेटर ही आख़िरकार उसको मौत के फंदे तक पहुँचा सकता था...," हां.. मैने किया है उसका खून.." विपिन कुर्सी से उठ कर अपना सिर पकड़ कर धरती पर बैठ गया और रोने लगा...

करनवीर ज़ोर का ठहाका लगाकर हंसा.. प्रतिक कुर्सी से उठा और एक ज़ोर की लात उसके पेट में मारी...," साले!" और प्रतिक भी अपना सिर पकड़ कर दीवार के साथ खड़ा हो गया...

"रिलॅक्स! अभी तो इसको बहुत कुछ बताना बाकी है.." करनवीर ने उसको गिरेबान से पकड़ा और वापस कुर्सी पर बिठा दिया..," अब तुम आराम से सब बता रहे हो या...?"

कुर्सी पर बैठा विपिन एक गहरी साँस छोड़कर किसी मशीन की तरह चालू हो गया..

"मुझे आज अहसास हो रहा है कि दोस्त की दौलत हड़पने के चक्कर में मैं किस हद तक गिर गया हूँ.. इसके सपने पर मुझे तब भी विश्वास नही था और आज भी नही है.. पर मेरे दिमाग़ को इस बात का फायदा उठाने की हवस ने इस कदर जकड़ा की मैं गिरता ही चला गया... मैं गीता को ज़बरदस्ती अपनी बंद हो चुकी फॅक्टरी में ले गया.. वहाँ उसको डराया और अपने साथ सेक्स करने को मजबूर किया.. मैने उसकी सी.डी. बना ली थी. उसको ब्लॅकमेल करते हुए मैने उसको अपने साथ साज़िश में शामिल कर लिया.. मैं चाहता था कि वो प्रतिक के साथ शादी करके तलाक़ ले ले और क़ानूनन इसकी आधी प्रॉपर्टी की हकदार बन जाए.. फिर उस सी.डी. के दम पर सब कुछ मेरा ही होना था..

प्लान ये था कि मैं गीता से कहलवाकर प्रतिक को विश्वास दिलवाऊ कि 'गीता' ही वो 'तनवी' है जो उसके सपनो में आती है.. उसके बाद ये उससेआराम से शादी कर लेता.. पर जब इसने मुझे बताया कि इसको यहाँ भी कोई 'तनवी' मिल गयी है तो मुझे सब कुछ मिट्टी में मिरंभा नज़र आने लगा... इसीलिए मैने उसको ज़बरदस्ती यहाँ आने के लिए तैयार किया... सब ठीक चल रहा था लेकिन जब उसने मुझे बाते की प्रतिक को उसकी कहानी पर विश्वास नही हुआ तो मैं दूसरा तरीका अपनाने पर मजबूर हो गया जो पहले ही मेरे दिमाग़ में था.. मैने शाम को ही प्रतिक के कमरे में कैमेरा फिट कर दिया था. गीता को मैने बोल दिया था कि मैने प्रतिक के रूम में कैमेरा फिट कर दिया है और मैं उसकी हर हरकत पर नज़र रखूँगा... और ये भी कि अगर इसको वो सेक्स के लिए मजबूर नही कर पाई तो उसको मेरे पास सोना पड़ेगा... मैने उसको 'वो' नाइटी पहन'ने को दी और प्रतिक के पास

भेज दिया... यहीं पर मेरा दाँव उल्टा पड़ गया.. प्रतिक शायद उन कपड़ों की वजह से ही चिड गया और उसको रूम से बाहर निकाल कर उसको उसके कमरे में छोड़ आया.. बाद मैं मैने उसको कई फोन किए पर उसने फोन उठाया ही नही.. मैं उसके कमरे में गया तो 'वो' पंखे पर झूल रही थी.. नीचे लेटर रखा हुआ था.. मेरे पास अब कुछ बचा नही था.. मैने चुपचाप लेटर और उसका फोन अपनी जेब में डाला और बाहर निकल आया.. फिर भी मैं मानता हूँ कि उसका कातिल मैं ही हूँ.." कहकर विपिन फुट फुट कर रोने लगा...

कमरे में काफ़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा.. करनवीर ने ही कुछ देर बाद चुप्पी तोड़ी," रोने से कुछ नही होगा प्रतिक! पर गीता जाते जाते तुम्हे तुम्हारी आस्तीन में पल रहे एक ज़हरीले नाग से छुटकारा दिला गयी.. इसने तो सोचा भी नही होगा कि रामपाल मुझे फोन कर देगा और ये इस तरह फँस जाएगा... इसने तो चुपचाप लाश ठिकाने लगवा देनी थी और तुम्हारा दोस्त होने का ढोंग भी करता रहता.. फिर कभी डसता...अगर ये बाहर आते हुए कुण्डी बंद करनी ना भूरंभा तो शायद मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करके मामले को पंचनामा होने तक यूँही छोड़ देता.. और पंचनामे में तो शायद साबित हो ही जाएगा कि उसने आत्महत्या ही की है.. और कारण भी मैं यही मानता कि तुम्हारे कमरे से जलील होकर निकलने के बाद उसके पास कोई रास्ता ही नही बचा होगा..

पर तुम्हारे कुण्डी बंद करने और सुबह रामपाल को दरवाजा खुला मिलने पर ही मुझे पहली बार ये शक हुआ था कि हो सकता है कि किसी ने उसका खून कर दिया हो.. एक बात और.. आम तौर पर आत्महत्या करने वाले सभी लोग कोई ना कोई नोट छोड़ कर ज़रूर जाते हैं.. वो भी हमें वहाँ नही मिला... इससे भी मेरे इसी ख्याल को बल मिला कि हो ना हो उसका खून किया गया है.. उसके बाद इसके कमरे में गीता के कपड़े मिलना, निहायत ही कामुक नाइटी का पहनना, जो कि उसके नेचर से मेल नही खाती.. इसका उसको बतला लेकर आना.. और फिर तुम्हारे कमरे में बैठे हुए मुझे फॅन्सी लाइट के साथ कैमेरा लगा दिखाई देना; इन्न सब बातों ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया था कि गीता को ब्लॅकमेल किया जा रहा था और बहुत पहले ही शक हो गया था कि इसी आदमी में गड़बड़ है... पर जब तक कि इसने वो कोरा कागज मेरे हाथ से नही छीना था.. मुझे विश्वास नही हो रहा था कि गुत्थी इतनी आसानी से सुलझ जाएगी.."

"खैर.. अब तुम जा सकते हो.. अगर इंसानियत के नाते इसकी जमानत का प्रबंध करवाना चाहते हो तो अप्लिकेशन लगवा देना कोर्ट में.. ना चाहो तो भी कम से कम इसके घर वालों को तो इत्तला कर ही देना..." करनवीर ने कहा और विपिन को उठाकर ले गया...

"अब यूँ मुँह लटकाए क्यू बैठे हो यार.. जो कुछ हुआ उसका हम सबको अफ़सोस है.. पर हम कर ही क्या सकते थे? गनीमत है कि उस विपिन की असलियत बेपर्दा हो गयी.. दोस्ती के नाम पर कलंक था वो!" संकेत ने प्रतिक के पास बैठ उसके कंधे पर हाथ रख लिया..

"सॉरी यार! मेरी वजह से तुम्हे ये दिन देखना पड़ा.. थाने तक जाना पड़ा. मैं माफी चाहता हूँ.." प्रतिक ने कंधे पर रखा संकेत का हाथ पकड़ लिया..

"अबे साले.. देखा सौरभ! अब ये हमें भी विपिन जैसा समझ रहा है.. ये बात कहकर तो तुमने हमें गाली सी दे दी.. हमारा क्या घिस गया..? सच्चाई ही सामने आई ना.. चल छोड़, तुझे स्पेशल चाय पिलाता हूँ पंजाब वाली..सारी टेंशन दूर हो जाएगी.. अबे रामपाल! साले चुगलखोर!" संकेत ने रामपाल को आवाज़ लगाई...

पर रामपाल वहाँ होता तो मिरंभा!

"लगता है डर के मारे भाग गया साला! वैसे काम बंदे ने एक नंबर का कर दिया.. अगर वो पोलीस को नही बुलाता तो हम तो यही समझते रहते कि गीता... " बात को पूरी किए बिना ही संकेत आगे बोला," और विपिन साफ साफ बच जाता.. फिर जाने क्या तिकड़म खेरंभा तुम्हारे साथ.. खैर तू बैठ.. मैं चाय बनाकर लाता हूँ..!"

संकेत कहकर उठने लगा तो सौरभ खड़ा हो गया,"तुम लोग बातें करो.. मैं अपने हाथ का कमाल दिखाता हूँ आज.." और किचन की तरफ चला गया...

"फिर अब क्या सोचा है?" संकेत वापस उसके पास बैठते हुए बोला.. धीरज का दिमाग़ बहुत ज़्यादा खराब था.. पास ही सोफे पर पसरा हुआ वो अपने चेहरे को रुमाल से ढके लेटा हुआ सा था....

"अब करने को बचा ही क्या है? गीता के पापा को बताना पड़ेगा..." प्रतिक की आँखें भर आई..," फिर वही जिंदगी काटनी है यार... सुबह कॉलेज.. शाम को घर!"

"क्यू? अपनी तनवी को भूल जाएगा क्या? उसको ऐसे ही तड़पति रहने देगा अब?" संकेत को लगा जैसे वह तनवी को तो भूल ही गया है..

"अब सोचने को क्या बचा यार.. अब तो सब साफ हो ही गया कि ये विपिन की साज़िश थी.. सपने भी उसी की वजह से आते होंगे..." प्रतिक ने यूँही मुँह लटकाए हुए कहा...

धीरज उसकी बात सुनते ही उछल बैठा,"अबे साले.. मुझे डमरू कहता है; खुद तूने कभी दिमाग़ का यूज़ किया है कि नही.. या वो है ही नही तेरे अंदर.. विपिन ने साज़िश तेरे उसको सपने के बारे में बताने के बाद शुरू की.. गीता की बात साज़िश हो सकती है.. उसके सपनों की बात झूठी हो सकती है.. हो क्या सकती है, झूठी ही थी... पर तेरे सपने तो किसी की साज़िश नही है ना.. वो तो सच ही हैं.. और जो घर तू सपने में देखता था.. वैसा ही घर तू तनवी का बता रहा है.. अब तो ये साफ हो गया ना कि यही वो लड़की है जिसका तुझसे जनम जनम का संबंध है.. कहाँ से सोच रहा है तू.."

"हां.. यार.. मेरा तो कल से दिमाग़ ही खराब है.. एक्चुअली सुबह ये सब देखने के बाद कुछ और सोच ही नही पाया.. जो कल रात को सोच रहा था वही अब तक सोच रहा हूँ.. इसका मतलब 'तनवी' है!" प्रतिक की आँखों में हल्की सी चमक आ गयी...

"नही नही.. तनवी कहाँ है..!" धीरज मुँह कड़वा सा करके बोला," मैने तुझे कल भी बोला था.. कि मुझे विपिन के मन में खोट लग रहा है.. पर तूने मेरी बात सुनी ही नही.. विपिन के कहानी में इतना इंटेरेस्ट लेने की जो बात इनस्पेक्टर कह रहा था.. वही बात तुझसे मैं करना चाहता था.. इन्फेक्ट वो मुझे मार्केट में जब कहानी बता रहा था.. तभी मुझे शक हो गया था कि विपिन झूठ बोल रहा है.. और झूठ भी अपनी मर्ज़ी से.. पर यहाँ सुनता कौन है मेरी.. चली गयी ना बेचारी गीता!" धीरज की आँखें लाल हो गयी...

"छोड़ो यार! जो हुआ सो हुआ!" संकेत ने धीरज को शांत करने की कोशिश की...

"ऐसे कैसे छोड़ सकते हैं मिस्टर. संकेत!" कमरे में इनस्पेक्टर करनवीर ने प्रवेश किया तो तीनो चौंक कर खड़े हो गये..," आइए इनस्पेक्टर साहब!" संकेत उसका स्वागत सा करता हुआ बोला...

"लेटर पढ़ कर मेरा दिमाग़ खराब हो गया है.. इसीलिए मुझे यहाँ आना पड़ा.. सॉरी!" करनवीर ने मुस्कुराते हुए कहा..

"अरे जब चाहिए आइए.. आपका ही घर है.. पर आप तो कह रहे थे कि लेटर नही था.. सिर्फ़ एक कोरा कागज ही था जो आप हमारे सामने पढ़ रहे थे..!" संकेत ने उत्सुक होकर पूछा...

तभी कमरे में ट्रे उठाए हुए सौरभ ने प्रवेश किया.. इनस्पेक्टर को बैठे देख एक बार उसके कदम ठिठके.. फिर चुपचाप आकर टेबल पर चाय रख दी..

"शुक्रिया! बड़ी देर से इच्छा हो रही थी... रामपाल भाग गया क्या?" करनवीर ने एक कप उठाते हुए सौरभ के चेहरे की और देखकर कहा...

"जी.. उसने सोचा होगा कि.." संकेत अपनी बात पूरी करता इससे पहले ही इनस्पेक्टर बोल पड़ा," डोंटवरी.. शाम तक वापस आ जाएगा.. वैसे तुम सब को तो खुशी ही हो रही होगी कि विपिन की असलियत का पता लग गया...

"जी बिल्कुल!" इस बार प्रतिक बोला," पर वो लेटर के बारे में आप क्या कह रहे हो..."

"हम्मम.. दरअसल जो लेटर गीता ने लिखा था, वो हमें विपिन की तलाशी लेते हुए उसकी जेब से मिला.. ये लो.. पढ़ो ज़रा लेटर को.. उस की कॉपी है.." करनवीर ने लेटर प्रतिक को पकड़ा दिया...

छोटा छोटा लिखा हुआ था.. शायद कागज गीता के पास कम था... प्रतिक उसमें आँखें जमाकर उसको बोल कर पढ़ने लगा..

*"प्यारे प्रतिक!*

*सुबह जब आप सोकर उठेंगे तो मैं इस दुनिया में आपको नही मिलूंगी. निहायत ही शर्मनाक हरकत की मैने आपके साथ; मेरा भी दिल रो रहा था उस वक़्त. प्लीज़ मुझे माफ़ कर देना. सब मेरी मजबूरी थी. मजबूरी भी ऐसी की बता नही सकती. वरना मेरे 'बापू' जीते जी मर जाएँगे. पर मैं आपसे बे-इंतहा प्यार करती हूँ, और आपकी नज़रों का अब सामना नही कर सकती. इसीलिए दुनिया छोड़ कर जा रही हूँ*

*हो सके तो मेरे बापू के पास चले जाना. जीते जी मैने कोई ऐसा काम अपनी मर्ज़ी से नही किया जो उनके मान सम्मान को ठेस पहुँचाए. मरने के बाद 'कोई' मुझे बदनाम कर सकता है. हो सके तो उनको संभाल लेना!*

*कहते हैं कि भगवान की मर्ज़ी के बिना तो पत्ता भी नही हिरंभा. भगवान मिलेंगे तो उनसे कुछ बातें पूछूंगी. मेरे साथ ऐसा क्यू हुआ? कौनसे कर्मों की सज़ा मिली मुझे? मैने तो कभी किसी की तरफ नज़र उठाकर भी नही देखा, किसी के बारे में सोचा तक नही, सिवाय आपके. फिर मुझे आप के सामने ही जलील क्यू करवाया? क्यू नही उन्होने पहले ही मुझे उठा लिया अपनी गोद में.. उन्होने ये 'प्यार' बनाया ही क्यू? और बनाया भी तो हर बार अधूरा ही क्यू छोड़ दिया, क्यू नही मिलने देते वो प्यार करने वालों को..?*

*फिर प्रार्थना करूँगी उनसे.. इस जनम में तनवी का प्यार उसको दे दें. और अगले जनम में मुझे मेरा अधूरा प्यार! तुम्हारी हो चुकी हूँ, इंतजार करूँगी; अगले जनम में!*

*गीता"*

सभी की आँखें नाम हो गयी थी.. सिवाय करनवीर के," तुम गीता से कितनी बार मिले थे प्रतिक?"

"जी, बस दो बार.. एक बार उसके घर पर, और एक बार कल रात को!" प्रतिक ने रुमाल निकाल अपनी आँखें पोंछते हुए कहा....

"तुम्हारे बीच कुछ बातें भी हुई थी क्या? आइ मीन, रोमँटिक.. प्यार भरी..!" करनवीर ने पूछा...

"जी नही.. जो भी हुई थी, या तो कल दिन में हुई थी.." प्रतिक कुछ देर रुका और फिर फट सा पड़ा,"या फिर रात में.." कहता हुआ प्रतिक बिलखने लगा.. रात को उसने गीता के साथ जैसा व्यवहार किया, उसको याद करके....

"कूल डाउन ..... लाइफ में सब कुछ होता रहता है.. तुम्हारी जगह कोई भी शरीफ इंसान होता, तो वो भी यही करता.. तुम्हे थोड़े ही पता था कि वह मजबूरी में वो सब कर रही है.. पर ये एक ही बात मेरी समझ में नही आई अभी तक! मैं वहीं जानने आया हूँ..." करनवीर ने उसको खुद को संभालने की सलाह दी..

"क्या?" प्रतिक बोला..

" मैने कभी प्यार किया नही है.. पर जहाँ तक मेरा ख़याल है.. प्यार तो धीरे धीरे होता है.. खास तौर पर इतना प्यार की कोई किसी की नज़रों से गिर जाने पर स्यूयिसाइड ही कर ले.. उसके पास और भी रास्ते थे.. विपिन 'केमरे' में देख ही लेता कि गीता ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की.. फिर वह जैसे चल रहा था.. वैसे भी चलने दे सकती थी.. जान देना तो आख़िरी हथियार होता और वो तो कभी भी कर सकती थी.. अगर कोई रास्ता ना बचता तो?" करनवीर ने कहा," और सबसे खास बात, गीता को प्यार कब हो गया प्रतिक से.. अगर वह इससे कभी घुली मिली ही नही.. समय नही गुज़ारा साथ!"

इस बार संकेत खुद को बोलने से नही रोक सका," सच कह रहे हो इनस्पेक्टर साहब.. 'प्यार' किए बिना पता ही नही चरंभा कि 'साला' ये होता क्या है.. इत्ता छोटा सा नाम है.. पर इसमें रंग इतने भरे हुए हैं कि आदमी सिर्फ़ अपने प्यार को समझ सकता है.. दूसरे के प्यार को नही.. "

"कभी कभी हम सालों साथ रह जाते हैं और पता ही नही चरंभा की हमें 'प्यार' हो गया है.. जुदा होने के बाद हमें अहसास होता है कि 'उसके' बिना जींसा कितना मुश्किल है.. तब हमें पता चरंभा है कि हमें तो प्यार हो गया था.."

"कभी कभी पहली नज़र में ही हमें प्यार हो जाता है और हम समझ जाते हैं कि 'यही' प्यार है.. बोलना चाहते हैं, पर कभी बोल ही नही पाते.. जाने क्यू उसके सामने कभी ज़ुबान ही नही खुलती.. और जब खुलती है तो अलग होना हमारी मजबूरी बन चुका होता है.."

"एक तरफ़ा प्यार भी होता है.. हम पागल होकर किसी के पीछे लग जाते हैं और लाख जतन करके भी उसको अहसास ही नही करा पाते की 'वो' हमारे लिए क्या है.. उसके लिए सब कुछ छोड़ देते हैं.. अपनी मंज़िल, मा-बाप के सपने, सब कुछ भूल कर सिर्फ़ एक ही चीज़ याद रहती है,'उसका नाम!' अपना सब कुछ बर्बाद करने के बाद भी हमें कभी पचहतावा नही होता कि उसने हमारे प्यार को तवज्जो नही दी.. और छोड़ कर चली गयी..."

"कभी कभी 'उसकी' नफ़रत से भी हमें प्यार हो जाता है.. और हम सामने वाले पर उसकी नफ़रत के बावजूद उस पर जान लुटाने को तैयार रहते हैं.. 'पतंगा' क्या अग्नि से निकलने वाली आँच महसूस करके झुलस्ता नही होगा.. पर फिर भी वो 'उसमें' जान दिए बगैर मानता नही.. ये भी प्यार ही है.."

"गीता का प्यार प्रतिक की नफ़रत से ही पैदा हुआ होगा.. इसकी ऐसी नफ़रत जिसने प्रतिक के व्यक्तिताव को उसकी नज़रों में कहीं ऊँचा उठा दिया.. इसने उसके खुद को इसको सौंपने पर भी 'प्यार' नाम की कद्र रखी.. और उसको हाथ नही लगाया... वह आई यहाँ मजबूरी में थी.. पर प्रतिक की इंसानियत देख वह इस पर मर मिटी.. उसने दोनो तरह के लोग देख लिए; विपिन जैसे भी और फिर प्रतिक जैसे भी.. प्यार होता कैसे नही प्रतिक से!"

"प्यार..." संकेत बिना रुके बोरंभा ही जा रहा था कि करनवीर ने उसको टोक दिया," तुमने 'प्यार' में पीएचडी कर रखी है क्या? या कोई 'लवगुरू' हो?"

"नही इनस्पेक्टर साहब! प्यार का कोई गुरु कैसे हो सकता है. प्यार ही पैदा करता है और प्यार ही जान ले लेता है.. प्यार ही सब कुछ सिखाता है और प्यार ही सब कुछ भूलने पर

मजबूर करता है.. प्यार ही आदमी को खड़ा करता है और प्यार ही गिरा देता है.. सारी दुनिया उसकी गुलाम है.. सारी दुनिया उसके ही कारण चल रही है.. प्यार ही सबका गुरु है..." संकेत ने गहरी साँस छोड़ी...

"उफ़फ्फ़.. मैं तो तुम्हे ऐसे ही समझ रहा था यार.. तुम तो कमाल हो.. माइ नेम ईज़ करनवीर, नाइस टू मीट यू !" करनवीर ने संकेत की और हाथ बढ़ाते हुए कहा.. संकेत ने दोनो हाथों में उसका हाथ पकड़ लिया...

"अब चलने का टाइम हो गया...... जल्द ही मिलूँगा तुमसे.. मुझे भी प्यार करके देखना है यार.. हा हा हा" करनवीर ने कहा और बाहर निकल गया...

# २०

"अरे अक्षरा! आज कॉलेज नही जाना क्या?" मम्मी ने नीचे से आवाज़ लगाई...

"जा रही हूँ मम्मी जी! बस निहारिका आ जाए एक बार!" तनवी ने उपर से ही आवाज़ लगाकर जवाब दिया और परदा हटाकर सामने सड़क की और देखा. निहारिका का घर सामने वाली गली में कुछ घर छोड़ कर ही था. उसे जब निहारिका आती नही दिखाई तो सीढ़ियों से तेज़ी से उतरती हुई नीचे आई और निहारिका के घर फोन मिलाया,"हेलो, नमस्ते आंटिजी!"

"नमस्ते बेटी!" फोन पर शायद निहारिका की मम्मी थी..

"आई नही निहारिका अभी तक.. मैं वेट कर रही हूँ उसका.." तनवी ने पूछा...

"बस अभी अभी निकली है बेटी.. देख.. पहुँच गयी होगी.." उधर से जवाब मिला ही था कि डोर बेल बज उठी.

"लगता है आ गयी.. अच्छा आंटीजी!" कहकर तनवी ने फोन रखा और अपनी किताबें उठा कर बाहर की ओर निकल गयी.. निहारिका दरवाजे पर ही खड़ी उसका इंतजार कर रही थी..

"कर दिया ना क्लास से लेट.. क्या कर रही थी अभी तक तू?" तनवी ने बाहर निकलते ही निहारिका से शिकायती लहजे में कहा..

"अरे मैं आई थी यार.. तुझे पता है.. वो दोनो आज फिर चौंक पर खड़े थे.. मैं वापस चली गयी.. खामखा आज फिर पंगा खड़ा कर देते.. कोई भरोसा नही उस बंदर का..." निहारिका ने तनवी के साथ साथ चलते हुए मुँह सा बनाकर कहा..

"कौन दोनो? किसकी बात कर रही है तू?" तनवी ने आश्चर्य से पूछा...

"अरे वही यार.. जिनका फोन गुम गया था बस में.. आज फिर यहाँ आए हुए थे.. पता नही क्या प्राब्लम है..?" निहारिका ने जवाब देते हुए कॉलेज के सामने वाली सड़क पार करने के

लिए दोनो और देखा," ओह माइ गोड! वो खड़े दोनो.. चल सीधी चल.. !"

दोनों ने तेज़ी से सड़क पार की और कॉलेज में घुस गयी...

"तनवी को नज़र भर देख लेने से ही मेरी सारी थकान मिट गयी यार" प्रतिक ने कलेजे पर हाथ रखते हुए धीरज को कहा...

"तू थकान मिटाने आया था या बात करने.. अगर तू यूँही ५० गज दूर खड़ा होकर उसके खुद तेरे पास आने का इंतजार करता रहा ना तो इस जनम में भी बेचारी यूँही चली जाएगी.. मैने कहा था ना गेट पर खड़ा होने के लिए.. तब तो तेरी फट गयी..." धीरज उसको खींचते हुए गेट की तरफ ले गया....

" पर यार, ये अच्छा नही लगता.. समझा कर.. संकेत ने बोला है ना राधा को.. वो कर लेगी बात!" प्रतिक ने उसको वापस खींच लिया..," चल चलते हैं वापस!"

"अरे अक्षरा! तू अब आई है.. तुझे कोई पूछ रहा था..." उनको देखकर एक लड़की उनके पास आ गयी....

"कौन? और तू बाहर क्या कर रही है.. क्लास में नही गयी क्या?" तनवी ने सामने से आ रही लड़की को देखकर पूछा...

"गयी थी यार.. सिर्फ़ १ मिनिट लेट थी, सर ने निकल दिया.. तुम भी मत जाना.. कोई फायदा नही अब!" लड़की ने जवाब दिया..

उन दोनो का मुँह लटक गया.. साथ वाले पार्क में बैठते ही तनवी ने पूछा..," कौन पूछ रहा था मुझे..?"

"पता नही यार.. कोई अंजान लड़की थी.. पहले तनवी करके पूछा.. फिर अक्षरा करके.. तनवी भी तेरा ही नाम है क्या?" लड़की ने जवाब देकर सवाल किया....

"नही! मेरा नाम अक्षरा ही है..!" तनवी ने कहते हुए पूछा," कॉलेज की नही थी क्या?"

"कॉलेज की होती तो मैं पहचान ही ना लेती.. कोई बाहर से आई थी.. तुम्हारा घर भी पूछ रही थी.. मैने बता दिया... शायद इस शहर की ही नही थी वो.. हरयाणा साइड का पुट था आवाज़ में...!"

"कौन हो सकती है ?" तनवी दिमाग़ पर ज़ोर लगाकर सोचने ही लगी थी कि एक और लड़की सामने से उनकी और ही आ रही थी..," हाई!"

"हाई सोना! क्या हाल हैं?" निहारिका और तनवी ने लगभग एक साथ पूछा..

"मैं तो ठीक हूँ.. 'वो मिली क्या?" रीमा ने उनके पास बैठते हुए कहा...

"कौन?" निहारिका ने पूछा..

"पता नही.. एक सुंदर सी लड़की सुबह सुबह तुम्हे पूछती फिर रही थी.." रीमा ने जवाब दिया...

तनवी अपनी उंगली को दाँतों के बीच दे कर अपने नाख़ून कुतरने लगी और अपनी आँखों को सोचने के अंदाज में चौड़ी कर लिया..," हद है यार.. कौन हो सकती है..?"

"तू छोड़ ना.. जो कोई भी होगी.. घर बता दिया ना उसने!" निहारिका ने तनवी के सिर पर हाथ मारा..

"आ अक्षरा! इधर आना एक बार!" कॉलेज के अंदर की तरफ से आ रही शीतल ने उनसे थोड़ा दूर खड़े होकर ही तनवी को पुकारा..

"हम्मम.. आ रही हूँ!" तनवी ने कॉपी उठाई और शीतल के पास आकर खड़ी हो गयी..," अब तू भी ये मत कहना कि मुझे कोई ढूँढ रही थी.."

"हाँ.. पर तुझे कैसे पता?" शीतल ने पलट कर कहा...

"बस पता लग गया.. हर किसी से उसने ये बात पूछि है शायद! चल छोड़.. कुछ और भी काम था क्या?"

"हाँ.. तेरे पास टाइम है ना?" शीतल ने उसका हाथ पकड़ कर कहा...

"हां बोल! ये पीरियड तो खाली ही समझ!" तनवी ने कहा और उसके साथ साथ चलने लगी....

"तेरा नाम तनवी भी है ना?" शीतल ने यहीं से बात शुरू की...

"कितनी बार कहूँ यार.. कोई मुझे तनवी ना कहा करो.. मेरा नाम अक्षरा है अक्षरा!" तनवी चिड सी गयी...

"गुस्सा क्यू होती है? तुझे पसंद नही तो कॉपी पर क्यू लिखा हुआ है?" शीतल ने कॉपी पर लिखे नाम की और इशारा किया...

"हे भगवान! ये किसने लिख दिया...? तनवी ने झट से पेन निकाला और पूरे नाम को मिटा दिया..," मेरे साथ ऐसा मज़ाक मत किया करो यार.. प्लीज़!"

"मैने क्या किया है अक्षरा? मैने तो सिर्फ़ लिखा दिखाया है.. 'वो लड़की भी पहले तनवी ही पूछ रही थी.. जब मेरी समझ में नही आया तो उसने अक्षरा कहा.. घर पूछ रही थी तेरा.. पर मुझे पता ही नही था.. खैर मुझे तुझसे कोई और बात करनी है..!" शीतल ने उसका हाथ पकड़ा और पार्क के एक कोने में अपने सटक उसको भी बिठा लिया...

"बोल!" तनवी का मूड खराब हो गया था...

" देख मुझे पता है तुझे ये सब पसंद नही.. फिर भी, सुन लेना पूरी बात.. बीच में उठकर मत भागना.." शीतल ने भूमिका बाँधी...

"ऐसी क्या बात है? बोल ना!" तनवी ने उत्सुकतावश उसकी तरफ देखा...

" वो....... कोई तेरे लिए ५०० किलोमीटर से चलकर आया है.. पूरी बात सुन लेगी ना!"

"कौन आया है? क्या कह रही है तू.. अब पहेलियाँ मत बुझा.. जो बोलना है.. एक लाइन में बोल दे..." तनवी बात जानने के लिए जिज्ञासु सी हो गयी...

"प्रतिक! बहुत प्यार करता है तुझसे... सुन तो!" उठकर भाग रही तनवी का हाथ पकड़कर शीतल ने वापस खींच लिया," मैने पहले ही कहा था कि तू पूरी बात सुन लेना एक बार! फिर तेरी मर्ज़ी है..."

"और कोई भी बात कर ले.. पर ये बकवास बातें मुझे पसंद नही.. क्या होता है प्यार? ५०० किलोमीटर दूर से किसी को मुझसे प्यार हो गया.. उसको कोई सपना आया था क्या मेरा!" तनवी ने व्यंग्य किया...

"हां.. सपने ही आते हैं उसको तेरे.. तभी आया है वो यहाँ पर.. पता है तुझे या सब अच्छा क्यू नही लगता? तेरे सीने में दिल नही है.. इसीलिए!" शीतल ने स्पष्ट करने की कोशिश की....

"हा हा हा हा.. मेरे सीने में दिल नही है.. व्हाट ए जोक यार.. फिर मैं जिंदा कैसे हूँ.. ये क्या धड़क रहा है मेरे दिल में..." तनवी ने अपना दायां हाथ सीने पर रखकर अपनी धड़कन को महसूस किया..,"आज तो फर्स्ट एप्रिल भी नही है.. फिर क्या इरादा है तेरा.." तनवी अब तक हंस रही थी...

"तू मेरी बात को सीरीयस क्यू नही ले रही...!" शीतल ने तनवी के दोनो कंधे पकड़े और उसको झकझोर दिया...

"क्या सीरीयस लूँ यार तेरी बातों को.. कौनसी सदि में जी रही है तू.. अब ये कोई बात हुई की मेरे सीने में दिल नही है... ५०० किलोमीटर दूर बैठे किसी को मेरे सपने आते हैं.. उसको मुझसे प्यार हो गया है.. हा!" तनवी उसकी बातों से चिडती हुई बोली...

"यार, दिल से मेरा मतलब फीलिंग्स से है.. तू एक बार उससे मिल ले बस! तुझे सब समझ आ जाएगा...!" शीतल ने ज़ोर देकर कहा....

" किससे मिल लूँ? कहाँ मिल लूँ?" तनवी ने मजबूर होकर कहा...

"आ.. मेरे साथ तू एक बार कॉलेज के गेट तक आ!" शीतल तनवी को उठाकर लगभग ज़बरदस्ती खींचती हुई कॉलेज के गेट पर ले गयी.. प्रतिक और धीरज को जैसे ही तनवी ने

अपनी और आते देखा.. उसकी घिग्गी बँध गयी.. अपना हाथ छुड़ाकर भागती हुई वापस अंदर आई और ज़ोर ज़ोर से हँसने लगी....

"क्या हुआ? तू भाग क्यू आई..?" शीतल उसके पिछे पिछे आई और गुस्से से उसको देखने लगी....

"ये..." तनवी अब भी ज़ोर ज़ोर से हंस रही थी..," इसको आते हैं मेरे सपने.. अरे तेरा उल्लू बना दिया... इनको हम बस में मिले थे..अमृतसर से आते हुए.. तब से पिछे पड़ें हैं.. हा हा हा हा..."

# २१

"क्या हुआ? बात हुई क्या उससे?" संकेत जैसे घर पर प्रतिक और धीरज का ही इंतजार कर रहा था," बात बनी कि नही?"

प्रतिक ने आकर बिस्तर पर पसरते हुए अपना सिर 'ना' में हिला दिया," गेट तक आई थी.. वापस भाग गयी.. एक और लड़की थी उसके साथ!" प्रतिक ने सीधा लेटकर अपने चेहरे को तकिये से ढक लिया...

"मैने तो बोला था इसको.. सीधी बात करनी चाहिए थी.. जनाब तो गेट के पास खड़ा होने से भी डर रहे थे.. ऐसे बात थोड़े ही बनती है यार..." धीरज हताश होता हुआ बोला...

संकेत धीरज की और देखकर मुस्कुराया,"बन जाएगी यार.. पर सब्र तो करना पड़ेगा ना.. ये काम इतनी जल्दी नही होने वाला है.. एक मिनिट! मैं राधा से बात करता हूँ!" कहकर संकेत ने फोन निकाल लिया....

"हेलो!"

"हाँ संकेत, बोलो!"

"क्या रहा? क्या बात हुई अक्षरा से?" संकेत ने सीधे बात पर ही आते हुए पूछा....

"वो... मैं आजकल कॉलेज नही जा रही.. मैने शीतल को बोला था बात करने के लिए.. सब समझा भी दिया था उसको! उसका नंबर. देती हूँ.. तुम उसी से बात कर लो.." राधा ने जवाब दिया...

"हम्म.. लाओ! दो नंबर." संकेत ने कहते हुए नंबर. नोट करने के लिए प्रतिक का फोन उठा लिया...

राधा ने संकेत को शीतल का नंबर. लिखवा दिया," एक मिनिट संकेत! क्या इस सबके लिए सौरभ नही फोन नही कर सकता उसको?"

"हां हाँ! मुझे क्या प्राब्लम है..? सौरभ कर लेगा! कोई खास वजह है क्या?" संकेत ने पूछा....

"नही.. बस ऐसे ही.. वो.. वो उससे बात भी करना चाहती है..." राधा ने टालते टालते भी बात कह ही दी...

"ठीक है! मैं अभी उसको बोल देता हूँ... वो बात कर लेगा!" संकेत मुस्कुराया और फोन काट दिया..

"एक मिनिट! मैं सौरभ को उठाकर लाता हूँ... शीतल ने बात की हैं तनवी के साथ.. वोही बताएगी क्या पोज़िशन है?" संकेत ने कहा और बाहर निकल गया...

"क्या बात है बे? तू तो सेट्टिंग कर भी आया और मुझे बताया तक नही!" संकेत ने दूसरे कमरे में घुसते ही सो रहे सौरभ को पकड़ कर ज़ोर से हिला दिया.. सौरभ हड़बड़कर उठ बैठा," क्या? ... क्या हुआ?"

"ले.. ये ले तेरी शीतल का नंबर., उसको तुझसे बात करनी हैं.. और हां.. ये पूछना मत भूलना की तनवी का क्या रेपोंस रहा.." संकेत ने सौरभ का फोन उठा शीतल का नंबर. डाइयल किया और फोन सौरभ को पकड़ा दिया..

सौरभ ने फोन काटा और संकेत को घूर्ने लगा....

"जा रहा हूँ साले.. करले फोन अकेले अकेले.." संकेत हंसा और बाहर निकल गया...

शीतल के बारे में सोचते ही सौरभ की धड़कने बढ़ गयी.. 'आख़िर क्या बात करनी हैं उसको' सोचते हुए सौरभ ने दरवाजा अंदर से बंद किया और रिडाइयल करके फोन कान से लगा लिया..

"हेलो!" शीतल की मीठी सी आवाज़ फोन पर उभरी..

"हाई शिल्ल्लपा! मैं, ... सौरभ!" सौरभ ने आवाज़ से शीतल का परिचय करवाया..

"ओह्ह.. हाई! .... आपके पास मेरा नंबर. कहाँ से आया..?" शीतल की ज़ुबान लड़खड़ा गयी...

"मुझे तो यही बताया गया है कि आपको मुझसे कुछ बातें करनी हैं.. इसीलिए मैं तो समझा की आपने ही दिया होगा!" सौरभ ने आराम से बिस्तर पर पसरते हुए कहा...

"नही तो.. मैने तो कोई... मतलब.. मुझे तो..." शीतल ने कई तरह से अपनी बात पूरी करने की कोशिश की.. पर कर नही पाई.. कँटीन में लगे शीशे के सामने खड़ी हो अपने आपको यूँ निहारने लगी मानो सौरभ उसको देखने ही आ रहा हो...

"सॉरी देन! होप आइ डिड्न'ट डिस्टर्ब यू.. आइन्दा ऐसी ग़लती नही करूँगा..." सौरभ ने उसकी ना-नुकर पर रूठ जाने का नाटक सा किया....

"नही.. नही.. मेरा मतलब था.. हां.. मुझे.. मुझे करनी थी बात.. वो..." शीतल के मुँह से अनायास ही निकल गया...

"शुक्रिया!... वो क्या?" सौरभ मन ही मन मुस्कुराता हुआ बोला...

"वो... कब जा रहे हो यहाँ से?" शीतल को और कुछ सूझा ही नही....

"कहो तो... आज ही निकल जाऊ?" सौरभ ने अपने होंटो पर जीभ फेरते हुए आँखें बंद कर शीतल का सलोना चेहरा याद किया...

"नही.. नही.. मेरा मतलब है कि...." शीतल फिर रुक गयी...

"हम्म.. बोलो भी अब.. बोल भी दो यार!" सौरभ के दिमाग़ पर मस्ती सवार हो गयी...

"क्कक्या?" शीतल हड़बड़ी के साथ बोली...

"और कुछ नही तो 'आइ लव यू!' ही बोल दो..." सौरभ कहकर हँसने लगा..

"क्कैसे.. मतलब..." शीतल की हालत फोन पर ही खराब हो गयी...

"मतलब में ही उलझी रहोगी या कुछ काम की बात भी करोगी.." सौरभ ने फिर उसको छेड़ा...

"क्क्या बात... करनी हैं.. मेरी समझ में नही आ रहा.." शीतल की साँसे उखाड़ने लगी थी.. उसकी समझ में ही नही आ रहा था की क्या बोले और क्या नही...

"वही.. वो तनवी ने क्या जवाब दिया.. प्रतिक के बारे में..." सौरभ के इस सवाल को सुनते ही शीतल का ध्यान खुद पर से हटकर तनवी पर चला गया... और इसी के साथ वा सामान्य भी हो गयी.....

"ओह्ह! शी ईज़ इंपॉसिबल सौरभ. मैने उसको समझाने के क्या क्या नही किया! पर उससे इस बारे में बात करना ही बेकार है... पहली बात तो वो मानती ही नही की 'प्यार-प्रेम' जैसा कुछ वास्तव में होता भी है.. दूसरे प्रतिक के बारे में वो समझती है कि 'वो' बस में मिलने के बाद से ही उसके पीछे पड़ा है.. 'सपने' वाली बात उसको 'ड्रामे' से ज़्यादा कुछ नही लगी..."

"कुछ उम्मीद है अभी...तुम्हारी तरफ से..?" सौरभ ने भी संजीदा होकर पूछा..

"मुझे नही लगता उस पर कोई फ़र्क़ पड़ेगा.. पर तुम कहो तो मैं एक बार और कोशिश करूँ!" शीतल ने सौरभ की बात को तवज्जो देते हुए कहा...

"नही.. अभी रहने दो.. अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं बता दूँगा... बाइ दा वे, शुक्रिया!"

"ये.. कैसी बात कर रहे हो.." शीतल ने बात पूरी भी नही की थी कि फोन कट गया.. फोन सौरभ ने जानबूझ कर काटा था.. उसको विश्वास था कि अगर 'कुछ' होगा तो फोन वापस ज़रूर आएगा.. और उसका विश्वास सही निकला...

"फोन क्यू काट दिया था" शीतल हताश सी होकर बोली...

"मुझे लगा बात हो गयी है.. सॉरी!" सौरभ ने कहा...

"नही.. हां.. मेरा मतलब था कि.... " शीतल फिर अटकने लगी...

"क्या बात है.. बोलो भी..?"

"हम.... वो... एक बार मिल सकते हैं क्या?" शीतल ने हड़बड़ाहट में जल्दी से कहा और जवाब को दिल की गहराई तक उतारने के लिए अपनी आँखें बंद कर ली...

"हां.. क्यू नही? पर कहाँ...?" सौरभ का दिल मचल उठा....

"कहीं भी.. जहाँ तुम कहो!" शीतल की खुशी का कोई ठिकाना नही था...

"ओके! मैं बाद में फोन करता हूँ.. और कुछ?" सौरभ ने कहकर फोन को चूम लिया.. इस चुंबन की आहत शीतल को अपने कानो में सुनाई पड़ी...

"आइ लव यू!" शीतल ने झट से कहा और जवाब सुनने से पहले ही फोन काट दिया....

# २२

"मम्मी! कोई लड़की आई थी क्या?" तनवी ने घर के अंदर घुसते ही दरवाजा बंद करते हुए पूछा...

"नही तो! किसी को आना था क्या अक्षरा?" दरवाजा खोलकर वापस अंदर जा रही मम्मी जी पलट गयी...

"नही.. पर कॉलेज में कोई मुझे पूछ रही थी.. इसीलिए.." तनवी ने आनमने ढंग से जवाब दिया और उपर चढ़ने लगी...

"अरे.. खाना तो खा ले बेटी.. सुबह भी ऐसे ही निकल गयी थी तू!" मम्मी जी ने नीचे से आवाज़ लगाई....

"आ रही हूँ मम्मी! ज़रा कपड़े बदल लूँ..." तनवी ने जवाब दिया और उपर कमरे में घुस गयी..

अंदर घुसते ही उसकी निगाह टेबल पर पेपर वेट के नीचे फड्फाडा रहे कागज पर जाकर जम गयी.. उत्सुकता से उसने कागज निकाला और यूँही पढ़ने लगी.. पर जैसे जैसे वह पहली लाइन से दूसरी और दूसरी से तीसरी लाइन पर पहुँची.. उसके हाथ पैर जमने लगे और वह उसमें लिखे शब्दों के जाल में उलझती चली गयी...

***"नाम बदल लेने से तकदीर नही बदल जाती तनवी! और खास तौर से तब; जब तकदीर की 'वो' गाढ़ी रेखायें सदियों पुराने इश्क़ का गला घोंट कर एक दूसरे के लिए प्यासी दो आत्माओ के एक हो चुके लहू में डुबोकर सातवें आसमान से भी उपर लिखी गयी हों."***

तनवी अचंभित सी उस कागज के टुकड़े को निहारती रही, फिर दनदनाती हुई नीचे की और भागी..

"मम्मी! कौन गया था उपर? कौन आया था घर में?" तनवी का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था...

"बता तो रही हूँ, कोई नही आया.. मैं तो सुबह से ही यहाँ हूँ.. क्या हो गया?" मम्मी ने बेफिक्री वाले अंदाज में बैठे बैठे ही कहा...

बिना कुछ बोले तनवी बाहर निकली और दूसरी गली पर लगे गेट की कुण्डी देखी.. पर वहाँ तो ताला लगा हुआ था...

'उनकी इतनी हिम्मत हो गयी कि दीवार फांदकर चोरों की तरह घर में घुसने लगे' बड़बड़ाती हुई तनवी ने कागज के टुकड़े टुकड़े किए और डस्टबिन में फैंक वापस उपर चली गयी...

"सीसी...क्क्क...कौन.. है?" तनवी जड़ सी होकर कमरे से अटॅच्ड बाथरूम के दरवाजे के सामने खड़ी हो डर के मारे सूखे पत्ते की तरह काँपने लगी.. दोबारा उसकी हिम्मत दरवाजे को छूने तक की नही हुई...

"मम्म्मममय्ययययययययययययी" अचानक तनवी की इश्स चीख से पूरा का पूरा घर दहल गया...

तनवी की आवाज़ सुनकर मम्मी जी बदहवास सी दौड़ी दौड़ी उपर आई.. देखा; तनवी दरवाजे के सामने ही खड़ी खड़ी काँप रही थी...," क्या हुआ अक्षरा? क्या हुआ बेटी?" किसी अनहोनी की आशंका से घबराकर उपर दौड़ी आई मम्मीजी को जब तनवी सही सलामत खड़ी नज़र आई तो उसको थोड़ी राहत मिली.. उसके पास आते ही उन्होने तनवी को बाहों में लेकर अपने साथ चिपका लिया...

"ववो.. बाथरूम में कोई है?" मम्मी जी से चिपकी तनवी ने आँखें तक नही खोली...

"चुप कर.. डरपोक कहीं की.. कौन होगा?" कहते हुए मम्मी जी ने ज़ोर से दरवाजे को अंदर धकेला तो वो खुल गया.. अंदर कोई नही था..," देख.. कोई भी तो नही है...!"

"पर कोई था मम्मी.. यहाँ ज़रूर कोई आया था.. दरवाजा भी नही खुला था अभी.. !" तनवी ने डरते डरते आँखें खोल कर बाथरूम के अंदर झाँका..

"पागल.. तुझे पता है ना ये थोड़ा ज़ोर लगाने से खुरंभा है.. चल जा.. कपड़े बदल ले.. मैं तेरे साथ ही नीचे चलूंगी..." मम्मी ने उसको धाँढस बाँधते हुए कहा...

"नही.. मैं नीचे ही बदल लूँगी... चलो!" अपने कपड़े उठती हुई तनवी मम्मी जी के साथ साथ नीचे चल दी...

"मम्मी!" तनवी ने खाना खाते हुए कहा...

"हां बेटी!"

"मेरा नाम पहले तनवी था ना?"

"क्यू बेवजह उठाती है पुरानी बातों को.. तुझे मना किया है ना किसी को भी वो नाम बताने से!" मम्मी जी थोड़ी नर्वस हो गयी...

"मैं किसी को नही बताती मम्मी.. पर फिर भी.. बताइए ना! आप सब को क्यू 'उस' नाम से इतनी एलरजी है?" तनवी के मंन में रह रह कर कागज पर लिखी पंक्तियाँ कौंध रही थी..

"कह दिया ना! कोई बात नही है.. हमें 'वो' नाम पसंद नही है बस.. तेरा नाम अक्षरा ही है.. और कुछ नही.. अब बिना सिर पैर की बातें छोड़ और खाना खाकर पढ़ाई कर ले.." मम्मी जी ने कहा और उठकर बाहर चली गयी.. पर इससे तनवी का कौतूहल शांत नही हुआ, उल्टा नाम के पिछे छिपी सच्चाई जानने की उसकी जिज्ञासा बढ़ गयी..

निहारिका के आने के बाद दोनो पढ़ने के लिए उपर चली गयी....

रात करीब १२ बजे! तनवी को लाइट बंद करके अपनी किताबें बिस्तर के साथ लगी टेबल पर रख कर लेटी हुए मुश्किल से आधा घंटा ही हुआ था.. अचानक कमरे में फैले हुए से प्रकाश से उसकी आँखें खुल गयी.. खिड़की के सामने कमरे में एक साया उभर आया था और रोशनी उसके पिछे से उत्सर्जित होती प्रतीत हो रही थी.. इसी कारण वह 'साए' के हवा में लहराते कपड़ों के अलावा कुछ भी देख पाने में समर्थ नही थी...तनवी डर के मारे इतनी सहम गयी कि उसकी चीख भी ना निकल सकी..बिस्तर पर बैठकर तनवी पिछे दीवार से चिपक गयी. वह कुछ समझ पाती, इससे पहले ही 'साए' ने बोलना शुरू कर दिया..

"घबराओ मत तनवी! तुम्हे किसी तरह की तकलीफ़ नही होगी.. ना ही मेरा मकसद तुम्हे डराना है. तुम्हे लग रहा होगा कि तुम जाग रही हो.. पर ऐसा नही है! दर-असल मैं तुम्हारे सपने में हूँ.. हां! तुम सपना ही देख रही हो.. अब मेरी बातें ध्यान से सुनना.. मेरा मकसद सिर्फ़ तुम्हे तुम्हारे अतीत से अवगत कराना है.. ऐसा अतीत, जिसको सुनकर तुम्हारी आँखें भर आएँगी... तुम चाहो तो मुझसे सवाल भी कर सकती हो.. ठीक है ना?"

"आ..आ.. हां!" तनवी के माथे पर पसीना छलक आया... उसके पास 'हाँ' बोलने के अलावा कोई चारा भी नही था...

"एक लड़की थी, दुर्गावती.. और एक लड़का था चंद्रभान! दोनो एक दूसरे से बे-इंतहा मोहब्बत करते थे.. मोहब्बत भी इतनी कि मर कर भी उनकी रूहें एक दूसरे के लिए तड़पति रही.. जन्मो-जनम! दुर्गावती का प्यार आज भी अपने चंद्रभान का इंतजार कर रहा है.. और चंद्रभान को अपनी दुर्गावती की तलाश में दर दर भटकना पड़ रहा है.. चंद्रभान की तलाश आख़िरकार पूरी हुई. उसको पता चल चुका है कि उसकी 'दुर्गावती' इस जनम में कौन है.. पर दुर्गावती का दिल इस जनम में उसकी रूह के साथ ना होने की वजह से वो अपने प्यार को पहचान नही पा रही... तुम सुन रही हो ना?"

"आ..हां!" बड़ी मुश्किल से तनवी के गले से आवाज़ निकल पाई...

"तुम्हे पता है वो दोनो कौन हैं?" साए ने शालीनता से फिर पूछा...

"हहाँ.. नही!" तनवी एकदम सिमटती हुई बोली...

"जानना नही चाहोगी?"

"नही.. एम्म.. हन!" तनवी की धड़कने धीरे धीरे संतुलित होती जा रही थी और उसके दिमाग़ ने काम करना आरंभ कर दिया था...

"तो सुनो! इस जनम में उस लड़के का नाम है प्रतिक! और लड़की का नाम है तनवी; यानी की तुम!" कहकर साया तनवी के जवाब की प्रतीक्षा करने लगा...

तनवी के मुँह से कोई प्रतिक्रिया नही निकली.. साथ रखी टेबल पर उसका हाथ 'कुछ' ढूँढने लगा...

"तुम सुन रही हो ना?" साए की आवाज़ कमरे में गूँज उठी....

तनवी ने आव देखा ना ताव.. पेपर वेट हाथ में आते ही उसने ज़ोर से उसको साए की तरफ दे मारा.... निशाना एकदम सटीक था.. पर....

साया तनवी के हाथ की हरकत देख संभलते हुए एक तरफ को झुक गया.. और आवाज़ उसके पिछे से आई,"ओये तेरी मा... मार डाला रे!"

टॉर्च उसके हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरी और वह अपना सिर दोनो हाथों में दबाकर वहीं बैठ गया..

साया तेज़ी से पिछे घूमकर अपना सिर पकड़े बैठे आदमी पर झुका और ज़बरदस्ती उसको उठाने की कोशिश करने लगा,"जल्दी भाग यार.. वरना फँस गये समझो!"

"अबे तुझे भागने की पड़ी है, यहाँ सिर फूट गया मेरा.. रुक एक मिनिट.. बीच में परदा नही होता तो गया था मैं तो काम से.." उठने की कोशिश करता हुआ वह बोला...

तनवी को आवाज़ जानी पहचानी सी महसूस हुई... उसने हिम्मत दिखाते हुए झट से उठकर लाइट ऑन कर दी..

"तूमम्मम???????" तनवी ने अपनी आवाज़ को दबाने का भरसक प्रयास किया..

प्रतिक और धीरज दोनो उसके सामने मुजरिमों की तरह सिर झुका कर हाथ बाँधे खड़े थे.. हैरान परेशान तनवी की समझ में ही नही आया कि क्या बोले और क्या नही.. वह अजीब सी नज़रों से बिस्तर के पास खड़ी उन्हे घूरती रही..

आख़िरकार वो मिनिट भर का मौन प्रतिक ने ही तोड़ा,"तेरा ही प्लान था ना ये.. अब भुगत!" नज़रें चुराते हुए उसने तनवी को पल भर के लिए देखा और फिर नज़रें झुका ली... तनवी भावशून्य सी खड़ी अब भी उन्हे घूर रही थी...

पेपर वेट हालाँकि सीधा धीरज के सिर में नही लगा था.. फिर भी पेपर वेट के आधे साइज़ का गोला उसके सिर पर उभर आया था.. उसको सहलाते हुए वो प्रतिक पर बरस पड़ा," साले.. ऐसे करते हैं क्या भूतों की एक्टिंग? तू तो ऐसे बोल रहा था जैसे रामलीला के डाइलॉग पढ़ पढ़ कर बोल रहा हो.. २ घंटे की रिहर्सल की ऐसी की तैसी करवा दी.. फिर प्लान में क्या कमी थी.. तूने ही तो बोला था कि अगर मैं तनवी के सपने में आ सकूँ तो बात बन सकती है...."

"चल छोड़.. अब खिसक ले यहाँ से...!" प्रतिक ने तनवी की और देखते हुए धीरे से कहा और धीरज को खिड़की की तरफ घुमा दिया....

जैसे ही धीरज ने खिड़की से बाहर पैर रखा; तनवी लगभग चिल्लाते हुए बोली,"ओए!"

और धीरज ने अपना बाहर निकाला हुआ पैर वापस खींच लिया," सॉरी भ.. भा.. तनवी जी! आइन्दा ऐसी ग़लती नही होगी.. मैं कान पकड़ता हूँ..."

"मरना है क्या? जीनेसे से उतर कर जाओ!" तनवी लगभग गुर्राते हुए बोली....

"ज्जई.. पर..!" धीरज तनवी की ओर कृतज्ञ नज़रों से देखने लगा...

"आज के बाद घर में इस तरह कदम रखे तो बचकर नही जाने दूँगी.. शोर मचा दूँगी मैं.. चलो अब.. मेरे पिछे पिछे आओ! आवाज़ मत करना!" तनवी ने कहा और कमरे से बाहर निकल गयी...

दरवाजे से बाहर निकलते हुए प्रतिक ने मूड कर तनवी की और देखा.. मन में एक कसक सी उठी.. जैसे वापस अंदर चला जाए.. तनवी को उसकी और अपनी कहानी सुनाने के लिए.. उसको हमेशा के लिए अपना बनाने के लिए.. पर तनवी की आँखों में झलक रहा हल्का सा गुस्सा उसको अहसास करा रहा था कि तनवी ने सिर्फ़ उनको बख्शा है.. माफ़ नही किया...

तनवी ने बिना आवाज़ किए दरवाजे की कुण्डी लगाई और वापस उपर आ कर अपना पेट पकड़ कर बुरी तरह हँसने लगी.. और हँसती रही.. जाने कितनी ही देर!

# २३

"हा हा हा हा हा....हा हा हा हा हा... फिर? हा हा हा हा हा" सुबह संकेत और सौरभ कभी धीरज के सिर पर उभरे गोले और कभी उसकी चेहरे पर उभरे शिकायती अंदाज को देख देख लोटपोट हो रहे थे...

"फिर क्या? वो तो अच्छा हुआ उसको हम पर रहम आ गया.. अगर चिल्ला देती तो वहाँ हमारा क्या होता.. खुद ही सोच लो... मरवा दिया था साले ने!" धीरज ने प्रतिक को घूरते हुए कहा..

"ये लो.. खुद का प्लान.. ज़बरदस्ती ले गया.. और अब मुझे कोस रहा है.. मैने कहा था क्या? ये सब करने को..." बोलते बोलते प्रतिक की भी हँसी छूट गयी...

"प्लान में क्या कमी थी बोल? यहाँ आधे घंटे तक तेरे साथ थूक रगड़ाई की.. तू सही बोलने भी लग गया था.. वहाँ जाकर तेरी क्या ऐसी तैसी हो गई? आधे घंटे की बात को तूने २ मिनिट में बोल दिया.. मैं क्या करता...?" धीरज ने सौरभ और संकेत से अपने लिए समर्थन माँगा...

"पता नही यार.. उसके सामने जाते ही सब कुछ भूल गया.. क्या का क्या निकलने लगा मुँह से.. मेरी खुद समझ में नही आ रहा था..." प्रतिक ने अपनी ग़लती खुद ही स्वीकार कर ली...

"होता है... होता है बॉस! प्यार में ऐसा ही होता है.." संकेत बीच में ही बोल पड़ा," पर ये बात तो साफ है कि तनवी को तुम्हारी हरकत पर ज़्यादा गुस्सा नही आया... इसका मतलब.. चान्स तो हैं!" कहते हुए संकेत ने आइयिने में खुद को एक नज़र देख रहे सौरभ को टोका,"तू कहाँ की तैयारी में है भाई?"

"मुझे किसी से मिलने जाना है.." सौरभ के चेहरे पर खुशी और उत्साह साफ झलक रहा था...

"कौनसी 'किस' से मिलने जा रहा है बे? तू तो कुछ बताता ही नही है.. हमसे भी किसी की बात कर लिया कर यार..." संकेत ने उसके चेहरे के भावों को ताड़ते हुए उसको छेड़ा....

"बात बन गयी तो ज़रूर बताऊंगा... शाम को लौटकर.. हे हे!" सौरभ मुस्कुराया और बाहर निकल गया....

"वाह भाई वाह! सब सेट होते जा रहे हैं भाई धीरज! कहो तो रुबीना को बुला लूँ आज.. आख़िर हम भी इंसान हैं..." संकेत धीरज को देखते हुए बोला...

धीरज अचानक संजीदा हो गया.. कुछ देर सोचता रहा; फिर बोला," नही यार! खाली सेक्स से ज़्यादा मज़ा तो ऐसे पत्थर खाने में ही आ जाता है" धीरज ने अपने गोले की ओर इशारा किया," मैं इसकी जगह होता तो भाभी जी को ज़बरदस्ती उठा कर टीले पर ले जाता.. उसके बाद तो उसको याद आ ही जाएगा ना...!"

"डोंटवरी! मेरे दिमाग़ में एक और प्लान है..." संकेत ने कुछ सोचते हुए कहा...

"पर अब की बार मैं साथ नही जाऊंगा.. पहले बोल देता हूँ.. !" धीरज ने सिर पर बने गोले को सहलाया...

"ठीक है.. अब की बार तू घर पर आराम करना.. मैं जाऊंगा प्रतिक के साथ!" संकेत हँसने लगा...,"आख़िर मुझे भी तो भाभी जी को देखना है.."

# २४

"तूने उनको ऐसे ही निकल जाने दिया? पकड़वाया क्यू नही..? उनकी तो धुनाई होनी चाहिए थी.. ऐसे कैसे घुस गये घर में..? अजीब आदमी हैं!" कॉलेज के बाद तनवी के घर बैठी निहारिका ने उसकी आपबीती सुनने के बाद प्रतिक्रिया दी...

"पता नही यार.. मैने भी पहले ऐसा ही सोचा था.. फिर जाने क्यू उनकी दया सी आ गयी.. शरीफ ही लगते हैं बेचारे.. वरना कमरे में घुसने के बाद तो वो मेरा मुँह भी दबा सकते थे.. मैं क्या कर लेती? मेरे लाइट जलते ही उनके चेहरे ऐसे सफेद हो गये थे कि अगर और कोई होता तो उन्हे चोर समझ लेता..." तनवी हँसने लगी....

"ये बात तो है अक्षरा...पर हैं दोनो अजीब! भला ये भी कोई तरीका है लड़की पटाने का... शराफ़त से दिन में सीधे आकर बात करनी चाहिए थी.. 'सपने' में आने की नौटंकी क्यू की?" निहारिका ने बात आगे बढ़ाई...

"हम्म.. ये आइडिया अब तू उनको दे दे.. सीधे आकर बात करनी चाहिए थी!" तनवी ने मुँह बनाकर निहारिका की नकल की.. जैसे मैं उनका इंतजार ही कर रही हूँ यहाँ...!"

"अरे किसी ना किसी से तो शादी करनी ही है तुझे.. फिर उसमें क्या कमी है? स्मार्ट है.. शरीफ है... मुझे कहता तो मैं तो झट से तैयार हो जाती.. पर भगवान देता ही उसको है, जिसको उसकी ज़रूरत ना हो.. तू सारी उमर ऐसे ही बैठी रहेगी क्या?..... इस घर में?" निहारिका ने अपने मन की बात कह दी...

"हां! बैठी रहूंगी ऐसे ही.. मुझे तो शादी के नाम से ही नफ़रत है..!" तनवी ने जवाब दिया....

"पर क्यू यार? तू ऐसी क्यू है?" निहारिका ने ज़ोर देकर कहा....

"पता नही निहारिका.. पर मैं पक्का शादी नही करूँगी.. मुझे पता है... अब इस टॉपिक को बंद कर और किताब खोल ले.. आइन्दा अगर उन्होने कोई हरकत की तो मैं उन्हे छोड़ूँगी नही...!" तनवी ने कहते हुए अपनी किताब निकाल ली....

"हाई शीतल!" सौरभ ने कॉलेज से थोड़ी दूर हटकर खड़ी उसका इंतजार कर रही शीतल के पास गाड़ी रोकते हुए कहा...

शीतल नज़रें तक ना उठा सकी.. हाथ में पकड़ी कॉपी को यूँही सीने से चिपकाए खड़ी रही,"हाई"

सौरभ ने दूसरी तरफ झुक कर खिड़की खोल दी..," आओ, बैठो ना!"

शीतल ने नज़रें उठाकर दायें बायें देखा और फिर नज़रें झुका गाड़ी के आगे से निकल कर झट से गाड़ी में बैठ गयी.. सौरभ ने गाड़ी घुमाई और शहर से बाहर निकल कर सरपट दौड़ने लगी...

"कहाँ जा रहे हो?" शीतल ने अपने चेहरे पर लटक आई बालों की लट को पिछे करते हुए नज़रें हल्की सी सौरभ की ओर उठाते हुए पूछा...

"कहाँ चलना चाहिए?" सौरभ ने गाड़ी की रफ़्तार धीमी की और मुस्कुरकर उसकी और देखते हुए पूछा.. शीतल सहमी हुई सी बैठी थी...

"मुझे क्या पता? कहीं भी चलो!" शीतल उचक कर थोडा संभाल कर बैठ गयी...

"पर बुलाया तो तुम्ही ने था.. अब और किसको पता होगा?" सौरभ शरारत से मुस्कुराने लगा...

"मतलब तुम आना नही चाहते थे! है ना?" शीतल ने शंकित निगाहों से सौरभ की आँखों में झाँका...

"ये किसने कहा?" सौरभ हँसने लगा...

"ऐसे क्यू हंस रहे हो? मैने बुलाकर कोई ग़लती कर दी क्या?" शीतल का चेहरा उतर गया...

"तुम तो अब भी वैसी ही हो.. बात बात पर चिड जाती हो.. मैं तो सोचा करता था कि तुम बड़ी होकर समझदार हो गयी होगी.. हा हा हा..."

शीतल के चेहरे पर अनायास ही सौरभ की बात सुनकर चमक आ गयी," क्या तुम सच में मेरे बारे में सोचा करते थे...?"

"और नही तो क्या?" सौरभ ने कहा और अचानक चुप हो गया...

शीतल के बदन में 'रज़ाई' वाली बात याद करते ही झुरजुरी सी दौड़ गयी.. अपनी बाँह से अपने सीने को छिपाती हुई सी वह बोली...,"क्या सोचा करते थे?"

सौरभ से रोड से गाड़ी नीचे उतार कर एक टीले पर ले जाकर खड़ी कर दी.. और शीतल को अजीब सी निगाहों से घूर्ने लगा.. शीतल को उसकी नज़रें अपने कमसिन बदन में गडती हुई सी महसूस हो रही थी... उसने अपना चेहरा घुमा लिया और बाहर की और देखने लगी," बोलो ना.. क्या सोचा करते थे..?"

"यही कि मैं तुम्हे भूल क्यू नही पाता..." सौरभ ने थोड़ा रुक कर फिर बोलना शुरू किया..," ये भी कि तू भी मुझे याद करती होगी या नही... करती थी क्या?"

शीतल ने अचानक चेहरा घूमकर अपनी नज़रें उसकी नज़रों से मिला दी.. सौरभ का उसको 'तू' कहकर बोलना उसे बहुत प्यारा और 'अपना' सा लगा.. वह यूँही उसकी आँखों में देखती रही.. पर कुछ बोली नही...

"तुम सच में.... बड़ी हो गयी हो शीतल.." सौरभ उसकी आँखों में आँखें डाले हुए ही बोला...

शीतल की नज़रें शर्म के मारे झुक गयी और गोरे गालों पर हया की लाली नज़र आने लगी," ऐसा क्यू कह रहे हो?"

"और नही तो क्या? बड़ी नही हो गयी होती तो मुझसे प्यार होने के बावजूद इतने दिन बाद यूँ मिलने पर अब तक चुप ना बैठी रहती.. मुझसे लिपट गयी होती अब तक.." सौरभ ने अपना हाथ बढ़ा उसके गालों को छू लिया.. उसका छूना ही था कि शीतल उसकी बाहों में ढेर हो गयी.. बाहें सौरभ के गले में डाल उससे चिपकती हुई सिसकने लगी," तुम नही जानते सौरभ.. एक एक पल में तुम्हे कितनी बार याद किया है मैने.. कितनी तड़पी हूँ मैं..

तुम्हारे लिए.. अब तो मैने उम्मीद ही छोड़ दी थी.. तुम्हारे लौट कर मेरी जिंदगी में आने की..."

शीतल का सारा बदन प्यासा होकर अकड़ गया.. मधुर मिलन की आस में.. उसकी छातीया ठोस होकर सौरभ के सीने में चुभने सी लगी..,"अब वापस नही जाओगे ना!" शीतल के मुँह से 'आह' सी निकली...

"जाऊंगा!" सौरभ मुस्कुराने लगा," पर तुम्हे साथ लेकर..."

शीतल चौंक कर पिछे हटी और विस्मय से उसकी आँखों में देखने लगी.. फिर एक ज़ोर का घूँसा उसकी छाती में जड़ा और वापस चिपक गयी.. दुगने जोश के साथ!

"मैने मम्मी पापा से बात कर ली है.. वो शाम को तुम्हारे घर पर फोन करेंगे.. नंबर. दे देना अपना!" सौरभ अब भी मुस्कुरा रहा था...

शीतल इस असीम खुशी को दिल में दबाकर ना रख सकी.. उसकी आँखों से झार झार आँसू बहने लगे.. भाववेश में उसने सौरभ के गालों पर अपने तपते होठ रख दिए," आइ लव यू, सौरभ!"

# २५

रात को कमरे में बैठकर पढ़ रही तनवी को रह रह कर कुछ अजीब सा लग रहा था.. जाने ऐसा क्यू था? पर वह बार बार सामने वाली खिड़की की और देख रही थी.. पर्दे की हल्की सी हलचल भी उसका ध्यान अपनी और खींच लेती.. कल रात प्रतिक और धीरज इसी खिड़की से अंदर आए थे.. अचानक कुछ याद करके तनवी उठी और खिड़की के पास गयी.. परदा हटाकर उसने देखा.. खिड़की आज बंद थी.. उसने चितकनी खोली और बाहर झाँकने लगी.. खिड़की के साथ साथ एक पाइप उपर पानी की टंकी तक जा रहा था.. वो ज़रूर इसी के सहारे उपर चढ़े होंगे...

अचानक तनवी को हँसी आ गयी.. वह मूडी और हंसते हुए ही बिस्तर पर जाकर पसर गयी," ईडियट्स!" तनवी के मुँह से निकला.. लाइट जलती ही छोड़ उसने किताबें टेबल पर रखी और कंबल में घुस गयी... कल रात के ख़यालों में खोए खोए ही उसको कब नींद आ गयी.. पता ही नही चला..

"क्कऔन है?" अचानक कमरे में हुई आहट से उसकी नींद खुल गयी और चौंकते हुए उसने अपनी आँखें खोल दी... आज उसके मन में डर कम और गुस्सा ज़्यादा था.. वह सीधी पर्दे की और देखती हुई बोली," कौन है वहाँ? मैं शोर मचा दूँगी..!"

पर उधर से कोई जवाब नही मिला..

पर्दे की हलचल तनवी को सामान्य नही लग रही थी.. उसने झट से एक बार फिर पेपर वेट अपने हाथों में थम लिया," लगता है, आज फिर तुम्हारा सिर फूटेगा.... चुपचाप वापस जाओ!" तनवी ने मारने के लिए अपना हाथ उपर उठाया और कुछ सोचकर वापस नीचे कर लिया,"तुम्हारी प्राब्लम क्या है? अंदर आ जाओ!"

कोई जवाब ना मिलने पर तनवी चुपके से उठी.. और सावधानी से खिड़की की और बढ़ने लगी.. पर्दे के पास जाकर वह कुछ देर खड़ी रही और अचानक परदा एक तरफ सरका दिया.. वहाँ कोई नही था..

"हे भगवान!" तनवी ने खिड़की से बाहर झाँका.. पर पूरी सड़क सुनसान थी.. अपने माथे पर हाथ रखकर तनवी ने लंबी साँस ली और खिड़की अंदर से बंद कर दी.. पर वापस मुड़ते

ही उसकी साँस, उपर की उपर और नीचे की नीचे रह गयी..

बिस्तर पर, जहाँ से वो अभी उठकर आई थी; पेपर वेट के नीचे दबा एक कागज का टुकड़ा फड्फाडा रहा था.. अचंभे और दहशत से तनवी सिहर उठी.. "ये कैसे हो सकता है?" तनवी अपने आप में ही बड़बड़ाई और कमरे में चारों तरफ किसी की मौजूदगी को महसूस करने की कोशिश करने लगी..

पर कुछ होता तो मिरंभा! भारी और थके हुए कदमों से तनवी बिस्तर की ओर बढ़ी और कागज का टुकड़ा पेपरवेट के नीचे से निकाल कर पढ़ने लगी...

***" प्यार अमर होता है तनवी, वो कभी नही मरता! तुम्हे सोच भी नही सकती कि तुम दोनो एक दूसरे से कितना प्यार करते थे.. आज खुद प्रतिक को भी अहसास नही है कि तुम उसके लिए क्या थी.. और वो तुम्हारे लिए क्या था.. मुझे पता है कि तुम्हे कुछ याद नही है.. पर नियती तुम दोनो को फिर से मिलाना चाहती है.. इस बात को नज़रअंदाज मत करो! अपने अतीत को जानने की कोशिश करो! जानने की कोशिश करो की तुम्हारे घर वाले तुम्हारा नाम तनवी से बदल कर अक्षरा करने पर मजबूर क्यू हो गये... प्रतिक से मिलो! उसके दिल में तुम्हारे लिए उसके ज़ज्बात और असीम प्यार को महसूस करने की कोशिश करो! "***

तनवी का दिमाग़ चकरा गया.. उसने डर के बावजूद कमरे का कोना कोना छान मारा.. पर कुछ नही मिला.. मुश्किल से एक मिनिट के अंदर ये सब हो गया.. कोई अंदर आया और लेटर रख गया.. हल्की सी भी आहट किए बिना.. कौन ऐसा कर सकता है..?

अचानक बाथरूम में शुरू हुई पानी की 'टॅप - टाप' ने तो उसकी जान ही निकाल कर रखी दी... ज़ोर से चीखते हुए वह बाद-हवास सी होकर बाहर निकली और नीचे की और भागी...

चीक्ख सुनकर पहले ही मम्मी पापा बाहर निकल कर आ चुके थे," क्या हुआ बेटी?" दोनो ने लगभग एक साथ पूछा...

तनवी नीचे जाते ही मम्मी से लिपट गयी.. उसका शरीर थर थर काँप रहा था..," उपर...! उपर कोई है मम्मी!" तनवी की उपर देखने की हिम्मत तक नही हो रही थी...

तनवी की बात सुनते ही पापा उपर की और भागे.. कमरे में जाकर उन्होने एक एक चीज़ का जायजा लिया.. बिस्तर पर रखे उस कागज के टुकड़े के अलावा उनको वहाँ कुछ भी नही मिला... अच्छी तरह देख भाल कर नीचे आए पापा ने तनवी से पूछा," ये क्या है अक्षरा? "

"पता नही.. मैं बस एक मिनिट के लिए बिस्तर से उठी थी.. वापस आई तो वहाँ 'ये' रखा हुआ मिला.. पता नही किसने रख दिया..." कहकर तनवी रोने लगी...

"रो क्यू रही है बेटी? कोई परेशान कर रहा है क्या?" मम्मी ने तनवी को पापा से अलग ले जाते हुए पूछा...

सवाल सुनते ही तनवी के जहाँ में प्रतिक और धीरज की तस्वीर उभर गयी.. फिर कुछ देर रुक कर बोली," नही मम्मी! ऐसा तो कुछ नही है..!"

"कहीं ऐसा तो नही किसी ने तेरी किसी किताब में ये डाल दिया हो.. और खोलते हुए बिस्तर पर गिर गया हो...."पापा ने पास आते हुए पूछा....

"नही पापा! बिस्तर पर ये पेपर वेट के नीचे दबा हुआ था.. किसी ने अभी रखा है.. थोड़ी देर पहले..." तनवी ने पापा की और देखते हुए कहा...

पापा का चेहरा लटक गया और माथे पर चिंता और गुस्से की लकीरें उभर आई.. अचानक कुछ सोच कर उसने फोन निकाला और करनवीर का नंबर डायल किया..

"नमस्ते अंकल जी! इतनी रात को कैसे याद किया...?" करनवीर किसी गस्त से वापस आ रहा था...

"कोई अक्षरा को परेशान कर रहा है बेटा.. टाइम मिले तो आ जाना एक बार.. यहीं बैठकर बात कर लेंगे...

"क्यू नही अंकल जी? प्राब्लम ज़्यादा सीरीयस हो तो अभी आ जाता हूँ.." करनवीर ने विनम्रता से कहा...

"नही... ऐसी कोई बात नही है.. तुम कल आ जाना.. मैं तो सुबह जल्दी ही निकल जाऊंगा.. तुम्हारी आंटिजी से बात कर लेना.. समय रहते ही समस्या का कुछ इलाज हो जाए तो बेहतर होता है..." पापा ने फोन पर कहा...

"नो प्राब्लम अंकल जी.. मैं कल जल्द से जल्द आने की कोशिश करूँगा...!"

"ठीक है बेटा.. अब रखता हूँ.." कहकर पापा ने फोन रख दिया....

तीनो नीचे ही लेट गये थे.. तनवी मम्मी के पास थी.. उसकी आँखों में नींद का नामोनिशान तक नही था... वह इसी उधेड़-बुन में थी कि कल करनवीर के सामने प्रतिक और धीरज का जिकर करे या ना करे..

सोचते सोचते उसका दिमाग़ लेटर में लिखी उस बात पर चला गया " अपने अतीत को जानने की कोशिश करो! जानने की कोशिश करो कि तुम्हारे घर वाले तुम्हारा नाम तनवी से बदल कर अक्षरा करने पर मजबूर क्यू हो गये..."

"मम्मी! " तनवी उठकर बैठ गयी..

"हां अक्षरा ! क्या बात है?" मम्मी ने प्यार से पूछा..

"तुम मुझे बताते क्यू नही, मेरा नाम क्यू बदला..." तनवी असहज हो गयी थी...

"सो जा बेटी.. सुबह बात करेंगे!" मम्मी ने तनवी का हाथ खींचकर उसको ज़बरदस्ती लिटाने की कोशिश की...

तनवी चिड गयी,"मुझे नींद नही आ रही मम्मी.. आख़िर ऐसी क्या बात है जो आप बार बार टाल रहे हैं.. बताइए ना पापा!" तनवी ने उठकर बैठ गये पापा की तरफ देखा....

"अक्षरा अब बड़ी हो गयी है.. मेरे ख़याल से बताने में कोई हर्ज़ नही.." पापा ने मम्मी से राय ली...

"पर बाबा जी ने मना किया था!" मम्मी ने आशंकित नज़रों से पापा की और देखा...

कुछ देर चुपचाप सोचते रहने के बाद पापा अतीत की यादों में खोते चले गये....

"तू जब ५ साल की ही थी अक्षरा! एक दिन अचानक मुझे तुम्हारे प्रिन्सिपल ने फोन करके हॉस्पिटल पहुँचने को बोला... मेरी तो जान ही निकल गयी थी... बदहवास सा हॉस्पिटल पहुँचा तो जाकर पता लगा; तुम कोई नाम बार बार चिल्लाते हुए बेहोश हो गयी थी... नाम याद नही आ रहा.." पापा ने दिमाग़ पर ज़ोर देते हुए कहा और फिर आगे बताने लगा.....

"हॉस्पिटल से छुट्टी के बाद मैं तुम्हे सीधा घर ले आया... आँखें खोलने के बाद भी तुम सहमी सहमी सी लग रही थी.. पहले पहल हमने इस बात को ज़्यादा तवज्जो नही दी.. पर तुम्हारा अजीब व्यवहार बढ़ता ही चला गया.. ना तुम ज़्यादा बात करती थी.. और ना ही उसके बाद बच्चों के साथ खेलना पसंद था तुम्हे.. गुमसुम सी यूँही रहने लगी.. "

"इस बात को भी हम नज़रअंदाज कर देते.. पर जब तुमने सोते हुए चिल्लाना शुरू कर दिया तो हमे बड़ी चिंता होने लगी.. कई अच्छे डॉक्टर्स को दिखाया.. पर कहीं बात नही बनी.. कुछ डॉक्टर्स ने बताया भी कि इस उमर तक बच्चों की स्मृति में पुनर्जन्म की बातें संचित रहती हैं.. हो ना हो ये उसी का असर है..."

"रिश्तेदारों के बार बार कहने पर हम तुम्हे एक सिद्ध बाबा जी के पास ले गये.. मुझे तो यकीन था ही नही कि कुछ असर होगा.. पर उन्होने तो चमत्कार ही कर दिया.. एक यज्ञ करके उन्होने तुम्हारा नाम 'तनवी' से अक्षरा रखने को कहा... उन्होने बताया था कि तुम्हारे शरीर में घुसकर कोई आत्मा तुम्हारे पुनर्जन्म की दुखदायी यादों को जगाने की कोशिश कर रही है... उन्होने ज़्यादा कुछ नही बताया.. सिर्फ़ इतना ही कहा था कि नाम बदल कर यहाँ से ले जाने पर वो आत्मा दिग्भ्रमित हो जाएगी.. और दोबारा परेशान नही करेगी... उन्होने ये भी हिदायत दी कि तुम्हे इस बारे में कभी कुछ ना बताया जाए.. तुम्हारे इस बारे में ज़्यादा सोचने से पुनर्जन्म कि वो दर्दनाक यादें फिर से जीवंत हो सकती हैं..."

"उसके बाद हम तुम्हे घर लेकर आ गये.. मुझे ये सब मज़ाक जैसा लग रहा था.. पर तुम्हारे चेहरे पर लौटी मुस्कुराहट ने मेरी सोच बदल दी... फिर मैने हर रेकॉर्ड में तुम्हारा नाम बदलवा दिया... यही बात है जो हम तुम्हे बताकर बेवजह परेशान नही करना चाहते थे..." कहकर पापा चुप होकर तनवी की आँखों में देखने लगे....

तनवी हतप्रभ सी प्रतिक और उस रहस्मयी लेटर के बारे में सोचने लगी.....

# २६

तनवी निहारिका के साथ कॉलेज जाने के लिए निकली ही थी कि घर के सामने पोलीस ज़ीप आकर रुकी. गाड़ी को खुद करनवीर ही ड्राइव करके लाया था. अंदर बैठा हुआ ही करनवीर तब तक उसको अपलक देखता रहा जब तक वा उसकी नज़रों से औझल नही हो गयी.. पर तनवी ने अपनी नज़रें तक नही मिलाई और उसके पास से निकल गयी....

इस पूरी दुनिया में एक तनवी ही थी जो करनवीर को पसंद थी.. बेहद पसंद! तनवी के चेहरे की अनुपम सुंदरता और नज़ाकत, उसका संजीदा स्वाभाव और नज़रें हमेशा नीची करके चलना करनवीर को हमेशा चित्ताकर्षक लगता था.. पर ये भी तनवी का स्वभाव ही था जिसने करनवीर को आज तक अपने दिल की बात उसके आगे जाहिर करने से रोक रखा था.. यही वजह थी कि वह सोचता था कि उसको 'प्यार' जताना ही नही आता.....

करनवीर की नज़रें मूड कर दूर तक जाती हुई तनवी का पिछा करती रही.. अचानक उसने एक लंबी साँस ली और गाड़ी से उतर कर घर की डोर बेल बजाई.... ६ फीट लंबे, गठीले शरीर पर २६ साल की उमर में ही पोलीस की वर्दी खूब जम रही थी.. और उस पर लगे तीन स्टार तो किसी भी लड़की का सपना हो सकते थे...

"आ गये बेटा! अक्षरा अभी अभी कॉलेज के लिए निकली है..." मम्मी जी ने दरवाजा खोलते हुए कहा....

"हाँ आंटी जी.. देखा था मैने उसको रास्ते में...!" करनवीर अंदर आकर बैठते हुए बोला... मम्मी जी किचन में चली गयी...

"अरे! उसको वापस क्यू नही ले आए.. उसी के बारे में तो बात करनी थी...!" मम्मी ने अफ़सोस सा जताया...," मैं उसकी सहेली के पास फोन करके उसको वापस बुलाती हूँ!" मम्मी ने बाहर आकर एक फोन किया और वापस अंदर चली गयी...

"मुझे तो उससे बोलते हुए डर सा लगता है आंटी जी.. वो तो कभी देखती तक नही मेरी और... जाने कितनी ही बार आमना सामना हो जाता है हमारा.. पर अंजानों की तरह साइड

से निकल जाती है..! अब बताओ भला मैं उसको कैसे टोकता, रास्ते में!" करनवीर कहकर हँसने लगा....

"अरे नही बेटा! तू तो जानता है.. उसका स्वाभाव ही ऐसा है.. मुझे तो डर लगा रहता है, पराए घर की अमानत है... शादी के बाद भी उसका व्यवहार नही बदला तो...!" मम्मी ने चाय बनाकर करनवीर को दी और उसके पास बैठ गयी....

"क्क..क्या उसकी शादी पक्की कर दी..?" बनावटी आश्चर्य और खुशी प्रकट करते हुए करनवीर बोला....

"अभी कहाँ? पर कोई ढंग का रिश्ता हो तो बताना.. इसके पापा उतावले हो रहे हैं इसकी शादी के लिए... तुम तो सब जानते ही हो!" मम्मी ने मुस्कुरकर कहा..

"ओह्ह.. ज़रूर!" करनवीर के कलेजे को ठंडक मिली," वो अंकल जी कुछ जिकर कर रहे थे... क्या माम'ला है....?"

मम्मी उठी और ड्रॉवर में रखा 'वो' कागज का टुकड़ा करनवीर को पकड़ा दिया.. करनवीर खोल कर पढ़ने लगा....

" प्यार अमर होता है तनवी, वो कभी नही मरता! तुम्हे सोच भी नही सकती कि तुम दोनो एक दूसरे से कितना प्यार करते थे.. आज खुद प्रतिक को भी अहसास नही है कि तुम उसके लिए क्या थी....." इतना पढ़कर हो करनवीर रुक गया...

"ये... प्रतिक कौन है? मैने सुना है कहीं...!" करनवीर ने दिमाग़ पर ज़ोर डाला.. पर 'प्रतिक' का नाम और उसके द्वारा लिया गया 'तनवी' नाम उसके जहाँ से उतर गया था...

"पता नही बेटा...! पर अक्षरा को भी पता होता तो वो ज़रूर बता देती.. उसको भी मालूम नही है कुछ.. कल रात को भागती हुई नीचे आई थी.. बहुत डरी हुई थी.. किसी ने उसके कमरे में ये लेटर डाल दिया... इसी से इतनी परेशान हो गयी बेचारी... फिर मामले के बढ़ने से पहले ही निपट लें तो बेहतर होता है.. लड़की की जात है.. बात बाहर निकल गयी तो लोग जाने कैसी कैसी बातें करने लगते हैं..." मम्मी ने दुख भरे लहजे में कहा....

"पर ये लेटर तो तनवी के नाम पर लिखा गया है.." कहते हुए करनवीर फिर से पहली लाइन से पढ़ना शुरू हो गया...

"यही बात तो हमारी समझ में नही आ रही बेटा.. दर-असल पहले अक्षरा का नाम 'यही' था.. पर बहुत छोटी थी तभी बदल दिया था ये नाम... जाने किस मुए को ये बात पता चल गयी... और अब इसको परेशान करने पर तुला है...."

"हां.. मैने भी सुना था एक बार.. अक्षरा का नाम पहले 'तनवी' होने के बारे में.."

मम्मी जी की बातें सुनते सुनते करनवीर लेटर पढ़ता जा रहा था.. अचानक एक जगह रुक कर उसकी आँखें सिकुड गयी... और कुछ सोचकर वह उछल पड़ा..,"ओह्ह माइ गोड!"

"क्या हुआ बेटा?" मम्मी ने आशंकित होकर पूछा...

"एक मिनिट.." करनवीर बाहर गया और ज़ीप से सी.डी. केस डाइयरी निकाल कर लाया... वापस आकर उसने कुछ पेज पलटे और कागज का एक टुकड़ा उसमें से निकाल कर दोनो को टेबल पर साथ साथ रख लिया....

"ये क्या है बेटा?" मम्मी को उसकी हरकत समझ में नही आई...

"कुछ नही.. आप निसचिंत रहें.. आपकी प्राब्लम तो सॉल्व हो ही गयी समझो.. अब मैं चरंभा हूँ..." कहकर करनवीर तेज़ी से खड़ा हो गया....

"ठीक है बेटा.. 'उनसे' अगर इस बारे में कुछ बात करनी हो तो फोन कर लेना.." मम्मी जी साथ खड़े होते हुए बोली....

"एक बात कहूँ आंटी जी.. अगर बुरा ना मानो तो!" करनवीर ने वापस पलट'ते हुए कहा...

"हां बोलो ना बेटा.. क्या बात है..?" मम्मी ने उसके चेहरे की और देखा...

"वैसे तो.... ये बात घर के बड़ों को ही करनी चाहिए... पर.... मुझे अक्षरा बहुत पसंद है... आप.. और पापा अगर..." कहकर करनवीर चुप हो गया.. आयेज उसको समझ ही नही

आया की कैसे बात पूरी करे!

बात समझ में आते ही मम्मी जी का चेहरा खिल उठा," ये तो उसके लिए बड़े सौभाग्य की बात होगी बेटा... मैं इसके पापा के आते ही बात करती हूँ.. वो तुम्हारे घर फोन कर देंगे.."

खुशी से फूली नही समा रही मम्मी जी ने अपने हाथ उठा करनवीर के सिर पर हाथ रख दिया... करनवीर का भी यही हाल था.. जाने कितने दीनो के बाद वह किसी से अपने दिल की बात कह पाया था...

जैसे ही करनवीर बाहर निकला, उसको सामने से तनवी वापस आती दिखाई दी.. उसने लाख कोशिश की उसको टोकने की.. पर उसके मुँह से 'हाई' तक ना निकल पाया.. तनवी सिर झुकाए हुए ही साइड में खड़ी होकर करनवीर के रास्ता छोड़ने का इंतजार करने लगी..

करनवीर सिर खुजाता हुआ उसके सामने से हटकर गाड़ी में जा बैठा.. और तनवी उसको बिना देखे ही अंदर चली गयी....

"ओहू! आप एक बार बात तो कर लो उनसे.. इतना अच्छा रिश्ता खुद चलकर आया है.. मैं तो कहती हूँ, बात बन जाए तो चट माँगनी पर ब्याह कर देंगे अपनी अक्षरा का...." करनवीर के निकलते ही मम्मी जी ने फोन लगा लिया था...

"अच्छा ठीक है.. मैं अभी बात करके बताता हूँ... पर उनको बोलूं क्या?" पापा ने असमंजस से पूछा...

"अब ये बात भी क्या मैं ही समझाऊ? बोल देना की करनवीर को पसंद है.. और हम भी बहुत खुश हैं इस रिश्ते से....." मम्मी ने बात पूरी भी नही की थी कि तनवी दरवाजा खोलकर अंदर आ गयी

"किसके रिश्ते की बात हो रही है मम्मी..?" तनवी आते ही मम्मी से लिपट गयी...

"अच्छा रखती हूँ जी.. आप बता देना मुझे भी..." मम्मी ने कहा और फोन रख दिया...

"क्या हुआ मम्मी? करनवीर आया था! कुछ पता चला...." तनवी ने मम्मी के फोन रखते ही पूछा...

"करनवीर आया था!" मम्मी ने मुँह चढ़ा कर मज़ाक मज़ाक में उसकी नकल उतारी," तू तो जैसे घर वालों के अलावा किसी को जानती ही नही.. सामने से बोल नही सकती थी क्या?"

"मैं क्यू बोलूं..? मुझे अच्छा नही लगता ऐसे किसी को राह चलते में टोकना.. बताओ ना.. आपने उस लेटर की बात की या नही..... और मुझे क्यू बुलाया है?" तनवी ने जवाब देते हुए पूछा....

"हां.. कह रहा था कि अब मैं सब संभाल लूँगा... और कुछ हो ना हो.. हमें बहुत अच्छा दूल्हा मिल गया; अपनी गुड़िया रानी के लिए.." मम्मी ने तनवी का चेहरा अपने हाथों में लेकर गालों को चूमते हुए कहा...

तनवी बात सुनते ही बिदक गयी," ये क्या कह रही हैं मम्मी.. मैने कह दिया ना मुझे नही करनी शादी वादी.. आप बार बार ये जिकर ना किया करें.. मेरा दम घुटने लगता है...."

"अरी.. सुन तो ले एक बार की रिश्ता किसका आया है... अपने 'करनवीर' का.. कितना सुंदर और छैल छबिला है.. और थानेदार है.. तू मौज करेगी उसके साथ!" मम्मी ने समझाते हुए कहा...

"थानेदार होगा, अपने घर में.. मुझे नही करनी किसी से शादी... देख लेना, आगे बात बढ़ाई तो!" गुस्से से भरी तनवी ने अपनी किताब उठाई और पैर पटकती हुई वापस चली गयी.. कॉलेज में....!

"ये लड़की भी ना!" मम्मी ने बड़बड़ाते हुए अपने माथे पर हाथ मारा ही था की फोन की घंटी बज उठी..,"मम्मी ने लपकते हुए झट से फोन उठा लिया...,"हां जी!"

"सच में आज का दिन तो बहुत ही शुभ है... वो भी बहुत खुश हुए बात सुनकर.. झट से तैयार हो गये..!" पापा की आवाज़ थी...

"आछाआअ!" मम्मी जी चहकति हुई बोली और फिर अचानक तनवी की बात याद आते ही मायूस हो गयी," पर अक्षरा का क्या करें? ये तो उल्टी ही रामायण पढ़ रही है..."

"क्यू क्या हुआ? पापा ने आशंकित होकर पूछा...

"कह रही है, इसको नही करनी शादी वादी.. मुझसे लड़ाई करके वापस गयी है..." मम्मी का चेहरा उतर गया....

"ओह्हो.. तुमने तो मुझे डरा ही दिया था.. ऐसा तो होता ही है.. लड़की है आख़िर! और क्या शादी की बात सुनकर नाचने लग जाएगी..! लड़कियाँ तो ऐसे करती ही हैं.. तुम उसकी चिंता मत करो.. वो तो इस शनिवार को ही देखने आने की बात कह रहे हैं...." पापा ने बात को आगे बढ़ाया...

"हाई राम! पर शनिवार में तो तीन ही दिन बचे हैं...." मम्मी सोच कर बोली...

"तो हमें क्या करना है.. उनकी देखी भाली तो है ही.. बस आ जाएँगे और 'अपनाकर' चले जाएँगे... तुम किसी बात की चिंता मत करो! मैं रखता हूँ अब.." कहकर पापा ने फोन काट दिया...

मम्मी जी फूली नही समा रही थी.....

# २७

"एक्सक्यूस मी, मिस तनवी!"

तनवी कॉलेज के अंदर कदम रखने ही वाली थी कि अपना नाम सुनकर चौंक कर पलटी..

"मैं संकेत हूँ.. प्रतिक का दोस्त!" संकेत ने मुस्कुराते हुए कहा...

पहले से ही गुस्से में भरी हुई तनवी की थयोरियाँ चढ़ गयी,"तो?"

एक बार तनवी के तेवर को देख संकेत भी सहम सा गया.. इस बात को जानते हुए कि तनवी ने उस रात प्रतिक और धीरज को ऐसे ही निकल जाने दिया था, उससे काफ़ी विनम्रता की उम्मीद थी.. कुछ देर रुक कर संभालते हुए बोला," तो.... मुझे आपसे कुछ बात करनी थी.. इसी बारे में.. आप चाहे तो अपनी सहेलियों को साथ ले सकती हैं...."

"नही... मुझे किसी से कोई बात नही करनी..." कहकर वो पलटी ही थी कि निहारिका और शीतल ने उसका हाथ पकड़ लिया," सुन तो लो अक्षरा! सुनने में क्या हर्ज़ है..?" निहारिका ने कहा....,"मुझे प्रतिक की बातें सच्ची लगती हैं...."

"अब तुम भी?" तनवी ने निहारिका को घूरा....

"मुझ पर विश्वास नही है क्या?" निहारिका ने उसका हाथ दबाकर कहा...

"यार.. इसमें विश्वास की क्या बात है? बस, मुझे कोई बात नही करनी..." तनवी अपने फ़ैसले पर अडिग थी...

"देख! मैं तुझे प्रतिक की बातों में सच्चाई के बहुत से सबूत दे सकती हूँ.. पर तू एक बार हमारे साथ चल.. बस!" निहारिका ने ज़ोर देकर कहा...

"साथ चलूं? ... पर कहाँ?" तनवी ने नरम पड़ते हुए कहा...

"चल आजा... " निहारिका ने कहा और लगभग ज़बरदस्ती सी करते हुए उसको संकेत की गाड़ी में बैठा लिया.. साथ ही शीतल भी बैठ गयी......

संकेत के घर पर सब लोग साथ साथ बैठे थे.. शीतल और सौरभ एक दूसरे के साथ बैठे थे.. संकेत और प्रतिक एक दूसरे के साथ.. उनके सामने निहारिका के साथ बैठी हुई तनवी खुद को अजीब सी स्थिति में पा रही थी... अगर निहारिका उसके साथ ना होती तो एक पल भी उसका वहाँ ठहरना नामुमकिन था... उसने निहारिका का हाथ कसकर पकड़ा हुआ था..

अचानक दारू की बॉटले छिपाने गया धीरज जैसे ही उनके सामने आया.. उसके सिर पर गोला बना देख निहारिका की हँसी छूट गयी.. तनवी ने भी जैसे ही अपना चेहरा उपर उठाया, अपना मुँह दबाकर हँसने से खुद को रोक ना पाई...

"प्रणाम भाभी जी!" धीरज ने पहली बार तनवी के चेहरे पर सितारों की चमक जैसी मुस्कुराहट देखी थी.. मौके का फायदा उठाते हुए उसने तनवी को भाभी कह ही दिया....

तनवी ने उसकी बात को अनसुना कर दिया और निहारिका से बोली," हां.. अब बताओ.. क्या बात करनी थी.. जल्दी बोलो.. मुझे जाना है...

प्रतिक ने बोलने के लिए जैसे ही मुँह खोला.. सब चुप होकर उसकी बात सुनने लगे.. अपने सपनो से शुरुआत करके आज तक की सारी कहानी प्रतिक ने विस्तार से बयान कर दी.. सिर्फ़ उसमें से गीता के साथ हुए उस दर्दनाक हादसे को वह खा गया.. इस दौरान गीता को याद करते हुए उसकी आँखें भर आई.. और एकाएक सब भावुक हो गये.. जिनको गीता के बारे में पता था.. वो गीता को याद करके.. और जिन्हे नही पता था.. वो ये समझ कर कि प्रतिक तनवी को कहानी सुनाते हुए बहक गया है....

"आई बात समझ में....?" निहारिका ने प्रतिक की बात ख़तम होते ही तनवी से पूछा...

तनवी का दिमाग़ कहानी सुन'ते हुए सुन्न सा होकर अपना नाम बदले जाने वाली कहानी से तड़ातम्मया बिठा रहा था.. पर प्रत्यक्ष में उसने सिर्फ़ इतनी ही प्रतिक्रिया दी," चलें!"

"अब ये क्या बात हुई...? कुछ बोलो तो सही.. आख़िर सब तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रहे हैं..." निहारिका ने गुस्से में भरकर कहा....

तनवी कुछ बोलने की सोच ही रही थी कि अगले ही पल मानो उसको बिजली का सा झटका लगा..

"उम्मीद करता हूँ कि मैने आप सब को डिस्टर्ब नही किया होगा..." बिना इजाज़त अंदर आने के बाद एक एक चेहरे को घूर्ने के बाद करनवीर की आँखें तनवी पर आकर टिक गयी....," ओह्हो! इतनी शराफ़त और नज़ाकत भरी शरारत... आइ'एम इंप्रेस्ड!" करनवीर के चेहरे पर कुटिल मुस्कान तेर गयी.....

"आइए ना इनस्पेक्टर साहब. बैठिए... हम उस दिन इन्ही 'तनवी' की बात कर रहे थे.." संकेत इनस्पेक्टर के स्वागत में खड़ा हो गया....

तनवी कुछ बोल सकने की हालत में नही थी.. वह उठकर बाहर जाने ही लगी थी की करनवीर ने उसको टोक दिया,"अरे नही नही... ये तो बहुत ही अच्छा हुआ कि आप यहीं मिल गयी.. प्रतिक को हथकड़ी लगाने से पहले मुझे आपके बयानों की भी ज़रूरत पड़ेगी... हा हा हा!"

करनवीर की बात सुनकर सभी चौंक कर उसकी और देखने लगे..

"ये क्या कह रहे हैं आप..? प्रतिक को हथकड़ी?" संकेत ने आश्चर्य चकित होते हुए पूछा....

"चिंता ना करें.. मैं सब कुछ स्पष्ट करके ही इसको यहाँ से ले जाऊंगा..." करनवीर कुर्सी पर बैठ गया...

प्रतिक कभी करनवीर को और कभी तनवी को अजीब सी निगाहों से देखने लगा.....

"तो प्रतिक जी; आप रात को अक्षरा के घर में घुसपैठ करते हैं?" सबके चेहरों को अपनी और ताकता छोड़ कर अपनी इनटेरोगेशन शुरू कर दी....

सवाल सुनते ही धीरज ने अपने सिर के गोले को हाथ से ढक लिया... मानो सबूत छिपाने की कोशिश कर रहा हो...

प्रतिक ने मायूस होकर शिकायती नज़रों से तनवी की और देखा.. उसको यही अंदाज़ा हुआ कि तनवी ने उसके घर में घुसने की रिपोर्ट करवा दी है... सिर झुका कर वह कबूल करने को बोलने ही वाला था कि चौंक कर उसने तनवी की और देखा...

"नही! ये हमारे घर में कभी नही आया...!" तनवी के जवाब ने सबको हैरत में डाल दिया...

करनवीर तनवी के बोलने से झल्ला उठा.. उसको तनवी की आवाज़ से ही पता चल गया था कि वो प्रतिक को बचाने के लिए ऐसा बोल रही है...

"आर यू शुवर मिस.. अक्षरा उर्फ तनवी जी!" चेहरा नीचे किए हुए ही नज़रें उपर उठा कर करनवीर ने तनवी की और घूरा....

"हां.. ये कभी हमारे घर नही आया...!" तनवी ने नज़रें झुकाए हुए ही जवाब दिया.. बात सुनकर धीरज भी उछल पड़ा,"हां हां.. हम भला रात को क्या करने जाएँगे.. हैं ना प्रतिक!"

प्रतिक ने नज़रें उपर करके उसके 'गोले' को देखा और उसकी हँसी छूट गयी.. अब प्रतिक काफ़ी रिलॅक्स महसूस कर रहा था.. जब मियाँ बीवी राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी!

"वाह वाह! प्रतिक को बचाने की आपकी कोशिश काबिल-ए-तारीफ़ है तनवी जी! पर अफ़सोस! इसको हथकड़ी लगाने के लिए जो वजह मेरे पास है.. उसमें आप भी इसकी कोई मदद नही कर सकती.... इसके इस जुर्म के लिए तो मैं इसको समझा कर ही छोड़ने वाला था.... आख़िर तुम्हे भी इसके साथ कोर्ट के चक्कर लगाने पड़ते... और मेरी तरह कोई भी इज़्ज़तदार मर्द ये नही चाहेगा कि उसकी होने वाली धरमपत्नी इस तरह की छोटी छोटी बातों के लिए कोर्ट के झमेले में पड़े.."

करनवीर ने अपनी आख़िरी बात को चबा चबा कर कहा और तनवी के घर मिला खत उसके सामने टेबल पर रख दिया...," अब ये मत कहना कि ये खत भी आपको नही मिला.. आंटी जी ने मुझे दिया है.."

तनवी ने अपनी नज़रें झुका ली.. कुछ देर मौन रहने के बाद बोली,"हां.."

करनवीर कुटिरंभा के साथ मुस्कुराया,"वेरी गुड!... पढ़ना ज़रा इसको!" कहकर करनवीर ने खत प्रतिक को पकड़ा दिया....

प्रतिक धीरज सौरभ और संकेत आश्चर्य से खत को पढ़ने के बाद एक दूसरे की आँखों में देखने लगे.. किसी की समझ में नही आ रहा था कि ये 'लेटर' वाला क्या फंडा है.. सब एक दूसरे से इशारों ही इशारों में सवाल सा कर रहे थे....

"पढ़ लिया?" करनवीर ने आराम से पिछे सिर टिकते हुए पूछा....

"जी हां.. पर इससे हमारा कोई लेना देना नही...!" प्रतिक ने ज़ोर देकर कहा....

"मान लिया! चलो अब इसको पढ़ो ज़रा...." करनवीर ने एक और लेटर प्रतिक के सामने टेबल पर फैला दिया...

"ययए.. ये तो गीता का है...." प्रतिक ने हाथ में पकड़े गीता के स्यूयिसाइड नोट की पहली लाइन पढ़ते ही कहा....

करनवीर मुस्कुराया," ना! ये गीता ने नही लिखा... पहले में मान चुका था कि गीता ने आत्महत्या की है... और ये स्यूयिसाइड नोट अपने हाथों से लिखा है... पर अब नही मानूँगा... गीता की हत्या हुई है...!"

"क्क्या मतलब..." सभी उछल कर खड़े हो गये.. बेचारी तनवी को तो अब तक ये भी पता नही था कि गीता अब इस दुनिया में नही है.... सब हैरत से करनवीर की ओर देख रहे थे....

"दोनो लेटर्स एक साथ रख कर देखो... साफ पता चल रहा है कि दोनो एक ही आदमी ने लिखें हैं..." करनवीर के चेहरे पर सफरंभा की चमक उभर आई थी....

सबने अपने अपने हाथों में लेटर लेकर देखे.... करनवीर की बात शत प्रतिशत सच थी.... पर किसी की कुछ समझ में नही आ रहा था....

"इसका क्या मतलब है?" संकेत ने हड़बड़ा कर पूछा....

"इसका मतलब ये है कि स्यूयिसाइड नोट गीता ने नही लिखा... किसी और ने लिखा है.. और जिसने भी लिखा है.. उसी ने गीता का कत्ल किया है...!" करनवीर तीर छोड़ कर चुप हो गया.... उसको कहीं से किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नही मिली तो मजबूरन उसको खुद ही सारी बात समझानी पड़ी....

"देखो! गीता मर चुकी है.. इसीलिए तनवी के घर मिला लेटर गीता के हाथ का लिखा नही हो सकता... अब क्यूंकी दोनो खतों में राइटिंग हूबहू एक जैसी है.. इसका मतलब ये हुया कि गीता का स्यूयिसाइड नोट भी उसी व्यक्ति ने लिखा है जिसने ये दूसरा खत लिखा...

साफ बात है कि उसी व्यक्ति ने ही गीता की हत्या भी की है... अब अगर उस दिन के घटनाक्रम पर नज़र डालें तो प्रतिक ने खुद कहा है कि लास्ट में वो कुण्डी लगाकर गीता को अंदर छोड़ आया था.. उसके बाद विपिन ने स्वीकार किया है कि जब वो गीता के पास अंदर गया तो गीता लाश बन चुकी थी... अगर विपिन बाहर होता तो मैं एक पल को मान भी लेता कि हो सकता है हत्या विपिन ने की हो.. पर उसकी जमानत तो कल होगी.. फिर वो कैसे तनवी के घर लेटर भेज सकता है... नही ना?"

इसका मतलब कहानी शीशे की तरह बिल्कुल साफ हो गयी.... विपिन ने गीता को जबरन प्रतिक के पास भेजा और प्रतिक ने गीता की मजबूरी का फायदा उठाते हुए उसके साथ ज़बरदस्ती करने की कोशिश की.. पर जब वो नही मानी तो ज़बरदस्ती के चक्कर में ही इसने उसका गला घोंट दिया... और उसको पंखे से लटका कर बाहर से कुण्डी बंद करके आ गया... समझे! विपिन पर सिर्फ़ ब्लॅकमेलिंग का आरोप रहेगा.. बाकी सारा काम तो जनाब ने अपने हाथों से ही किया है...." करनवीर ने एक लंबी साँस छोड़ कर अपनी कहानी को विराम दिया....

"आप बेवजह प्रतिक पर शक कर रहे हैं इनस्पेक्टर... ये सपने में भी ऐसा नही कर सकता....!" संकेत ने ज़ोर देकर कहा....

"तो किस पर करूँ प्रोफ़ेसर साहब!" करनवीर हंसा," क्या आप पर करूँ? या बाकी लोगों पर... उस रात कोई और मौजूद था ही नही.. अगर आप में से कोई क़ुबूल कर रहा है कि ये

कत्ल और दोनो खत आप में से किसी ने किए हैं तो ठीक है.. मैं विचार कर लेता हूँ... वरना सारे सबूत तो प्रतिक की तरफ ही इशारा कर रहे हैं..." करनवीर ने कहा...

"हम जायें!" तनवी के चेहरे पर कड़वाहट साफ झलक रही थी......

"जी क्यू नही..? वैसे अब भी कोई मुग़ारंभा बचा हो तो आप भी सवाल कर सकती हैं..." करनवीर ने तीखी नज़रों से तनवी की और देखते हुए कहा...

तनवी, निहारिका और शीतल बिना कुछ कहे बाहर निकल गयी....

"हम भी चलते हैं लव गुरु.. तुमसे टिप्स लेने फिर कभी आऊंगा.." करनवीर ने सलाम ठोंकने के अंदाज में अपना हाथ संकेत की और उठाया और प्रतिक का हाथ पकड़ कर खड़ा हो गया....," प्रतिक को मैं कल सुबह कोर्ट में पेश कर दूँगा.. पर मुझे नही लगता कि ४-५ महीने से पहले इसकी बेल अप्लिकेशन लगाने का कोई फायदा होगा..."

# २८

रात को करीब १२ बजे जाकर करनवीर को बिस्तर नसीब हुआ.. सारे दिन की भगा दौड़ी से उसको थकान महसूस हो रही थी... प्रतिक से उसने गीता वाले केस से ज़्यादा तनवी के बारे में पूछा था... ये जानकार उसको सुकून मिला था कि अभी तक प्रतिक उसके दिल में जगह बनाने में नाकामयाब रहा है... उसको खुद अहसास हो रहा था कि प्रतिक का नाम तनवी के साथ जुड़ा होने की वजह से वह केस में कुछ ज़्यादा ही इंटेरेस्ट ले रहा है.. दोपहर को तनवी के सामने ही सारा खुलासा करने के पिछे भी उसका यही मकसद था...

पर करनवीरीयता और शायद आत्मीयता सी दिखाते हुए उसने प्रतिक को अपने साथ ही खाना खिलाया और स्टाफ के ही आदमी के बिस्तर पर सो जाने को कह दिया... ताकि वह अपने ही मंन के द्वारा धिक्करे जाने से बच सके... वह खुद भी थाने में बने अपने रिटाइरिंग रूम में ही लेट गया...

अचानक दरवाजे पर हुई दस्तक से उसकी नींद टूट गयी,"कौन है?"

पर उसके सवाल का किसी ने भी जवाब नही दिया और वह करवट बदल कर फिर सोने की कोशिश करने लगा...

थोड़ी ही देर बाद दरवाजा लगातार २ बार जल्दी जल्दी खटखटाया गया.. वह झल्ला कर उठ बैठा और पैंट पहन कर उठ खड़ा हुआ...

"क्या बात है?" दरवाजा खोल कर करनवीर ने पास ही खड़े संतरी से पूछा...

"कुछ नही जनाब! क्या हो गया...?" संतरी भाग कर दरवाजे के पास आया...

"दरवाजा क्यू खटखटा रहे हो?" करनवीर ने हल्के से गुस्से से कहा...

"नही तो जनाब! मैं तो आधे घंटे से यहीं खड़ा हूँ.. दरवाजा तो किसी ने नही खटखटाया...."

करनवीर ने अजीब सी नज़रों से उसको घूरा और बाहर गेट की तरफ टहलने चला गया.. वापस लौट'ते हुए वा प्रतिक के कमरे में घुस गया.. प्रतिक जाग ही रहा था...

"कोई दिक्कत तो नही है भाई?" करनवीर ने पूछा...

"आपके रहते दिक्कत क्या हो सकती है?" प्रतिक ने व्यंग्य सा किया.. करनवीर ने कुछ बोलना उचित नही समझा और बाहर निकल कर अपने कमरे में जाकर लाइट ऑफ की और फिर लेट गया...

मुश्किल से उसको लेटे हुए ५ मिनिट भी नही हुए होंगे की अचानक कमरे की लाइट जल गयी...

हड़बड़ते हुए चौंक कर करनवीर एक दम उछल कर बैठ गया," कौन है?"

पर एक बार फिर किसी से कोई जवाब नही मिला...

करनवीर के दिल की धड़कने बढ़ने लगी.. वह बिस्तर से उठा और धीरे धीरे चलते हुए अलमारियों के पिछे बने स्विच बोर्ड की और बढ़ा... वहाँ पर किसी चूहें तक का भी नामोनिशान ना पाकर उसका दिल उसकी बल्लियों पर आ जमा," क्या मुसीबत है?" वह बड़बड़ाया और लाइट बंद कर दी... फिर जाने क्या सोच कर वह पलटा और लाइट फिर से ऑन कर दी....

वापस बिस्तर की तरफ आते ही मानो उसको बिजली का कोई तेज झटका लगा हो.. हैरत और भय के मारे उसकी आँखें बाहर को निकल आई... धीरे धीरे चलकर उसने बिस्तर पर पड़े कागज के टुकड़े को उठाया.. लाल रंग से कागज पर सिर्फ़ इतना ही लिखा हुआ था," ***मरे हुए झूट नहीं बोलते***"!

असमंजस में वहीं जमकर खड़े हो चुके करनवीर को स्पष्ट अहसास हो रहा था कि कमरे में कोई है... पर कौन है; ये उसकी समझ से परे था.. इतना तो तय था ही कि जो कोई भी था.. तीनो राइटिंग एक ही आदमी की थी...

हैरानी से पागल हुए जा रहे करनवीर ने बिस्तर के नीचे देखा, दोबारा अलमारियों के पिछे देखा.. पर कहीं आदमी होने का चिन्ह तक उसको नज़र नही आया...

"कौन है भाई? ये आँख मिचौली सी कैसी खेल रहे हो... सामने आकर बात करो ना.." करनवीर एक जगह खड़ा खड़ा ही चारों तरफ घूम घूम कर देख रहा था...

"अगर तुम प्रतिक या विपिन को बचाने के इरादे से आए हो तो सामने आ जाओ! मैं भी सच जानना चाहता हूँ... सामने आ जाओ यार!" करनवीर इस तरह बात कर रहा था जैसे किसी से फोन पर बात कर रहा हो.. बोलते हुए उसकी आँखें सामने दीवार पर ठहरी हुई थी.... उसकी बातों और चेहरे से लग रहा था की उसको 'भूतों' के कॉन्सेप्ट पर यकीन हो चला है...

अगले ही पल उसने बड़ी मुश्किल से खुद को बेहोश होने से रोका... उसकी टेबल पर रखा पेन पहले सरका और फिर हवा में उठ गया.. अगले ही पल पेन टेबल पर इस तरह जाकर खड़ा हो गया मानो किसी ने पेन हाथ में लेकर टेबल पर हाथ रख दिया हो....

आश्चर्य में करनवीर पलकें झपकना तक भूल गया.. वह दो कदम पिछे हटा और अपने हाथ अलमारी से चिपका लिया... उसकी आँखें हैरत से फटी जा रही थी.. गला सूख चुका था.... पर बोलती बिल्कुल बंद थी.. अब तो उसके साँस भी गिने जा सकते थे... और दिल की धड़कने भी सुनी जा सकती थी....

कुछ पल पेन हवा में ही लहराता रहा.. फिर अचानक उसकी सी.डी. (केस डाइयरी) के पन्ने पलटने लगे... आख़िरकार जब पन्ने पलटने बंद हो गये तो पेन डाइयरी के पन्ने से सटकार खड़ा हो गया... और इस तरह लहराने लगा जैसे पन्ने पर कुछ लिखा जा रहा हो....

करनवीर साँस रोके डाइयरी पर पेन का नृत्य देखता रहा.. आज से पहले उसने कभी सोचा भी नही था कि ऐसा भी कभी देखने को मिल सकता है.. हालाँकि अभी तक उसको किसी तरह की हानि नही हुई थी.. पर फिर भी वह पछता रहा था कि रिवॉल्वर उसने टेबल के ड्रॉयर में ही क्यू छोड़ दी.. अगर पेन उठ सकता है तो रिवॉल्वर भी तो..

अचानक डाइयरी पेन को अपने पन्नों में ही समेटे बंद हो गयी.. कुछ ही देर बाद चितकनी नीचे हुई और दरवाजा अपने आप खुल गया...

करनवीर अभी तक सम्मोहित सा दरवाजे की और देख रहा था कि संतरी भगा भगा आया,"जी जनाब! आपने बुलाया..!"

अब तो करनवीर संतरी को भी शक की निगाहों से ही घूर रहा था.. ,न..नही तो!"

"ज्जई.. वो आपने दरवाजा खोला, इसीलिए मुझे लगा..." संतरी सिर झुका कर बाहर निकलने लगा....

"अरे सुनो!" करनवीर ने आवाज़ लगाई...

संतरी झट से सेवा में पुन्हः हाज़िर हो गया.....

"वो... प्रतिक को यहीं भेज दो.. मेरे पास!"

"जी! आपने बुलाया?" प्रतिक अंदर आकर विनम्रता से बोला.....

"हां यार.. मरता क्या ना करता! आओ..." केस डाइयरी अब करनवीर के हाथ में थी...

"आओ.. बैठ जाओ आराम से.. यहीं सो जाना.. कल सुबह उठकर घर चले जाना!" करनवीर ने बिस्तर पर बैठते हुए कहा.. कुछ देर पहले हुए परलौकिक अनुभव का असर उसकी आँखों में अब भी साफ दिखाई दे रहा था...

प्रतिक ने आश्चर्य से करनवीर की और देखा,"इस रहमत की वजह जान सकता हूँ क्या?"

"लो.. ये पढ़ो!" कहकर करनवीर ने 'वो' पन्ना खोल कर डाइयरी प्रतिक के हाथों में दे दी....

"ये क्या है?" प्रतिक ने बिना डाइयरी में देखे ही पूछा...

"अरे यार.. पढ़ो तो सही.. बाद में सब बताता हूँ...." करनवीर ने मुस्कुराने की कोशिश की.. पर मुस्कुराहट सिर्फ़ उसकी कोशिश में ही रही.. चेहरे पर आ नही पाई...

प्रतिक ने डाइयरी को सामने रखा और पढ़ने लगा....

***" आपकी दुनिया के इस पार की दुनिया अजीब होती है इनस्पेक्टर साहब! हम जिंदा नही होते; पर कई बार मरते भी नही. आप मुझको महसूस करके बेचैन हो गये हो; पर सच कहूँ तो हम आत्मायें धरती के जिंदा इंसानो से डरती हैं. लालच, हवस, साज़िश, विश्वासघात; क्या क्या नही होता यहाँ.. हमारी दुनिया आप लोगों से लाख दर्जे बेहतर है..***

***हम में से ज़्यादातर आपकी दुनिया से दूर ही चैन से रहना चाहते हैं.. मैं भी शायद वापस लौट कर आने की कभी सोचती भी नही.. पर 'अधूरा प्यार' हम में से कुछ को मरने के बाद भी अपने प्रियतम से बाँधे रखता है.. और हम आपकी और हमारी दुनिया के बीच आधार में ही लटक कर रह जाते हैं....***

***ये प्यार चीज़ ही ऐसी है इनस्पेक्टर साहब.. ये पानी की तरह तरल भी है और बर्फ से ज़्यादा ठोस भी.. ये नाज़ुक भी है और सर्वशक्तिशाली भी.. ताकतवर इतना कि भगवान भी इसके आगे घुटने टेक देता है.. प्यार के कच्चे धागे से बँधे लोगों को मरने के बाद भी***

***भगवान पूरी तरह अपने में समाहित नही कर पाता.. हम जहाँ रहना चाहते हैं; वहीं रहते हैं... और अक्सर अपने प्रियतम के साथ साथ..***

***तनवी को लिखा वो खत मैने ही लिखा था, ठीक वैसे ही जैसे अभी आपके सामने लिख रही हूँ. आपको डराना मेरा मकसद नही था.. पर आपको अपनी मौजूदगी का सबूत देना ज़रूरी था.. माफ़ करना!***

***ज़रूरत पड़ी तो अपने 'अधूरे प्यार' की खातिर फिर आऊंगी!"***

प्रतिक अचरज से काफ़ी देर तक डाइयरी में ही देखता रहा, फिर सिर उठा कर बोला,"ये किसने लिखा?"

"गीता आई थी !" करनवीर ने लंबी साँस लेते हुए जवाब दिया...

# २९

"अभी तक तेरा मूड ऑफ है? अब भूल भी जा!" निहारिका ने अगले दिन भी तनवी को इसी तरह मुँह लटकाए देखा तो उसको समझाने लगी," मेरी ही ग़लती है.. मैं ही तुझे वहाँ ले गयी..."

"अरे वो बात नही है यार... मुझे क्या फ़र्क पड़ता है.. किए की सज़ा तो मिलेगी ही..." तनवी ने मुँह लटकाए हुए कहा...

"तो फिर क्या बात है? चेहरे पर १२ क्यू बजे हुए हैं तेरे.." निहारिका ने पूछा...

"घर वाले मेरी शादी करना चाहते हैं.. परसों आ रहे है मुझे देखने के लिए..." तनवी ने नाराज़गी के अंदाज में अपने होठ बाहर निकाल लिए...

"अर्रे वाह.. काँग्रर्रर..." निहारिका अचरज और गुस्से से उसकी और देख रही तनवी को देखते ही बीच में ही पलटी मार गयी,"...ओह्ह्ह..सॉरी.. ये तो बहुत बुरा हुआ! सच में यार... अब तू क्या करेगी?" निहारिका ने अपने चेहरे पर बनावटी दुख के भाव लाते हुए कहा....

"मेरी तो कुछ समझ में नही आ रहा... पापा ने तो साफ कह दिया है.. इस बार मेरी नही चलेगी...." तनवी ने बिगड़ते हुए कहा....

"क्यू इस बार क्या हो गया? पहले भी तो मान जाते थे वो...!" निहारिका बात को कुरेदते हुए बोली....

"कह रहे हैं कि ये रिश्ता हमें किस्मत से मिला है.. इसको किसी भी हालत में वो हाथ से नही जाने देने वाले.....!" तनवी ने कहा...

"अच्छा! ऐसा किसका रिश्ता आया है?" निहारिका ने उत्सुकता से पूछा...

" वो.. इनस्पेक्टर नही है जो कल वहाँ आया था.. करनवीर! " तनवी ने मुँह बनाकर कहा....

"ऊऊ..वॉववव..."निहारिका ने इतना ही कहा था की तनवी ने उसको मारने के लिए अपनी किताब उठा ली....

"मेरा ये मतलब नही था यार.. पर घरवालों की बात से भी मैं सहमत हूँ.. क्या कमी है आख़िर उसमें...?" निहारिका कहे बिना ना रह सकी....

"तो तू करले ना शादी... इतना ही पसंद है तो.... मुझे शादी नही करनी तो नही करनी... बस!" तनवी के एक एक शब्द से उसका गुस्सा झलक रहा था....

"हाए.... काश मेरे लिए ऐसा रिश्ता आया होता.. मैं तो फट से हाँ कर देती.." निहारिका ने बत्तीसी निकाल कर कहा और फिर संजीदा हो गयी,"पर तू टालेगी कैसे... परसों आकर वो तुझे 'अपना' लेंगे... फिर इनकार करने पर तो दोनो ही घरों की इन्सल्ट होगी... ऐसा मत करना प्लीज़.. तुझे शादी नही करनी तो पहले ही मना कर देना..."

"वही तो मैं सोच रही हूँ यार... कैसे टालू.. कुछ समझ में नही आ रहा....

"एक बात और हो सकती है?" निहारिका ने कुछ सोचते हुए कहा...

"वो क्या?" तनवी ने उसको गौर से देखते हुए पूछा....

" करनवीर ने हमें कल प्रतिक के पास देखा था... क्या पता वो खुद ही इस रिश्ते से मना कर दे...?" निहारिका ने दिमाग़ लड़ाते हुए कहा....

"नही... उसको कोई फ़र्क नही पड़ा शायद... कल शाम को फिर आया था घर पर... ये बताने की अब कोई परेशान नही करेगा... मम्मी से बड़ा हंस हंस कर बातें कर रहा था... मेरे तो दिल में आ रहा था कि 'मोगरा' उठा कर उसके सिर में मार दूं.. ना रहेगा बाँस.. और ना बजेगी बंसूरी..." तनवी ने अपना दुखड़ा रोया...

"हे हे हे... आज कल तुझे सिर फोड़ने में बड़ा मज़ा आने लगा है... कल उसका सिर देखा था? मुझे तो बड़ा मज़ा आया.. हे हे हे...." निहारिका ने हंसते हुए कहा...

"तू मेरी बात को सीरीयस क्यू नही ले रही....!" तनवी ने गुस्से से कहा...

"ले तो रही हूँ यार... तू ही बता, क्या कर सकते हैं...?" निहारिका ने सीरीयस होकर पूछा...

"भाग जाऊ घर से?" तनवी ने इतनी आसानी से कह दिया मानो ये बच्चों का खेल हो....

"पागल हो गयी है क्या? ये क्या कह रही है तू.. 'भागने' का मतलब पता है तुझे?" निहारिका ने उसकी और घूरते हुए कहा...

"हां.. पता है.. मैं बदनाम हो जाऊंगी... कोई मुझसे शादी नही करेगा.. हमेशा के लिए प्राब्लम सॉल्व्ड..." तनवी ने विश्वास के साथ कहा.....

"कैसी बातें कर रही है यार... अंकल आंटी पर क्या गुज़रेगी.. सोचा भी है...? वो कैसे रहेंगे....? ज़रा सोच! इतनी भी अकल नही है क्या?" निहारिका झल्ला उठी....

"ओह्हो.. मज़ाक कर रही हूँ यार... पर ये भी सच है.. शादी तो मुझे किसी भी सूरत में नही करनी है....परसों तक घर वाले नही माने तो मैं २-४ हफ्ते के लिए कहीं खिसक जाऊंगी...!" तनवी ने कुछ सोचते हुए कहा....

निहारिका इस बात पर कुछ कहती.. इससे पहले ही शीतल लगभग दौड़ती हुई उनकी और आई...," कॉनग्रेट्स!!!"

निहारिका और तनवी ने चौंक कर उसको देखा....,"तुम्हे कैसे पता लगा?" निहारिका ने अचरज से पूछा....

"अरे, मुझे तो सब पता लग गया है.. तुम्हे ही नही पता!" शीतल ने उनके पास बैठते हुए खुशी से कहा....

"क्या?" दोनो एक साथ बोल पड़ी....

"प्रतिक वापस आ गया है... वो बिल्कुल निर्दोष था.. कल रात ही 'उस' इनस्पेक्टर को सारी बात पता चल गयी...." शीतल ने बताया...

निहारिका का मन कर रहा था कि शीतल को बता दे की तनवी के लिए उसका रिश्ता आया है.. पर तनवी के वहाँ रहते उसकी हिम्मत नही हुई...

"अच्छा... पर कैसे?" निहारिका ने पूछा...

"सारी बात आकर बताऊंगी... अभी मुझे कहीं जाना है.. मेरी प्रॉक्सी लगवा दोगे ना प्लीज़...!" शीतल ने मिन्नत सी करी...

"जा जा.. ऐश कर.. आजकल तू गायब बहुत रहने लगी है.. बाद में पूछूंगी कि आख़िर राज क्या है...!" निहारिका ने हंसते हुए कहा....

# ३०

"आज तो बड़ी सी पार्टी होनी चाहिए... क्यू?" संकेत प्रतिक और धीरज के साथ आज सारा दिन घर पर ही रहा.. सौरभ घंटा भर पहले ही यहाँ से निकल कर गया था...

प्रतिक को छोड़ कर दोनो के चेहरे खिले हुए थे.. हालाँकि सबको विश्वास था कि प्रतिक बे-कसूर है और जल्द ही वापस आ जाएगा... पर सुबह उनके थाने में जाने से पहले ही प्रतिक को वापस आया देख तीनो की खुशी का ठिकाना ही नही रहा था... तभी सुबह से ही सभी के चेहरे पर उल्लास साफ नज़र आ रहा था....

"काहे की पार्टी यार... बेवजह तनवी के सामने ज़िल्लत का सामना करना पड़ा.. पता नही क्या समझ रही होगी वो? मैं तो गीता वाला हादसा उसको बताना ही नही चाह रहा था.. बिना बात किरकिरी हो गयी..." प्रतिक ने कहा....

"अरे, कुछ नही होता.. सौरभ ने शीतल को फोन करके सब कुछ बता दिया था....अब तक तो तनवी को पता लग भी गया होगा की तू बेक़ुसूर है.. पर यार ये तो कमाल ही हो गया.. गीता की आत्मा खुद चल कर तुझे बचाने गयी.. इट'स अम्ज़िंग यार!" संकेत ने प्रतिक को निसचिंत करने की कोशिश की...

"अरे बचाना ही नही.. वो तो प्रतिक और तनवी को मिलवाना भी चाहती है... उसके घर पर भी तो लेटर मिला है.. कमाल हो रहा है यार..." धीरज ने उनको बीच में टोका....

"हम्म... मुझे तो शाहरुख की उस फिल्म का डाइलॉग याद आ रहा है.. वो क्या है.. ***' इतनी शिद्दत से मैने तुम्हे पाने की कोशिश की है, कि जर्रे जर्रे ने हमें मिलाने की साज़िश की है!' सच में यार.. तुमको मिलने के लिए तो जैसे पूरी कयनात ने अपनी ताक़त झोंक दी है..*** तुम्हे मिलने से अब कोई नही रोक सकता.. बेफ़िकर रहो.." संकेत गहरी साँस लेते हुए प्रतिक की और देख मुस्कुराने लगा...

बात सुनकर प्रतिक का दिल खुश हो गया और वो भी मुस्कुराने लगा....

"अबे तू क्यू इतना खुश हो रहा है... कोशिश तूने नही, टीले पर तुम्हारे इंतजार में तड़प रही भाभी जी के दिल ने की है.. हम'में से किसी ने थोड़ी बहुत की है तो मैने.. ये देखो मेरा सिर.. मुझे तो लगता है, भाभी जी ने पर्मनेंट निशानी दे दी मुझे.. कम ही नही होता.." धीरज ने कहा और तीनो हँसने लगे....

# ३१

" निहारिका!" शाम को तनवी ने सीरीयस होकर निहारिका से बात करनी शुरू की.. अगले दिन शाम को दोनो तनवी के घर पर ही थी....

"हम्मम.. बोल!" निहारिका ने कहा...

"अब क्या करूँ यार? मेरा तो दिमाग़ खराब हो रहा है सोच सोच कर.." तनवी ने अपना सिर पकड़ रखा था...

"देख... मैं तो यही कहूँगी की घर वालों की मान लेने में ही भलाई है.. क्या फायदा बेकार में उलझ कर.. जब कुछ हो ही नही सकता...!.... और फिर शादी करने में बुराई ही क्या है? मेरी ये समझ में नही आ रहा की तू शादी से इनकार क्यू कर रही है.. कोई और पसंद कर रखा है क्या?" निहारिका ने सीरीयस होते हुए कहा...

"तू बकवास क्यू कर रही है.. कुछ आइडिया है तो बता..!" तनवी ने गुस्से से कहा..," वो कल आ रहे हैं.. और तुझे मज़ाक सूझ रहा है..."

"मज़ाक नही कर रही यार... ठीक ही तो कह रही हूँ.. आख़िर बुराई क्या है शादी करने में.. वो तो सभी करते हैं...!" निहारिका ने ज़ोर देकर कहा...

"मुझे नही पता.. पर मुझे पक्का पता है कि शादी करते ही मैं मर जाऊंगी.." तनवी ने उदास होकर कहा....

"अच्छा! आज तक तो कोई मरा नही... तुझे ऐसा क्यू लगता है.." निहारिका लगातार जिरह कर रही थी...

"मेरा दिल कह रहा है, इसीलिए.. और मुझे पता है ये झूठ नही है.. मरना ही है तो क्यू ना शादी से पहले ही मर जाऊ?" तनवी ने हताशा के भाव चेहरे पर लाते हुए कहा,"अपने घर में तो मरूँगी...."

"देख.. अब बकवास तू कर रही है... प्लीज़.. ऐसा मत बोल.. कुछ नही होगा.. अंकल आंटी तुम्हारा बुरा थोड़े ही चाहते हैं..." मरने की बात पर निहारिका को गुस्सा आ गया...

"ठीक है तो जा! तू भी उन्ही का ही पक्ष ले ले.. मुझे जो करना होगा मैं कर लूँगी..!" तनवी ने कहा और लेटकर तकिये के नीचे अपना चेहरा दबा लिया...

निहारिका ने तनवी के पास सरक कर उससे तकिया छीन लिया," अच्छा बोल.. क्या करना है.. मैं तेरे ही साथ हूँ पागल!" निहारिका उसके बालों में हाथ फेरने लगी....

निहारिका की बात सुनकर तनवी खुश होकर बैठ गयी....."देख.. मैं कल से ही मम्मी पापा के पिछे पड़ी हूँ... पर उनके कान पर जू तक नही रैंग रही.. अब तो बस एक ही इलाज है..." कहकर तनवी चुप हो गयी...

"वो क्या?" निहारिका ने संशय से पूछा....

" स्नेहा के पास होस्टल में चली जाऊ २-४ दिन के लिए.. उसको कुछ पता भी नही है इस शादी के चक्कर के बारे में.. मैं जाकर मम्मी को फोन भी कर दूँगी कि शादी ना करने का वादा करो तो मैं आ जाऊंगी.... फिर 'ये' आराम से मेरी शादी करने की अपनी ज़िद भी छोड़ देंगे..." तनवी ने कहा....

"तूने अपनी तो सोच ली... उनकी जो बे-इज़्ज़ती होगी वो?" निहारिका ने उसको घूरते हुए कहा....

"तो मैं और क्या कर सकती हूँ यार.. मैने मम्मी से उनका नंबर लेने की भी कोशिश की.. पर वो मानी ही नही... बता मैं क्या करूँ..." तनवी ने मायूस होकर कहा....

"हम्म.. देख, मैं तो साफ बता रही हूँ.. मुझे तो तेरा ऐसा करना अच्छा नही लगता... कल जो होता है होने दे.. बाद में सोच लेंगे....!" निहारिका ने समझाने की कोशिश की...

"अरे, तुझे पता नही है... वो कल मँगनी के लिए आ रहे हैं.. खाली देख कर जाने की बात होती तो मैं मान लेती.. पर घर वालों का जल्दी शादी करने का प्रोग्राम बन गया है... उन्ही

के कहने पर... अब तू खुद ही सोच.. अब ज़्यादा बेइज़्ज़ती होगी या बाद में...?" तनवी ने ज़ोर देकर पूछा...

"देख, मैं कुछ नही कहती... तुझे जो करना है कर ले!" निहारिका गुमसुम सी बैठकर कुछ सोचने लगी...

"देख! तू मेरा प्लान लीक तो नही करेगी ना?" तनवी ने उसको घूरते हुए पूछा...

"कुछ नही करती मैं.. जो करना है कर ले.. मैं जा रही हूँ.." निहारिका खड़ी होते हुए बोली.. उसके चेहरे पर उदासी और बेबसी साफ झलक रही थी.....

निहारिका को पूरी रात नींद नही आई.. सारी रात करवटें बदलते हुए वह तनवी के इस कदम के होने वाले असर के बारे में ही सोचती रही... कयी बार उसके मंन में आया की फोन करके आंटी जी को सब कुछ बता दे.. पर इसके लिए ज़रूरी हिम्मत वह जुटा नही सकी...

सुबह मम्मी उसको उठाने आई तो आते ही बोली," क्या बात है बेटी? तबीयत तो ठीक है?" मम्मी ने माथे पर हाथ लगा कर देखा.. वो तेज बुखार से तप रही थी.. उसकी आँखें लाल थी और चेहरा बोझिल सा लग रहा था....

"ओह्हो.. तुझे भी आज ही बीमार होना था... आज तो तनवी को देखने आने वाले हैं ना? चल चाय के साथ कुछ खा ले.. और गोली ले लेना... ठीक हो जाएगी..." मम्मी ने उसको पुच्कार्ते हुए कहा...

निहारिका फफक सी पड़ी... उसने अपना सिर घुटनो में दबा लिया और सिसकने लगी... अब तक तो सारे मोहल्ले को ही पता लग चुका होगा कि आज तनवी की मँगनी है.. अब क्या होगा....

अचानक उसको इस तरह से व्यवहार करते देख मम्मी जी विचलित सी हो गयी," क्या हुआ बेटा! ऐसा क्यू कर रही है तू..? कुछ बात है क्या?" मम्मी बुरा सा मुँह बनाकर उसके साथ बैठ गयी और उसका चेहरा अपनी छाती से लगा लिया...

"कुछ नही मम्मी!" और निहारिका और ज़्यादा तेज़ रोने लगी.....

"आए.. मेरी लाडली! ऐसा क्यू कर रही है? कोई बात है तो बता ना.. तू भी मुझसे कुछ छुपाती है कभी?" मम्मी अधीर होकर उसको दुलार करने लगी...

"ममियैयीई... वो... तनवी!" निहारिका लगातार मोटे मोटे आँसू गिराती हुई सिसक रही थी.....

"क्या हुआ? फिर से लड़ाई हो गयी क्या..? ले तू चाय ले.." मम्मी ने टेबल से ठंडी हो रही चाय उसको उठाकर दी.....

"वो शादी नही करना चाहती मम्मी... इसससलिए घर से जा रही है..." अपने दिल का गुबार निकलते ही निहारिका फुट फुट कर रोने लगी.....

"हाए राम! ये क्या कह रही है तू? घर वाले समझाते क्यू नही... अब क्या होगा?" मम्मी के हाथ से चाय का कप छूट'ते छूट'ते बचा...

"उनको नही पता मम्मी... वो बिना बताए जाएगी....." निहारिका ने कहा...

"हे भगवान... मैं अभी उनके घर जाती हूँ.. ऐसे कैसे चली जाएगी...?" मम्मी ने एक पल भी गँवाए बिना अपनी चप्पल पहनी और तेज़ी से बाहर निकल गयी...

"उनको ये मत बताना मम्मी.. कि मैने बताया है.. वो बोलेगी नही कभी मुझसे.." निहारिका ने जब तक बात कही.. मम्मी जी बाहर निकल चुकी थी.. पता नही सुना या नही सुना....

निहारिका की मम्मी ने तनवी के घर की बेल बजाई.. बाहर उसकी मम्मी ही निकल कर आई," आओ बेहन.. हम तो आज बड़ी लेट उठे..." तनवी की मम्मी जी ने मुस्कुराकर उसका स्वागत किया...

"तनवी कहाँ है?" निहारिका की मम्मी ने सीधा यही सवाल किया....

"सो रही है उपर.. क्यू?"

"ज़रा बुलाना.. मुझे कुछ काम है.. चलो रहने दो.. मैं उपर ही चली जाती हूँ..." निहारिका की मम्मी उनको बात बताए बिना ही तनवी को समझाना चाहती थी....

"अरे क्यू परेशान होती हो... आओ चाय पी लो तब तक.. मैं बुलाकर लाती हूँ..." कहते हुए तनवी की मम्मी उपर चली गयी.....

दिन निकलने से पहले ही तनवी घर से बाहर निकल चुकी थी.. जाने क्या बात थी, पर उसका शादी ना करने का दृढ़ निश्चय निश्चित तौर पर नियती द्वारा निर्धारित ही लगता था.. बाहर निकलने से पहले उसके मन में इतनी घबराहट नही थी, जितना वो घर से बाहर कदम रखने के बाद महसूस कर रही थी. ये तो शुक्र था कि उसके सामने एक मंज़िल थी.. अमृतसर का गर्ल'स होस्टल ! वरना क्या हाल होता उसका... कभी घर वालों का ख़याल और कभी उनकी इज़्ज़त का.. उसका मन कहीं ना कहीं उसको ऐसा करने से रोक रहा था... पर उसके कदम आगे ही आगे बढ़ते चले गये..

बस-स्टँड पर जाकर उसने अनमने मंन से अमृतसर की एक टिकेट खरीदी और बस में बैठ गयी......

"हे भगवान! ये क्या हो गया...? क्या जवाब देंगे हम उनको... इससे अच्छा तो हम उसकी मान ही लेते...." सारी बात का पता लगते ही मम्मी पापा दोनों के पैरों तले की ज़मीन खिसक गयी.... निहारिका के पापा भी वहीं आ चुके थे... सबके माथे पर चिंता की लकीरें थी....

"मैं गाड़ी लेकर देख कर आता हूँ... " विचलित से पापा ने कहा और बाहर निकल गये....

"अंकल जी! कितनी देर में चलेगी बस?" तनवी ने बस में चढ़े कंडक्टर से पूछा...

"५-७ मिनिट और लगने हैं बेटी बस.. एक बार मिस्त्री क्लच ठीक कर दें.. फिर तो यहाँ से सीधी ५वें गियर में चलनी है...... हे हे" कंडक्टर ने कहा और आगे चला गया.....

तनवी के पापा सीधे बस-स्टँड ही पहुँचे... अंदर आए और अमृतसर जाने वाली बस के पास जाकर खड़े हो गये.. अचानक उनको घर से फोन आ गया.. वो वापस पलटे और थोड़ी दूर खड़े होकर घर फोन निकाल लिया..

"हांजी" मम्मी की आवाज़ सुनकर पापा ने रुनवासी आवाज़ में पूछा....

"निहारिका कह रही है कि वो अमृतसर जाने की बोल रही थी.. अपनी सहेली 'स्नेहा' के पास...." मम्मी ने बताया....

निहारिका भी तब तक वहीं आ चुकी थी..

"शुक्रक्र है भगवान का....!" पापा ने राहत की साँस ली..," वही ना जो हॉस्टिल में रहती है.....?"

"हांजी.. वही!" मम्मी ने हामी भारी....

"ठीक है... तुम वहाँ फोन मत करना... मैं उसको लेकर ही आऊंगा... रख दो!" पापा ने कहा और फोन काट दिया.....

फोन वापस जेब में डाल कर पापा अमृतसर वाली बस में चढ़ गये...

उन्होने सवारियों पर नज़र डाली, पर तनवी वहाँ नही थी... वो सीधे कंडक्टर के पास पहुँचे..,"इससे पहले कोई बस गयी है क्या अमृतसर....?"

"हांजी.... बस १५ मिनिट पहले ही निकली है... क्यू?" कंडक्टर ने विनम्रता से पूछा....

"नही... कुछ नही..." पापा ने कहा और तेज़ी से उतरते हुए बाहर निकल कर अपनी गाड़ी में बैठे और गाड़ी अमृतसर की और दौड़ा दी.....

५-७ मिनिट का टाइम मिलने पर तनवी बस से उतर कर बस-स्टँड के पिसियो बूथ में चली गयी थी... वहीं से उसने स्नेहा के हॉस्टिल में फोन मिलाया.. पर किसी ने फोन उठाया नही....

वह बाहर निकालने ही वाली थी कि उसने पापा को बस से बाहर खड़े देख लिया... तनवी एक दम सहम गयी और वापस पी.सी.ओ. में घुस गयी...

"हांजी मेडम! फोन कर लिया हो तो बाहर आ जाइए... मुझे भी करना है..." बाहर तनवी के बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे आदमी ने कहा...

"एक मिनिट प्लीज़...." कहकर तनवी ने मजबूरी में रिसीवर उठाकर नंबर. रिडाइयल कर लिया...

पर फोन नही उठाया गया... तनवी ने बाहर देखा.. पापा बस से उतरे थे... तनवी ने एक बार और फोन मिला लिया....

"हेलो!" इस बार किसी ने फोन उठा लिया था....

"एक बार रूम नो. १३ से स्नेहा को बुला देंगे प्लीज़!" तनवी ने रिक्वेस्ट की...

"कॉलेज में ३ दिन की छुट्टिया हैं... सभी बच्चे घर पर गये हुए हैं... आप कौन?" उधर से आवाज़ आई...

सुनते ही बुरी तरह से हताश होकर तनवी ने फोन रख दिया... पापा जा चुके थे और उसी वक़्त बस भी चल पड़ी... वह बाहर निकली और बस-स्टँड के पिछे चली गयी...

"हे भगवान! अब क्या करूँ..." विडंबना और असमंजस के मारे तनवी की आँखों से आँसू छलक उठे....

पापा ने बस पकड़ने में ज़्यादा देर नही लगाई... बस को रुक्वाकर वो गाड़ी में चढ़े.... पर उस'में भी तनवी को ना पाकर हताश हो गये... बस से उतरकर उन्होने गाड़ी अमृतसर की और ही दौड़ा दी... होस्टल में जाकर तनवी का इंतजार करने के अलावा उनके पास कोई चारा बचा ही नही था...

उधर तनवी के पास भी कोई चारा नही बचा था... लगभग वह आधे घंटे तक इसी असमंजस में फँसी रही कि घर वापस जाऊ या नही..... फिर अचानक उसके मंन में जाने

क्या ख़याल आया कि वह बाहर निकली और एक ऑटो में बैठ गयी..,"चलो भैया!"

तनवी संकेत की कोठी के सामने खड़ी थी...

"वो घर पर हैं?" तनवी ने बाहर खड़े नौकर से पूछा....

"जी.. एक मिनिट!" कहकर रामपाल अंदर चला गया... सबसे पहले उसको धीरज मिला अंदर...

"साहब! एक मे'म साहब आई हैं.. पूछ रही हैं आप लोगों को.. क्या बोलूं?"

"कौन है?" कहते हुए धीरज बाहर निकल आया...

बाहर आते ही एक पल को तो वो जड़ सा होकर रह गया.. पागलों की तरह उसको कुछ देर तक दूर से ही देखता रहा.. फिर अपने सिर को पकड़ कर बेतहाशा अंदर की और भागा..,"भाई.... भाई!"

"क्या हो गया? चिल्ला क्यू रहा है..." प्रतिक ने पूछा....

"ववो... वो आप खुद ही देख लो... मैं नही बताता..." धीरज के चेहरे की चमक बता रही थी कि कुछ ना कुछ अच्छा ही हुआ है!

"कहाँ देख लूँ.. बता तो सही... तू इतना उतावला क्यू हो रहा है..." प्रतिक ने आश्चर्य से पूछा...

"नही नही... तुम मत देखो... तुम कपड़े बदल लो... मैं लेकर आता हूँ उन्हे अंदर...." धीरज ने कुछ सोचते हुए कहा...

"कपड़े बदल लूँ?" प्रतिक की कुछ समझ में नही आया.. धीरज को घूर कर देखता हुआ प्रतिक बाहर निकल आया...

"आअ...आप!" प्रतिक की भी तनवी को देखते ही हवाइयाँ उड़ने लगी... वह तेज़ी से गेट की तरफ गया और फिर से बोला..,"आप... यहाँ?"

"अंदर आ जाऊ?" तनवी ने मुरझाए चेहरे से ही कहा...

"ह..हां हां.. आइए ना... आप... क्या हो गया?" प्रतिक तनवी के साथ साथ चरंभा हुआ बोल रहा था,"सब ठीक तो है ना...."

तनवी के चेहरे से लग नही रहा था कि सब ठीक है... इसीलिए वो गहरी असमंजस में था....

"हम्मम... वो... तुम क्या कह रहे थे पुराने टीले के बारे में!" तनवी ने सहजता से पूछा...

"वो.. मुझे सच में सपने आते हैं.. आप की.... धीरज की कसम.. भगवान की कसम... मैं कुछ भी झूठ नही बोल रहा था.." प्रतिक बात को समझ नही पाया था... तब तक संकेत और धीरज भी वहीं आ चुके थे...

"आप बैठिए ना!" संकेत ने आग्रह किया....

"मेरा वो मतलब नही है" तनवी ने बैठते हुए कहा..," आप कह रहे थे ना कि टीले पर चल कर मुझे सब याद आ जाएगा..."

"जी... वो कह रही थी.. तनवी... सपने में.. सच कह रहा हूँ...." प्रतिक अब तक खड़ा ही था...

"तो चलो...!" तनवी ने कहा....

"कहाँ?" प्रतिक ने पूछा....

"पुराने टीले पर..." तनवी ने जवाब दिया....

"क्या? सच ?" प्रतिक की खुशी का कोई ठिकाना नही रहा.. पर अगले ही पल वा मायूस होते हुए बोला,"पर वो तो यहाँ से बहुत दूर है.. आज चलकर वापस नही आ सकते..."

"कितने दिन लग जाएँगे... ३, चार, हफ़्ता?" तनवी ने पूछा...

"हां.. हफ्ते में तो सब कुछ हो जाएगा... मतलब हम आराम से जा सकते हैं... पर....?" प्रतिक पूछना चाहता था कि घर वाले क्या कहेंगे.... पर तनवी ने बीच में ही टोक दिया...

"ठीक है... चलो!" तनवी ने उदासी भरे चेहरे से ही कहा...

"हे भगवान! पता नही कहाँ चली गयी वो पागल! यही करना था तो बता तो देती... हम रहने देते शादी से...." घर वापस आकर उसके पापा सबके साथ गहरी सोच में बैठे हुए थे....

"पर अगर होस्टल बंद है तो कहाँ गयी होगी... कहीं कुछ हो गया तो उसको.. वो तो अकेली कहीं जाती भी नही थी..." मम्मी लगातार आँसू बहाए जा रही थी....

"भाई साहब! उनको तो मना कर दो.. कम से कम वहाँ वाला पंगा तो नही रहेगा..!" निहारिका के पिताजी ने कहा....

"क्या कहूँ? ... कैसे कहूँ? मैं अमृतसर जा रहा था तो उनका फोन आया था.. मैने तब तो कुछ कहा भी नही.. अब तो उनके रिश्तेदार भी आ चुके होंगे... ये कैसा दिन दिखाया भगवान!" पापा की आँखें भी गीली हो गयी...

अचानक उनको बाहर दो गाड़ियाँ रुकने की आवाज़ सुनाई दी.. सब सहम गये... बाहर निकले तो देखा वही थे...

"अब क्या किया जाए?" बड़बड़ाते हुए तनवी के पापा करनवीर के पापा की और बढ़े...

करनवीर के पापा बड़ी ही गरम जोशी से आकर उनसे गले मिले...," अरे! ऐसे चेहरा क्यू लटका रखा है यार... ये लो! संभलो. मेरा बेटा और अक्षरा बिटिया को मुझे सौंप दो..." उन्होने खिलखिलाते हुए कहा..

करनवीर ने आकर उनके इज़्ज़त से चरण छूए... पर ग्लानीवश तनवी के पापा उनको आशीर्वाद तक देना भूल गये...

"मेरे साथ आएँगे प्लीज़.. कुछ बात करनी है...!" तनवी के पापा ने आहिस्ता से कहा....

"देखो भाई.. दहेज की बात मत करना.. हम बेटा दे रहे हैं.. दहेज नही देंगे..." कहकर करनवीर के पापा ने अट्टहास किया...

"आप आइए तो सही.. एक बार.. उपर.." तनवी के पापा ने उनका हाथ पकड़ा और उपर जाने लगे... निहारिका के पापा भी उनके साथ ही थे... आने वाली पार्टी में हर किसी के चेहरे से उल्लास झलक रहा था... सब नीचे ही रहकर घर वालों से मेल मिलाप में लग गये.....

"ये क्या कह रहे हैं भाई साहब! आपको पहले ही पूछ लेना चाहिए था... अब.. ये तो मेरी पगड़ी उछलने वाली बात हो गयी" सारा माजरा सुनते ही करनवीर के पिताजी के होश फाख्ता हो गये.. चेहरा का सारा रंग उड़ सा गया...

"भाई साहब मैं मानता हूँ... पर आप किसी तरह से आज का कार्यक्रम टाल दीजिए.. कुछ दिन बाद तो वो वापस आ ही जाएगी... आपको तो पता है तनवी के नेचर का... वो ऐसी नही है... उसके आने के बाद हम कोशिश करेंगे कि 'वो' मान जाए..." तनवी के पापा ने सिर झुका कर कहा...

"कमाल कर रहे हैं आप, भाई साहब! मेरे रिश्तेदारों को में क्या कहूँ? ये कि मेरी बहू आज कहीं चली गयी है बिना बताए... और फिर आने के बाद भी उसको ज़बरदस्ती शादी के लिए तैयार करने का क्या फायदा.. कल को फिर चली जाएगी.. हमारे घर से... नही नही! ये नही हो सकता भाई साहब!" करनवीर के पापा खफा से हो गये....

"तो फिर आप ही बतायें.. मैं क्या करूँ? ये तो अनहोनी है..." तनवी के पापा ने सिर झुकाए हुए ही कहा...

"ना ना! अनहोनी नही, ये आपकी नादानी है.. ज़बरदस्ती आपको अड़ना ही नही चाहिए था, रिश्ते के लिए.. वो मना कर रही थी तो आप कल तक भी फोन करके बात टाल सकते थे... हम कुछ भी कह देते.. पर आज की तरह ज़िल्लत का सामना ना करना पड़ता..." करनवीर के पापा ने गहरी साँस ली....

"अब पिछली बातों को दोहराने से क्या फायदा भाई साहब.. जो होना था, वा हो चुका.. ये सोचिए की अब क्या कर सकते हैं.. " निहारिका के पापा ने बीच में बोलते हुए कहा....

"यार, अब करने को रह क्या गया... मैं तो किसी को मुँह दिखाने लायक रहा नही.. मुझे तो बहू चाहिए थी.. वो यहाँ है ही नही..." करनवीर के पापा बहुत ज़्यादा हताश थे...

"एक बात कहूँ.. भाई साहब! अगर पसंद आए तो...." कहकर निहारिका के पापा रुक गये...

बिना कुछ बोले ही तनवी और करनवीर के पापा उनकी और देखने लगे...

"अगर आपको मेरा घर बार पसंद हो तो मैं अपनी बेटी देने को तैयार हूँ..." निहारिका के पापा ने कहा...

तनवी के पापा अवाक से उसके मुँह की और देखने लगे....

"वो तो लंबी कहानी हो गयी भाई साहब.. करनवीर उसको देखेगा.. अब अक्षरा तो उसको बेहद पसंद थी... आप तो समझते होंगे आज कल के बच्चों को.... फिर क्या पता आपकी बेटी को भी निहारिका की तरह करनवीर पसंद नही आया तो...और फिर ये सब एक ही दिन में तो नही हो सकता ना..." करनवीर के पापा के चेहरे पर अब भी हताशा और निराशा ही थी...

"मेरी बेटी नीचे है.. मैं उसकी मा और निहारिका को बुला लेता हूँ.. आप करनवीर को बुला लीजिए.. देख लीजिए अगर बात बनती है तो?" निहारिका के पापा ने कहा...

और कोई चारा अब बचा भी तो नही था... वो बाहर निकले और करनवीर को उपर बुलाया.....

करनवीर भी सारी बात सुनकर सन्न रह गया.. अगले ही पल उसको अहसास हुआ कि हो ना हो तनवी प्रतिक के पास ही है... पर फिर वही बात होती.. ज़बरदस्ती का रिश्ता... करनवीर ने अपने पापा के चेहरे पर फैली चिंता की लकीरों को देखा और भरे गले से कहा," ठीक है पापा! जैसा आप ठीक समझे करें.. मुझे कोई ऐतराज नही है..."

पापा ने लपक कर खड़ा होते हुए अपने बच्चे को बाहों में भर लिया,"ऐसी होती है औलाद.. मुझे तुम पर.. गर्व है बेटा...!" आँसू उनकी आँखों से निर्झर बहने लगे....

"आप ऐसा क्यू कर रहे हैं पापा.. मैने निहारिका को देखा है... मुझे पसंद है ये रिश्ता... मैं ही पागल था... मैं कभी तनवी की आँखों के भाव पढ़ ही नही पाया.. आप निहारिका से पूछ लें... अगर उनको मंजूर हो तो ये मेरा सौभाग्य ही होगा...." करनवीर का गला रुंध सा गया था....

"हमें माफ़ कर देना बेटा... हमसे चूक हो गयी..." तनवी के पापा ने खड़े होकर पश्चाताप सा प्रकट किया...

"आप भी अंकल... उपर वाले की मर्ज़ी के बगैर कभी कुछ होता है क्या? कोई ग़लती नही हुई आपसे.. प्लीज़ मुझे शर्मिंदा ना करें..." करनवीर ने कहा तो तनवी के पापा भी खुद को उसको अपनी बाहों में भरने से ना रोक सके....

जब निहारिका उपर आई तो उसको आभास भी नही था कि क्या से क्या हो गया है.. वह तो यही सोच रही थी कि तनवी के बारे में पूछने के लिए ही उसको बुलाया गया है....

"बेटी... अगर करनवीर से शादी करने में तुम्हे कोई ऐतराज ना हो तो हमारी इज़्ज़त बच जाएगी.." करनवीर के पापा ने सीधे सीधे ही पूछ लिया....

निहारिका को अपने कानो पर यकीन ही नही हुआ.. लंबा छर्हरा इनस्पेक्टर उसके सामने खड़ा उसको ही देख रहा था," म्म..मैं?"

"कोई ज़बरदस्ती की बात नही है बेटी.. तुम्हारे पापा ने हम पर उपकार करने के बहाने ही ये उपाय सुझाया है... पर अगर तुम्हे कोई ऐतराज है तो....

निहारिका ने करनवीर से नज़रें मिलाई और शर्मकर अपनी मम्मी के पहलू में छिप गयी....

"बोल दे बेटा.. जो कुछ भी तेरे मंन में है बोल दे...!" मम्मी ने उसको दुलार्ते हुए कहा...

"मुझे क्यू ऐतराज होगा मम्मी... मेरे लिए तो ये सौभाग्य की बात होगी.. और फिर इससे अच्छा हल निकल भी नही सकता..."निहारिका ने मम्मी के कान में धीरे से कहा.. पर सुन सबने लिया.....

इसके साथ ही घर में फिर से खुशियाँ फैल गयी...

मौका देखकर तनवी के पापा निहारिका के पापा के पास गये," आपने मुझे बचा लिया भाई साहब! मैं तो बर्बाद ही हो जाता... ये ग्लानि लेकर जी नही पाता मैं...." और दोनो एक दूसरे से गले मिलकर मिनटों आँसू बहाते रहे... खुशी के भी, और गम के भी.....

# ३२

"पर.. आज कैसे जाएँगे? अभी तो मेरे पास गाड़ी भी नही है..." प्रतिक ने संकुचाते हुए तनवी से कहा...

"कहीं तक तो चलेंगे ना... रास्ते में रुक जाएँगे... कैसे भी करो.. पर अभी चलो यहाँ से" तनवी इस बात को लेकर डर रही थी कि कहीं करनवीर उसके घर वालों को लेकर ढूंढता हुआ वहीं ना आ जाए....

प्रतिक को आगे कुँआ पिछे खाई नज़र आ रही थी... टाल मटोल करने पर तनवी के वापस लौट जाने का डर था.. और अगर चरंभा भी तो तनवी को ठहराता कहाँ... धीरज के सिवा वहाँ पर किसी को उसकी कहानी का पता ही नही था.. होटेल में वह उसको रखना नही चाह रहा था और धीरज जहाँ पर रूम लेकर रहता था, वो तनवी को ठहराने के लिहाज से ठीक नही थी.. कुछ पल सोचते हुए उसने जवाब दिया," एक मिनिट मम्मी से बात कर लूँ?"

"हां, कर लो... पर जल्दी करो प्लीज़...!" तनवी हड़बड़ाई हुई सी थी....

प्रतिक ने फोन निकाल कर घर का नंबर. डाइयल किया....

"हेलो!" घर से नौकर की आवाज़ आई....

"चंद्रभानेंदर.. मम्मी को फोन देना!" प्रतिक ने जल्दी में कहा...

"छोटे साहब! कहाँ चले गये हो आप... घर पर सब चिंता किए जा रहे हैं.. मम्मी जी बहुत गुस्सा हैं आपसे..." नौकर ने कहा...

"यार जल्दी फोन दो.. मैं समझा दूँगा उन्हे...." प्रतिक ने कहा....

"ये लो.. आ गयीं.. माता जी.. प्रतिक का फोन!" चंद्रभानेंदर ने कहा और मम्मी जी को फोन देकर चला गया...

"कहाँ चला गया रे तू? यहाँ कौन जी - मर रहा है.. तुझे फिकर भी है?" मम्मी की आवाज़ से गुस्सा और प्यार दोनो झलक रहे थे....

"मम्मी.. वो.. मैं... आपको बताया तो था कि कहीं जा रहा हूँ..." प्रतिक सिर खुजाते हुए हल्का सा मुस्कुराता हुआ बोला....

"क्या खाक बताया था? ३ दिन की कह कर गया था.. आज पुर ८ दिन हो गये... फोन तो कर ही सकता था ना...." मम्मी जी की आवाज़ अब भी नरम नही पड़ी थी...

"ववो.. मम्मी.. सॉरी... सुनो मेरी बात..." प्रतिक तनवी के बारे में बात करना चाहता था....

"सॉरी!" मम्मी ने मुँह चढ़ा कर कहा...,"तेरा तो सॉरी कहकर ही काम चल जाता है... खैर.. छोड़ इन बातों को.. पहले मेरी सुन.... मीनाक्षी ने तेरे लिए बहुत अच्छा रिश्ता देखा है ऑस्ट्रेलिया में... लड़की पढ़ी लिखी है.. और बहुत ही सुंदर है.. अपने इंडिया के ही हैं वो... बहुत ही काबिल परिवार है... तू जल्दी से घर आजा... उसके पापा इंडिया ही आए हुए हैं आजकल... तुझसे मिल लेंगे..... क्या हुआ? फोन काट दिया क्या मुए?" मम्मी ने एक ही साँस में सब कुछ कहने के बाद प्रतिक से पूछा... फोन पर काफ़ी देर से आवाज़ नही आई थी....

"नही मम्मी... यहीं हूँ..!" प्रतिक ने मरी सी आवाज़ में कहा....

"तो कल पक्का आ रहा है ना... बोल दूँ उनको!" मम्मी ने पूछा...

"नही.. मम्मी.. वो...!" प्रतिक बोरंभा बोरंभा रुक गया....

"नही के बच्चे.. तू घर आजा एक बार... क्या नही नही लगा रखी है.. कल आ रहा है ना?" मम्मी उतावली सी लग रही थी... शायद ऑस्ट्रेलिया वाले रिश्ते के लिए....

"मेरी बात तो सुन लो मम्मी...!" प्रतिक मायूस होकर बोला....

"हां.. बोल जो बोलना है.. पर कल नही आया तो देख लेना....पहले ही बता रही हूँ तुझे...." मम्मी ने तैश में आकर कहा... पर फिर भी उनके हर शब्द से प्यार निर्झर झरने की तरह बह

रहा था... 'मा तो ऐसी ही होती हैं'

"आने को तो मैं आज भी आ जाऊंगा मम्मी जी.. पर...." प्रतिक समझ नही पा रहा था कि तनवी के बारे में मम्मी को कैसे बताए.. कहाँ से शुरुआत करे...? और वो भी तब.. जब मम्मी ने पहले ही रिश्ते का डंका पीट दिया...

"पर क्या? ये तो और भी अच्छी बात है.. आज ही आजा..!" मम्मी खुश होते हुए बोली...

"मेरी बात तो सुन लो मम्मी... पहले..." प्रतिक मरी सी आवाज़ में बोला....

"बोलेगा तभी तो सुनूँगी बाबू.. बोल!" मम्मी ने प्यार से कहा...

"म्म.. मैं शादी नही करूँगा मम्मी...!" प्रतिक ने साँस छोड़ते हुए आधी बात निकाल दी.....

"हाए राम! ये क्या कह रहा है? शादी क्यू नही करेगा तू?" मम्मी गुस्से से बोली...

"म्मेरा.. मतलब.. ये शादी नही करूँगा...!" प्रतिक ने स्पष्ट किया....

"क्यू? देख तो ले पहले... मीनाक्षी ने देखा है उसको... और वही रिश्ते के लिए ज़ोर डाल रही है....तुझे उसके गुस्से का पता है ना..." मम्मी ने धीरज सा खोते हुए कहा....

"मैं... तनवी से शादी करूँगा मम्मी... !"

बात सुनते ही मम्मी फिर से गुस्से में आ गयी..," अब ये कलमुंही कौन है.. तुझे तो मैने कभी नही देखा इन चक्करों में... कोई ज़रूरत नही है.. तेरे पापा ने तुझे बिगाड़ दिया है हां... बाकी तेरी दीदी से बात कर लेना... मैं तो उसको साफ साफ बोल दूँगी कि मेरी सुनता ही नही..."

"मैं कर लूँगा मम्मी दीदी से बात.. पर एक और प्राब्लम है अभी तो..." प्रतिक ने कहा....

"अब क्या हो गया? " मम्मी ने मुँह चढ़ा कर कहा...

"मैं... तनवी को घर ले आऊ? आप सब भी देख लोगे...!" प्रतिक ने फिर से उसी मरी सी आवाज़ में पूछा....

"ये क्या कह रहा है तू बेटा..? पागल हो गया है क्या? पराई अमानत को ऐसे घर नही लाते... ना! तू अकेला ही आजा.. किसी को साथ लाने की ज़रूरत नही है.. वैसे भी तेरा रिश्ता वहीं होगा, जहाँ मीनाक्षी चाहती है... समझ रहा है ना तू?" मम्मी पहले चौंकी और फिर नाराज़ सी होकर प्यार से समझाने लगी....

"वो पराई नही है मम्मी... और उसका आना भी बहुत ज़रूरी है... आप प्लीज़ मान जाओ! घर आकर बात कर लेंगे...." प्रतिक ने प्रार्थना की.....

"ना! बिल्कुल नही... किसी भी लड़की को शादी से पहले तो मैं घुसने ही नही दूँगी इस तरह... तू चुप चाप घर आजा.. मैं फोन रख रही हूँ...." मम्मी ने गुस्से के लहजे में कहा....

"ओह!" प्रतिक ने लंबी साँस ली और फोन काट कर वापस धीरज और तनवी के पास आ गया....

"क्या हुआ?" धीरज ने उसकी शकल पर १२ बजे देख कर पूछा....

"कुछ नही... पापा के पास फोन करता हूँ..." प्रतिक ने कहा और वापस चला गया.....

प्रतिक फिर जाकर एक कोने में खड़ा हो गया....

"हेलो पापा जी!"

"ओये उल्लू के पठे! किधर है तू? यहाँ एक हफ़्ता हो गया; तेरी जगह मुझे डाँट खाते हुए... आया क्यू नही अभी तक वापस?.." पापा जी बिल्कुल भी गुस्सा नही थे...

"आ रहा हूँ ना... मेरी बात तो सुन लो..." प्रतिक की बातों से लगा की उसमें और पापा में गहरी दोस्ती है...

"ओये ठीक है ठीक है... मैं तो तेरी मम्मी को सुनाने के लिए डाँट रहा था... तेरी मम्मी दूसरे फोन पर होल्ड पर थी... अब इस उमर में नही घूमेगा तो कब घूमेगा.. हा हा हा... २ चार दिन और भी लगने हों तो कोई गल नही.. मैं संभाल लूँगा..." पापा ने खिलखिलाकर हंसते हुए कहा....

"क्या कह रही थी मम्मी.. अभी फोन पर?" प्रतिक नर्वस सा होकर बोला...

"अरे कुछ कहने ही वाली थी कि तेरा फोन आ गया... मैं बाद में बात कर लूँगा... तू बोल!" पापा ने सीरीयस होते हुए कहा....

"ववो.. आपको तो पता ही होगा... मेरा रिश्ता...." प्रतिक कह ही रहा था कि पापा ने टोक दिया....

"ओह ले.. ये खुशख़बरी तो मुझे देनी थी तुझे... तेरी मम्मी नंबर बना गयी अपने...!" पापा ने बीच में प्रतिक को टोक दिया....

"मुझे नही करनी शादी पापा...!" प्रतिक ने मुँह चढ़ाकर कहा....

"ओईए... ये क्या कह रहा है तू...? क्यू नही करनी शादी तूने?" पापा ने डाँटने वाले अंदाज में प्रतिक को झिड़का...," तेरी उमर में तो तेरी दीदी भी पैदा हो गयी थी.. समझा...!"

"मतलब... मुझे वो शादी नही करनी पापा...!" प्रतिक ने स्पष्ट किया...

"तो कौनसी शादी करेगा लल्ला...? हां?"

"वो.. एक लड़की है.. तनवी.. मुझे उसी से शादी करनी है..." प्रतिक ने हल्का सा झेंपते हुए कहा....

"वाह बेटा! मैं तो तुझे यूँ ही समझ रहा था.. मुझको बताया तक नही..." फिर मज़ाक करते हुए पापा अचानक सीरीयस हो गये," पर उस ऑस्ट्रेलिया वालों को क्या जवाब दें.. मीनाक्षी तो बहुत गुस्सा हो जाएगी... पता है ना तुझे उसका....?"

"हम्म.. कुछ करो ना पापा..." प्रतिक ने प्रार्थना सी की...

"चल आजा... फिर देखते हैं... दोनो मिलकर सोचेंगे कोई कहानी..." पापा सहज ही मान गये....

"पर... वो भी मेरे साथ आ रही है..." प्रतिक ने जवाब दिया....

"वो कौन?" पापा ने आइडिया लगाने की बजाय उससेपूछ लेना ही ठीक लगा.. प्रतिक ने आज तक झूठ जो नही बोला था...

"वही.. तनवी... और कौन?" प्रतिक ने टका सा जवाब दे दिया....

"अब्ब्बे... तू तो मुझसे भी आगे निकल गया... माना तुम्हारी जेनरेशन अड्वान्स है.. पर इतनी जल्दबाज़ी भी ठीक नही यार... पहले घर आकर बात तो कर ले.. फिर डोली में बिठा कर लाएँगे.. तेरी दुल्हन को... अब तो तू अकेला ही आजा..." पापा ने चौंकते हुए जवाब देना शुरू किया था.. पर आख़िर आते आते उनका लहज़ा फिर से दोस्ताना हो गया....

"पापा.. समझने की कोशिश करो.. कुछ प्राब्लम है तभी तो कह रहा हूँ.." प्रतिक ने ज़िद सी करी....

"ऐसी क्या प्राब्लम है यार... थोड़ी बहुत तो बता दे अभी...." पापा चिंतित से हो गये...

"इतनी भी बड़ी बात नही है पापा.. पर उसका मेरे साथ आना ज़रूरी है... मम्मी मना कर रही हैं... कुछ करो ना.. प्लीज़!" प्रतिक ने कहा....

"चल आजा फिर... तेरी मम्मी ने तो मेरी नींद हराम कर ही देनी है.. ऐसा कर फिर.. तू कल आजा.. तब तक मैं कुछ सोचता हूँ... पर ध्यान रखना.. कुछ उल्टी सीधी बात हुई तो मारूँगा बहुत...." पापा ने बनावटी गुस्सा दिखाया....

"ओह.. थँक यू पापा! आइ लव यू! ठीक है.. मैं कल तनवी को लेकर आता हूँ.. ओके बाइ!" प्रतिक ने कहा और फोन काट दिया....

"ओये सुन तो.... फोन ही काट दिया खोते ने..." पापा टेबल पर मोबाइल रखकर पिछे कुर्सी से कमर लगा कर लेट से गये... और आँखें बंद करके कुछ सोचने लगे... सोचते सोचते उनके चेहरे पर मुस्कुराहट सी पसर गयी... प्रतिक को जान से भी ज़्यादा चाहते थे वो... उन्हे यकीन था कि उसका बेटा कभी ग़लत तो कर ही नही सकता....

प्रतिक वापस तनवी के पास पहुँचा तो उसका चेहरा खिला हुआ था...," पापा मान गये.. पर कल आने को बोला है.. क्या करें? ... तुम कल सुबह नही आ सकती क्या?"

तनवी ने कोई जवाब नही दिया... वह किन्ही और ही ख़यालों में खोई हुई थी....

यों ज्यों टाइम बीत रहा था, तनवी को घर वालों की याद आने लगी थी.. घर से आते हुए इस बात को जितना हल्का उसने लिया था.. दरअसल ये फ़ैसला अब उसको उतना ही भारी लग रहा था.. मम्मी पापा की याद और उसके बिना उनकी हालत की चिंता ने उसको बेचैन सा कर दिया था.....

"तनवी जी..." प्रतिक ने उसको कहीं खोया हुआ सा पाकर फिर टोका...

"हां... वो.. मेरा नाम अक्षरा है.. मुझे उसी नाम से बुलाओ प्लीज़..." तनवी ने अचानक वापस सी लौटते हुए कहा....

"वो... पापा मान गये हैं.. पर कल आने को बोला है..." प्रतिक ने उसकी झुकी हुई नर्वस सी हो चुकी आँखों में झाँकने की कोशिश करते हुए कहा....

"मुझे एक फोन करना है... एक मिनिट दोगे प्लीज़..."तनवी ने जवाब में इतना ही कहा...

"हां.. ये लो ना.." प्रतिक ने खुश होकर फोन तनवी की और बढ़ा दिया...

"वो... मुझे अकेले में बात करनी है..." तनवी ने प्रतिक की ओर बिना देखे ही कहा...

"ठीक है... हम अंदर जा रहे हैं.. बात करने के बाद बुला लेना.." प्रतिक ने कहा और धीरज के साथ अंदर चला गया...

"हेलो" उधर से आवाज़ आई...

आवाज़ निहारिका की मम्मी की थी.. तनवी ने बिना बोले ही फोन काट दिया...

"कौन था मम्मी..?" निहारिका उनके पास ही बैठी थी...

"पता नही... फोन काट गया" मम्मी ने जवाब दिया....

"ज़रूर अक्षरा का होगा... अब की बार मुझे उठाने देना.. निहारिका आकर फोन के पास बैठ गयी....

"ठीक है... प्यार से बात करके पूछना कहाँ है... और हो सके तो उसको वापस बुला लेना...मैं थोड़ा सा काम कर लूँ... आज तो सब कुछ ऐसे का ऐसे ही पड़ा है..." कहकर मम्मी गयी और दरवाजे की औट में होकर दोबारा फोन आने का इंतजार करने लगी... दरअसल उसको यकीन था कि अगर फोन पर तनवी हुई तो निहारिका करनवीर से अपना रिश्ता तय होने की बात ज़रूर बताएगी... वो जानना चाहती थी कि निहारिका इस रिश्ते से खुश है भी या नही... सब कुछ इतनी जल्दी हो गया था कि उनको अपनी बेटी के मन की बात लेने का मौका ही नही मिला था... उनको पता था कि निहारिका तनवी से कुछ नही छिपाएगी.....

उम्मीद के मुताबिक ही उनके बाहर निकलते ही फिर घंटी बजी.. निहारिका ने झट से फोन उठा लिया..,"हेलो!"

"हेलो.. निहारिका!" तनवी ने मरी सी आवाज़ में कहा....

"कहाँ मर गयी तू... तू तो सच में ही चली गयी यार... ऐसे भी कोई जाता है भला...तुझे पता है सब यहाँ कितने परेशान हैं...." निहारिका तनवी की आवाज़ पहचानते ही शुरू हो गयी...

"आंटी जी किधर हैं?" तनवी ने पूछा....

"वो बाहर हैं.. मैं अकेली ही हूँ.... बता ना कहाँ है तू..." निहारिका ने प्यार से पूछा....

"वो.. मम्मी पापा ठीक हैं ना...!" तनवी को उनकी फिकर थी...

"ऐसे कैसे ठीक रह सकते हैं.. आंटी जी का तो सुबह से बुरा हाल है... तुझे ऐसा नही करना चाहिए था अक्षरा..." निहारिका ने बताया...

"वो.. आए थे क्या?" तनवी ने पूछा....

"हां आए थे.. पर अब तुझे उनकी फिकर करने की कोई ज़रूरत नही है... तू घर आजा..." निहारिका ने कहा....

"पापा मुझे कभी माफ़ नही करेंगे... मैने उनकी इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी... क्या मुँह लेकर वापस आऊ?" तनवी के शब्द बहकने से लगे थे.. लग रहा था जैसे वह कभी भी रोना शुरू कर देगी....

"ऐसा मत कर यार.. मैं तो पहले ही तुझे समझा रही थी... पर कुछ नही हुआ.. घर पर सब तेरा इंतजार कर रहे हैं... तेरी टेंशन मैने अपने गले में डाल ली..." कहने के बाद निहारिका हँसने लगी....

"क्या मतलब?" तनवी की समझ में बात आई नही....

"उनका रिश्ता मुझसे तय हो गया... अब तो खुश है ना तू..." निहारिका ने समझाया...

तनवी कुछ देर तक यूँ ही सुन्न सी होकर खड़ी रही.. फिर अचानक फुट पड़ी... उसका रोने की आवाज़ कमरे में प्रतिक और धीरज तक भी पहुँची.. वो बाहर निकले.. पर तनवी को फोन कान से लगाए देख वापस अंदर चले गये.....

"ए... ये क्या कर रही है तू...? रो क्यू रही है? अब तेरा मंन हो गया था क्या शादी का... चिंता मत कर.. कर लेंगे अड्जस्ट..." निहारिका ने कहा और हँसने लगी....

"तू क्या है यार.. मेरे लिए तूने ये सब कर दिया... मैं क्या कहूँ.." तनवी सुबकते हुए कह रही थी...

"मैं पागल हूँ क्या, जो तेरे लिए करूँगी... मैने तो तुझे पहले ही कह दिया था.. कि अगर ऐसा रिश्ता मेरे लिए आता तो मैं कभी मना ना करती... वो तो पापा के दिमाग़ में जाने कैसे आ गया.. हे हे हे... अब तू सारी बातें छोड़ और ये बता कहाँ है...? हॉस्टिल तो बंद है... खैर जहाँ भी है तू जल्दी आजा.. बाकी बातें यहाँ बैठकर ही करेंगे...." निहारिका ने बिना लाग लपेट के अपने दिल की बात अपनी बेहन जैसी सहेली को बता दी....

"ठीक है... तू मेरे घर पर ही मिलना.... मैं आ रही हूँ.. २० मिनिट में..." तनवी ने कहा और फोन रख दिया....

फोन रखते ही उसने प्रतिक को नाम से पुकारने की कोशिश की.. पर जाने क्यू.. उससे नाम लिया ही नही गया...," ए.. सुनो!"

प्रतिक बुलावे का इंतजार कर ही रहा था... धीरज को वो अंदर रहने की बोलकर आया.. ताकि तनवी को अपने दिल की बात कहने में कोई परेशानी ना हो...," रो क्यू रहो हो.. आप!"

"मुझे अपने घर जाना है.." तनवी ने फोन प्रतिक की और बढ़ाते हुए कहा....

"ये ये..ये क्या कह रही हैं आप... मैने तो पापा को भी बोल दिया..." प्रतिक अवाक सा खड़ा तनवी को देखता रहा...

"सॉरी... ववो.. मुझे लगता था कि... मैं जा सकती हूँ... मुझे पता है आपको बहुत बुरा लग रहा होगा... पर.. मैं नही जा सकती.. मेरे घर वाले परेशान हो रहे हैं.... सॉरी.. पर मैं आपसे बाद में बात कर लूँगी.. प्रोमिस!" तनवी सिर झुकाए हुए ही बोलती जा रही थी....

"तो क्या... आप बिना बताए आई थी... ऐसा क्यू किया आपने...? मैं तो पहले ही पूछ रहा था कि...."

"सॉरी!" तनवी ने पहली बार प्रतिक से २ पल से ज़्यादा के लिए आँखें मिलाई... आज उसको प्रतिक की आँखों में अपनापन सा नज़र आया... उसकी नज़रों में वो चुभन नही थी जो तनवी को दूसरे लड़कों की आँखों में दिखाई देती थी..," मैं बाद में मिलूँगी आपसे...."

तनवी ने कहा और बाहर निकल गयी.......

# ३३

"कुछ कहा तो नही ना.. अंकल आंटी ने?" निहारिका ने तनवी के उपर आते ही पूछा...

तनवी घर आने के बाद करीब १५ मिनिट बाद उपर आई थी.. जब मम्मी ने उसको बताया कि निहारिका उपर बैठी है.....

"नही कुछ खास नही.. पापा ने तो ज़्यादा बात ही नही की.. लगता है मुझसे नाराज़ हैं... तू बता.. तू भी नाराज़ है क्या?" तनवी ने निहारिका के पास आकर बैठते हुए उसका हाथ पकड़ लिया....

"तू तो सच में ही पागल है यार.. मुझे विश्वास नही था कि तू सच में चली जाएगी... आख़िर तूने सोच क्या रखा है? पूरी उम्र ऐसे ही बैठी रहेगी क्या?" निहारिका ने भावुक सी होते हुए कहा....

"मेरी बाद में... पहले ये बता, तू खुश तो है ना.. करनवीर के साथ शादी तय होने पर... अगर ऐसा नही हुआ तो मैं पूरी उमर खुद को माफ़ नही कर पाउँगी... तूने मेरे घर वालों को बचा लिया.. पर ये सब तेरी खुशियों की बलि देकर में कभी नही चाहूँगी.. तू सब सच बता दे.... तुझे मेरी कसम...." तनवी ने उसके सवाल को टालते हुए पूछा.....

"हां.. मैं तो बहुत खुश हूँ... असल में तो उनसे अच्छा लड़का मुझे मिल ही नही सकता.. तुम्हे ना पासकने की कसक उसकी आँखों में साफ दिख रही थी.. पर उसने अपने घर वालों को कतई जाहिर नही होने दिया कि वो खुश नही है.. शायद उनकी खुशी के लिए ही उन्होने मुझे स्वीकार किया है... मुझे जाने क्यू डर सा लग रहा है कि कहीं वो मुझे उतना प्यार दे ही ना पायें जितने की मैं उनसे अपेक्षा करती हूँ...." निहारिका शुन्य में झाँकते हुए बोल रही थी... कहते हुए करनवीर का खूबसूरत चेहरा उसकी आँखों के सामने था....

कुछ देर वहाँ चुप्पी छाई रही.. फिर अचानक निहारिका ने ही मौन तोड़ा,"तू चली कहाँ गयी थी...?"

"उनके पास!" तनवी ने जवाब दिया....

"उनके किनके? प्रतिक के पास क्या?" निहारिका ने अंदाज़ा लगाकर चौंकते हुए पूछा....

"हाँ!" तनवी ने नज़रें झुका ली....

"क्या?" अपने अंदाज़े की पुष्टि होने पर निहारिका फिर चौंकी," उस दिन तो तू मेरे साथ जाते हुए भी डर रही थी... फिर ऐसे कैसे चली गयी.. अकेली?"

"पता नही यार... पर मेरे पास कोई और रास्ता बचा ही नही था...!" तनवी ने जवाब दिया.....

"उन्होने कुछ पूछा नही? तूने क्या बताया...?" निहारिका अब तक हैरत में थी....

"मैने उनको यही दिखाया था कि मुझे उनकी सपने वाली बात पर यकीन सा हो रहा है.. इसीलिए मैं उनके साथ टीले पर चलने को तैयार हूँ...!" तनवी ने कहा....

"फिर? क्या बोले वो.." निहारिका खुश होकर बोली....

"उन्होने तो चलने की तैयारी कर भी ली थी... फिर मुझे लगा मैं ग़लत कर रही हूँ.. इसीलिए मैने तेरे पास फोन किया और वापस आ गयी..." तनवी ने स्पष्ट किया....

"हे भगवान! तूने ये नही सोचा की इस मज़ाक से उनके दिल पर क्या बीतेगी.. सच में बहुत निष्ठुर है तू... वो सच ही कहते हैं.. तेरे अंदर दिल नही है... और ना ही ज़ज्बात...!" निहारिका ने भड़कते हुए कहा....

"मैं क्या करती यार... सच कहूँ तो मुझे भी बहुत शर्म आई थी उनको इनकार करते हुए... पर मैं कैसे जा सकती थी.. तू ही बता.. मैने तो दो चार दिन घर से बाहर रहने के लिए उनको ऐसा बोल दिया था....." तनवी ने कहा....

"उन्होने कुछ बोला नही... बहुत गुस्सा आया होगा उनको तुम पर...!" निहारिका ने कहा....

"पता नही... मैं तो बोलते ही ये कहकर निकल आई थी कि बाद में बात करूँगी...!"

"और तू अब उनसे बात करेगी नही... है ना? ये वादा तोड़ना भी तेरे लिए मुश्किल नही है.. बोल?" निहारिका को प्रतिक की दया आ रही थी....

"पता नही... पर सच बताऊं.... मुझे यकीन नही आ रहा.. उनके सपने और मेरे नाम बदलने की कहानी एक दूसरी से जुड़ी हुई सी लगती हैं... पता नही क्यू.. मुझे अजीब सा महसूस होता है उसके सामने जाकर... ऐसा लगने लगा है कि मैं उसको बहुत पहले से जानती हूँ.. बहुत सालों से... पर पता नही क्यू मेरा दिल इस बात को मानने को तैयार नही है...." तनवी ने विस्तार से अपने मंन की बात कही....

"दिल होगा तेरे अंदर तभी तो मानेगा ना...! वरना तू कभी उनको झूठा विश्वास दिलाकर उसकी भावनाओ से ना खेलती... सच में यार.. दिल कर रहा है तुझे ज़बरदस्ती उठाकर उस टीले पर ले जाकर पटक दूँ.. जो होगा देखा जाएगा...." निहारिका ने प्यारे गुस्से से कहा...

तनवी कुछ नही बोली.. बस हँसने लगी... शायद अपने आप पर!

# ३४

"मुझे तो पहले ही शक हो रहा था कि उसके दिमाग़ में कुछ और चल रहा है... बात तक ना करने वाली भाभी जी इतनी जल्दी चलने को तैयार कैसे हो सकती थी.." धीरज और प्रतिक बैठे बात कर रहे थे....

"पर यार उसने बोला तो है ना.. कि बाद में बात करेगी... हम इंतजार करने के अलावा और कर ही क्या सकते हैं..." प्रतिक मायूस था.. पर हिम्मत नही हारी थी उसने....

"एक मिनिट... अपना फोन देना..." धीरज ने कहा...

"क्या करेगा?" प्रतिक ने उसकी और फोन बढ़ा दिया...

धीरज ने बिना कोई जवाब दिए कॉल डीटेल निकाली और लास्ट डाइयल्ड नंबर. मिला दिया... प्रतिक से उसने चुप रहने का इशारा किया...

"हेलो!" निहारिका की मम्मी की आवाज़ आई....

"धीरज ने हेलो कहा और फोन को मूट पर डाल दिया..... वह फोन काटने ही वाला था कि उधर से मम्मी की आवाज़ आनी शुरू हो गयी," करनवीर बोल रहे हो ना बेटा... इतना शरमाने की क्या बात है....निहारिका अक्षरा के घर पर है.. वहाँ कॉल कर लो..." कहकर वो हँसने लगी....

धीरज ने हड़बड़कर मूट मोड़ हटाया," हां आंटी जी.. एक बार नंबर. देना प्लीज़.. अक्षरा के घर का....

"अब मम्मी कहने की आदत डाल लो बेटा..." मम्मी हंसते हुए बोली," तुम्हारे पास नही है क्या नंबर..?"

"हां.. नही.. वो मुझसे मिस हो गया है..." धीरज ने तुरंत बात बनाई,"मम्मी जी..."

निहारिका की मम्मी ने नंबर. बताया और फोन रख दिया....

धीरज ने झट से तनवी के घर वाला नंबर. डाइयल किया... वहाँ भी फोन आंटी जी ने ही उठाया," हेलो!"

"करनवीर बोल रहा हूँ आंटी जी.. निहारिका होगी यहाँ पर...." धीरज ने कहा...

मम्मी कुछ देर सोचती रही फिर बिना कुछ ज़्यादा कहे ही बोली," अभी देती हूँ बेटा.. कहकर वो फोन बाहर उठा लाई," आ निहारिका... फोन लेजा.. करनवीर का है..."

निहारिका की खुशी का ठिकाना ना रहा... वह सीढ़ियों से लगभग भागती हुई नीचे आई और फोन उपर ले गयी.....

"हेलो!" फोन पर निहारिका की नज़ाकत देखते ही बन रही थी...

"तनवी है क्या?" धीरज ने सीधे सीधे पूछा....

"कौन?" निहारिका ने चौंक कर पूछा....

"मैं हूँ.. धीरज.. फोन मत काटना!" धीरज ने सच बोल दिया....

"श.. हां.. क्या बात है? तुम्हे ये नंबर. कैसे मिला?" निहारिका ने हैरत से पूछा...

"तुम्हे ये सब नही करना चाहिए था... बेचारा प्रतिक दोपहर से रो रहा है.. बच्चों की तरह..." धीरज ने प्रतिक की और आँख मारी....

"अब मैं क्या करूँ..? मैं भी इसको यही समझा रही हूँ... पर जो हुआ इसकी मजबूरी थी....!" निहारिका ने दोनो ही तरह की बातें कह दी....

"वो बात कर सकती है क्या? प्रतिक से..." धीरज ने काम की बात पर आते हुए कहा....

"हां... अक्षरा.. ये ले.. अब बात कर प्रतिक से..." निहारिका ने फोन तनवी की और बढ़ा दिया...

"नही.. मैं नही करूँगी.. " तनवी हड़बड़कर खड़ी हो गयी...

"कर ना बात.. तू कहकर आई थी ना उसको... बेचारों ने जाने कहाँ से नंबर. निकलवाया होगा.. अब बकवास मत कर...." निहारिका गुस्से से बोली....

"नही... मुझसे नही होगी बात.. मैं बाद में देखूँगी...." तनवी ने स्पष्ट मना कर दिया...

निहारिका ने फोन वापस कान से लगा लिया," प्रतिक को फोन देना एक बार...."

"प्रतिक ही बोल रहा हूँ..!"

"श.. म्मै उसकी तरफ से माफी मांगती हूँ... दरअसल उसने जानबूझ कर मज़ाक नही किया... मैं मिलकर बताऊंगी..." निहारिका ने क्षमा याचना की....

"पर मैने मुश्किल से तो पापा को मनाया था.. अब उसके बिना घर कैसे जाऊ.. मैने पापा को बोल भी दिया है कि मैं तनवी को लेकर आ रहा हूँ...." प्रतिक ने बेबसी से कहा....

"क्या? तुमने पापा को ये बोल दिया... तुम तो बहुत हिम्मत वाले हो यार... शकल से तो नही लगते.. हे हे" निहारिका ने मज़े लिए...

"पर अब बताओ तो मैं क्या करूँ...?" प्रतिक ने पूछा....

"हम्म... तो मैं इसको ले आऊ?" निहारिका ने कहा....

"कहाँ?"

"टीले पर.. और कहाँ?" निहारिका ने मुस्कुराते हुए कहा....

"क्या? पर तुम अकेले जाओगे वहाँ?" प्रतिक ने आश्चर्य से पूछा...

"ओफ़कौर्स यार... तुम्हारे साथ चलेंगे... पर टाइम कितना लगेगा....?" निहारिका ने पूछा....

"पर उसको मनाओगी कैसे?"

"वो तुम मुझ पर छोड़ दो.. टाइम कितना लगेगा....?"

"४-५ दिन तो लगेंगे ही... हफ़्ता भी लग सकता है...." प्रतिक ने जवाब दिया," पर... क्या तुम भी साथ चलॉगी?"

"नही नही... दुल्हन की तरह तुम्हे इसके साथ भेज दूँगी.. मैं क्या करूँगी दो प्रेमी जोड़ो के बीच!" निहारिका ने व्यंग्य सा किया और फिर संजीदा हो गयी," हां.. मुझे भी चलना पड़ेगा... घर वाले इसको अकेला नही भेजेंगे.... किसी भी हालत में... समझ गये...?"

"हम्म.. पर उससे तो पूछ लो....!" प्रतिक ने आशंकित सा होकर कहा....

"पूछ लिया समझो.. मैं कुछ देर बाद फोन करती हूँ... तुम कल सुबह चलने की तैयारी करो..." निहारिका ने कहा और फोन रख दिया....

"ये क्या कह रही है तू..? अब तू क्यू मज़ाक कर रही है उनसे!" तनवी ने हताश होकर कहा....

"मज़ाक नही कर रही.. हम सच में चल रहे हैं... कल सुबह... बहुत मज़ा आएगा....!" निहारिका ने खुश होकर कहा....

"नही.. मैं नही जा रही... मैं नही जाऊंगी..." तनवी ने टका सा जवाब दिया....

"एक बात बता तू? तुझे क्या लगता है? प्रतिक बदतमीज़ है?" निहारिका ने पूछा...

"नही तो! मैने ऐसा कब कहा..."

" उसकी शकल से नफ़रत है....?"

"नही तो....."

"तुझे क्या लगता है.. वो हमारा नाजायज़ फ़ायदा उठा सकता है क्या?"

"पर तू पूछ क्यू रही है?" तनवी ने पलट कर सवाल किया...

"तू बता ना!"

"न्नाही..."

"अब तक जितनी भी बार मिले हैं.. तुझे लगता है कि उसके मान में कोई चोर है.. या वो सब झूठ बोल रहा है...?"

"नही!"

"तो प्राब्लम क्या है यार... अगर तू मुझसे पूछेगि तो मैं यही कहूँगी कि तुझे उसके साथ जाकर देखना चाहिए.. खुद तुझे भी लगता है कि तुम्हारा अतीत कहीं ना कहीं जुड़ा हुआ लगता है... और मैं दावे के साथ कह सकती हूँ की वो ऐसा लड़का नही है जो यूँही लड़कियों के पीछे घूमता फिरे... और फिर तेरे साथ मैं भी चल रही हूँ..

मैं भी देखना चाहती हूँ कि आख़िर तुम्हारे बीच प्यार की वो कौनसी कड़ी है जिसकी ताक़त ने तुम्हे करनवीर से शादी को टालने के लिए घर से भागने पर मजबूर कर दिया.... आज तक खुद तुमने ऐसा नही सोचा होगा की तुम भी कभी ऐसा कर सकती हो.. पर तुमने फिर भी किया... ये तुम्हारे बीच 'कोई' अंजान बंधन नही तो और क्या है जिसने प्रतिक को यहाँ तक आने पर मजबूर कर दिया... अगर उसको नाटक ही करना होता तो क्या वो अपने शहर में नही कर सकता था... लड़कियों की इतनी भी कमी नही है यार....." निहारिका ने कहकर एक ज़ोर की साँस ली....

"पर तू कहना क्या चाह रही है.. हम जाएँगे कैसे....?" तनवी की समझ से बाहर था कि निहारिका किस बसे पर बाहर जाने की बात कर रही है.. वो भी हफ़्ता भर के लिए....

"मैने सब प्लान कर लिया है... मैं आज मम्मी को बोलूँगी कि अमृतसर से मेरी सहेलियों का टूर जा रहा है... मुझे पता है कि वो कभी मना नही करेंगे... अब तो उनको वैसे भी ये लग रहा है कि उनकी बेटी बेवक़्त ही शादी की बेड़ियों में जकड़ने जा रही है.. हे हे... पहले मैं

मम्मी से पूछ लूँ... मेरी हां होने के बाद अंकल जी भी मान ही जाएँगे....!" निहारिका ने खुलासा किया....

"पर मैं नही जाना चाहती यार!" तनवी ने अनमने मन से कहा....

"देखती हूँ कैसे नही चलेगी... अब मैं जा रही हूँ.. मम्मी से पूछते ही तेरे पास आऊंगी और उनको बता देंगे...!" निहारिका ने फ़ैसला सा सुनाया और फोन लेकर नीचे चली गयी.....

# ३५

"तुझे विश्वास है कि वो आ जाएँगी...?" सौरभ गाड़ी की चाबियाँ उठता हुआ बोला...

"अब आयें ना आयें, मुझे तो जाना ही पड़ेगा एक बार... मम्मी पापा को बोल दिया है..." प्रतिक बार बार बाहर निकल कर गेट की और देख रहा था....

"तू वापस आएगा ना सौरभ...!" संकेत उदास सा हुआ बैठा था.. काफ़ी दिनो तक कायम रही घर की रौनाक़ आज फिर सूनेपन को बुलावा दे रही थी....

"हां हां.. आऊंगा क्यू नही.. पर इस बार बारात लेकर ही आऊंगा, तेरे शहर में..." मुस्कुराता हुआ सौरभ बोला....

"संकेत भाई.. तू भी हमारे साथ चलना.. तुझे बंगर की छोरी दिखाऊंगा.." धीरज ने मज़ाक करते हुए कहा....

"बस यार.. अब तो लड़कियों से भी मंन सा भर गया है... पता नही अब किसके सहारे जिया जाएगा...." संकेत ने गहरी साँस लेते हुए कहा....

"तो तू शादी करले ना यार... बहुत हो चुकी मौज मस्ती... अब तू भी कोई नखरे दिखाने वाली ढूँढ ले!" धीरज ने आकर संकेत के कंधे पर हाथ रखा तो संकेत आँखें बंद करके मुस्कुराने लगा," मेरे वाली की तो शादी भी हो गयी होगी यार...."

"क्या बोल रहा है भाई...? तेरा भी चक्कर चला था कभी.." धीरज ने आश्चर्य से पूछा...

"क्यू बे.. चक्कर क्या तुम लोग ही चला सकते हो.. मेरा चक्कर तो उस उमर में चल गया था जब तुम लोग तीन पहियों वाली साइकल चलाते होगे.. हा हा हा" संकेत के मज़ाक में भी उसके दिल का डर ही उभर कर आया....

"फिर क्या हुआ भाई? " धीरज उसको लेकर सोफे पर बैठ गया...

"सब किस्मत वाले नही होते यार... सबको नही मिरंभा प्यार!!!" संकेत ने अपनी बात पूरी की ही थी कि दरवाजे पर निहारिका प्रकट हो गयी,"हाई!"

सबका दिल खुश हो गया, पर प्रतिक अब तक बेचैन ही था," ववो नही आई क्या?"

"उसके बगैर मैं क्या करती... ये खड़ी बाहर.. जल्दी चलो..." निहारिका ने कहा....

"हेलो!" बाहर आते ही प्रतिक तनवी के मुरझाए चेहरे को देखकर संशय में पड़ गया," चल रहे हो ना; तुम भी..."

"हाँ हाँ.. चल रहे हैं.. बार बार पूछ कर मना करवाना चाहते हो क्या?" निहारिका ने जवाब दिया......

"फिर ये ऐसे क्यू खड़ी है.. चुपचाप!" प्रतिक तनवी के चेहरे पर मायूसी देखकर झिझक रहा था....

"अब आप इसके चेहरे पर ध्यान मत दो.. ये ऐसी ही है.. अपने आप ठीक हो जाएगी.. चलो यहाँ से....."निहारिका ने कहा....

"आपका ही इंतजार हो रहा था... हम तो तैयार हैं.." सौरभ ने कहा और ड्राइविंग सीट पर जा बैठा... धीरज ने भी आगे की सीट पकड़ ली.....

निहारिका ने तनवी को गाड़ी के अंदर धकेला और खुद भी बैठ गयी....

"थोड़ा उस तरफ हो जाओ.. मुझे भी तो बैठना है..." प्रतिक की खुशी उसकी मुस्कुराहट से साफ झलक रही थी...

"उस तरफ से आओ ना!" निहारिका ने मुस्कुरकर प्रतिक से कहा... मुस्कुराहट में उसका इशारा तनवी के साथ बैठने के लिए था.....

"आ..आप उधर ही बैठ जाओ!" प्रतिक को अपनी तरफ वाली खिड़की खोलते देख तनवी सकपका कर बोली....

"चुपचाप इधर खिसक ले.. तुझे खा नही जाएगा ये..." निहारिका ने कहा और तनवी को अपनी तरफ खींच लिया.... प्रतिक बैठा और संकेत को अलविदा करके सभी निकल गये.....

शहर से बाहर निकलने के बाद निहारिका एकदम रिलॅक्स महसूस कर रही थी पर तनवी के चेहरे पर अब भी एक अंजाना सा तनाव पसरा हुआ था.. कारण कई थे... घर वालों का मूड अब तक उखड़ा होना; प्रतिक, जो खुद को उसका अतीत होने का दावा कर रहा था, के साथ होना; और अंजान मंज़िल की और जाते हुए मन में तरह तरह के सवाल होना.....

ऐसा नही था कि प्रतिक और दूसरे लड़कों के साथ होने से उसके अंदर किसी तरह का कोई भय था.. वो तो तब भी शायद नही होता अगर निहारिका उसके साथ नही होती.. २-४ मुलाक़ातों में वह प्रतिक के चरित्र को समझ गयी थी.. प्रतिक को अब वह निहायत ही भोले और साफ मंन के लड़के के रूप में जान'ती थी...

फिर भी.. वो परेशान सी थी.. आज तक हमेशा उसके दिल से यही आवाज़ निकली थी कि वो 'शादी' और प्यार करने के लिए नही बनी... कारण चाहे कुछ भी रहा हो, पर वा लड़कों के नाम से ही बिदक्ति थी.. उसने कभी सोचा भी नही कि ऐसा क्यू है... वो क्यू दूसरी लड़कियों की तरह नही सोचती... और आज से पहले उसने अपने मंन को भी टटोलने की ज़रूरत नही समझी थी...

पर आज उसके मंन में एक द्वन्द्व सा चल रहा था.. अपने अतीत को लेकर, अपने नेचर को लेकर.. और अपना नाम बदलने और प्रतिक के सपने में समन्जस्य को लेकर....

"ऐसे क्यू मुँह फुलाए बैठी है...? बाहर देख मौसम कितना अच्छा है...!" निहारिका ने उसका ध्यान बाँटने की कोशिश की....

तनवी जो अब तक एकटक सामने वाली सीट को घूर रही थी, ने अपनी नज़रें बाहर की ओर घुमा दी... पर चेहरे के भाव अब भी नही बदले....

"आपने क्या सोचकर मेरा सिर फोड़ा.. भाभी जी!" धीरज से चुप ना रहा गया....

"मुझे नाम से बुलाओ!" तनवी ने अचकचा कर कहा...

"स.. स.. सॉरी.. तनवी जी!" धीरज ने क्षमा याचना करते हुए भूल सुधार किया....

"मेरा नाम अक्षरा है.. तनवी नही!" तनवी ने उसको फिर टोका....

"वो तो टीले पर जाकर पता लगेगा.. हा हा हा... वैसे भाब... सॉरी.. आपको भूतों से डर तो नही लगता....?" धीरज तनवी को मज़ाक में छेड़ने लगा....

"भूत होते ही नही.. मैं क्यू डरूँ...?" तनवी खिसिया कर बोली....

"अच्छा! इनस्पेक्टर से पूछ कर देखना.. वो क्या कहते हैं.. हा हा हा!" धीरज ने जवाब दिया और हँसने लगा....

"वैसे आपको शायद पता नही... उनसे मेरी शादी होने वाली है..." निहारिका ने खुश होकर बताया....

प्रतिक ने निहारिका की और आश्चर्य से देखा..," पर उस दिन जब वो आए थे.. तब तो ऐसा कुछ नही लगा..."

"हां.. सब कुछ बाद में हुआ.. तुम्हे पता है.. उनकी शादी अक्षरा से तय होने वाली थी...!" निहारिका ने माहौल में उत्सुकता भर दी..

"फिर?" धीरज ने पलट कर पूछा...

"फिर क्या? ये भाग आई घर से.. हे हे हे.. और मुझे ये सुनहरा मौका मिल गया.." निहारिका के चेहरे की खुशी साफ झलक रही थी....

"सच!" प्रतिक का चेहरा खिल उठा....

"ज़्यादा खुश होने की ज़रूरत नही है... मैं तुम्हारे लिए नही; खुद के लिए भाग कर आई थी....!" तनवी ने पहली बार डिस्कशन में भाग लिया.....

प्रतिक के अचानक खिले चेहरे पर वापस मुरझाई सी आ गयी," वो क्यू?"

"और नही तो क्या? कल जब ये तुम्हारे पास आई थी तो सिर्फ़ शादी से बचने के लिए...!" निहारिका ने अट्टहास किया.....

"पर हमें तो इसने कुछ नही बताया कल..." धीरज ने एक बार फिर पलट कर पूछा...

"ये पागल थोड़े ही है.. बस शकल ही पागलों जैसी है इसकी... हे हे" निहारिका हँसी," ये तुमको बता देती तो तुम क्या पता इसको वापस छोड़ आते....!"

"इतना पागल तो मैं भी नही हूँ... अगर मुझे पता चल जाता तो मैं इसको वापस जाने ही नही देता... चाहे मुझे इसको ज़बरदस्ती गाड़ी में डाल कर लाना पड़ता..." प्रतिक ने कहा....

"अच्छा! अब उतरू नीचे... ले जाकर दिखाना ज़बरदस्ती..." तनवी ने गुस्से से कहा....

"भाई.. पहले देख लेना.. इनके हाथ में कोई चाकू छुरी तो नही है.. इनको दया नही आती... सीधे उतार देगी... हा हा हा..." धीरज ने बीच में टपकते हुए मज़े लिए.....

तनवी धीरज का इशारा समझ गयी," तुम अगर रात को इस तरह किसी के कमरे में घुसोगे तो वो क्या तुम्हारी आरती उतारेगी.... ? तुम्हारी दया नही आती तो में तुम्हे आराम से वापस नही जाने देती मेरे घर से... और ना ही इनस्पेक्टर को झूठ बोलती कि तुम दोनो मेरे घर नही आए..." तनवी ने मुँह चढ़ा कर कहा...

"कुछ भी कहो भा.. सॉरी.. पर आपकी दया के पिछे भी ज़रूर कोई राज ही होगा... वरना आपसे डर बहुत लगता है हम दोनो को... क्यू प्रतिक? हा हा हा!" धीरज तो आख़िर धीरज था....

"मुझे तो नही लगता... तुझे ही लगता होगा...!" प्रतिक अच्छे बच्चे की तरह बोला....

"किसी दिन तुम पर निशाना लगेगा तब पता चलेगा.. उस दिन तो बच गये.... वैसे भी लड़कियों से थोड़ा बचकर रहने में ही भलाई है...." धीरज ने सौरभ के कंधे पर हाथ रखा....

"हां! ये बात तो है!" सौरभ ने पहली बार कुछ बोला.....

"क्या खाक सही है यार.. तू कुछ बोरंभा ही नही...!" धीरज का ध्यान सौरभ की बात सुनकर ही उसपर गया था....

"मैं क्या बोलूं यार? मुझे अपनी फिकर हो रही है... एक हफ्ते में सब कुछ अरेंज करना है.. अपनी शादी के लिए... बारात में तो आओगे ना...?" सौरभ ने पूछा......

धीरज उसकी बात का जवाब देना छोड़ कर अपनी ही राम कहानी में डूब गया," यार! तुम सब तो शादी कर रहे हो... मेरा क्या होगा? मैं तो कुँवारा का कुँवारा ही रह गया..."

"तुम हो ही इस लायक...!" निहारिका ने कहा और गला फाड़ कर हँसने लगी... उसका साथ सभी ने दिया...

# ३६

शाम करीब ५ बजे सौरभ ने सबको प्रतिक के पापा के ऑफीस पर उतार दिया...

"तुम भी चलो ना यार! कल निकल जाना!" प्रतिक ने हाथ मिलने के लिए बढ़े हुए सौरभ के हाथ को पकड़ लिया....

"नही यार.. अब तो शादी के बाद तुम्हारी भाभी को लेकर ही आऊंगा.. अभी काम बहुत करने हैं और टाइम कम है... अब तो निकरंभा हूँ.."सौरभ ने धीरज से हाथ मिलाया.. लड़कियों की तरफ मुस्कुरकर 'बाइ' कहा और निकल गया....

"एक बात का ध्यान रखना.. अभी पापा को ये मत बताना कि हमें टीले पर जाना है.. प्लीज़.. बेवजह परेशान हो जाएँगे.. समझ गये ना!" प्रतिक ने अपना फोन निकालते हुए सब'से कहा.....

"चिंता मत करो.. मैं इसको सब समझा दूँगी.. पर अभी हमें कहाँ चलना है....?" निहारिका ने प्रतिक को बेफिकर रहने को कहा.....

" एक मिनट.. मैं पापा को फोन कर लूं.. देखता हूँ कहाँ हैं...? वही कुछ इंतज़ाम करेंगे...." प्रतिक ने कहा और फोन मिलाया ही था कि ब्लॅक कलर की मर्सीडीस उनके पास आकर रुकी...

"पापा आ गये!" प्रतिक ने कहा और गाड़ी की ओर बढ़ा....

निहारिका ने तनवी को कोहनी मारकर छेड़ा," तेरी ससुराल वाले तो बहुत अमीर हैं यार.. तुझे पता था क्या?"

तनवी ने अपना मुँह घुमा लिया..

"उधर कहाँ देख रही है.. पैर छू ले जाकर.. इतनी भी अकल नही है क्या?" निहारिका ने उसको वापस घुमा दिया....

"ओये पुत्तर... कितना वेट करवा कर आया है...." पापा ने गाड़ी से नीचे उतरते ही प्रतिक को बाहों में भर लिया.. प्रतिक भी उतनी ही आत्मीयता से उनके पैर छूने के बाद उनसे गले मिला...

"क्या हाल हैं बेटा?" धीरज के प्रणाम करने पर पापा ने उसके कंधे पर हाथ मारा और फिर थोड़ी सी दूर खड़ी तनवी और निहारिका को देखकर बोले," अरे.. तुम तो दोनो ही हाथ मार लाए... वैसे चॉइस दोनो की फँटॅस्टिक है... गुड कित्ता.. " पापा ने मुस्कुराते हुए कहा......

"नही अंकल जी.. मेरा इनमें कुछ नही है... हे हे हे.. वो जींस्स वाली भाभी जी की सहेली है.. निहारिका!" धीरज ने मुस्कुराते हुए कहा....

"ओह्हो.. तो मिलवाओ ना भाई.. इतनी दूर क्यू चिपका दिया उनको!" कहकर पापा उनकी और बढ़े.. प्रतिक और धीरज पिछे पिछे थे....

"नमस्ते अंकल जी!" पहल निहारिका ने की...

"नमस्ते बेटा जी... " पापा ने प्यार से निहारिका के सिर पर हाथ फेरा और तनवी के सामने आकर खड़े हो गये..

तनवी गहरी असमंजस में थी... प्रतिक की भावनाओ का वो अपमान नही करना चाहती थी.. पर लाख चाहकर भी तनवी के बताए अनुसार उसके मुँह से 'पापा' शब्द ना निकल पाया... इसी उधेड़बुन में वह नमस्ते तक करना भूल गयी; और सिर झुकाए खड़ी रही....

पापा मंद मंद मुस्कुराते हुए तनवी को कुछ देर गौर से देखते रहे.. तनवी का चेहरा था ही इतना चित्ताकर्षक कि कोई भी एक पल के लिए तो सब कुछ भूल ही जाता था...

अचानक जैसे पापा ख़यालों की दुनिया से वापस आए," तू इतनी गुमसुम क्यू है बेटी... सब ठीक हो जाएगा.. मैं हूँ ना.. तेरे पापा की जगह... और फिर प्यार में इतनी दिक्कतें तो आती ही हैं... तू फिकर ना कर.. जल्द ही मैं तेरे पापा से बात करूँगा.. मुझे यकीन है कि उसकी जवानी के दिन याद करवाकर मैं उसको मना ही लूँगा.. हा हा हा!"

"ज्जई.. पापा जी!" तनवी के लब थिरक उठे.. प्रतिक के पापा के प्यार भरे बोल सुनकर वो उनको 'पापा' कहने का साहस जुटा ही गयी....

"जिंदा रह मेरी बच्ची!" पापा ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा...," मुझे अपने इस 'नालयक' बेटे की किस्मत पर पूरा भरोसा था... थोड़ा भोला है.. अपने में ही खोया रहता था आजकल.. मैं इसके दिल की बात समझ नही पाया.. वरना मैं खुद आता इसके साथ, तुम्हे लाने के लिए... मुझे पता था; एक दिन ये कोई ना कोई हीरा ढूँढ ही लेगा अपने लिए... और तुम तो... हीरे से भी बढ़कर हो बेटी...!" पापा ने प्रतिक की और देखा और उनकी आँखें नम हो गयी.....

प्रतिक एक बार फिर अपने पापा से लिपट गया," आइ लव यू पापा... आइ लव यू!"

इतना प्यार भरा माहौल देख कर तनवी की आँखों में भी नमी सी आ गयी... खड़ी खड़ी वह यही सोच रही थी..," क्या होगा अगर मुझे इनको छोड़ कर जाना पड़ा...."

"ओये अंदर चलो यार... बाहर ही खड़े रहोगे क्या?" पापा ने कहा और ऑफीस की तरफ बढ़ गये.. सबको साथ लेकर....

अंदर जाते ही उन्होने रिशेपशनिस्ट की छुट्टी कर दी और नौकर को बाहर 'ऑफीस क्लोस्ड' का बोर्ड टाँगने को बोल दिया.....

ऑफीस की चकाचौंध और आलीशान शानो शौकत को देख निहारिका हैरान थी... उसने सपने में भी नही सोचा था कि प्रतिक इतना अमीर होगा... तनवी के भविष्य को लेकर वह पूरी तरह निसचिंत हो गयी थी.. और उसने मन बना लिया था कि तनवी को किसी भी तरह शादी के लिए राज़ी करना है....

"चलो भाई.. थक गये होगे... तुम थोडा आराम कर लो.. जब तक खाना आए.. मैं प्रतिक के थोड़े कान खींच लेता हूँ.. इतने दिन घर से गायब रहने के लिए..." हंसते हुए पापा ने कहा और तनवी और निहारिका को बेडरूम दिखा दिया.... दोनो लड़कियाँ बेडरूम में चली गयी....

"हां जनाब! अब बोलो...!" पापा ने प्रतिक से कहा....

"हम रात को कहाँ रहेंगे पापा!" प्रतिक ने पूछा.....

"भाई.. आज होम मिनिस्टर के पास फाइल भेजूँगा... कल से तेरी मम्मी से बात करने का मौका ही नही मिला यार.. मैं बाहर था... देखते हैं उनका रेस्पॉन्स क्या आता है... पर आज तो तुमको यहीं रुकना पड़ेगा..... यहीं सो जाना..." पापा ने जवाब दिया....

"पर मैं?... बेडरूम तो एक ही है...!" प्रतिक ने अजीब सी नज़रों से पापा को कहा.....

"ओह्हो.. निहारिका बाहर सोफे पर सो जाए..... श.. समझा... मतलब तुम बाहर सोफे पर सो जाना यार.. एक ही दिन की तो बात है.. कल करते हैं कुछ... और धीरज भी यहीं रहता होगा ना...?" पापा ने अपने बेटे की शराफ़त को समझने में थोड़ी चूक हो गयी थी एक बार....

"ठीक है" प्रतिक ने कंधे उचका दिए....

"चलो अब मैं चरंभा हूँ.. मुझे कुछ काम निपटा कर जल्दी घर पहुँचना है.. तुम्हारी मम्मी को भी समझाना है ना.... खाना वाना ढंग से खा लेना......मैं सुबह आ जाऊंगा..." पापा खड़े हो गये.....

"ठीक है पापा.." प्रतिक ने कहा और धीरज के साथ उनको बाहर तक छोड़ने आया....

"कैसा लगा तुझे?..." बाथरूम से बाहर आते ही निहारिका ने तनवी को देख कर आँखें मटकाई...

"क्या कैसा लगा?" तनवी ने सिर उठाकर पूछा... वो कुछ परेशान सी लग रही थी....

"यही सब..!" निहारिका ने बेडरूम में नज़रें घूमाकर कहा," प्रतिक के पापा.. और क्या?"

"देख निहारिका! तेरे कहने पर मैं आने को तैयार हो गयी.. टीले तक भी चल पडूँगी... पर फ़ैसला मेरा ही होगा.. समझ गयी ना.. अब तू बार बार ये बातें मत उठा....कल को प्रतिक या उसके घर वालों को कोई ठेस पहुँचती है तो इसका जिम्मा तेरा है.. मेरा नही..." तनवी ने मुँह पिचकाते हुए कहा और सिर झुका कर वापस अपने नाख़ून कुरेदने लगी.....

"छोड़ ना यार टीले वीले का चक्कर... मुझे तेरे लिए प्रतिक पसंद है.. तू आराम से इसको हां बोल दे.. बाद में तो इसके पापा अपने आप सुलट लेंगे... कितने अच्छे हैं ना.... यहाँ ऐश करेगी तू.. ऐश! छोड़ दे शादी ना करने की ज़िद.." निहारिका उसके पास आकर बैठ गयी....

"मैने कहा ना छोड़ इन्न बातों को!" तनवी बिगड़ गयी....

" तुझे क्या लगता है? इससे ज़्यादा प्यार करने वाला तुझे मिल जाएगा.. ? जिंदगी भर ढूँढती रहना फिर..." निहारिका भी चिड गयी...

"मुझे नही चाहिए, प्यार करने वाला... अब मेरा दिमाग़ खराब मत कर यार..." तनवी ने कहा और लेट कर करवट बदल ली.. तभी दरवाजे पर नॉक हुई... तनवी वापस उठकर बैठ गयी.. निहारिका ने जाकर दरवाजा खोल दिया....

दरवाजे पर प्रतिक खड़ा था...," आओ.. खाना खा लो..."

"चल अक्षरा! मुझे भी बहुत भूख लगी है..!" निहारिका झट से तैयार हो गयी...

"मुझे भूख नही है.. तुम ही खा लो!" तनवी का मूड अब तक बिगड़ा हुआ था...

"चल ना यार... अच्छा सॉरी.. अब कुछ नही बोलूँगी ऐसा वैसा.. आजा.. खड़ी होकर खाना खा ले....!" निहारिका ने कहकर तनवी का हाथ खींच लिया... थोड़ी आनाकानी के बाद वो तैयार हो गयी और तीनो बाहर निकल गये....

"ये सब तुम्हारा ही है ना प्रतिक!" खाना खाते हुए निहारिका ने पूछा और कनखियों से तनवी की और देखा....

"नही!" प्रतिक ने जवाब दिया...

"तो?" निहारिका ने चौंकते हुए पूछा...

"अभी तो सब कुछ पापा का है... मैं अभी कमाता नही.. पढ़ रहा हूँ..." प्रतिक ने विनम्रता से उत्तर दिया....

"श.. मैं समझी...!" अपनी बात अधूरी छोड़कर ही निहारिका ने ग्लास का पानी अपने हलक से नीचे उतारा....

कुछ इसी तरह की बातें और हल्क फुल्के मज़ाक करते हुए सब ने खाना लिया और फिर तनवी और निहारिका वापस बेडरूम में जा घुसी....

"निहारिका!" तनवी ने कहा...

"हां बोल.. तू परेशान क्यू है? जो बोलना है बोल दे.. अगर तुझे हर हाल में ना ही करनी है तो कल सुबह ही वापस चल... जितने दिन हम यहाँ रहेंगे.. बात उतनी ही बढ़ेगी...." निहारिका ने उसका हाथ थाम कर कहा....

"तू एक मिनिट बाहर जा.. और.. 'उसको' अंदर भेज दे.. मुझे कुछ बात करनी है..." तनवी ने कहा...

"ऐसी क्या खास बात है.. मैं भी यहीं रुकती हूँ ना!" निहारिका ने कहा....

"कहा ना यार.. कुछ ऐसी ही बात है.. तभी तो तुझे बाहर जाने को बोल रही हूँ..." तनवी झल्ला कर बोली.. उसके चेहरे से साफ ही उसके किसी उधेड़बुन में होने का पता चल रहा था....

"देख ले.. कुछ उल्टा पुल्टा कह दिया तो मुझसे बुरा कोई नही होगा..." निहारिका गुर्राती हुई खड़ी हुई और बाहर निकल गयी.....

"हां.. नी..." प्रतिक खुशी से उछलता हुआ अंदर आया था.. पर तनवी का रुनवासा चेहरा देख कर उसकी सारी कल्पनाए हवा हो गयी," क्क्या हुआ?"

"बैठो!" तनवी एक तरफ को होते हुए बोली....

"कुछ ग़लत हो गया क्या?" प्रतिक ने बेड पर बैठते हुए कहा.. उसका दिल तनवी की रोनी सूरत को देख बैठा जा रहा था....

"ये.... प्यार क्या होता है प्रतिक!" तनवी ने सहजता से अपनी सुरीली आवाज़ में सवाल किया...

"प्यार! मुझे क्या पता क्या होता है प्यार!.. पर मुझे इतना पता है कि मुझे तुम अब मेरा ही एक हिस्सा लगने लगी हो... तुम्हे देखते ही दिल का हर अरमान खिल उठता है.. बात अब सिर्फ़ यहाँ तक नही रह गयी है कि किसी तरह मुझे पता लग गया कि शादियों पहले हम एक दूसरे के लिए जीते और मरते थे... ना! अब तो कोई अगर आकर ये कह दे कि वो सब झूठ था.. महज सपना था.. तो भी मैं कभी तुमसे अलग नही होना चाहूँगा... मैं रह ही नही पाऊंगा तुम्हारे बिना....

सोता हूँ तो तुम्हे सोचता हू.. जागता हूँ तो तुम्हे सबसे पहले याद करता हूँ.. खाते पीते, उठते बैठते.. सिर्फ़ यही सपना देखता रहता हूँ कि कब मेरा सपना सच होगा.. कब तुम मुझे अपना मानोगी.. कब मैं तुम्हे 'अपनी' कह सकूँगा...

मेरा दिल तूम्हारे ही रूप को ग्रहण कर चुका है... कोई और अब इस दिल को गंवारा नही होगा... चाहो तो आजमा सकती हो... अगर तुम नही रही तो जान भले ही ना दूं.. पर जीने लायक रहूँगा भी नही...."

प्रतिक भावनाओ में बहकर बोरंभा ही जा रहा था... और बोरंभा ही रहता अगर तनवी उसको ना टोक देती तो....

"मुझे पता है प्रतिक! मुझे ये भी पता है कि कोई किस्मत वाली ही होगी जो तुम्हे पति के रूप में प्राप्त करेगी... मैं तुम्हे अच्छी तरह जान चुकी हूँ.. पर क्या करूँ..? प्यार नाम से ही दिल में कुलमुलाहट सी होने लगती है.. मेरी बेचैनी बढ़ जाती है... मुझे खुद समझ नही आ रहा कि ये क्या है.. पर मेरा दिल और दिमाग़.. दोनो ही 'प्यार' के उलट बोलते हैं... मैने तुम्हारे बारे में सोचने का प्रयत्न भी किया... पर मेरा दम सा घुटने लगता है ऐसा कुछ भी सोचते हुए... लगता है जैसे में कुछ देर और सोचती रही तो मेरा दम ही निकल जाएगा......

समझने की कोशिश करो... मुझे नही लगता कि मैं किसी से भी शादी करने की सोच भी सकती हूँ... मैं नही चाहती कि तुम या घर वाले.. अपने दिल में कोई उम्मीद पाले और मैं तुम्हारा साथ ना दे सकूँ... आज मैं पापा से मिली... कितना प्यार है उनके दिल मैं... कल को अगर उनको ठेस पहुँची तो मैं तो जीते जी ही मर जाऊंगी.... प्लीज़ प्रतिक! मुझे कल ही वापस भेज दो.. मैं नही रह सकती यहाँ... मैं नही दे सकती तुम्हारा साथ!" बोलते बोलते तनवी की आवाज़ भारी हो गयी और आँखों से आँसू बहने लगे....

प्रतिक से कुछ भी बोला ही ना गया.. कुछ पल 'अपनी' तनवी को टकटकी लगाकर देखता रहा और फिर उठकर बाहर निकल गया...

# ३७

महल में हर तरफ अफ़रा तफ़री और आपा धापी का माहौल था... शहर के नज़दीक ही सूना पड़ा रहने वाला विशाल मैदान रणभूमि में तब्दील हो चुका था.. रह रह कर महल तक आ रही हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिनाहट और अपनी जान जोखिम में डाल कर लड़ाई में अपनी जान झोंक रहे सैनिकों की रह रह कर आ रही करूँ चीख और इन्न सबसे मिलकर पैदा हुए अजीब से कोलाहल से महल में मौजूद हर शक्स की रूह तक काँप रही थी....

"मा... क्या हम दुश्मनो से जीत पाएँगे?" शैया पर लेटी भयभीत राजकुमारी ने राजमाता से पूछा... बे-पनाह खूबसूरती की मिसाल उस राजकुमारी का मुरझाया हुआ चेहरा संकट की उस घड़ी में भी पुर्नमासी के चाँद की तरह दमक रहा था....

"भगवान पर भरोसा रखो दुर्गावती.. सब ठीक हो जाएगा..." राजमाता के चेहरे पर पसरा अजीब सा सन्नाटा उसके शब्दों से मेल नही खा रहा था.. फिर भी वह बेटी को दिलासा देने में कोई कसर नही छोड़ रही थी......

"पर हम १०,००० हैं और वो २००,०००... कैसे जीतेंगे मा?" दुर्गावती उठकर बैठ गयी.....

"तू लेट जा बेटी... थोड़ी देर सो ले... कल रात से तूने पलक तक नही झपकाई हैं.. सो जा! भगवान पर भरोसा रख.....! सब ठीक हो जाएगा..." राजमाता ने फिर से उसको झूठी दिलासा देने की कोशिश की......

"कैसे सो जाऊ मा? ववो.... मेरा चंद्रभान कल रात से ही युद्ध भूमि में है... उसने वादा किया था वापस आने का.. वो तो आया ही नही है अभी..... मैं उसको देख कर ही सो पाऊंगी....!" राजकुमारी के सीने से टीस सी निकली....

"तू फिर उसका नाम ले रही है... कितनी बार समझाया है बेटी; तू एक राजकुमारी है... तेरा विवाह किसी राजकुमार से ही होगा... अब तू उसका इंतजार छोड़ दे और सो जा!.. मान ले मेरी बात!"

राजमाता ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर दुर्गावती के गालों को छूने की कोशिश की.. पर वह सरक कर दूर हो गयी," नही! मैं किसी और के बारे में सोचूँगी भी नही... मुझे यकीन है.. वो आकर मुझे ले जाएगा यहाँ से... महल में किसी में इतना दम नही जो उसका रास्ता रोक सके... और ना ही आपके किसी राजकुमार में उसका सामना करने की हिम्मत है... आप देख लेना..." दुर्गावती बिलखाती हुई बोली और उठकर राजमहल के मुख्य द्वार की और भागी.....

"ए पकड़ो इसे!" राजमाता ने कहा और सेविकाओं ने अक्षरष: उनकी आज्ञा का पालन किया......

"मान जा बेटी.. वरना हमें तुम्हे फिर से बेड़ियों में जकड़ना पड़ेगा...!" राजमाता ने प्यार से उसका सिर पुच्कार्ते हुए कहा......

"बाँध दो मुझे... बना लो बंदी... पर तुम देखना... जब मेरा चंद्रभान आएगा तो तुम्हारे सारे पहरे बिखर जाएँगे.. सारी बेड़ियाँ कट जाएँगी तुम्हारी.... कर लो तुम्हे जो करना है..." दुर्गावती चिल्ला चिल्ला कर कह रही थी...

जैसे तैसे करके राजकुमारी को शांत करके फिर से बैठाया गया.. पर उसकी आँखें शांत ना थी.. उसके अरमान शांत नही थे.. उसके चंद्रभान ने उसको लौट कर आने का वादा किया था.. और उसको विश्वास था; निष्ठुर और निर्मम भगवान भी उसको उसका वादा पूरा करने से नही रोक सकता.. उसके कान चंद्रभान की दनदनाते हुए कदमों की आहट सुनने को बेताब थे.. उसकी नज़रें चंद्रभान दर्शन की प्यासी थी....

चंद्रभान के इंतज़ार में तड़प रही दुर्गावती की आँखों के सामने वो सुखद लम्हा दौड़ गया जब उसने अपनी सखियों के साथ उपवन में विचरण करते हुए पहली बार चंद्रभान को देखा था......

"ये सजीला नौजवान कौन है री!" दुर्गावती ने अपनी सखियों से पूछा था...

"आप इनको नही जानती राजकुमारी?" रंभा ने आश्चर्य से दुर्गावती की ओर देखा...

"नही तो! मैं क्यू जानूँगी इसको? ऐसी क्या खास बात है इसमें?" दुर्गावती ने एक बार फिर उस नौजवान को गौर से देखते हुए पूछा....

"अरे! आप वहीं तो थी जब इस शूरवीर ने तलवारबाजी में आस पड़ोस के देशों से आए सब राजकुमारों को एक एक करके परास्त कर दिया था...इसी ने तो बचाई थी अपने राज्य की लाज.... आप को स्मरण नही है क्या?" रंभा ने राजकुमारी को याद दिलाने की कोशिश की....

"ऊऊओ.. पर ये तो बड़ा ही सुंदर है.. एक दम मन मोहक.. उस दिन हमनें इसको गौर से नही देखा था....!" दुर्गावती टकटकी बाँधे चंद्रभान को देख रही थी....

"शूरवीर क्या सुंदर नही हो सकते राजकुमारी? जाने कितनी ही बालायें इसके पिछे अपना दिल लिए घूमती हैं.. पर ये किसी को घास ही नही डालता...." रंभा ने अपने सीने पर हाथ रख कर आँखें बंद कर ली....

"अच्छा! क्या नाम है इसका?" दुर्गावती ने मुस्कुराते हुए पूछा था....

"चंद्रभान!" रंभा ने बताया....

"हम्मम.. चंद्रभान! बुलाना ज़रा इसको...!" राजकुमारी ने आज्ञा दी....

"जी, राजकुमारी जी!" सखियों में से एक ने कहा और चंद्रभान की और चल पड़ी.....

"क्या कर रहे हैं सेनापति चंद्रभान?" सखी ने जाकर प्यार से पहले दो बात करने की सोची...

चंद्रभान ने नज़रें तिरछी करके उसको देखा और वापस अपनी तलवार की धार तेज करने में जुट गया.. कुछ बोला नही...

"सुनता नही है क्या आपको?" सखी ने तड़प कर पूछा....

"दिखता नही है क्या?" चंद्रभान ने तलवार उठाकर उसको दिखाई और वापस काम में जुट गया....

"आपको राजकुमारी दुर्गावती बुला रही हैं..." सखी ने आहत सा होकर कहा....

"क्यू?" चंद्रभान उसकी बातों पर कुछ खास ध्यान नही दे रहा था....

"तुम पर दिल आ गया है उनका.. हे हे.. मज़ाक कर रही हूँ.. मेरी शिकायत मत कर देना.. पर वो सच में आपको बुला रही हैं..."

"ठीक है.. बोल दो.. मैं थोड़ी देर में आता हूँ..." चंद्रभान ने कहा और अपनी तलवार को सिलबेट पर घिसता रहा.....

"वो ये बोला? तुमने कहा नही कि हमने बुलाया है.." राजकुमारी तिलमिला उठी...

"बोला था राजकुमारी! पर महाराज की कृपा से सेनापति बनने के बाद ये और ज़्यादा ढीठ हो गया है...." सखी ने चुगली करते हुए कहा....

"तो; ये सेनापति हैं अब!" राजकुमारी ने पूछा.....

"जी! राजकुमारी जी; महाराज ने प्रतियोगिता के अगले दिन ही इनको सेनापति बनाने की घोषणा कर दी थी....."

"हम्म... मैं देखती हूँ इसको!" राजकुमारी ने चिड़कर कहा और अपनी सखियों को साथ लेकर वापस चली गयी.....

"पिता श्री!" दुर्गावती शाम को महाराज के पास थी...

"हां राजकुमारी!" महाराज ने बात सुनने के लिए बड़े प्रेम से उसकी और देखा...

"आपको नही लगता कि आपने अपने सेनापति को कुछ ज़्यादा ही सिर पे चढ़ा रखा है..." दुर्गावती ने शिकायती लहजे में कहा....

"क्यू? क्या हुआ बेटी?" महाराज बात को तवज्जो देते हुए उसकी ओर झुक से गये...

"क्या हुआ क्या? कल मैं उपवन में से कुछ आम तोड़ कर देने के लिए अपनी सखी के हाथों उसको बुला रही थी.. कहने लगा मैं थोड़ी देर में आऊंगा.. भला ये भी कोई बात हुई?" राजकुमारी के चेहरे पर हल्का सा गुस्सा और ढेर सारी नाराज़गी थी...

"हा हा हा! क्या उसको पता था कि राजकुमारी जी ने बुलाया है?" महाराज ने बात को मज़ाक में लेते हुए पूछा....

"और नही तो क्या? सखी बता रही थी कि उसने उसको स्पष्ट रूप से मेरा आदेश सुनाया था... पर आप ऐसे हंस क्यू रहे हैं? मैं मज़ाक नही कर रही.."

"हंस नही रहा बेटी.. क्या तुम्हे पता है कि उससे बढ़कर योद्धा हमारे राज्य में तो क्या; पड़ोस के बड़े बड़े राज्यों में भी नही है.. तुमने उसका कौशल तो देखा ही होगा, शाही तलवारबाजी प्रतियोगिता में!"

"तो क्या हुआ पिता श्री? उसका कौशल उसको राजमहल की अवग्या करने की इजाज़त तो नही दे सकता ना!"

"सुनो तो राजकुमारी! ये अधिकार खुद मैने ही उसको दिया है.. वास्तव में मैने प्रतियोगिता के बाद उसको मिलने के लिए बुलाया था.. मैने उससेकहा:

"तुम जैसा वीर सेना में भरती होकर देश की सेवा क्यू नही करता?"

"मेरी तलवार मेरी आराधना है महाराज! मैं इसको किसी मजबूर और बेक़ुसूर के लहू से नही रंगना चाहता..!" चंद्रभान की कही हुई बात महाराज ने दुर्गावती को बताई.....

"फिर? फिर आपने क्या कहा?" दुर्गावती ने उत्सुकता से पूछा....

"मैने कहा..," हमने कभी किसी निर्दोष का लहू नही बहाया.. पर आक्रमणकारी के आगे कभी घुटने भी नही टेके! अगर कल को कोई तुम पर आक्रमण कर दे तो तुम क्या करोगे?"

उसने तन्मयता और शालीनता से जवाब दिया...," आपकी बात का अर्थ मैं समझ सकता हूँ महाराज.. पर राज्यों के बीच युध जनता के हित में नही होते.. वो तो सिर्फ़ राजाओं की कुत्सित मानसिकता और उनकी राझवास का परिणाम होते हैं... महज उनका निजी स्वार्थ होता है.. बेचारे सैनिक तो राजा के आदेश के बोझ तले दबकर उसके स्वार्थ और लालच का झंडा उठाने को मजबूर होते हैं... पर मैं ना तो ऐसा झंडा उठा सकता हूँ.. और ना ही 'ऐसा' झंडा उठाए निर्दोष सैनिकों का कतल कर सकता हूँ...." महाराज ने राजकुमारी दुर्गावती को बताया....

राजकुमारी उस वीर के विचारों से अत्यंत प्रभावित लग रही थी..," फिर क्या हुआ पिता श्री..?"

"मेरी तो खुद ही यह नियती रही है बेटी की पूरी धरती पर संकेत और सुख चैन का वास हो...."

महाराज को दुर्गावती ने टोक दिया...," नही नही... ये बताइए कि आपने उसको क्या जवाब दिया.. और फिर उसने क्या कहा... ? पूरी बात बताइए ना!"

"हम्म..." महाराज ने कहा...," मैने कहा कि मुझे अत्यंत हर्ष है की मेरे राज्य में ऐसे आदर्श फल फूल रहे हैं.. मैने उसको कहा कि मैं देश की रक्षा की बागडोर ऐसे ही नवयुवक के हाथों में सौंपना चाहता हूँ जो युद्ध की मजबूरी और अहिंसा की ज़रूरत को भली भाँति जानता हो.. मैने उसके सामने सेनापति बनने का प्रस्ताव रखा... पहले उसने कुछ टाल मटोल की पर मेरे अनुग्रह पर अंतत: वा राज़ी हो गया... पर उसकी कुछ शर्तें थी... उन्ही में से एक ये थी कि उसको कभी कोई आदेश नही दिया जाएगा.. वह स्वेच्छा से अपने विवेक पर फ़ैसला खुद लेगा...."

दुर्गावती की आँखें सुखद आश्चर्य से फैल गयी," फिर पिताश्री... आपने मान ली उसकी ये शर्त?"

"हाआँ!" महाराज मुस्कुराते हुए बोले," वो थोड़ा विचित्र है.. पर गुलाब के तने से 'पुष्प्राज' प्राप्त करने के लिए हमें कांटें तो स्वीकार करने ही पड़ेंगे... वो हमारे राज्य का बेशक़ीमती हीरा है.. सिर्फ़ उसकी वीरता और कौशल के कारण मैं ऐसा नही कह रहा हूँ.. वा आदर्शों

का भंडार है.. मैं उससे २-४ बार ही व्यक्तिगत रूप से मिला हूँ.. पर खुद मैं भी उसका कायल हो गया हूँ...!"

"हमें चंद्रभान के घर ले चलो रंभा!" राजकुमारी दुर्गावती ने अलसुबह ही अपनी सबसे खास सहेली से कहा....

"ये क्या कह रही हैं आप राजकुमारी! आपको उनसे मिलना है तो आप उनको राजमहल में बुलवा लीजिए.. आपका यूँ जाना कदापि उचित ना होगा...!" रंभा ने स्पष्ट लहजे में उनको उनके रुतबे का अहसास कराया......

"नही! हमें खुद ही जाना है.. और अभी!" दुर्गावती ने भी उतने ही स्पष्ट शब्दों में अपना फ़ैसला सुना दिया....

"पर....... क्या राजमाता जाने की इजाज़त देंगी? मुझे तो नही लगता कि ऐसा संभव है?" रंभा ने झिझकते हुए कहा...

"तुम रैना को बुलाओ! हम उसको अपने कपड़े पहना कर अपनी जगह सुला देंगे... फिर कोई डर नही.. राजमाता तो शाम होने से पहले मेरे शयन कक्ष में आने से रहीं..!"

"पर उस पर मुसीबत आ सकती है.. आप सोच लो!" रंभा ने जवाब दिया...

"हमनें सोच लिया.. हमें जाना ही है.. तुम रैना को बुलाओ! हम उसको समझा देंगे...."

रंभा के पास भी कोई चारा नही था... उसने बाहर से रैना को बुलाया.. दुर्गावती ने उससे अपने वस्त्रों का आदान प्रदान किया और सबसे नज़र बचाते हुए रंभा के साथ राजमहल से बाहर निकल गयी.....

"ये है राजकुमारी जी; चंद्रभान का घर!" रंभा उसको चंद्रभान के घर के सामने ले गयी....

"इतना छोटा घर है हमारे सेनापति का?" दुर्गावती ने चौंक कर रंभा की तरफ देखा....

" हां.. पर बाकी सब दरबरीगन तो महलों जैसे घरों में रहते हैं.. शायद इनके लिए निर्मित हो रहा हो!" रंभा ने राजकुमारी को जवाब दिया...

"ठीक है.. अब तुम वापस जाओ! हम खुद वापस आ जाएँगी..!" दुर्गावती ने मुस्कुरकर कहा...

"पर.. राजकुमारी जी.. आपको अकेले छोड़ कर....?" रंभा डरती हुई बोली....

"हम कोई दुश्मन के घर नही जा रहे.. अपने सेनापति के पास जा रहे हैं.. तुम अपने घर में ही रहना.. जाते हुए हम तुम्हे लेते जाएँगे..." दुर्गावती ने मुस्कुरकर कहा और अंदर दाखिल हो गयी....

दुर्गावती को चंद्रभान घर के छोटे से आँगन में ही दिखाई दे गया.. वह बाहर चूल्हे पर खाना पका रहा था.. दुर्गावती को ये देख हैरत हुई.. वह दूर से ही उसको देख रही थी कि चंद्रभान की नज़र उस पर पड़ गयी. उसने तवे से रोटी उतारी और अदब से उसके पास आकर खड़ा हो गया," जी कहिए?"

चंद्रभान ने पहनावे के नाम पर सिर्फ़ धोती डाल रखी थी.. चूल्हे की आँच से पसीने की बूंदे उसके सूर्ख चेहरे से फिसलती हुई कुछ उसकी सखतजान छाती पर और कुछ ताप ताप कर नीचे गिर रही थी.. परिश्रम और ताप की अग्नि ने उसके बदन को सोने जैसा बना दिया था.. उसका संपूर्ण जिस्म इतना आकर्षक था कि एक पल को तो दुर्गावती उसमें ही खोकर सब कुछ भूल गयी.. उसके सम्मोहन को तोड़ने के लिए चंद्रभान को एक बार फिर उसको टोकना पड़ा....

"मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?"

दुर्गावती हड़बड़ा गयी," हम.. वो मैं.. आप यहाँ अकेले ही रहते हैं क्या?" दुर्गावती को आख़िर कुछ सूझ ही गया...

"नही! मेरा अकेलापन भी साथ रहता है.. आप यहाँ पधारने का औचित्या बताएँगी क्या?" चंद्रभान ने मुस्कुराकर जवाब दिया....

"आ..आप हम... मुझे जानते हैं क्या?" दुर्गावती को लगा रैना का पहनावा यहाँ काम नही आया.. चंद्रभान इतनी इज़्ज़त से बात कर रहा था कि उसको यही लगा कि चंद्रभान ने उसको पहचान लिया है.....

चंद्रभान ने कुछ देर उसके चेहरे को गौर से देखा," लगता है कि मैने आपको पहले भी देखा है.. पर ये मेरा भ्रम भी हो सकता है.. क्षमा करना.. मैं खाना बना रहा हूँ.. कुछ काम है तो जल्दी बताइए..!"

दुर्गावती कुछ नही बोली.. अपलक उसको देखती रही.. कुछ पल और वहाँ खड़ा रहने के बाद चंद्रभान वापस लौट गया.. अपने 'चूल्हे' पर...

कुछ देर बाद चंद्रभान ने वापस मुड़कर देखा.. दुर्गावती वहीं खड़ी थी.. चंद्रभान के माथे पर सिलवटें पड़ गयी,"बताएँगी भी आप कि बात क्या है?"

दुर्गावती धीरे धीरे चलती हुई चंद्रभान के पास जा पहुँची,"सुना है; आप इस राज्य के सेनापति हैं! फिर खुद ये कष्ट क्यू उठा रहे हैं? आप नौकर चाकर भी तो रख सकते हैं! ये घर बड़ा बनवा सकते हैं.. आराम से रह सकते हैं...आप!"

चंद्रभान ने चूल्हे की राख बूझकर अपनी बनाई हुई रोटियाँ उठाई और अंदर चल पड़ा.. कुछ बोला नही.. दुर्गावती भी उसके पिछे पिछे आकर दरवाजे पर खड़ी हो गयी... दरवाजा सिर्फ़ नाम का ही था.. छत के नीचे जाने का रास्ता था बस!

चंद्रभान ने ज़मीन पर चटाई बिछाई और खड़ा होकर फिर दुर्गावती की और देखा.. और औपचारिकतावश पूछ लिया,"भोजन करेंगी आप?"

"हां!" दुर्गावती ने झट से कहा और अंदर चटाई के पास जाकर खड़ी हो गयी..

चंद्रभान उसके जवाब देने के तरीके पर मुस्कुराए बिना ना रह सका.. दुर्गावती की 'हां' में कोई लाग-लपेट नही थी.. कोई झिझक नही थी.. उसने तो इस तरह 'हां' कह दिया जैसे किसी ने उसके अपने ही घर में पूछा हो.. कम से कम धन्यवाद ही कह देती...," आओ

बैठो!" चंद्रभान ने एक बार फिर मुस्कुरकर कहा और बीच में खाना रख कर एक तरफ बैठ गया...

दुर्गावती खाना खाते हुए बीच बीच में रुक कर चंद्रभान के चेहरे को देखती रही.. ना जाने कैसे! ना जाने क्यू! पर चंद्रभान उसके दिल में उतर गया था....

खाने में भी उसको एक अजीब तरह की मिठास लगी... एक अजीब से 'अपनेपन' की मिठास!

"आप भूखे रह गये होगे?" दुर्गावती खाने के बाद चंद्रभान को टुकूर टुकूर देखने लगी...

"हा हा हा..." चंद्रभान खिलखिलाकर हंसा,"ये तो आपको पहले सोचना चाहिए था.. खैर.. मैं भूखा नही रहा.. मेरी गाय भूखी ज़रूर रह गयी.. आपने उसके हिस्से का खाया है" चंद्रभान ने उंगली से घर के पिच्छवाड़े बँधी 'गौ' की और इशारा किया," कोई बात नही.. मैं और बना लूँगा... चंद्रभान हंसता हुआ ही बोला और बर्तन उठा कर बाहर चल दिया......

"आपने बताया नही.. आप ये सब खुद क्यू करते हैं?" दुर्गावती भी उसके साथ ही बाहर निकल गयी.....

"मुझे आता है..खुद करना! मुझे अच्छा लगता है.. खुद करना!.. इसीलिए " चंद्रभान ने कहा और बाहर पानी के पास बर्तन रख दिए,"पर आपने अभी तक नही बताया की आप कौन हैं और यहाँ क्यू आई हैं ....?"

"पता नही.. मैं कल फिर आ सकती हूँ क्या?" दुर्गावती ने आधे सवाल का जवाब दिया और एक सवाल पूछ लिया....

"अगर खाना खाने ही आ रही हैं तो पहले बता दीजिए.. मैं पहले से ज़्यादा तैयार करके रखूँगा..."चंद्रभान ने हंसते हुए कहा....

"हाँ.. खाना भी खाएँगे!" दुर्गावती ने मुस्कुरकर कहा और बाहर निकल गयी....

"राजकुमारी कहाँ हैं?" राजमाता ने दुर्गावती के कक्ष में आते ही द्वार पर खड़ी दासी से सवाल किया....

"व्व...महारानी... वो..." दासी के चेहरे पर भय की लकीरें उत्तपन्न हो गयी.....

"कहाँ हैं राजकुमारी?" दासी के हाव भाव देख कर राजमाता की भृकुटियाँ तन गयी...

"वो .. हमने राजकुमारी को रोकने की कोशिश की थी महारानी.. पर उन्होने हमारे अनुग्रह पर गौर नही किया... ववो.. रसोई घर में हैं..." दासी ने सिर झुकाए अटक अटक कर अपनी बात कही...

"रसोई घर में? वहाँ जाने का उनका क्या प्रयोजन है...?" राजमाता तेज़ी से रसोई घर की और बढ़ी...

"आप खुद ही जान लीजिए महारानी!" दासी उनके पिछे पिछे चल रही थी...

राजकुमारी दुर्गावती रसोई घर में अपनी उंगली को दूसरे हाथ की मुट्ठी में दबोचे खड़ी थी.. राजमाता को देखते ही दुर्गावती मुस्कुराने लगी,"माताश्री!"

"यहाँ क्या कर रही हो तुम? ....और ये... ये क्या कर लिया?" राजमाता ने नाराज़गी भरे लहजे में पूछा....

"ववो.. हम भोजन तैयार करना सीख रहे थे माता श्री! हल्की सी छुरि लग गयी...." दुर्गावती ने उनकी नाराज़गी को भाँप कर अपना सिर झुका लिया...

"भोजन तैयार करना?" राजमाता ने आश्चर्य से कहा," तुम्हे इसमें कब से रूचि हो गयी? और फिर तुम्हे ये सब सीखने की क्या ज़रूरत है दुर्गावती? तुम्हारे पास हमेशा सैंकड़ों नौकर चाकर रहेंगे... तुम्हारे हर आदेश को पूरा करने के लिए... छोड़ो ये सब!" महारानी ने गुस्सा होकर कहा और उसको बाहर लेकर आते हुए दासी को आवाज़ लगाई," वैद्य जी को बुलाओ; राजकुमारी का हाथ कट गया है!

"पर माता श्री! हूमें खुद काम करना अच्छा लगता है.. भगवान ने हमें भी दो हाथ दिए हैं.. काम करने को...." कहते हुए दुर्गावती के सामने चंद्रभान का चेहरा साक्षात हो उठा....

"ये भूत तुम पर कब और कैसे सवार हो गया..? हम राज्य के राजा हैं... हम शासन करते हैं.. भगवान ने हमें ये हाथ आदेश और निर्देश देने के लिए दिए हैं.. काम करने के लिए नही..." राजमाता ने गर्व से सिर उपर करके कहा...

"पर माता श्री.....?"

"बस! हम कुछ नही सुनना चाहते...! तुम्हारा कितना खून बह गया होगा.. जब तक वैद्य जी नही आ जाते.. तुम आराम करो यहीं !" राजमाता ने आदेश दिया...

"पर हमें पिता श्री ने बुलाया है; माता श्री?" राजकुमारी ने निवेदन किया...

"बाद में..!" राजमाता ने कहा और राजकुमारी के शयन कक्ष से निकल गयी....

"पिता श्री! हमारे देश का सेनापति झोपड़ी जैसे निवास में क्यू रहता है?" रात को राजकुमारी महाराज से बतिया रही थी....

महाराज उसकी तरफ देख कर मुस्कुराए," पर आपको कैसे पता; राजकुमारी?"

"ववो.. हमें हमारी सहेली ने बताया... उसका घर उनके पास ही है..." राजकुमारी ने बड़ी सफाई से झूठ बोल दिया....

"हम्म्मम..." महाराज ने बोलने से पहले एक लंबी साँस ली...," हुमने आपको बताया ही था.. सेनापति के पद को स्वीकारने से पहले उसने हमारे सामने कुछ शर्तें रखी थी.. उसका अपने पुराने निवास पर ही रहना और कोई राजकीय लाभ ना लेना ही वो शर्तें थी बेटी! हमें भी ये सब कुछ अजीब लगा था.. पर दिल से कहूँ तो हम उसके इस महान चरित्र को नमन करते हैं.. ऐसे सतपुरुष अब दुर्लभ हैं बेटी... खैर.. हमने तुम्हे किसी खास प्रायोजन से यहाँ बुलाया है..."

"बोलिए, पिता श्री!" राजकुमारी ने विनम्रता पूर्वक कहा....

" पड़ोस के हमारे मित्र राजा की ओर से अपने पुत्र अभिषेक के साथ आपके विवाह का प्रस्ताव आया है.. मैं इस बारे में आपकी राइ जानना चाहता हूँ..." महाराज ने बड़े संतुलित मंन से उसके सामने बात रखी....

सुनकर राजकुमारी एकदम विचलित हो गयी, कल की घटना ने उसकी सोच और सपनो को पूरी तरह बदल दिया था," आप.. स्वयंवर क्यू नही करवा लेते पिताश्री?.. जैसे तलवारबाजी!"

महाराज दुर्गावती की बात सुनकर हँसने लगे," हमने खुद पहले ऐसा ही सोचा था राजकुमारी.. पर उस दिन जिस तरह राजकुमार के हार जाने के बाद अपमानित महसूस करके, चंद्रभान ने खुले आम सबको चुनौती दी.. और चुनौती ही क्या दी? एक एक करके उसने जिस तरह सारे दंभी राजकुमारों की नाक काटी.. उससे हमें शक है कि शायद ही कोई योग्य उम्मीदवार स्वयंवर में आएगा...

दूसरे, परंपरा के अनुसार स्वयंवर को हम सिर्फ़ राजकुमारों तक सीमित नही रख सकते.. हर क्षत्रिय को उसमें भाग लेने का अधिकार होगा.. और चंद्रभान भी एक क्षत्रीय ही है.. मुझे नही लगता कि कोई उसके सामने अस्त्र, शस्त्रा या मल्ल में टिक पाएगा.. वो एक सच्चा योगी है बेटी.. उससे पार पाना मुश्किल है.. पर हां.. हम उससे बात करके स्वयंवर में भाग ना लेने के लिए मना सकते हैं.. अगर ऐसा संभव हो गया तो मैं इसपर विचार कर सकता हूँ..." महाराज ने अपने मन की बात उसके सामने रख दी....

"हमें अभी विवाह नही करना पिताश्री!" अपने गुस्से और निराशा को राजकुमारी सिर्फ़ यही कहकर निकल पाई...

# ३८

चंद्रभान चटाई पर अपने सामने भोजन लगाकर बैठ गया... कुछ देर नज़रें झुकाए मंन ही मंन चंद्रभान मुस्कुराता रहा और फिर बाहर द्वार की और देखने लगा... शायद उसको किसी की प्रतीक्षा थी.. शायद राजकुमारी की!

हालाँकि राजकुमारी का आना निस्चित नही था.. और ना ही वह आज फिर आने का वादा ही करके गयी थी.. पर फिर भी जाने क्यू; चंद्रभान की आँखें उसके आने की राह देख रही थी...

चंद्रभान के निवास पर राजकुमारी पिछले १५ दिन में अब तक पाँच बार आ चुकी थी.... राजकुमारी राजमहल से बाहर निकलने के लिए मिले किसी मौके को गँवाती नही थी... और सीधे अपने दिल में बस चुके चंद्रभान के पास पहुँच जाती थी.

चंद्रभान को अब उसका आगमन अप्रत्याशित नही लगता था. नित्य प्रति अब वह सुबह तीन लोगों के लिए भोजन तैयार करता था.. राजकुमारी आए या नही!

चंद्रभान को अहसास था कि 'वो' अंजान यौवना उसके आकर्षण में ही बँधी उसके निवास तक पहुँच जाती है.. पर उसकी मनमोहक छवि और बेबाक स्वाभाव चंद्रभान को भी भा गया था. सच तो ये था की चंद्रभान खुद को भी उसके मोहज़ाल में जकड़ा हुआ सा महसूस करने लगा था....

राजकुमारी के स्वर्ग की अप्सराओं के समान सुंदर गौरांग, उनकी कजरारी म्रिग्नयनि आँखें, सागर में ज्वर के समान उफानता हुआ उनका अल्हड़ यौवन, उनके मस्तक पर विराजमान यशस्वी तेज; और इस अद्बितीया वैभव की स्वामिनी होने के बावजूद उसके चेहरे की मृदुल (कोमल) मुस्कान और सीधा सच्चा स्वाभाव; उनकी हर बात से झलकता उसका भोलापन बरबस ही चंद्रभान को अपनी और खींचता हुआ ला रहा था...

हालाँकि अभी भी चंद्रभान उसको राजकुमारी के रूप में नही, एक अल्हड़ नाव यौवाना के रूप में ही जानता था; जो ना जाने कहाँ से उसके जीवन में आ गयी थी. चंद्रभान ने कभी जानने की कोशिश भी नही की.. एक दो बार चंद्रभान ने पूछा भी; पर दुर्गावती ने हंसकर टाल दिया..

जो भी था, पर कहने की ज़रूरत नही कि चंद्रभान को भी अब अकेलापन अखरने लगा था. उसको भी अब हमसफर की ज़रूरत महसूस होने लगी थी.. और हमसफ़र के रूप में दुर्गावती की!

"एक बात कहने का मंन है... कह दूँ?" अपनी अगली मुलाक़ात में दुर्गावती ने चंद्रभान से कुछ कहने की अनुमति माँगी... वो चंद्रभान से प्राप्त दूरी बनाए बैठी थी...

"बोलिए!"

"इस एकांत में कैसे रह लेते हैं आप?... आप अपने लिए कोई सुंदर सी कन्या देख कर विवाह क्यू नही कर लेते?" झिझकते हुए राजकुमारी ने अपने दिल में रह रह कर उठ रहे उफान को चंद्रभान के सामने प्रकट कर ही दिया...

चंद्रभान ने मुस्कुरकर अपनी ही और देख रही उसकी कामिनी आँखों में झाँका और फिर हँसने लगा," कौन करेगी मुझसे विवाह? कौन मुझ जैसे फक्कड़ (ग़रीब) के साथ रहकर अपने जीवन को रसातल में धकेलना चाहेगी? मैं ऐसे ही ठीक हूँ.. "

दुर्गावती अधीर सी होकर बोली... ,"क्यू? क्या नही है आपके पास? शायद ये आपका हठ (ज़िद) ही होगा कि आप ये 'जीवन' बिता रहे हैं.. वरना तो आपकी आँखों के इशारे से ही आपके लिए जीवन-न्योछावर करने वाली एक से एक सुंदरी आपके कदमों में रहकर जीवन भर आपकी सेवा को तत्पर नज़र आयेंगी.

आप इस राज्य के सेनापति हैं.. आप चाहें तो एक पल में आप अपना जीवन वैभवपूर्ण बना सकते हैं. आपके 'हां' कहते ही इस कुटिया (शेड) को छोड़ कर महलों के अधिकारी हो सकते हैं. सैंकड़ों नौकर चाकर आपके इशारा करते ही आपकी सेवा में उपस्थित हो सकते हैं... सिर्फ़ आपके इशारा करने की देर है..."

"हां.. एक दम सही कह रही हैं आप.. राज्य के सेनापति से विवाह की इच्च्छुक कौन नही होगी..? महलों में जीवन बिताने के लिए कौन तत्पर नही होगी? पर मुझे लगा आपने सेनापति से नही 'चंद्रभान' से सवाल किया है.. मैं हमेशा सेनापति नही था.. और ना ही हमेशा रह सकता हूँ. मेरे साथ सिर्फ़ मेरा नाम जुड़ा हुआ है.. और वो हमेशा मेरे साथ

रहेगा.. शायद मरने के बाद भी..!मेरा हक़ सिर्फ़ मेरी 'देह' (शरीर) पर है" चंद्रभान ने कोहनी मोड़ कर अंगूठा अपनी ठोस छाती में गाड़ते हुए कहा

चंद्रभान लगातार बोल रहा था," मैं जिंदगी भर के लिए अपनी होने वाली अर्धांगिनी को महलों में रखने का वादा नही कर सकता. और जो वादा में निभा ना सकूँ, उसका दावा भी कभी मैं करता नही... हां; अपने दिल में रखने का वादा कर सकता हूँ.. अपनी पलकों पर बैठा कर... इसीलिए सिर्फ़ मैं अपने बारे में ही बात करता हूँ.. क्षण भन्गूर ( पल भर में नष्ट हो सकने वेल) वैभव (शनो- शौकत) से अलंकृत (सज्जित) होकर मैं किसी को अपना लूँ; उसका क्या लाभ?"

दुर्गावती सम्मोहित सी होकर चंद्रभान की बातें सुन रही थी.. जो अब भी जारी थी," इसीलिए मैने अपने बारे में बात की थी दुर्गावती; मेरे औहदों या मेरी क्षमताओं के बारे में नही.. महलों में जीवन यापन करने का सपना लिए इस राज्य के सेनापति से तो विवाह की इच्च्छुक हज़ारों लड़कियाँ हो सकती हैं.. पर इस फक्कड़ 'चंद्रभान' से शादी करने को कौन अभागिन तैयार होगी?" चंद्रभान अपनी बात पूरी करके उसकी तरफ देखकर चिरपरिचित अंदाज में मुस्कुराने लगा....

राजकुमारी चंद्रभान की बात पूरी होने पर व्याकुल सी होकर खड़ी हुई और उसकी तरफ २ कदम बढ़कर खड़ी हो गयी.. उसकी आँखों में सच्चे प्रेम का अतः सागर हिलौरे ले रहा था.., "मैं....! मैं विवाह करना चाहती हूँ इस चंद्रभान से! मुझे महलों से प्यार नही.. मैं सिर्फ़ आपके व्यक्तिताव से प्यार करती हूँ.. मेरा सौभाग्य होगा अगर मुझे पुरुषश्रेष्ठ के चरणों में जीवन यापन का सौभाग्य प्राप्त हो..." अपनी बात कहकर दुर्गावती चंद्रभान को जनम जनम की सी प्यासी आँखों से निहारने लगी....

चंद्रभान कुछ पल को तो जैसे स्वयं को ही भूल गया.. अपलक दुर्गावती के शोख चेहरे को देखता हुआ कुछ देर बाद बोला," वस्तुत: यह मेरा ही सौभाग्य होगा अगर आप जैसी सर्वगुण संपन्न नारी मुझे पति रूप में स्वीकार करे.... पहले दिन के बाद से ही आप मेरे दिल में निवास करती हैं... मैं प्रयत्न करके भी आपके जाने के बाद अपने आपको आपके साथ बिताए पलों के बारे में विचारने से रोक नही पाता हूँ.... "

चंद्रभान ने आगे कहा," किंतु सत्य कहूँ तो मैं अब तक भी आपके विषय में जान लेने को बेकरार हूँ.. आपने अभी तक भी नही बताया है कि आप कौन हैं? मुझे हमेशा प्रतीत होता है कि मैने आपको पहले भी कहीं देखा है.. पर कहाँ देखा है.. ये स्मरण (याद) नही है..."

राजकुमारी ने मानो चंद्रभान की बातें ही आगे बढ़ाई हों...

"क्या आपके द्वारा विस्तार से कही गयी बातें मुझ पर लागू नही होती? मैं भी तो वही सब कह सकती हूँ.. मैं जो भी हूँ, आपके सामने हूँ.. मेरे बारे में और ज़्यादा जानने को व्याकुल होकर तो आप अपनी ही बातों का खंडन कर रहे हैं.... मेरे पास सिर्फ़ एक दिल है.. आपको देने के लिए.. इसको आप स्वीकार करें या ना करें.. पर ये अब सदेइव आपका ही रहेगा.... मेरी प्रकृति और स्वाभाव के बारे में आप और जानना चाहें तो मैं इंतजार कर सकती हूँ.. पर जब भी आप मुझसे सवाल करेंगे.. मेरा जवाब हमेशा यही होगा.. मैं 'चंद्रभान' से प्यार करती हूँ!.. अब ये आप पर है.. आप अपनी दीवानी हो चुकी इस 'नाचीज़' को स्वीकारते हैं या नही..."

चंद्रभान प्रेम विभोर में खड़ा होकर छलक सा उठा.. आँखों में आँसू होने पर भी उसके होंटो पर एक अद्भुत सी मुस्कान थी... कुछ देर दुर्गावती को अपलक निहारने के बाद उसने अपनी बाहें फैला दी.. राजकुमारी की ओर...

अपने आगोश में समेट लेने के लिए उठी चंद्रभान की भुजाओं को अपनी और बढ़ी देख कर दुर्गावती भी खुशी से पागल सी हो गयी.. एक पल के लिए उसने अचरज और लज्जा के मारे अपने चेहरे को अपने ही हाथों से ढक लिया.. फिर चेहरे को ढके हुए हाथों की अंगुलियों को हल्का सा खोल कर उनके बीच से झरोखा बनाया और अपने 'अनुपम' चंद्रभान के चेहरे को निहारने लगी...

चंद्रभान अब भी मुस्कुराता हुआ उसके इंतज़ार में बाहें फैलाए खड़ा था... दुर्गावती ने अपने हाथ हटाए और लज्जा के बोझ से पलकों को झुका लिया.. कुछ देर विचार्मग्न होकर जाने क्या क्या सोचती रही फिर अचानक एक ही झटके में चार कदम की मीलों लंबी लग रही अपने और चंद्रभान के बीच की दूरी को नाप दिया... दुर्गावती चंद्रभान के जिस्म से किसी नाज़ुक बेल की भाँति काफ़ी देर तक चिपकी हुई खड़ी रही....

अपने बहुपाश में दुर्गावती को समेटे खड़े चंद्रभान ने पूछा...," नाम तो पूछ ही सकता हूँ ना.....! या वो भी स्वयं मुझे ही देना पड़ेगा!"

चंद्रभान के आगोश में सिमटी खड़ी दुर्गावती को अचानक दुनिया बहुत बड़ी और बुरी लगने लगी.. उसको लगा जैसे अगर अब वा चंद्रभान से अलग हुई तो वापस उसकी बाहों में नही

लौट पाएगी," मैं आपको सब कुछ बताने को तैयार हूँ चंद्रभान.. पर वादा करो, चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ उत्पन्न हों.. आप मेरा हाथ कभी नही छोड़ोगे... मुझे अभी स्वीकार कर लो! मुझे अभी अपना बना लो!"

चंद्रभान ने अपनी भुजाओं की पकड़ दुर्गावती की कमर पर हल्की सी सख़्त कर दी.. च्छुईमुई की तरह इस अहसास से कसमसा उठी दुर्गावती अपने चंद्रभान में ही सिमट गयी," वादा रहा!" चंद्रभान ने कहा....

"तो मैं भी वादा करती हून चंद्रभान!.. हमारी अगली मुलाक़ात में आप को मेरे बारे में सब कुछ पता चल जाएगा!"

दुर्गावती उस दिन चंद्रभान के घर से निकली तो वो राजकुमारी नही रही थी.. रानी बन चुकी थी.. अपने हो चुके चंद्रभान के सपनों की रानी! पहले प्यार के स्वर्णिम और स्वप्निल अहसास के बाद वा स्वयं को सातवें आसमान से भी उपर महसूस कर रही थी... उसके खिले खिले चेहरे की रंगत और मुस्कान आज देखते ही बन रही थी...

रंभा ने जब उसको देखा तो आश्चर्य से पूछा...," आज क्या मिल गया राजकुमारी जी?"

"सब कुछ मिल गया! ..... चलो जल्दी....!" दुर्गावती के कदम ज़मीन पर नही पड़ रहे थे.........

" महाराज!..... मैं, महिपाल, महाराज देवद्रत के द्वारा आपके लिए भेजे हुए इस अतिविशिष्ट संदेश को आप सबके सम्मुख उच्चारित करने के लिए आपके द्वारा आज्ञा दिए जाने का पात्र हूँ....!"

पड़ोसी राज्य से आए दूत ने महाराज से संदेश पढ़ने की अनुमति माँगी... राजकुमारी दुर्गावती के अलावा महारानी भी उनके साथ ही उपस्थित थी!

संदेश पढ़ने की आज्ञा देने से पहले ही महाराज के माथे पर चिंता की हल्की हल्की लकीरें दिखाई देने लगी," कहो दूत! क्या संदेश भेजा है हमारे मित्र देवद्रत ने!"

"महाराज, उन्होने संदेश भेजा है कि..," बोलते हुए दूत ने संदेश पत्रिका को खोल लिया और उसमें से पढ़ कर बोलने लगा

" आपने हमारे सुपुत्रा राजकुमार अरुणसेन के ; आपकी सुपुत्री ; सुकुमारी दुर्गावती के साथ ; विवाह-संबंध जोड़ने के हमारे मित्रवत प्रस्ताव को ठुकराकर; और ; राजकुमारी दुर्गावती के विवाह हेतु स्वयंवर की शर्त पर आड़े रखकर; दोनो राज्यों के बीच वर्षों से चली आ रही मैत्री का ; एक पल में ही ; बड़ी क्रूरता से गला घोंटने जैसा काम किया है.

हम चाहते हैं कि आप इस संबंध में तुरंत विचार करके हमारे दूत के हाथों ही आपका अंतिम फ़ैसला ; शीघ्र अतिशीघ्र हम तक पहुँचा दें. अन्यथा, आज के बाद से आपके राज्य पर हमला करके ; आपके राज्य और सुकुमारी राजकुमारी को बलपूर्वक हथिया लेने के हमारे सभी विकल्प सुरक्षित रहेंगे!"

संदेश पढ़ने के बाद दूत ने संदेशपत्रिका को बंद किया और आदर सहित झुक कर खड़ा हो गया...

महाराज के साथ ही राजकुमारी दुर्गावती और साथ बैठी महारानी भी तिलमिला उठी.. महारानी के चेहरे पर गुस्से के साथ साथ भय भी अलग ही पढ़ा जा सकता था.. दोनो महाराज के जवाब का इंतजार करती हुई उनकी और देखने लगी.....

कुछ देर चुप रहने के बाद महाराज ने बोलना शुरू किया," दूत! जाकर उनसे कह देना कि मित्रता का खून हमने नही, ऐसा नापाक संदेश भेज कर उन्होने किया है.. क्षत्रीय धर्म में स्वयंवर कोई नयी परंपरा नही रही है.. फिर भी हमने दोस्ती की खातिर राजकुमारी से उनकी राइ ली. राजकुमारी के स्पष्ट मना करने के पश्चात हमारे पास सिवाय इस प्रस्ताव को ठुकराने के कोई और रास्ता नही बचा है..

हम राजकुमारी की इच्छा के अनुसार स्वयंवर आयोजित करवाने को बाध्य हैं.. और अब तो सिर्फ़ स्वयंवर ही होगा. अगर उनकी भुजाओं में सच्चे क्षत्रिय का खून है तो कुमार अरुणसेन स्वयंवर में आयें, और अपना दम दिखायें!

उनको कहना कि हमारे देश के सैनिकों में ही नही; बच्चे बच्चे में 'चंद्रभान' बनने का जुनून सिर चढ़ कर बोल रहा है; जो अब हमारी सेना का नेतृतव करता है.. उनके द्वारा की गयी

हम'ले जैसी कोई भी जुर्रत ना-काबिल-ए-बर्दस्त होगी. "

महाराज की बात सुनकर दूत ने अदब से सिर झुकाया और निकल गया....

"महाराज! आप मान क्यू नही लेते.. हमारा उनके साथ क्या मुक़ाबला हो सकता है.. !सेना और संसाधनों में वो हमसे मीलों आगे हैं.. अगर उन्होने हमला कर दिया तो हम क्या करेंगे?" महारानी सहमी हुई थी...

"महारानी! क्षत्रिय कभी दुश्मन को कमजोर या ताकतवर आँकने के बाद मुक़ाबले का मंन नही बनाते! यहाँ जंग आन, बान और शान के लिए लड़ी जाती है.. उसमें अगर अपना सिर भी कलम हो जाए.. तो भी परवाह नही!" महाराज एक एक शब्द को गुस्से में चबा चबा कर बोल रहे थे...," उनके संदेश की भाषा से साफ है कि उन्होने राजकुमारी का हाथ नही, हमारी इज़्ज़त माँगी है... अब चाहे कुछ हो जाए.. राजकुमारी का स्वयंवर होकर रहेगा.....!"

महाराज मारे गुस्से के काँप से रहे थे.... महारानी उठकर चली गयी..

पर दुर्गावती अब भी वहीं बैठी थी... उसको अब एक और चिंता सता रही थी.. ...कहीं महाराज ने चंद्रभान को उससे वादा करने से पहले ही स्वयंवर में भाग ना लेने का वादा तो नही ले लिया!...राजकुमारी को तो पता भी नही था कि कब महाराज ने स्वयंवर का फ़ैसला ले लिया......," पिता श्री! आपने हमारे स्वयंवर का फ़ैसला कब ले लिया?"

"अभी हमने फ़ैसला नही लिया था राजकुमारी.. सिर्फ़ उस कम्बख़्त का प्रस्ताव ठुकराते हुए तुम्हारी राइ से सहमत होने की सूचना ही दी थी.. पर अब तो हर हाल में स्वयंवर होगा... वो भी जल्द से जल्द! हम कल ही सब राज्यों में सूचना प्रेषित करवा देते हैं.." महाराज बेटी का चेहरा देख कर कुछ शांत हुए....

"पर... क्या आपने.... चंद्रभान से बात कर ली है.. इस बारे में..?" दुर्गावती ने संकुचित सी होते हुए बात कही......

महाराज निसचिंत से होकर बोले..,"चंद्रभान की चिंता करने की ज़रूरत नही है राजकुमारी... उसको तो बस कहने भर की देर है.. हमें विश्वास है कि वो हमारे आग्रह को कभी नही टालेगा!"

"पर तब भी...." दुर्गावती को सुनकर गहरा संतोष हुआ," पिता श्री! हम चाहते हैं की आप एक बार उनसे बात कर लें.. जल्द से जल्द! और हम चाहेंगे कि उस वक़्त हम भी वहीं उपस्थित रहें...."

"जैसी तुम्हारी इच्छा राजकुमारी! हम कल ही उसको अपने पास बुलवा लेते हैं.. आप भी हमारे साथ रहना! हमें यकीन है की कल आप चंद्रभान के एक और रूप के बारे में जान जाएँगी!" महाराज के चेहरे पर चंद्रभान को याद करने मात्र से ही रौनक़ आ गयी....

# ३९

चंद्रभान ने दनदनाते हुए सेनापति की वेशभूषा में राजमहल में प्रवेश किया.. मुख्य द्वार पर खड़े दोनो द्वारपालों ने अदब से अपना सिर झुका लिया...

"महाराज कहाँ हैं?" चंद्रभान ने अंदर पहुँच कर वहाँ खड़े एक और संतरी से पूछा...

"महाराज अपने विश्राम गृह में आपकी की राह देख रहे हैं सेनापति जी!" संतरी ने अदब से उत्तर दिया," मुझसे कहा गया है कि मैं आपको वहाँ तक छोड़ दूँ! ... आइए!"

संतरी ने कहा और विश्राम गृह की और बढ़ने लगा.. चंद्रभान ने उसका अनुसरण किया...

"महाराज! आपकी आज्ञा के अनुसार मैं सेनापति जी को यहाँ तक ले आया हूँ.. अब आपसे उनको अंदर भेजने की आज्ञा चाहता हूँ..." संतरी ने चंद्रभान से पहले विश्राम गृह के अंदर जाकर महाराज से अनुमति माँगी...

राजकुमारी दुर्गावती उनके साथ ही बैठी थी.. वो अपने चंद्रभान को सेनापति के वस्त्रों में देखने को लालायित थी.. पर आने वाले पलों के बारे में विचार कर उनका दिल जोरों से धड़कने लगा था...

"हम्म.." महाराज ने प्रसन्नचित भाव से कहा," उन्हे आदर सहित अंदर भेज दो!"

"जो आज्ञा महाराज!" संतरी ने कहा और अपना सिर झुका कर पलटा और बाहर निकल गया....

सेनापति चंद्रभान ने विश्राम गृह में प्रवेश करते ही पहले महाराज को तथा फिर राजकुमारी को प्रणाम किया.. किंतु हैरत की बात थी कि उनके चेहरे पर आश्चर्य का कोई भाव उत्तपन्न नही हुआ था.. माथे पर एक शिकन तक नही आई.. शायद उन्होने राजकुमारी के चेहरे पर गौर नही किया था...

उधर राजकुमारी दुर्गावती चंद्रभान को इस रूप में देख कर मंत्र मुग्ध सी हो गयी.. चंद्रभान के सुंदर, सुडौल और गठीले बदन पर स्वर्ण वस्त्रों की आभा देखते ही बन रही थी.. रूप, गुण और अलौकिक तेज के प्रभाव से उसकी छवि किसी देश के राजा से किसी भी सूरत में कमतर नही थी. उसके चेहरे की चमक प्रखर सुर्य के तेज के समान ही प्रतीत हो रही थी... उसकी छवि को चार चाँद लगाने वाली उसकी भावभीनी मंद मुस्कान अब भी उसके साथ थी....

"अपना स्थान ग्रहन करें सेनापति जी!" महाराज ने चंद्रभान को आदर सहित उनके सामने बैठने का आग्रह किया....

"जो आज्ञा महाराज!!" चंद्रभान ने समुचित आदर से अपना सिर झुकाया और महाराज के सामने सिंहासन पर विराजमान हो गया," महाराज, अचानक मुझे यहाँ आमंत्रित करने का कोई विशेष कारण?" चंद्रभान ने महाराज से नज़रें मिलाते हुए पूछा....

"जी, सेनापति जी! कारण अतिविशिष्ट है.. इसीलिए हमने आपको अचानक याद किया!" महाराज ने उत्तर दिया...

"कहिए महाराज!" चंद्रभान ने राजकुमारी की ओर अब तक भी गौर नही किया था...

"दरअसल हम राजकुमारी दुर्गावती के विवाह हेतु शीघ्रता से एक स्वयंवर आयोजित करने का मंन बना रहे हैं....!" महाराज ने बात की भूमिका बाँधी..

"तो इसमें अड़चन क्या है महाराज? आप जब चाहें, स्वयंवर की तैयारी शुरू करवा सकते हैं.. इस पवित्र कार्य में अगर मैं किसी प्रकार की सहायता कर सकूँ; यह मेरा सौभाग्य होगा!" चंद्रभान ने सहजता से कहा...

"हम्म.. हम आपके उच्च आदर्शों एवं प्रखर व्यक्तिताव के कायल हैं सेनापति जी! आप निश्चित रूप से हमारे राज्य का एक अनमोल रत्न हैं.. आपको सेनापति के रूप में पाकर राज्य गौरवान्वित ही नही; अपितु कृतज्ञ भी है. "

"परंतु...." महाराज ने अपने वचन को किंचित विराम देते हुए आगे कहा," तलवारबाज़ी प्रतियोगिता में आपने जिस प्रकार से एक एक करके सभी राजकुमारों का मान मर्दन किया; वो आज तक भी आपके बल कौशल को याद करके सिहर उठते होंगे.. हमें आशंका है कि स्वयंवर में वो राजकुमार भाग लेने से पहले ही आपकी उपस्थिति को भाँप कर मैदान ना छोड़ दें.." महाराज ने बात पूरी करके एक लंबी साँस ली....

"मैं.. समझा नही महाराज! स्वयंवर में मेरी उपस्थिति किस प्रकार से उनके भाग लेने में बाधक हो सकती है?" चंद्रभान ने कहा और फिर स्वयं ही अपने प्रशन का उत्तर देने की कोशिश की," ओह्ह.. कहीं आप ये सोचकर तो परेशान नही हैं कि मैं स्वयंवर....."

महाराज ने चंद्रभान की बात पूरी होने से पहले ही बोलना शुरू कर दिया," हा...हा! आप सही समझ रहे हैं सेनापति जी! हमारी दुविधा का मूल कारण यही है.. हम चाहते हैं की आप स्वयंवर से पहले ही सार्वजनिक उद्-घोषणा कर दें कि आप स्वयंवर में भाग नही ले रहे हैं...!"

चंद्रभान के होंटो पर मुस्कान को और लंबी होते देख राजकुमारी दुर्गावती की हृदय गति बढ़ गयी.. अब तक उनको भी विश्वास हो चुका था कि चंद्रभान ने अभी उन्हे राजकुमारी के रूप में पहचाना नही है... उनको आशंका थी कि कहीं चंद्रभान बिना उनको पहचाने ही महाराज को स्वयंवर से अलग होने का वादा ना कर दें.. चिंतित राजकुमारी महाराज की अनुमति लिए बगैर वार्ता में हस्तक्षेप ना करने का नियम भूल कर सीधी वार्ता में कूद पड़ी," हमने सुना है कि आप अपना वादा हर परिस्थिति में निभाते हैं.....चंद्रभान!"

जानी पहचानी सी आवाज़ और राजकुमारी के मुख से इस तरह अपना नाम सुनकर चंद्रभान की नज़रें क्षण भर के लिए राजकुमारी से जा टकराई.. राजकुमारी को अपनी साँसों पर काबू पाना मुश्किल हो रहा था.. चंद्रभान पर तो मानो अचानक वज्रपात सा हो गया.. उसकी हालत तो देखते ही बनती थी.. अपने चेहरे पर घोर आश्चर्य के भाव लिए चंद्रभान उसी क्षण सिंहासन से उठ खड़ा हुआ. सब कुछ भूल कर वो एकटक आँखें चौड़ी किए राजकुमारी को देखता ही रह गया....

"ये अचानक आपको क्या हुआ सेनापति? सब कुशल तो है? आप यूँ अचानक खड़े क्यू हो गये? अपना स्थान गृहन करें!" चंद्रभान की हालत देख महाराज के मंन में उथल पुथल सी मच गयी....

" क्षमा करना महाराज! पर मुझे अपना वादा निभाने के लिए स्वयंवर में भाग लेना ही होगा!" चंद्रभान ने सिर झुका कर कहा..

राजकुमारी को क्षणिक शांति का रसास्वादन करने का मौका मिल गया... पर ये शांति की अनुभूति क्षणिक ही थी.....

"ये आप क्या कह रहे हैं सेनापति!" महाराज का कंठ अगले ही पल तनिक अवरुद्ध सा हो गया.. विचलित होकर उन्होने अपनी बात आगे बढ़ाई....," मैं आपका तात्पर्य समझा नही... कौनसा वादा?"

"क्षमा करें महाराज! पर मैने कदापि स्वपन में भी नही सोचा था कि जिनको मैं अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार कर चुका हूँ; और इस जनम में हर परिस्थिति में उनको उनका हाथ थामे रहने का वादा कर रहा हूँ.... वो... इस राज्य की राजकुमारी दुर्गावती हैं!" चंद्रभान के शब्दों में हल्की सी आत्मग्लानि स्पष्ट झलक रही थी.. फिर भी उसका कहा गया एक एक शब्द पत्थर की लकीर लग रहा था....

अब बारी महाराज के सिंहासन छोड़ कर खड़े होने की थी.. चंद्रभान की बात सुनकर जितना और जो उनकी समझ में आया, वो ही उन्हे उनकी रूह तक हिला गया," ये क्या मज़ाक है सेनापति! हम ऐसा कोई नीच प्रयोजन बर्दास्त नही करेंगे! "

चंद्रभान के चेहरे के भाव अडिग थे," ये सब अंजाने में हुआ है महाराज! पर हो चुका है... मैं राजकुमारी से और राजकुमारी मुझसे प्रेम करती हैं!"

"हां.. पिता श्री! हम चंद्रभान के बिना नही रह सकते! चंद्रभान ही हमारे सपनों के राजकुमार हैं.. अब वो ही हमारे आरद्ध्य हैं पिता श्री!" दुर्गावती ने तड़प कर महाराज को अपनी सहमति और चंद्रभान के प्रति अगाध प्रेम से अवगत करवाया!

"बकवास बंद करो राजकुमारी! हमारी नाक के नीचे ये सब होता रहा; और हमें भनक तक ना लगी!" महाराज दुर्गावती को दुतकार कर चंद्रभान से मुखर हुए," तुमने हमारी कृपा और अनुशंसा का अनुचित लाभ उठाया है चंद्रभान! तुमने हमारे विश्वास का कत्ल किया है.. हम अभी तुम्हे सेनापति पद से विमुक्त करने का आदेश देते हैं...!" महाराज गुस्से में आगबबूला होकर काँप रहे थे...

"जो आज्ञा महाराज!" चंद्रभान के चेहरे पर उनके आदेश से तनिक भी प्रभाव ना पड़ा... वो अपना मुकुट उतार कर आगे बढ़ा और उसको महाराज के चरणों में रख दिया," मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ महाराज! आज यहाँ आने से पहले मुझे दुर्गावती के राजकुमारी होने के बारे में किंचित भी ज्ञान नही था...."

"अगर ऐसा है तो इसे अंजाने में हुई ग़लती मान कर सब कुछ भूल जाओ! हम तुम्हारे प्रशंसक हैं.. तुम्हे माफ़ करके सेनापति पद से विमुक्त करने का अपना निर्णय वापस ले लेंगे!!" महाराज का लहज़ा कुछ नरम पड़ा.. पर राजकुमारी की साँसें रुकने को थी..

चंद्रभान के चेहरा चट्टान की तरह सख़्त था," प्रेम अंजाने मैं नही होता, महाराज! हां; अंजाने में मैने सिर्फ़ राजकुमारी से प्रेम संबंध बनाने की भूल की है... पर प्रेम हर स्थिति में शाश्वत है.. जैसे नभ में सूर्य से पृथ्वी का प्रकाशित रहना! मैने इनको अर्धांगिनी के रूप में स्वेच्छा से स्वीकार किया है.. और.. इनको जीवन भर साथ रखने का वादा किया है.. मैं अपने वादे पर अडिग हूँ.. जब तक ये चाहेंगी.. मेरी ही रहेंगी.. पर हां! अगर स्वयंवर इनकी इच्छा से हो रहा है तो होने दीजिए! मैं स्वयंवर के मध्यम से इनका दिल पन: जीतने की यथासंभव कोशिश करूँगा..!"

"चंद्रभानववववववववव!" महाराज की गर्जना सुन बाहर खड़े द्वारपाल अचानक अंदर की और लपके.. चौकन्ने चंद्रभान का हाथ तुरंत अपनी तलवार की मूठ पर कस गया... दुर्गावती पागल सी होकर चंद्रभान से आलिंगंबद्ध होने को उसकी और लपकी.. पर महाराज ने सख्ती से उसका हाथ पकड़ लिया.. और द्वारपालों को हाथ से इशारा करके बाहर जाने का आदेश दिया....

"पिता श्री! चंद्रभान हमारी जान हैं.. राजकुमारी होने का गौरव और ये राजमहल, ये वैभव; सब चंद्रभान के चरणों की धूल के सामने तुच्छ हैं... हम उनके बिना जिंदा नही रह सकते.. हमें अपनी जान के पास जाने दीजिए, पिता श्री!" बोलते हुए राजकुमारी का पूरा बदन बेचैनी और विवशता से काँप रहा था.. वो भरपूर कोशिश कर रही थी, अपने आपको छुड़ाने की.. पर सफल ना हुई....

महाराज इससे पहले कुछ बोलते, एक दूत ने द्रुत गति से विश्राम गृह में प्रवेश किया," महाराज! अनहोनी हो गयी..." दूत अंदर आते ही बिना सलाम किए हड़बड़ाहट में बोला....

महाराज के तेवर कुछ और गड़बड़ा गये..," आज का दिन अपने आप में ही एक अनहोनी है.. कहो! क्या बात है..?" महाराज अभी तक दुर्गावती का हाथ पकड़े खड़े थे....

दूत ने तुरंत कहना शुरू कर दिया," महाराज; देवव्रत ने आमेर के राजा के साथ मिलकर हम पर हमला करने को सेनायें भेज दी हैं.. हमारे पूर्व सेनापति भी उनसे जा मिले हैं.. उन्होने संदेश भेजा है कि अब भी अगर आप प्रलय से बचना चाहते हैं तो राजकुमारी दुर्गावती को उनके सुपुर्द कर दें......राज्य पर गंभीर संकट आ गया है महाराज!"

"क्या?" महाराज का शरीर खबर सुनकर ही शिथिल हो गया.. उनके हाथ की पकड़ दुर्गावती के हाथ से तुरंत ढीली हो गयी.. उनके मुख से एक शब्द भी ना निकला...

दुर्गावती ने तो जैसे कुछ सुना ही नही.. जैसे ही वो महाराज की पकड़ से मुक्त हुई.. चंद्रभान से आलिंगंबद्ध होने को दौड़ पड़ी, और जाकर 'अपने' चंद्रभान से लिपट गयी," मुझे यहाँ से ले चलो चंद्रभान! मुझे यहाँ से ले चलो! मैं यहाँ अब और नही रह सकती.. मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नही रह सकती हूँ.. हम किसी दूसरे राज्य में रह लेंगे... अपना वादा अभी पूरा करो चंद्रभान.. मुझे ले चलो!" दुर्गावती की आँखों से आँसू रुकने का नाम नही ले रहे थे...

"मुझे कायर बनने पर मजबूर मत करो दुर्गावती! हमारे राज्य पर संकट है.. मुझे महाराज के अंतिम आदेश की प्रतीक्षा करने दो! निसचिंत रहो! मेरे जीते जी कोई तुम्हे मुझसे दूर नही कर सकता!"

दुर्गावती चंद्रभान से पहले की भाँति ही लिपटी रही; अपना सिर उपर उठा उसने महाराज के सामने ही चंद्रभान के गालों को चूम लिया... पर चंद्रभान स्थिर खड़ा महाराज की और देखता रहा...

महाराज की आँखें लज्जा से झुक गयी.. अब कोई सेना को संगठित करके युद्ध में उतरने को बचा था तो वो था सिर्फ़ चंद्रभान! पूर्व सेनापति तो गद्दार निकला!

"क्या आदेश है महाराज?" चंद्रभान ने स्पष्ट शब्दों में महाराज की मंशा पूछि....

महाराज की आँखों में नमी सी दिखने लगी," जीतना असंभव है सेनापति! पर हम कायरों की तरह भाग कर नही.. लड़ कर मरना चाहते हैं....!"

"आप आज्ञा दीजिए महाराज! मेरे जीते जी कोई राजमहल की तरफ आँख उठा कर नही देख सकता.. जो देखेगा.. आपकी क्षत्रिय सेना उसकी आँखें निकाल लेगी...!" चंद्रभान की गर्जना राजमहल में गूँज उठी....

" तो जाओ सेनापति! जाकर सेना की कमान सांभलो.. हम कुछ ही क्षण में तैयार होकर आते हैं... राज्य को तुम जैसे वीर पर हमेशा नाज़ रहेगा!" महाराज ने भाव विह्ल्ल होते हुए कहा....

"जो आज्ञा महाराज!" चंद्रभान ने कहकर अब तक उससे लिपटी खड़ी दुर्गावती की आँखों में झाँका," मुझे जाने दो दुर्गावती.. देश की आन मुझे पुकार रही है.. मैं लौट कर आऊंगा.. वादा करता हूँ...!"

रो रो कर पागल सी हो चुकी दुर्गावती, चंद्रभान के वादे पर विश्वास करके पिछे हट गयी.. चंद्रभान ने एक और आख़िरी बार उसके चेहरे को प्यार से निहारा और आज्ञा लेकर निकल गया......

# ४०

द्वारपाल भागता हुआ बदहवास सा राजमहल में आया और महारानी के समक्ष सिर झुका कर खड़ा हो गया,"महारानी! सेनापति चंद्रभान महाराज के साथ राजमहल पधारे हैं.. महाराज होश में नही हैं.. सेनापति भी उनके साथ अंदर आने की अनुमति चाहते हैं.. आपने आदेश दिया था कि उन्हे महल में प्रवेश ना करने दिया जाए.. हम दुविधा में हैं.. महाराज की वस्तुस्थिति वही आपको बता सकते हैं.. हमें आदेश दीजिए...."

"जल्दी लेकर आओ उन्हे अंदर...!" महारानी महाराज के बेहोश होने की खबर सुनकर इतनी बौखला गयीं कि उन्हे चंद्रभान के अंदर आने से पहले दुर्गावती को वहाँ से दूर भेज देने की बात सूझी ही नही...

कुछ ही क्षण पश्चात चंद्रभान महाराज को साथ लिए महारानी के सामने उपस्थित हुआ ... चंद्रभान के शरीर पर कई जगह ज़ख़्मों के निशान थे और शरीर पसीने से तर बतर था.. उसकी पीठ का घाव तो बहुत ही गहरा था और जान-लेवा प्रतीत हो रहा था... उनकी कमर से खून रिस रहा था.. पर महारानी ने उसके घावों को तवज्जो नही दी...

"क्क्या हुआ इन्हे?" महारानी ने हड़बड़ा कर पूछा... और शैया पर लेटे हुए महाराज की छाती पर आँसू बहाने लगी...

चंद्रभान की आवाज़ में जल्दबाज़ी झलक रही थी, पर तनिक भी घबराहट और हड़बड़ाहट का समावेश उसमें नही था....

"महारानी जी! घबरईए मत.. ये घायल हो गये हैं और खून बह जाने के कारण शायद बेहोश हो गये प्रतीत हो रहे हैं.. पर चिंता करने जैसी कोई बात नही है... मुझे वापस जाना पड़ेगा.. आप जल्द से जल्द वैद्य जी को बुलवाइए..."

चंद्रभान की आवाज़ सुनते ही उत्साहित होकर राजकुमारी दौड़ी दौड़ी उनके सामने आई.. पर चंद्रभान का ज़ख़्मों से भरा शरीर और उसकी हालत देख कर उसकी चीख निकल गयी," क्या हो गया चंद्रभान! ये क्या हो गया आपको?"

रोते बिलखते हुए राजकुमारी चंद्रभान से लिपट गयी.... उनकी और देख रही महारानी खून का घूँट पीकर रह गयी.. उन्होने तुरंत वैद्य जी को बुलाने का आदेश दे दिया...

"अपने आपको सांभलो दुर्गावती! कुछ नही हुआ है मुझे.. ये तो बहुत ही मामूली जखम हैं.. रणक्षेत्र तक वापस जाते जाते भर जाएँगे.. आप फिकर ना करें..." चंद्रभान ने दुर्गावती को दिलासा देते हुए कहा...

"क्या? अब आप वापस जा रहे हैं.. नही.. हम आपको इस हालत में जाने नही दूँगी.. अपनी हालत तो देखिए ज़रा..." राजकुमारी कहने के बाद चंद्रभान के सीने पर दिल के पास बने जख्म को देख कर फुट फुट कर रोने लगी....

"मेरा विश्वास कीजिए दुर्गावती! मुझे कुछ नही हुआ है.. आप पर बुरी नज़र डालने वाले अरुण सेन का सिर मैने उसके धड़ से अलग कर दिया है... अब बस एक आख़िरी लड़ाई बची है.. मुझे जाने दीजिए...." चंद्रभान ने बड़े प्यार से नाज़ुक सी राजकुमारी को अपने शरीर से अलग करते हुए कहा....

"आपको कुछ हो गया तो हम जिंदा नही रह पाएँगे.. वादा कीजिए आप जल्द से जल्द वापस आएँगे.." दुर्गावती चंद्रभान को कारून निगाहों से देख रही थी....

राजमहल से प्रस्थान के लिए मूड चुका चंद्रभान पलट कर राजकुमारी के पास आया.. कुछ देर तक इस तरह राजकुमारी को देखता रहा मानो अंतिम बार उस चाँद से चेहरे को अपनी आँखों में बसा लेना चाहता हो.. फिर उसकी और देखते हुए मुस्कुराया और अपने गले में पहना हुआ अष्टधातु यंत्र (लॉकेट) निकाल कर राजकुमारी को पहना दिया.. राजकुमारी चंद्रभान के चेहरे की और देखते हुए अवीराल आँसू बहाती रही...

" आपको मुझसे अब कोई अलग नही कर सकता दुर्गावती.. इस यंत्र में मेरे जीवन भर के सत्कर्मों का योग निहित है .. मैने आज अपना सब कुछ दाँव पर लगा कर भगवान से तुम्हे माँग लिया है.. जनम जनम के लिए..." चंद्रभान ने राजकुमारी का मस्तक चूमा और पलट गया..

राजकुमारी पुकारती रह गयी," वादा तो करके जाओ चंद्रभान!"

## ४१

अगले दिन रंभा राजकुमारी के पास आई.. उसका चेहरा इस प्रकार पीला पड़ा हुआ था मानो उस चेहरे से मुस्कुराहट हमेशा हमेशा के लिए गायब हो गयी हो.....

"तुम ऐसे क्या देख रही हो रंभा.. बता ना क्या खबर लेकर आई है हमारे चंद्रभान की..!" राजकुमारी विचलित होकर बोली...

रंभा कुछ नही बोली.. बस उसकी आँखों से दो आँसू लुढ़क कर दुर्गावती की हथेली पर जा गिरे...

"हमें डराना चाहती है ना.. चंद्रभान आने ही वाला है ना.. देख... देख.. तू जल्दी से बोल दे.. वरना मैं... हम महाराज से तेरी शिकायत करेंगे... हम... चंद्रभान को भी बता देंगे......"

"रंभा...! तू बोलती क्यू नही.. क्या हो गया है तुझे....?" दुर्गावती अचानक चिल्ला उठी....

"अब... अब बोलने को रह ही क्या गया है राजकुमारी... महाराज... नही रहे.. राजकुमार नही रहे... कुमार का पता नही चल रहा....महारानी ने ..... आत्मदाह कर लिया... " रंभा के आँसू थमने का नाम नही ले रहे थे.... वह बीच बीच में सिसकियाँ सी लेकर बोल रही थी,"चंद्रभान...."

"नही.. नही... चंद्रभान के बारे में हम तेरी कोई बकवास नही सुनेंगे... चंद्रभान को कोई नही हरा सकता... चंद्रभान को हमसे कोई नही छीन सकता.. चंद्रभान सिर्फ़ हमारा है... पिता श्री नही रहे तो क्या हुआ? अब चंद्रभान ही इस राज्य के राजा हैं... आने दो चंद्रभान को.. हम तेरी शिकायत उनसे करेंगे... " बोलते बोलते राजकुमारी तक गयी और कुछ रुक कर फिर बोलने लगी..,

" बता दे ना सखी.. तू हमें तडपा क्यू रही है.. कल ही तो तू हमारे चंद्रभान के कारनामों के बारे में सुना रही थी.. तू बता रही थी ना.. चंद्रभान युद्ध भूमि में इस तरह छाया हुआ था, मानो.. मानो सारी दुश्मन सेना को अकेले ही स्वाहा कर देगा.. तू ही बता रही थी ना कि कैसे दुश्मन देश का राजा उनके सामने आने से कतरा रहा था... और चंद्रभान के सामने आते ही भाग खड़ा हुआ था.... तूने ही तो बताया था की दुष्ट अरुण सेन का सिर किस तरह

हमारे चंद्रभान के एक ही वार में काई गज दूर जाकर गिरा था.... चंद्रभान तो अपराजय है ना सखी... तू ही तो कल बता रही थी... उनका कोई कैसे सामना कर सकता है.. उनको कोई कैसे मार.....
नहियीईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई"

"नहियीईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई"

बेडरूम से आई इस तेज चीख से प्रतिक और धीरज अचानक उछल कर खड़े हो गये... प्रतिक घबराकर सीधा बेडरूम की और भागा.. धीरज भी उसके पिछे पिछे था....

बेडरूम में तनवी की चीख सुनकर उठ बैठी निहारिका उसको बैठने की कोशिश कर रही थी.. पर तनवी अब तक नींद में ही लग रही थी...और अब भी वह कुछ बड़बड़ा रही थी... तनवी का चेहरा पसीने और आँसुओं से तर था..

जैसे ही तनवी ने आँखें खोल कर सामने खड़े प्रतिक को देखा.. वह तेज़ी से उठी और भाग कर प्रतिक से लिपट गयी," चंद्रभान!"

सब हैरान परेशान.. आख़िर अचानक तनवी को ये हुआ क्या?

तनवी काफ़ी देर तक प्रतिक से लिपटी खड़ी रही.. प्रतिक भोंचक्का सा सीधा खड़ा रहकर कभी निहारिका और कभी धीरज को देखने लगा.. किसी की समझ में कुछ नही आ रहा था..

अचानक जैसे अभी अभी हक़ीकत की दुनिया में वापस आई तनवी खुद को प्रतिक से इस तरह सख्ती से लिपटा हुआ पाकर हैरान रह गयी....वह कुछ देर शरमाई हुई यूँही खड़ी रही.. फिर धीरे धीरे प्रतिक के गले से अपनी बाँहें निकाली और सिर झुकाए भाग कर कंबल में घुस गयी...

प्रतिक और धीरज की नज़रें एक दूसरे से मिली और दोनो मुस्कुरा दिए...

निहारिका ने उसके चेहरे से कंबल उठाकर अंदर झाँका," क्या हो गया था तुम्हे अक्षरा?"

"सॉरी, सपना था!" तनवी ने कहा और निहारिका कि और मुस्कुराकर देखते हुए शर्माकर कंबल वापस छीन लिया.....

"चल आजा.. वो दोनो चाई पर हमारा इंतजार कर रहे हैं.." सुबह निहारिका तनवी को बेडरूम से बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी...

"नही... मुझे नही चलना बाहर.. यहीं मंगवा ले चाय..!" तनवी का चेहरा प्रतिक के सामने जाने के नाम से ही गुलाबी पड़ गया....

"चल ना आ! अब ऐसे नखरे मत दिखा... चल खड़ी हो...!" निहारिका ने उसको बाँह से पकड़ कर खींच लिया...

"नखरे दिखा रही हूँ मैं?.." तनवी ने गुस्से से कहा और फिर शर्मा सी गयी," मुझे शर्म आ रही है.. जाने क्या सोच रहा होगा वो.. मेरे बारे में.."

निहारिका तनवी को खींचते हुए बाहर ले ही आई.. नज़रें झुकाए तनवी प्रतिक के सामने जाकर बैठ गयी.. और चाइ का कप उठा लिया....

"अक्षरा.. बता ना.. ऐसा क्या सपना आया था रात को?" निहारिका ने चाइ की चुस्की लेते हुए पूछा.. प्रतिक और धीरज चुप चाप बैठे थे... प्रतिक रह रह कर तिरछी निगाहों से तनवी को देख लेता था...

तनवी ने रात की बात का जिकर करने पर घूर कर निहारिका को देखा.. और फिर नज़रें झुका ली...

निहारिका ने अगली बार और भी ज़ोर देकर पूछा,"अरे.. बता ना यार.. हम सब जानने को बेकरार हैं.. कहीं तुझे प्रतिक की तरह ही तो कोई सपना नही आया था... तेरे सपने में चंद्रभान आया था क्या?"

"पता नही.. अब तो मुझे कुछ याद भी नही है... पर हां.. कोई सपना ज़रूर आया था मुझे..." तनवी ने आख़िरकार प्रतिक के सामने ज़ुबान खोल ही दी...

"पर आपने हम सब के सामने प्रतिक को चंद्रभान कहा था.. हम सबको अच्छी तरह याद है.." धीरज ने संजीदगी से कहा....

"कब?" तनवी ने याद करते हुए पूछा...

"तब, जब आप भाग कर इससे लिपट गयी थी... मुझे तो 'रोमांटिक लव स्टोरी' याद आ गयी थी उसी वक़्त.. मैं तो बस रोने ही वाला था..." धीरज ने अपने चेहरे पर हाथ रख कर अपनी हँसी छिपाने की कोशिश की पर छिपा ना सका.. कुछ देर बाद ही उसके मुँह से ज़ोर का ठहाका गूँज उठा....,"हा हा हा हा हा"

अचानक तनवी के चेहरे पर शर्म की लाली झलकने लगी.. धीरज की बात पर नाराज़ होने का दिखावा करते हुए उसने उठकर भागने की कोशिश की.. पर निहारिका ने उसका हाथ पकड़ कर वापस बैठा लिया.. प्रतिक ने प्यार से धीरज के सर पर हल्का सा झापड़ मारा," सुबह सुबह उठते ही शुरू हो जाता है... वक़्त तो देख लिया कर..."

"ऐसे क्यू कर रही है अक्षरा..? कुछ तो बता.. कुछ तो याद होगा तुझे सपने के बारे में...!" निहारिका ने प्यार से पूछा....

"मुझे तो बस इतना ही याद है कि सपने में कोई राजकुमारी पागल सी होकर रो रही थी.." तनवी को जो याद आया.. उसने बता दिया....

"और.. चंद्रभान नही था दुर्गावती के साथ?" प्रतिक ने उत्सुक होकर पूछा...

"नही.. हां.. याद आया.. राजकुमारी का नाम शायद दुर्गावती ही था.. वो एक दूसरी लड़की से बार बार चंद्रभान के बारे में ही पूछ रही थी... और बुरी तरह रो रही थी..." तनवी ने आगे याद करते हुए बताया....

"क्या अब भी आपको प्रतिक की कहानी पर विश्वास नही है... ? क्या अब भी आप वापस जाने की ज़िद पर अडी रहेंगी...? आपको ऐसा सपना आना.. फिर प्रतिक को देखते ही नींद में उठकर इसकी ओर भागना... इसको चंद्रभान कहना... मैं भी तो इसके साथ ही खड़ा था.. आपने मुझे चंद्रभान क्यू नही कहा...? मुझे तो उस वक़्त को याद करके लगता है कि उस वक़्त खुद आप 'दुर्गावती' की तरह व्यवहार कर रही थी.. आप रो भी रही थी और

प्रतिक को चंद्रभान समझ कर इसकी ओर भागी भी थी... अब विश्वास ना करने को बचा ही क्या है?" धीरज अब एक दम संजीदगी से अपनी बात कह रहा था....

"एक मिनिट फोन देना...!" तनवी ने प्रतिक से फोन लिया और अपने पापा के पास मिला लिया...

"पापा, मैं अक्षरा!" तनवी ने कहा...

पापा शायद ऑफीस के लिए निकल चुके थे.. ," हां.. बोल बेटी!"

"आप.. अब तक मुझसे नाराज़ हैं क्या?" तनवी ने रूखी आवाज़ सुनकर कहा....

"अरी बेटी.. छोड़ अब उन बातों को.. वापस कब आ रही हो... २ हफ्ते बाद निहारिका की शादी भी है.. तैयारियाँ भी तो करनी होंगी उसको...." पापा ने कहा....

"हां, पापा! हम आ जाएँगे.. आपसे एक बात पूछनी है..." तनवी ने कहा..

"हां.. पूछ!"

"वो.. आपने मेरा नाम बदलने के पिछे कारण बताया था ना...?" तनवी की बात को पापा ने बीच में ही काट दिया...

"अब ये क्या उठा लिया सुबह सुबह...?"

"नही पापा.. बस एक बात पूछनी है... वो आप कह रह थे मैं स्कूल में कोई नाम चिल्ला कर बेहोश हो गयी थी.. नाम याद है आपको?" तनवी ने डरते हुए पूछा....

"अब... नाम कहाँ से याद होगा... १५ साल हो गये उन बातों को...!" पापा ने कहा...

"वो.. मैं यही पूछ रही थी.. कहीं मैने.... 'चंद्रभान' तो नही कहा था..?" तनवी ने रुक रुक कर कहा...

"चंद्रभान... अरे हां.. यही तो बताया था मुझे तुम्हारे प्रिन्सिपल ने... हां.. तुम 'चंद्रभान' कहकर ही बेहोश हुई थी... पर तुम्हे कैसे याद है?" पापा ने चौंक कर गाड़ी को ब्रेक लगा दिए....

"याद नही है पापा.. आज फिर मुझे अजीब सा सपना आया था रात को.. और आज फिर मैं यही नाम चिल्ला रही थी...." तनवी आश्चर्य से प्रतिक की आँखों में देखने लगी....

"ओह माइ गॉड!" उस तांत्रिक ने सही कहा था.. पुराने नाम को हमेशा के लिए भूल जाने को.. तुमने फिर 'वो' नाम उखाड़ लिया बेटी.. क्यू किया तुमने ऐसा..? बार बार उस नाम के बारे में सोचने पर ही तुम्हे ऐसा सपना आया होगा.. मुझे चिंता हो रही है बेटी.. तुम घर आ जाओ जल्दी से!" पापा की आवाज़ से निराशा झलक रही थी...

"नही पापा.. ऐसी कोई बात नही.. मैं बिल्कुल ठीक हूँ.. मैं शाम को फोन करती हूँ...." तनवी ने कहा और पापा ने 'ओ.के' कहने पर फोन काट दिया.....

# ४२

"कोई परेशानी तो नही हुई ना बेटी?" प्रतिक के पिता जी सुबह आते ही सीधे तनवी और निहारिका से मुखातिब हुए...

"जी नही पा..पा जी!" तनवी ने सकुचाते हुए कहा....

"तू मुझे कुछ परेशान सी लग रही है.. क्यू चिंता करती है? मैं हूँ ना.. सब सेट कर दूँगा.." पापा ने प्यार से तनवी के सिर पर हाथ फेरा," ला.. मुझे अपने पापा का नंबर. दे.."

तनवी पापा की बात सुनते ही हड़बड़ा गयी," ज्जई.. पर.. क्यू?"

"अरे.. ऐसे क्यू घबरा रही है.. मैने कहा ना.. प्यार करने वाले कभी डरते नही.. तू प्रतिक से प्यार करती है ना?"

बेचारी तनवी उनके असीमित स्नेह के आगे अपने आपको बँधी हुई सी महसूस कर रही थी.. वो कुछ बोल ही नही पाई.. इस पर प्रतिक ने हस्तक्षेप कर दिया... ," पापा.. वो..."

"ओये.. तू कुछ मत बोल ओये.. ये बाप बेटी की आपस की बात है.. बता ना बेटी.. प्यार करती है ना मेरे प्रतिक से..." पापा ने प्रतिक को बीच में बोलने पर डाँट सा दिया...

तनवी से कोई जवाब देते नही बन रहा था.. उसने अपना सिर झुका लिया...

"मैं समझ गया.. ला अब जल्दी से पापा का नंबर. दे..." पापा जी ने प्यार से तनवी को कहा..

मरती क्या ना करती.. तनवी की कुछ समझ में ही नही आ रहा था कि करे तो क्या करे... उसने इसी उहापोह में नंबर. बता दिया...

"ये हुई ना बात.. नाम क्या है उनका?"

"जी.. श्री राजेश चौधरी..." अब नाम छिपाने से क्या होता.. तनवी ने वो भी बता दिया....

" गुड.. अब देखना मैं क्या जादू करता हूँ.. सब चुप रहना.." पापा ने खास तौर पर प्रतिक की ओर घूर कर चुप रहने का इशारा किया.. और तनवी के नंबर. बताते हुए उन्होने जो नंबर. अपने मोबाइल स्क्रीन पर नोट किया था.. उसको डाइयल कर दिया...

"हेलो.." उधर से तनवी के पापा की आवाज़ आई...

"हां.. रंजीते.. की हाल चाल हैं बादशाहो!" प्रतिक के पापा ने इस तरह से कहा.. मानो वो उन्हे बरसों से जानते हों..

"कौन बोल रहा है? सॉरी... मैने पहचाना नही यार...!" उधर से आई आवाज़ में हैरानी थी....

"अजी.. दुनिया इतनी छोटी भी नही है कि हर कोई एक दूसरे को पहचान जाए.. ये क्या कम बड़ी बात है कि मैं आपको जानता हूँ..!" प्रतिक के पिताजी ने हंसते हुए कहा...

"ठीक है भाई साहब.. बट सीरियस; मैने आपको पहचाना नही.. बताओ तो सही आप हैं कौन...?" उधर से उसी लहजे में पूछा गया....

"भाई साहब, आइ एम मिस्टर बत्रा फ्रॉम प्रतिक एस्टेट.. दरअसल मैने भी आपको अभी अभी जाना है..." प्रतिक के पिता जी संजीदा होते हुए बोले...

"भाई साहब.. इस वक़्त थोड़ा सा परेशान हूँ.. मैं आपसे बाद में बात करूँ?" तनवी के पिता जी की आवाज़ में हल्की सी झुंझलाहट थी...

"कोई गल नयी जी... अब तो बातें होती ही रहेंगी..." प्रतिक के पिता जी ने प्रतिक की और आँख दबाई और एक पल मुस्कुरकर फिर सीरीयस हो गये," मैने तो बस इसीलिए फोन किया था कि आप बिल्कुल भी चिंता ना करें... आपकी बेटी मेरे लिए प्रतिक से बढ़कर है...!"

"व्हाट? हू आर यू?.. मेरी बेटी कहाँ हैं?" तनवी के पापा चौंकते हुए कुर्सी से खड़े हो गये," कौन प्रतिक?"

"ओह्ह.. तो आप को कुछ नही पता क्या? मुझे लगा मेरा बेटा पहले वहीं मोहब्बत के बागी झंडे गाड़ कर आया होगा... खैर.. कोई बात नही.. मैं उनसे पूरी डीटेल लेकर फिर फोन करता हूँ...." कह कर प्रतिक के पिता जी ने तपाक से फोन काट दिया...." ये क्या है यार..? पूरी बात तो बता देते पहले.."

आप सुनेंगे तभी तो.. हमें बोलने ही कब दिया आपने.. यहाँ आने के बाद!" प्रतिक बुरा सा मुँह बनाकर बोला.. तनवी तो जैसे रोने ही वाली थी....

उधर हैरान परेशान तनवी के पिता जी ने तुरंत करनवीर के पास फोन मिलाया...

"प्रणाम अंकल जी!"

"प्रणाम बेटा.." कहाँ..? .. थाने में ही हो क्या?" पापा ने हिचकते हुए पूछा...

"नही अंकल जी.. मैं तो लंबी छुट्टी पर आ गया हूँ.. कोई काम है क्या?"

"नही.. कुछ खास नही.. थाने का नंबर. देना एक बार..." पिता जी ने कहा....

"कुछ परेशानी है क्या अंकल जी...?" करनवीर ने पूछा...

"नही बेटा.. बस यूँही छोटा सा काम है... तुम मुझे थाने का नंबर. दे दो..." पापा को उसको फिर से तनवी के बारे में ऐसी बात करना अच्छा नही लगा...

"लिख लो अंकल जी.. थाने में नये इनस्पेक्टर आए हैं.. मिस्टर रहतोगी.. थोड़े से मूडी टाइप के हैं.. मैं उनको फोन कर दूँगा.. आप भी मेरा जिकर कर देना...." करनवीर ने नंबर. नोट करवाया और बाइ करके फोन काट दिया.....

"हम्म्म... तो ये बात है... तुम लोग इन बेचारियों को बहला फुसला कर ले आए हो!" पापा ने घूर कर प्रतिक और धीरज की ओर देखा....

"नही पापा.. बहला फुसला कर कहाँ...आप तो ऐसे ही... आप पूछ लो इनसे..!" प्रतिक ने मरा सा मुँह बनाकर कहा...

"तू चुप कर अब.. मुझे मेरी बच्चियों से पूछ लेने दे.. हां बेटी.. तुम बोलो.. सच क्या है?" पापा ने तनवी की और देखते हुए प्यार से पूछा....

प्रतिक की शकल देख कर तनवी की इस सिचुयेशन में भी हँसी छूट गयी.. बेचारे पर कितना गंभीर आरोप लगा दिया पापा ने..," नही पापा वो... मैं ही इनको... मतलब हम दोनो अपनी मर्ज़ी से इनके साथ आए थे...!" कहकर तनवी ने नज़रें झुका ली....

"मतलब तुम चाहती हो.. इस लल्लू से शादी करना?" पापा ने प्यार से ही पूछा..

तनवी ने सिर झुकाए हुए ही अपने हाथों की अंगुलियों को बाँध लिया.. वो कुछ बोल नही पाई...

"बोलो बेटा.. तुम चिंता मत करो.. अगर तुम नही चाहती तो मैं तुम्हारे पापा से अपने बेटे की करतूत के लिए माफी माँग कर अभी तुम्हे वापस छोड़ने चल पड़ूँगा...

"हां.. मतलब.. नही.. इसमें इनकी कोई ग़लती नही है.. पापा.. पर मैं कुछ फ़ैसला नही कर पा रही हूँ.. पर मुझे 'ये' पिछले जनम की बातें सच लग रही हैं.." तनवी समझ नही पा रही थी कि क्या कहे और क्या नही.. वह अपने आपको बड़ी ही असमंजस में महसूस कर रही थी.....

"छोड़ो ना बेटी, पिछले जनम की बातों को.. सबसे पहले तो वर्तमान के बारे में सोचो.. आख़िर तुम्हे तो ये जीवन गुजारना है ना.. सबसे पहले तो ये सोचो की इस जनम में ये तुम्हारे लायक है या नही..." पापा अचानक गंभीर हो गये....

"ज्जई.. वही मैं सोच रही हूँ.. पर फ़ैसला नही कर पा रही हूँ.. मैं खुद को थोड़ा वक़्त देना चाहती हूँ.. !" तनवी ने हड़बड़कर कहा...

"कोई और पसंद है तुम्हे?" पापा ने पूछा...

तनवी ने तुरंत उनकी आँखों में आँखें डाल ली.. कम से कम इस बात का जवाब तो उसने पूरे आत्मविश्वास से दिया," नही पापा.. मैने तो आज तक कभी इस बारे में सोचा तक नही.. शायद ये मेरे पास ना आते तो मैं कभी शादी करती ही नही...!"

"हम्म.. मतलब ये तुम्हे थोड़ा बहुत तो पसंद है ही.." पापा ने मुस्कुराते हुए उसको देखा....

तनवी के मंन में उसी पल अपनी एक अलग सी छवि कौंध गयी.. उसने तुरंत प्रतिक की आँखों में झाँका.. जाने अंजाने में ही उसको प्रतिक की आँखों में दुर्गावती का चंद्रभान दिखाई दिया... वो ज़्यादा देर तक प्रतिक से नज़रें ना मिला पाई.. पर इन्न दो पलों के लिए ही आँखें चार होने ने पापा को उनकी बात का जवाब मिल गया...

"देखो बेटी.. तुम दिल और दिमाग़ दोनो खोल कर फ़ैसला करो.. इसकी बातों में मत आना.. ये तो बचपन से ऐसा ही है.. खोया खोया सा.. हमेशा मुझे इसकी आँखों में देख कर महसूस होता था.. जैसे इसका कुछ खो गया है.. और उसको ही हर वक़्त, हर जगह.. ढूंढता रहता था... "

पर ये क्या ढूँढ रहा है.. इसने कभी किसी को बताया ही नही... शायद इसको खुद ही मालूम नही था... पर कल... पहली बार.. इसको देख कर मुझे लगा कि.. इसको अपनी मंज़िल मिल गयी है.. अगर सपनों की बात पर भरोसा करें तो अब तो यही लगता है कि तुम ही इसकी जिंदगी से कभी अचानक गायब हो गयी होगी.. तुम्हे ही ढूंड रहा होगा ये..."

बोलते हुए पापा की आँखों से आँसू छलक उठे..," पर तुम इसकी परवाह मत करना बेटी.. पहले अपने बारे में सोचना.. तभी शायद ये भी पूरी तरह से खुश रह पाएगा.. दूसरों को दुखी देखना भी इसके बस की बात नही है.. और तुम्हे तो ये कभी देख ही नही पाएगा.. ऐसा लगता है..."

पापा बोलते ही जा रहे थे कि अचानक उनके फोन पर आई कॉल से उनका ध्यान बँट गया... उन्होने नंबर. पहचान लिया.. कॉल तनवी के पापा की थी....

"हांजी राजेश चौधरी जी!"

"देखिए.. मुझे आप एक समझदार आदमी लग रहे हैं.. इसीलिए मैने पहले आपको फोन करने की सोची.. वरना मैं तो पोलीस रिपोर्ट करवाने जा रहा था.. आप बताइए ये क्या तमाशा हो रहा है...?" तनवी के पापा की गुस्से से भारी आवाज़ आई...

प्रतिक के पापा उठ कर अपने कॅबिन में आ गये," देखिएचौधरी साहब! यहाँ कोई तमाशा नही हो रहा.. बच्चे अपनी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण फ़ैसला लेना चाह रहे हैं.. और उन्हे पूरा अधिकार भी है इस बात का... हम और आप बीच में पड़ने वाले कौन होते हैं भला?"

"वॉट रब्बिश? मैं अक्षरा का पापा हूँ.. और आप पूछ रहे हैं की मैं कौन होता हूँ बीच में पड़ने वाला....!" तनवी के पापा का लहज़ा और गरम हो गया..

प्रतिक के पापा ने हलके से मज़ाक के साथ माहौल को ठंडा रखने की कोशिश की.. वो हंसते हुए बोले," देखिए साहब.. मैं भी प्रतिक का पापा हूँ.. और.. मेरे पास सर्टिफिकेट भी है इस बात का.. हा हा हा!"

पर इस मज़ाक से तनवी की पिताजी के कलेजे को कोई ठंडक नही पहूंची,"आप बातों को मज़ाक में ना उड़ायें..! मेरी बेटी को आप इस तरह कैसे अपने साथ रख सकते हैं?.. इट'स.. इट'स जस्ट लाइक किडनॅपिंग.. यू नो?"

"किडनॅपिंग? शांत हो जाइए सर.. आपको दरअसल पूरी बात का पता नही है.. मेरा प्रतिक और आपकी तनवी एक दूसरे से प्यार करते हैं.. एक दूसरे से शादी करने की सोच रहे हैं वो.. दोनों बालिग हैं.. इसमें किडनॅपिंग कहाँ से बीच में आ गयी?" प्रतिक के पापा ने संयमित भाव से कहा....

"मेरी बेटी और प्यार? आर यू जोकिंग और वॉट मिस्टर बत्रा? वो कभी इस तरह की बातें सोचती तक नही.. मुझे अपनी बेटी के बारे में पूरा पता है...!" तनवी के पिता जी बोले....

"सिंग साहब! यही वो लम्हे होते हैं जब हम अपने बच्चों के उपर अपनी सोच थोप कर उन्हें अपने आप से दूर कर लेते हैं... ये हम तय नही कर सकते कि उन्हे कब और किस तरह जीना चाहिए.. खास तौर से तब.. जब वो अपनी जिंदगी का सबसे अहम फ़ैसला ले रहे हों.. ये प्यार हैचौधरी साहब! कोई मज़ाक नही... अगर हमने यहाँ उनके दिल की बात नही सुनी तो ना सिर्फ़ हम ही उन्हे खो देंगे... बल्कि वो भी.. वो खुद भी सारी उमर कुछ ढूंढते से रहेंगे.. जो कभी उन्हे दोबारा नही मिल सकता... आप समझ रहे हैं ना?" प्रतिक के पापा बात करते हुए जाने किस अतीत में खोते चले गये...

"मैं समझ रहा हूँ यार... पर!" जाने कौन सी बात तनवी के पापा के दिल में चुभि कि उनका लहज़ा एक दम नरम पड़ गया....

"पर क्या यार?.. ठंडे दिमाग़ से सोच कर देखो.. यहाँ तनवी भी मेरी बेटी की तरह ही है.. बल्कि उससेbभी बढ़ कर... आप बस मिलने का टाइम बताइए.. मैं आता हूँ आपके पास!" प्रतिक के पापा ने बात को निष्कर्ष तक ले जाने की कोशिश की....

"यार मैं अपनी बेटी को अच्छे से जानता हूँ.. उसके लिए प्यार मोहब्बत का कोई मतलब ही नही है.... वो तो.. निहायत ही शरीफ और भोली है...!" तनवी के पापा के तर्क आख़िरी साँस ले रहे थे....

" हां शरीफ है.. तभी तो मैं उसको अपने घर में लक्ष्मी के रूप में लाना चाहता हूँ.. पर शरीफ लोग क्या प्यार नही करते? एक बात बताऊं चौधरी साहब.. मेरी माता जी आख़िरी दम तक यही सोचती रही थी कि मैं एक दम भोला हूँ.. मुझे इन्न बातों के बारे में कुछ नही पता.. जबकि मेरे तीनों बच्चे पैदा हो चुके थे.. हा हा हा!" प्रतिक के पापा की इस बात पर तनवी के पापा भी खिलखिलाए बिना नही रह सके.. शायद उनकी माता जी भी यही सोचती होंगी

"इट'स ओ.के.चौधरी साहब! मैं आपसे मिलने की सोचता हूँ... पर क्या आप.. अक्षरा से बात करा देंगे एक बार...?" तनवी के पापा ने मुस्कुराते हुए कहा.....

"क्यू नही यार? एक मिनिट.. तनवी बेटी.. ये लो.. पापा से बात करो!" बाहर आकर पापा ने तनवी को फोन दे दिया...

तनवी ने काँपते हाथों से फोन कान से लगाया...," हां.. पा.. वो...!"

"तू खुश है ना बेटी..?" पापा ने प्यार से सिर्फ़ इतना ही पूछा....

"हाँ.. वो.. सॉरी पापा.. मैं...!" तनवी अब भी घबराई हुई थी....

"सॉरी को मार गोली यार.. तू आराम से वहीं रह.. तेरे ससुर जी एकदम मस्त आदमी हैं.. चिंता मत कर.. मैं आ रहा हूँ.. एक दो दिन में.. और कुछ बात हो तो बोल..?"

"थँक यू पापा!" तनवी के इन्न तीन शब्दों ने ही उसके पापा की आँखों को आँसुओं से तर कर दिया....

"आइ लव यू बेटा! चिंता मत कर.. मैं तेरे साथ हूँ!"

# ४३

"तू सोच क्या रही है अक्षरा? कम से कम मुझे तो खुल कर बता दे..." परेशान सी निहारिका ने अकेले होते ही तनवी से पूछा...

".....ए निहारिका! मुझे अक्षरा मत बोल!" तनवी ने थोड़ी देर रुक कर कहा....

"हे भगवान! और तुझे मैं क्या बोलूं? अब ये नाम भी चेंज करेगी क्या?" निहारिका ने अपने माथे पर हाथ मार कर कहा....

"हां.. वापस वही रखूँगी... तनवी!" तनवी ने सहजता से कहा....

"तू मेरा दिमाग़ खराब मत कर यार.. पहले सही सही बता तूने सोचा क्या है.. प्रतिक के बारे में..." निहारिका ने ज़ोर देकर पूछा...

"पता नही..." कहकर तनवी बेडरूम की छत की तरफ देखने लगी...

"पता नही मतलब? तुझे नही पता तो और किसको पता होगा... ये नाम फिर से क्यू बदल रही है तू?" निहारिका की कुछ समझ नही आ रहा था कि तनवी आख़िर सोच क्या रही है.....

"यार..." तनवी ने बीच में एक लंबी साँस ली..," आज सुबह से ही पता नही कैसे कैसे अहसास हो रहे हैं.. रात को मैने जो सपना देखा था.. वो टुकड़ों में रह रह कर इस तरह याद आ रहा है जैसे.. जैसे मेरे साथ कुछ आज कल में ही हुआ हो.. बहुत बुरा.. कभी मेरे मंन में आता है कि जैसे मुझे पता नही क्या मिल गया... अचानक ही लगता है जैसे मेरा कुछ खो गया है.. बहुत प्यारा...."

"रह रह कर मन में जाने कैसी लहरें सी उठ रही हैं.. मैने सपने में.. राजकुमारी का रोना देखा था.. सुबह से लेकर अब तक मुझे कई बार ऐसा सा लगा है जैसे... वो राजकुमारी अब भी मेरे भीतर रो रही है.. किसी को पुकार रही है..."

"कभी लगता है कि चंद्रभान राजकुमारी को वादा करके गया है.. लौट कर आने का... ख़याल आता है जैसे उसने वादा राजकुमारी से नही.. मुझसे किया हो.. बड़ा अजीब सा फील हो रहा है यार..."

"ऐसा लगता है जैसे वो राजकुमारी मैं ही हूँ.. पता नही क्यू? पर मन ही मन जैसे मैं अब भी चंद्रभान को पुकार रही हूँ... कुछ तो बात है निहारिका.. कुछ तो बात है..."

"वो तो मैं भी कह रही हूँ कि कुछ तो है.. पर तूने सोचा क्या है.. ये तो बता दे मेरी अम्मा!" निहारिका ने उसको बोलते हुए टोक दिया...

"मैने सोचा है कि जो होता है होने दूँ... ज़्यादा से ज़्यादा क्या होगा.. सोच सोच कर पागल ही हो जाऊंगी ना.. पर वो भी यूँ बीच भंवर में फँसे रहने से तो बेहतर ही होगा.. मैं जानना चाहती हूँ.. चंद्रभान को किसने मार दिया? मैं जानना चाहती हूँ.. कि राजकुमारी के साथ फिर हुआ क्या? ... एक बात और.. जिस लॉकेट के बारे में प्रतिक ने जिकर किया था कि मेरा 'दिल' उसमें अटका हुआ है.. मुझे ये भी याद आ रहा है कि आख़िरी बार जाते हुए चंद्रभान ने राजकुमारी को एक लॉकेट दिया था.. अगर पूरी बात का पता नही चला तो मैं तो सोच सोच कर ही पागल हो जाऊंगी... पता नही क्या हो रहा है मुझे....?" तनवी बोल कर रुक गयी...

निहारिका पूरी कहानी जानने को बेचैन सी हो गयी," सपने में तूने जो कुछ देखा है.. वो कितना याद आ गया है..?"

"हम्म... राजकुमारी ने चंद्रभान को पहली बार कहाँ देखा.. ये याद आ रहा है.. चंद्रभान की शकल याद आ रही है... राजकुमारी भेष बदल कर चंद्रभान के घर गयी थी.. वहाँ खाना खाया था... फिर... एक मिनिट.. सोचने दे मुझे..." तनवी ने आँखें बंद कर ली....

"कैसा था चंद्रभान.. दिखने में.." निहारिका से रहा ना गया...

"तू अपने करनवीर के बारे में सोच.. मेरे चंद्रभान के बारे में क्यू पूछ रही है..." कहकर तनवी हँसने लगी....

"ओहू.. बड़ी आई राजकुमारी...!" निहारिका तनवी पर व्यंग्य करके खिलखिला कर हंस पड़ी... फिर अचानक सीरीयस होकर बोली..," तू ढंग से सारा सपना याद कर ले.. फिर डीटेल में सुनाना... मैं उनको बुला लाउ ना?"

"हम्म... ठीक है.. १०-१५ मिनिट के बाद बुला लेना... तब तक चुप बैठ जा.. मुझे याद करने दे..." कहकर तनवी आँखें बंद करके लेट गयी....

"बुला लाऊ अब? २० मिनिट हो गये....." निहारिका २० मिनिट तक चुप चाप बैठी रही थी...

"ष्ह्ह्ह्ह्ह्ह....." तनवी ने अपने होंटो पर उंगली रख कर निहारिका को चुप रहने का इशारा किया... उसके हाव भाव से ऐसा लग रहा था जैसे.. उसको सपना याद आ रहा है... या फिर सपने से भी आगे का कुछ....

निहारिका स्तब्ध सी उसके पास बैठी उसको देखती रही... तनवी के चेहरे के भाव पल पल बदलने लगे.. निहारिका चुप चाप उठी और प्रतिक और धीरज को बेडरूम में बुला लाई....

# ४४

"सुनो.. सुनो.. सुनो.. राज्य के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि महाराज देवद्रत के मैत्री प्रस्ताव को ठुकराने वाले... दोनो राज्यों की जनता को युद्ध की आग में झौंकने वाले... और.. राजकुमार अरुण सेन सहित हज़ारों सैनिकों के कतल के दोषी होने के कारण; मौत की सज़ा को निश्चित जान कर राजा रुद्रयादव आत्महत्या कर चुके हैं. महारानी ने भी आत्मदाह कर लिया है... राजकुमार युद्धभूमि में मारे गये हैं..; आज से इस राज्य की बागडोर यशस्वी महाराज देवद्रत के आशीर्वाद से सेनापति अंशुमन के हाथों में है....कल महाराज देवद्रत उनके राज्याभिषेक के लिए राज्य में पधार रहे हैं.. सुनो सुनो सूनो...."

बदहवास सी भागी भागी राजमहल में आई रंभा को द्वार पालों ने बाहर ही रोक लिया," रूको!!! अंदर जाने की आज्ञा किसी को नही है!"

"परंतु.. परंतु मेरा राजकुमारी से मिलना आती अनिवर्य है... अभी और इसी समय....!" रंभा के चेहरे पर भय स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था...

"राजकुमारी दुर्गावती अब राजा अंशुमन के आदेशानुसार राजमहल में बंदिनी के तौर पर हैं.. और उनके आदेशानुसार उनसे मिलने की इजाज़त किसी को नही दी जा सकती...." द्वारपाल ने दोहराया....

अचानक अंदर टहल रहे पूर्व सेनापति और अब यहाँ के राजा, अंशुमन का ठहाका गूँज उठा...," हा हा हा हा हा! राजकुमारी की सखी! आने दो इसको अंदर.. शायद इसी की बात पर विश्वास करके राजकुमारी हक़ीक़त के धरातल पर वापस आ जायें.. वो अब भी चंद्रभान का इंतजार कर रही है.. हा हा हा.. जाओ.. और जाकर उसको सच्चाई से अवगत करा दो.. बता दो उसको कि चंद्रभान को हमने इस दुनिया से मिटा दिया है.. अब वो अपना पागलपन छोड़ें और महाराज देवद्रत की पत्नी बनने के लिए अपने आपको मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार कर लें... महाराज उसको पलकों पर बिठा कर रखेंगे.. आख़िर वो भिक्षुक योगी उसको दे ही क्या सकता था, जो वो नही दे पाएँगे!"

द्वारपालों ने उसको अंदर जाने दिया... भागती हुई जाकर रंभा अंशुमन से कुछ आगे जाकर रुक गयी," कहाँ हैं राजकुमारी जी?"

"वो अपने शयन कक्ष में ही हैं.. ध्यान रहे.. महल में चप्पे चप्पे पर हमारे गुप्तचर निगाह रखे हुए हैं.. किंचित भी चालाकी करने की कोशिश की तो इनाम सज़ा-ए-मौत होगा!.. जाओ.. जाकर समझा दो उसको.. पागलपन एक हद तक ही सहन किया जा सकता है.. जो जा चुका है.. रह रह कर उसका ढोल पीटने से वो वापस नही आ जाएगा....!" अंशुमन उत्साह में मगन होकर बोल रहा था....

रंभा ने नज़रें झुकाई और फिर शयन कक्ष की और दौड़ पड़ी.. शयन कक्ष के बाहर खड़े पहरेदारों ने एक बार फिर उसका रास्ता रोक लिया....," अंदर जाने की इजाज़त किसी को नही है...!"

"म्म.. मुझे.. सीसी.. राजा अंशुमन ने राजकुमारी के पास जाने की आज्ञा दी है..." रंभा ने जवाब दिया... पहरेदारों ने एक दूसरे की नज़रों में देखा और उसको अंदर जाने दिया.....

"रंभा.... भा...!" बेचैन सी बैठी राजकुमारी ने जैसे ही रंभा को देखा.. उसकी आँखों से अश्रु धारा उमड़ पड़ी," तू कहाँ थी अब तक..? हम कब से तेरा इंतजार कर रहे हैं.. देख ना! हमें हमारे चंद्रभान से दूर रखने के लिए पिता श्री कैसी कैसी चाल चल रहे हैं.. .. मैं जानती हूँ कि चंद्रभान के शौर्या से हम अब तक विजय श्री का दामन चूम चुके होंगे... पर हमें जाने क्या क्या बताया जा रहा है.. पिता श्री और माता श्री हमारे सामने नही आ रहे.. वो अंशुमन कहता है.. कि चंद्रभान.. मेरा चंद्रभान... तू बता ना.. पूरी बात.. हमें बाहर भी निकलने नही दिया जा रहा... बता ना सखी.. मेरा चंद्रभान.. और कितना इंतजार करवाएगा...? और कितना तडपाएगा हमें.. अपने दर्शन देने से पहले...!"

रंभा की नज़रें झुक गयी.. एक लंबी सी आ टीस बनकर उसके सीने से निकली.. राजकुमारी की हालत देख कर वह रो भी नही पाई...," आप यहाँ से निकलो राजकुमारी.. अपने कपड़े मुझे दो!"

"नही.. हमे तेरे मुँह से पूरी बात सुने बगैर चैन नही आएगा.. और चंद्रभान के आए बगैर हम यहाँ से जाने वाले नही हैं... उन्होने हमें इंतजार करने को कहा था... तू पूरी बात बता ना... जितनी खूबसूरती से तू उनकी बहादुरी की व्याख्या करती है.. और कोई नही कर सकता... तू जल्दी से हमें सब सच सच सुना दे.. अगर पिताश्री को पता चल गया कि तू आई है.. तो वो तुझे यहाँ नही रहने देंगे..."

रंभा के चेहरे पर मौत से भी भयावह सन्नाटा पसरा हुआ था," राजकुमारी जी.. युद्ध में चंद्रभान को परास्त करना शायद खुद देवताओं के वश में भी नही होता.. चंद्रभान युद्धभू..."

रंभा को राजकुमारी ने बीच में ही टोक दिया.. उत्साहपूर्ण निगाहों से उसको देखती हुई उसके पास सरक कर वह बोली..," आ सखी.. 'मेरा चंद्रभान' बोल के बता ना! हमें बड़ा प्यारा लगता है जब तू ऐसे बोलती है..."

रंभा की आँखों से आँसू थम ही नही रहे थे.. पर प्रेम पीपसी दुर्गावती इस आँसुओं का अर्थ नही समझ पा रही थी..," हां राजकुमारी जी.. आपका चंद्रभान पूरी रणभूमि में..... ऐसे छाया हुआ था .....जैसे...... सारी दुश्मन सेना को वो 'वीर' अकेला ही स्वाहा कर देगा.. गगन में एक सुर्य के समान अकेला ही 'चंद्रभान' दुश्मन सेना का कलेजा चीरता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था.. किसी में उसका सामना करने की हिम्मत नही थी...

मूर्ख अरुण सेन अपनी सेना में मची भगदड़ को देख बिलबिरंभा हुआ चंद्रभान के सामने आ गया," क्यू रे? एक 'खेल' में विजयी क्या हो गया.. तूने तो बड़े बड़े खवाब देखने आरंभ कर दिए... युद्ध में आकर 'अरुण सेन' को ललकारने की जुर्रत तुझ जैसा कोई 'मूर्ख' ही कर सकता है... हमारी सेना को छिन्न भिन्न करके तू ये मत समझना कि तू 'योद्धा' हो गया है.. युद्ध में तो हमारे सामने तू नादान ही है.. 'मूर्ख' समझ कर मैं तुझे यह बता देना चाहता हूँ की मेरी लड़ाई तेरे राज्य के खिलाफ नही है... हमारा लक्ष्या सिर्फ़ राजकुमारी को हासिल करना है... और अगर तू हमारे रास्ते से हटकर अपनी जान बचाना चाहे तो हम तुम्हे अभयदान दे सकते हैं... जा 'चला' जा!"

"आपके चंद्रभान के चेहरे पर आत्मविश्वास से भरी मुस्कान तेर उठी..,"मेरी तरफ से दी गयी ये आख़िरी चेतावनी समझना राजकुमार... मैं भी आपका राज्य जीतने नही.. अपने राज्य की 'आन' जीतने के लिए यहाँ आया हूँ... मेरी तुमसे या युद्ध में हमारे खिलाफ लड़ रहे किसी सैनिक से कोई दुश्मनी नही है.... तुम्हारी सेना भाग रही है.. और तुम देख रहे हो कि हमारी सेना किसी की पीठ पर वार नही कर रही....तुम्हारे पास भी मौका है... तुम अभी भी वापस जा सकते हो.. !"

"अपनी हार सामने जान कर बौखलाया हुआ अरुण सेन चंद्रभान की ओर लपका.. और पलक झपकते ही चंद्रभान की सनसनाती हुई तलवार हवा में द्रुत गति से लहराई .. अभिषेक दिग्भ्रमित सा हो गया.. पगलाया हुआ सा वह अपने आपको बेबस सा जान कर

हवा में यूँही वार पर वार करने लगा.. जैसे ही वा चंद्रभान के नज़दीक आया.. उनकी तलवार लहराई और अरुण सेन का सिर उनके धड़ से दूर जा गिरा...." अरुण सेन

"उसके बाद तो बचे हुए सैनिक भी मैदान छोड़ कर भागने लगे.. और मैदान खाली होने से स्वत ही महाराज देवद्रत का सामना आपके चंद्रभान से हो गया.. महाराज ने एक बार चंद्रभान की 'खून' से सनी तलवार की ओर देखा और फिर चंद्रभान के 'रौद्रा' रूप धारण किए हुए चेहरे को.. अचानक उनकी नज़र नज़दीक ही अरुण सेन के 'सिर' कटे धड़ पर पड़ी और भय से वह काँपने सा लगा... अगले ही पल उसने 'सारथि' को उल्टी दिशा में भागने को बोल दिया... तभी किसी ने चंद्रभान को सूचना दी कि महाराज रुद्रयादव घायल हो गये हैं...

चंद्रभान सब कुछ छोड़ कर तुरंत महाराज के पास पहुँचे ही थे कि पूर्वा सेनापति 'अंशुमन' उनके सामने आकर क्षमा याचना करते हुए अपने प्राणो की भीख माँगने लगा....

"सेनापति चंद्रभान! हमें अच्छी तरह मालूम है कि हमारा गुनाह-ए-गद्दारी किसी सूरत में 'सज़ा-ए-मौत' से कम के लायक नही है.. फिर भी.. मैं आपके चरनो में गिरकर प्राण-रक्षा की भिक्षा माँगता हूँ.. मुझे अभयदान दें.." उसने अपने घोड़े से उतर कर चंद्रभान के चरण पकड़ लिए....

"माफी तुम्हे राज्य से माँगनी चाहिए अंशुमन.. मैं तो महाराज की ओजस्वी सेना का एक साधारण सा सैनिक हूँ.. और अपने राज्य का एक देशभक्त नागरिक.. तुम देश द्रोही हो.. राज्य ही तुम्हारे बारे में फ़ैसला करेगा..." चंद्रभान ने बेहोश पड़े महाराज को उठाने की कोशिश करते हुए कहा...

"तब भी.. मैं यहीं पश्चाताप करना चाहता हूँ सेनापति! मुझे आदेश दीजिए..." कुंवर चंद्रभान के चरणों में नतमस्तक सा हो चला था...

"हम्मम.. आप खुद सेना के सेनापति रहे हैं अंशुमन जी.. आपको आज्ञा लेने की आवश्यकता क्या है? दुश्मन सेना भाग रही है.. मुश्किल से 'वो' अपनी सेना के आधे ही अब बचे हैं.. आप जाकर सेना को संभालिए... मैं महाराज को राजमहल छोड़ कर आता हूँ..." कहकर चंद्रभान जैसे ही महाराज को संभालने के लिए मुड़ा.. कायर और कपटी 'अंशुमन' ने चंद्रभान की पीठ में खंजर भोंक दिया...

"अया...." राजकुमारी ने ऐसी प्रतिक्रिया दी जैसे खंजर चंद्रभान की नही.. उनकी पीठ में भोंका गया हो..," हां.. हमने देखा था उनका घाव... फिर क्या हुआ रंभा?" राजकुमारी असहाया सी होकर तड़प उठी....

"वो मामूली घाव नही था राजकुमारी.. उनके शरीर के आर पार हो गया था.. शायद उनको उसी वक़्त अहसास हो गया था की...." रंभा आगे ना बोल सकी...

"क्क्या.. बकवास कर रही है तू.. क्या अहसास हो गया था उनको.. ? मुझे तुझसे ये उम्मीद नही थी.. तू भी पिता श्री के दिए लालच में आख़िर आ ही गयी.... मैने कभी ना सोचा था कि चंद स्वर्ण मुद्राओं के लालच में तू भी मुझे दिग्भ्रमित करेगी.. मेरे चंद्रभान से मुझे दूर करने के लिए...." राजकुमारी विचलित और क्रोधित होते हुए बोली....

रंभा कुछ नही बोली.. बस उसकी आँखों से दो आँसू लुढ़क कर दुर्गावती की हथेली पर जा गिरे...

"हमें डराना चाहती है ना.. चंद्रभान आने ही वाला है ना.. देख... देख.. तू जल्दी से बोल दे.. वरना हम... हम महाराज से तेरी शिकायत करेंगे... हम... चंद्रभान को भी बता देंगे......"

"रंभा...! तू बोलती क्यू नही.. क्या हो गया है तुझे....?" दुर्गावती अचानक चिल्ला उठी....

"अब... अब बोलने को रह ही क्या गया है राजकुमारी... महाराज... नही रहे.. राजकुमार नही रहे... कुमार दीक्षित का पता नही चल रहा....महारानी ने ..... आत्मदाह कर लिया... " रंभा के आँसू थमने का नाम नही ले रहे थे.... वह बीच बीच में सिसकियाँ सी लेकर बोल रही थी,"चंद्रभान...."

"नही.. नही... चंद्रभान के बारे में हम तेरी कोई बकवास नही सुनेंगे... चंद्रभान को कोई नही हरा सकता... चंद्रभान को हमसे कोई नही छीन सकता.. चंद्रभान सिर्फ़ हमारा है... पिता श्री नही रहे तो क्या हुआ? अब चंद्रभान ही इस राज्य के राजा हैं... आने दो चंद्रभान को.. हम तेरी शिकायत उनसे करेंगे... " बोलते बोलते राजकुमारी थक गयी और कुछ रुक कर फिर बोलने लगी..,

" बता दे ना सखी.. तू हमें तडपा क्यू रही है.. अभी तो तू हमारे चंद्रभान के अद्वितीया शौर्या के बारे में सुना रही थी.. तू बता रही थी ना.. चंद्रभान युद्ध भूमि में इस तरह छाया हुआ था, मानो.. मानो सारी दुश्मन सेना को अकेले ही स्वाहा कर देगा.. तू ही बता रही थी ना कि कैसे दुश्मन देश का राजा उनके सामने आने से कतरा रहा था... और चंद्रभान के सामने आते ही भाग खड़ा हुआ था.... तूने ही तो बताया था कि दुष्ट अभिषेक का सिर किस तरह हमारे चंद्रभान के एक ही वार में कई गज दूर जाकर गिरा था.... चंद्रभान तो अपराजय है ना सखी... तू ही तो कल बता रही थी... उनका कोई कैसे सामना कर सकता है.. उनको कोई कैसे मार.....
नहियीईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई"

"संभलो.. अपने आपको.. राजकुमारी! सबसे पहले यहाँ से निकलो आप.. वो दुष्ट देवद्रत अब आपको अपनी रानी बनाने की लालसा लिए हुए है... आप यहाँ से निकलो जल्दी.." रंभा भी उसके साथ ही रो रही थी....

"हमारा विवाह तो हो चुका है रंभा... जनम जनम के लिए.. हमारे चंद्रभान के साथ! सुना है कि इस जीवन के उस पार भी जीवन होता है.. अगर ऐसा सच है तो चंद्रभान वहाँ हमारा इंतज़ार कर रहा होगा... मेरा तो कब से सब कुछ उनका हो चुका है रंभा! अगर वो अब इस दुनिया में नही हैं, तो मेरे प्राण अभी तक मेरे शरीर में कैसे हैं.. नही नही... तू झूठ बोल रही है.. वो अभी यहीं हैं.. ये देख.. उन्होने खुद को 'हमारे' हवाले कर दिया था..." दुर्गावती अपने गले से 'चंद्रभान' का दिया हुआ ताबीज़ निकलते हुए बोली...," ये देख.. ये रहा मेरा चंद्रभान.. चंद्रभान ने भगवान को अपना सब कुछ देकर हमें माँग लिया था... भगवान ऐसा निष्ठुर कैसे हो सकता है रंभा... भगवान हमें अलग अलग कैसे रख सकता है... कह दे की सब कुछ झूठ है.. कह दे ना सखी..." दुर्गावती के आलाप से राजमहल की दीवारें भी मानो भरभरा सी गयी हों.. उसका क्रंदान दूर दूर तक सुनाई पड़ रहा था....

तभी शयन कक्ष में अंशुमन ने तालियाँ बजाते हुए प्रवेश किया," वाह! क्या प्रेम है..? मृत्यु जैसे शाश्वत सत्य को भी स्वीकारने से इनकार कर रहा है प्यार! वाह..! तो 'ये है तुम्हारा चंद्रभान!"

अंशुमन ने पास आकर दुर्गावती के हाथों से ताबीज़ लगभग छीन ही लिया.....

"इसको अपने पापी हाथों से छू मत दरिंदे.. वरना इसके तेज की अग्नि से भस्म होते तुझे देर ना लगेगी... 'मेरा' चंद्रभान मुझे वापस कर.. मेरा चंद्रभान मुझे लौटा दे..." राजकुमारी

उससे ताबीज़ छीन'ने के प्रयास में जैसे ही शैया से उठी.. ज़मीन पर गिर गयी.. जान जैसे बची ही ना थी.. उसके शरीर में.. सिर्फ़ चंद आहें बची थी.. जो रह रह कर अपने 'चंद्रभान' को पुकार रही थी....

"अच्छा? ज़रा देखें 'तुम्हारे' चंद्रभान के 'तेज' की अग्नि को... देखें कितनी उष्मा सहन कर पता है ये....?" अट्टहास सा करता हुआ अंशुमन रसोई गृह की तरफ चल दिया जहाँ कल के सार्वजनिक शाही भोज के लिए एक विशालकाय भट्टी तैयार की गयी थी... दुर्गावती गिरते पड़ते उसके पिछे पिछे जा रही थी....

"ये ले! उष्मा को उष्मा में स्वाहा कर दिया... अब तो ये मुझे भस्म नही करेगा ना.. हा हा हा....." अंशुमन ने ताबीज़ को भट्टी में फैंक दिया...

पर दुर्गावती को तो जैसे उसकी बातों से सरोकार ही नही था.. उसका लक्ष तो सिर्फ़ 'उसका चंद्रभान था.. बाकी तो उसको कुछ दिखाई दे ही नही रहा था.. अब उसको भी चंद्रभान तक जाने का रास्ता मिल गया था... अब उसके कदम ना लड़खड़ाए.. ना डगमगाए.. और वो सीधी भट्टी में प्रवेश कर गयी..... स्वाहा!!!

अचानक ही रसोई गृह धधक कर चीत्कार उठी अग्नि की लपटों से दाहक उठा...

तनवी के पल पल रंग बदल रहे चेहरे पर अब अचानक अजीब सी शांति छा गयी थी.. रसोई गृह में लपटें शांत होने पर उसको भट्टी के बाहर भस्म हो चुकी एक लाश दिखाई दी.. अंशुमन की...!!!

# ४५

कुछ देर यूँही शांत लेटी रहने के बाद तनवी ने आँखें खोल दी.. सामने बैठा प्रतिक कब से उसके आँखें खोलने का इंतजार कर रहा था.. उसके आश्चर्य का ठिकाना ना रहा जब तनवी आँखें खोलने के बाद नम आँखों से उसकी और निरंतर देखती रही.. दर्दनाक सपने से लौट कर आई उसकी गीली आँखों में उतनी पीड़ा नही थी.. जितनी राजकुमारी दुर्गावती के रूप में कुछ देर पहले ही उसने महसूस की थी.. आख़िरकार दुर्गावती का चंद्रभान लौट आया था.. भगवान को उनके अनोखे प्यार की खातिर झुकना ही पड़ा.. और अब इस जनम में उनके मिलन में कोई बाधा शेष नही थी.... शायद!!!

"ऐसे क्या देख रही हो तनवी? हम एक घंटे से तुम्हारे जागने का इंतजार कर रहे हैं.. कुछ याद आया कि नही?" निहारिका ने उसको पकड़ कर हिला दिया...

"मुझे टीले पर जाना है!" तनवी बैठ गयी.. पर अब भी उसकी नज़रें प्रतिक पर ही जमी हुई थी...

"हां.. हां.. चलो! हमने कब मना किया है?" धीरज खुश होकर बोला...

"नही.. हम दोनो अकेले ही जाएँगे.. तुम यहीं रहना प्लीज़!" तनवी ने धीरज की ओर देख कर कहा....

"मैं नही जाऊंगी.. तेरे साथ अकेले टीले पर.. मुझे तो प्रतिक के मुँह से वहाँ की कहानी सुनते हुए ही डर लग रहा था.. हम दोनो लड़कियाँ हैं यार..." निहारिका ने तुनक कर कहा....

"मैं तुझे नही बोल रही निहारिका... मैं और चंद्रभान...स्स्सोररी... प्रतिक वहाँ जाएँगे.... सिर्फ़ हम दोनो!" प्रतिक को चंद्रभान कहने की भूल करने के बाद तनवी झिझक सी गयी और बाकी की बात उसने नज़रें झुका कर पूरी की....

तनवी के 'चंद्रभान' कहते ही वहाँ बैठे तीनों की नज़रें आपस में मिलकर चमक उठी.. खुश होकर निहारिका ने तनवी को अपनी बाहों में भर लिया.. तनवी नज़ाकत से मुस्कुराइ और शर्मकार दूसरी तरफ चेहरा कर लिया....

"मुबारक हो चंद्रभान साहब! आख़िर आपको भाभी जी मिल ही गयी.." धीरज ने प्रतिक को छेड़ते हुए उसका गाल पकड़ कर खींच लिया..

"क्या है यार?" प्रतिक उपरी मंन से गुस्सा दिखता हुआ बोला और फिर हँसने लगा.. दिल को मिले इस बेपनाह सुकून को भला कब तक छिपाता...

"क्या है? अबे लल्लू तेरा ब्याह है.. अब तो.. और क्या रह गया अब..? " धीरज खुश होकर बोला....

तनवी से ज़्यादा देर प्रतिक से नज़रें मिलाए बिना रहा ना गया.. वह फिर से सीधी होकर रह रह कर प्रतिक को देखने लगी...

"लेकिन भाभ.. सॉरी..." धीरज अपनी बात अधूरी छोड़ कर तनवी की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगा.. तनवी ने दो पल उसको घूर कर देखा और फिर खिलखिला कर हंस पड़ी... उसके हंसते ही मानो माहौल में मोती से बिखर गये हों.. सभी धीरज की और देख कर हँसने लगे...

"मतलब.. अब लाइन क्लियर है.. भाभी जी बोल सकता हूँ ना आपको..?" धीरज ने भी कह कर दाँत निकल दिए....

"हम्म.." तनवी ने इतना ही कहा और नज़रों को शरारती अंदाज में सिकोड कर प्रतिक की और देखने लगी," इनसे पूछ लो!"

"ये तो कब का इसी फिराक़ में धक्के खा रहा है भाभी जी.. इससे क्या पूछना.. पर अब टीले पर जाकर करना क्या है..? और आप अकेले क्यू जाओगे.. मैं भी चलूँगा.. मैं नही मानने वाला इस बार!" धीरज ने पहले तनवी को और फिर प्रतिक को देख कर कहा...

"नही.. जाना तो पड़ेगा ही.. प्रतिक के सपने में दुर्गावती ने क्या कहा है.. याद नही क्या?" तनवी ने सवाल किया....

"हां यार.. मेरी बेहन का दिल तो वहीं पर है.. यही बात है ना?" निहारिका ने तनवी से पूछा....

"ओह्ह हां.. पर अकेले क्यू? मैं भी साथ चलूँगा...!" धीरज ने कहा..

"पर पापा को इस बारे में पता नही चलना चाहिए कि हम टीले पर जा रहे हैं... वो हमें वहाँ नही जाने देंगे.. अकेले तो बिल्कुल भी नही.. मैं अपने आप उनको कुछ कह दूँगा.. तुम सब ध्यान रखना.. उनको खबर नही होनी चाहिए..." प्रतिक ने सबको चेतावनी दी....

"ठीक है यार.. देख लेंगे.. पर तनवी तुम पूरी कहानी सूनाओ ना.. मैं कब से सुनने को बेकरार हूँ....!" निहारिका मचल कर बोली...

"हां हां.. भाभी जी.. जो कुछ आपको याद आया है.. सब सूनाओ..!" धीरज ने कहा...

"सब कुछ याआद आ गया है.. बीच में मत बोलना!" तनवी ने कहा और सब शांत हो गये....

तनवी ने उनको चंद्रभान को पहली बार देखने से लेकर कहानी सुनानी शुरू कर दी....

सपने की कहानी पूरी होने के बाद काफ़ी देर तक चारों सन्न होकर बैठे रहे.. किसी की समझ में नही आ रहा था कि कैसी प्रतिक्रिया दें... प्रतिक को तो विश्वास ही नही हो रहा था कि वह कभी 'चंद्रभान' रहा होगा...

"कब चलें टीले पर..?" धीरज तनवी के चुप होने के बाद बोलने वालों में सबसे पहला था...

"तुम नही जा रहे हो! सिर्फ़ हम दोनो जाएँगे वहाँ.." तनवी ने ज़ोर देकर कहा...

"पर मैं क्यू नही भाभी जी? मुझे भी चलना है.. मैं भी देखूँगा कि आपको सब याद आ जाएगा तो आप क्या करोगे?" धीरज ने मचलते हुए कहा तो प्रतिक ने उसकी और घूर कर देखा.. शायद ग़लत मतलब निकल लिया था उसकी बात का...

"पर किसी ना किसी को तो लेकर जाना ही पड़ेगा... वैसे भी वहाँ रात को जाना है.. हमारा अकेले चलना ठीक नही है..." प्रतिक ने धीरज की बात का समर्थन किया...

"हां.. यही तो मैं कह रहा हूँ.." धीरज ने अपनी टाँग फँसाई...

"ओके.. तो फिर चारों चलते हैं... पर तुम दोनो टीले के पास बाहर खड़े हो जाना.. अंदर तो हम अकेले ही जाएँगे...." तनवी ने उनकी बात मान ही ली....

"तो आज ही चलें क्या? " धीरज ने खुश होकर कहा...

"और क्या? चलना है तो आज ही चलो.. फिर हमें वापस भी तो जाना है..." निहारिका ने भी धीरज की बात का समर्थन करते हुए कहा...

"हम्मम.. ठीक है.. मैं पापा को फोन करके गाड़ी मंगवा लेता हूँ.. उनको मैं यही बोलूँगा कि हम दोस्त के पास जा रहे हैं.. !"

# ४६

"क्या हुआ तुम्हे.. डर लग रहा है क्या? अभी तो गाँव में ही है यार.. तू ऐसा करेगा तो हमारा क्या हाल होगा..." धीरज ने प्रतिक की आँखों में आँसू देख कर पूछा...

प्रतिक ने कोई जवाब नही दिया.. वो उस वक़्त गीता के घर के सामने से गुज़रे थे... घर का बंद दरवाजा देख प्रतिक की आँखें नम हो गयी थी... गीता का मासूम चेहरा उसकी आँखों के सामने घूम गया था.. बेचारी!!!

"क्या हुआ?" पीछे बैठी तनवी ने धीरज की बात सुनकर कहा...

"कुछ नही.. वो.." प्रतिक ने रुक कर एक लंबी साँस ली," पीछे वाला घर गीता का था..."

"कौनसा?" तीनो ने एकदम पलट कर पिछे देखने की कोशिश की..," ये.. जो अभी गया है.. अकेला सा घर..!" निहारिका ने पूछा...

"हां!"

"हमें चलना चाहिए था वहाँ..." तनवी ने कहा...

"दिल तो मेरा भी कर रहा है.. पर हिम्मत नही हो रही..!" प्रतिक ने जवाब दिया...

"तुम तो पागल हो यार.. जो भी हुआ.. उसमें हमारी क्या ग़लती है...? फिर उसके बापू से मिलकर आना उसको अच्छा ही लगता..." धीरज ने कहा...

"हां.. हां.. चलो.. एक बार हो आते हैं..!" निहारिका ने कहा....

"अभी तो ग्यारह बजने वाले हैं.. आगे गाड़ी नही जाएगी.. पैदल चलने में घंटा भर लग जाएगा.. १२ बजे तक वहाँ पहुँचना है हमें... आते हुए देख लेंगे...!" प्रतिक ने कहा और गाड़ी चलाता रहा...

"क्या? इस सुनसान रास्ते पर पैदल चलना पड़ेगा? वो भी इतनी रात में..?" निहारिका सिहर सी गयी," मुझे तो तुम वहीं उतार देते.. गीता के घर..!"

"हा हा हा हा.. अब क्या हो गया...?" धीरज ने मज़ाक किया...

"तुम्हे कुछ कहा है मैने? अपना मुँह सीधा रखो..." निहारिका खिज कर बोली....

"कम से कम यहाँ तो मान जाओ! तुम्हारी तो कुत्ते बिल्ली जैसी दोस्ती है..." तनवी ने बीच बचाव करने की कोशिश की....

"हे हे हे... धीरज को कुत्ता बोला..." निहारिका ठहाका लगा कर हँसने लगी....

"नही.. नही.. मैने ये नही बोला.. मेरा ये मतलब नही था..." तनवी हड़बड़ा कर सफाई देने लगी....

"कोई बात नही भाभी जी.. यहाँ सब चरंभा है.. पर इसको बिल्ली की जगह कोई बढ़िया सा नाम देना चाहिए था.... जैसे छिपकली.. हा हा हा!"

"लो.. गाड़ी यहीं खड़ी करनी पड़ेगी.. आगे पैदल ही चलना है... टॉर्च लाया है ना?" प्रतिक ने गाड़ी को साइड में खड़ा करते हुए धीरज से पूछा....

"हां.. लाया हूँ..." धीरज ने कहा और सब गाड़ी से उतर गये....

रास्ता पिछली बार की तरह ही डरावना, बेढंगा और सुनसान था.. पर जाने क्यू प्रतिक को आज डर नही लग रहा था.. शायद वह खुद को आज चंद्रभान के रूप में ही देखना और दिखाना चाह रहा था... या फिर तनवी के साथ होने से उसको मानसिक मजबूती सी मिल रही थी... तनवी भी उसके पीछे पीछे ध्यान से चल रही थी.. तनवी के पीछे निहारिका और सबसे लास्ट में टॉर्च को हाथ में लिए धीरज था...

"इतनी तेज मत चल यार.. मैं पिछे रह जाती हूँ..." निहारिका ने तनवी का कमीज़ पकड़ कर खींच लिया....

"मैं क्या करूँ? यही भागा जा रहा है..." तनवी ने उसके साथ होकर कहा...

"ए भाई.. ज़रा आराम से चल ले... मैं पिछे रह गया तो वापस भाग जाऊंगा.. पहले बता रहा हूँ..." धीरज ने तनवी की बात सुनकर कहा....

"बोलो मत यार.. चुपचाप चलते रहो... हमें १२ बजे से पहले ही पहुँच लेना चाहिए..." प्रतिक ने अपनी चल धीमी नही की....

"बोलो मत बोल रहा है.. यहाँ मेरी जान सूख रही है.. किसी ने पिछे खींच लिया तो.. तुम तो समझोगे मैं वापस भाग गया... मैं गुम हो जाऊ तो मुझे ढूँढ लेना भाई... मुझे लग रहा है कि मेरे पिछे पिछे कोई चल रहा है...!" धीरज ने चलते चलते कहा...

"आईईईईईईईईईई..." निहारिका अचानक चीख कर तनवी से लिपट गयी....

सब अचानक चौंक कर खड़े हो गये," क्या हुआ निहारिका?" तनवी ने उसको संभालते हुए पूछा....

"कुछ नही... ये खंज़्वाह डरा क्यू रहा है मुझे..." निहारिका रुनवासी सी होकर बोली....

"लो.. आगे पिछे मैं ही हूँ तुम्हे कोसने को.. मैने क्या किया है..." धीरज ने पूछा...

"ये... ऐसे क्यू बोल रहा है कि इसके पिछे कोई है.. मेरी तो जान ही निकल गयी थी.." निहारिका ने धीरज के सवाल का जवाब तनवी को दिया... अब की बार उसने तनवी का हाथ नही छोड़ा....

" क्यू नही बोलूं? किसी ने कहा था क्या साथ आने को...? मुझे तो लग रहा है... ऐसे भी लग रहा है जैसे कोई मेरा कॉलर पकड़ कर खींच रहा है... और झाड़ियों में से बड़ी बड़ी आँखें भी चमकती हुई दिखाई दे रही हैं... तू तो गयी आज!" धीरज ने चटखारा लेकर कहा.... निहारिका ने एक बार फिर डर कर तनवी को कसकर पकड़ लिया...

"नही.. मुझे नही चलना आगे.. वापस चलो.. मुझे छोड़ कर आ जाना.." निहारिका सहम सी गयी थी...

"क्यू बकवास कर रहा है यार... अब तो पहुँच ही गये... वो देखो लाइट जल रही है..." प्रतिक ने हाथ से इशारा किया.. तभी अचानक तनवी चक्कर खा कर गिरने को हो गयी...

"क्क्या हुआ.. अक्षरा...? ये.. अक्षरा को क्या हो गया?" उसको अपनी बाहों में संभाल कर निहारिका डर के मारे रोने लगी....

"कुछ नही.. यूँही चक्कर सा आ गया था..." तनवी अपने माथे पर हाथ लगाकर बोली.. और फिर से खड़ी होकर रोशनी की और देखने लगी...," तुम यहीं रुक जाओ.. आगे हम अकेले जाएँगे.."

"नही.. मैं यहाँ नही रहूंगी.. इसके साथ तो बिल्कुल भी नही.. ये तो मुझे डरा डरा कर ही मार देगा....!" निहारिका ने धीरज की और अंधेरे में घूर कर कहा...

"पर ये क्यू नही चल सकते... मुझे तो... चलो ठीक है... धीरज भाई.. क्या कर रहा है यार.. ये कोई मज़ाक का टाइम है?" प्रतिक ने धीरज की ओर देख कर कहा....

"चलो ठीक है.. मैं कुछ नही कहूँगा.. पर अगर यहाँ पिछे से कोई आ गया तो....." धीरज ने कहा....

"देख लो.. देख लो इसको.. मैं इसके पास नही रहूंगी.. इससे अच्छा तो इसको भी ले जाओ अपने साथ.. मैं अकेली ही रह लूँगी....

"प्लीज़ धीरज! मान जाओ ना..." तनवी ने प्यार से कहा तो धीरज ने तुरंत अपनी दूम सीधी कर ली. ठीक है भाभी जी... आप लोग जाओ.. मैं इसकी अपनी जान से भी ज़्यादा हिफ़ाज़त करूँगा...."

तनवी मुस्कुरा दी... और फिर प्रतिक की और देख कर बोली...," चलो!"

धीरज और निहारिका को वहीं छोड़ कर वो दोनो आगे बढ़ गये......

"क्या हुआ? आप चुप क्यू हो?" तनवी ने चलते चलते प्रतिक को टोका...

"आ.. नही.. कुछ नही.. आगे कीचड़ है.. इसीलिए संभाल कर चल रहा हूँ..." प्रतिक ने तनवी के टोकने पर कहा.. ये पहली बार था जब वो दोनो अकेले थे.. और कोई नही था उनके साथ...

"नही आएगा.. आप आराम से चलते रहो!" तनवी ने चहकते हुए कहा...

"तुम्हे नही पता.. पिछली बार हमारी पैंट घुटनो तक कीचड़ में सन गयी थी... एक बात पूछूं...?" प्रतिक ने कहा...

"हम्मम.. कुछ भी पूछो.." तनवी उसी अंदाज में बोली...

"तुम्हे सच में डर नही लग रहा या तुम डर को छिपा रही हो...?" प्रतिक ने सवाल किया...

"नही.. डर नही लग रहा.. हमें डर क्यू लगेगा?" तनवी ने कहा...

" इतनी रात में हम यहाँ सुनसान रास्ते पर चल रहे हैं... तुम वैसे भी लड़की हो.. डर लगना तो लाजिमी है... अरे.. कीचड़ सच में नही मिला.. हम तालाब के पार पहुँच गये.." प्रतिक ने हैरत से कहा और अचानक उसको कुछ ध्यान आया..

वा तुरंत पिछे पलट कर खड़ा हो गया.. उसके रुकते ही तनवी भी एकदम वहीं खड़ी हो गयी...

"क्क्कऔन हो तुम?" प्रतिक उसको ग़ौर से देखता हुआ एक कदम पिछे हट गया...

तनवी मुस्कुराने लगी..," हम तनवी हैं.. और कौन? चलो भी अब!"

"नही.. क्कौनसी वाली तनवी? सच बताओ प्लीज़..." प्रतिक उसके मुँह से दो बार अपने लिए 'हम' शब्द सुन चुका था.. पहले तो तनवी ऐसे नही बोलती थी कभी... और उसने ये भी बता दिया कि कीचड़ नही मिलेगा... उसको अहसास हुआ शायद वो तनवी नही बल्कि 'दुर्गावती' है....

तनवी कुछ देर यूँही खड़ी मुस्कुराती रही फिर अचानक वह आगे बढ़ कर प्रतिक से लिपट गयी," हम आपकी तनवी हैं जान.. चंद्रभान की दुर्गावती... और कौन?"

"नही... मतलब.. तुम.. आइ मीन.. तुम इस जनम वाली तनवी हो या.. दुर्गावती.." प्रतिक तनवी की इस हरकत से एकदम हड़बड़ा सा गया....

तनवी प्रतिक से यूँही लिपटी खड़ी रही.. उसने प्रतिक के सवाल का जवाब कुछ यूँ दिया," आप कैसे समझोगे..सदियों बाद मिले हो आप... कितने तडपे हैं आपके लिए.. कैसे बतायें...? क्या क्या नही किया! कहाँ कहाँ नही ढूँढा आपको! इस दुनिया के भी नियम तोड़े और उस दुनिया के भी... पर देख लो जान.. आख़िरकार हम आपके हो कर ही रहे.. हमने कहा था ना..आपके रहेंगे जनम जनम..! आपके ही रहे... हर जनम.. आपके सिवाय किसी के बारे में सोचा तक नही.. प्यार क्या होता है? मेरे शरीर ने जाना तक नही कभी... हमारा दिल यहीं तड़पता रहा.. आपके लिए.. यहाँ.. इस तन्हा वीराने में.. " बोलते हुए तनवी फफक फफक कर रोने लगी...

प्रतिक का गला भर आया.. उसने झिझकते हुए तनवी को अपनी बाहों में भर लिया...," आइ लव यू जान!" उसने तनवी को कसकर अपनी बाहों में भींच लिया...," ये सब तुम्हारे ही प्यार की वजह से हो पाया... मुझे तो कुछ याद ही नही था.. हां.. सब कहते थे.. तुम खोए खोए से लगते हो.. पर.. मैं.. मुझे कभी अहसास नही था कि मेरा क्या गुम हो रखा है.... हां.. ऐसा लगता था कि कुछ ढूँढ रहा है मंन... आज जाकर मंन शांत हुआ है..."

दोनो ना जाने कितनी देर यूँही खड़े रहे.. खामोश... अब सिर्फ़ उनके दिल धड़क रहे थे.. साँसें बात कर रही थी.... और वक़्त मानो वहीं ठहर सा गया था...

"अब क्या करें? " प्रतिक ने कुछ देर बाद चुप्पी तोड़ी...

"कुछ मत बोलो अभी.. हमें सदियों बाद ऐसा सुकून मिला है.. इस लम्हे को अपनी साँसों में समेट लेने दो..." तनवी प्रतिक से यूँही चिपकी खड़ी रही...

कुछ देर बाद वह नज़रें झुकाए उससे दूर हटकर खड़ी हो गयी.. सिर्फ़ थोड़ी सी दूर...

"वापस चलें क्या?" प्रतिक ने पूछा...

"नही.. वो लॉकेट लाना है.. जो आप मुझे पहना कर गये थे.. इसीलिए तो आपको यहाँ बुलाया था...." तनवी ने जवाब दिया....

"पर.. तुम तो.. मतलब तनवी ने सपने में देखा था कि लॉकेट उस.. अंशुमन ने भट्टी में फैंक दिया था.. वो जला नही क्या?" प्रतिक ने पूछा...

"नही.. वो जल जाता तो हम यहाँ किसके सहारे रहते... वो तो सदियों से यूँही आसमान के सितारे की भाँति दमक रहा है... वो देखो.." तनवी ने रोशनी की ओर इशारा किया...

"क्या? वो.. लॉकेट है? वो तो किसी बल्ब की भाँति चमक रहा है.. और वो जगह तो हमें कभी मिली ही नही.... हमने उस दिन कितना ढूँढा था उसको...!" प्रतिक आश्चर्य से रोशनी की तरफ देखता हुआ बोला.....

"मिल जाएगा आज.. हम आपके साथ हैं ना.. चलो तो सही..." तनवी ने उसकी बाँह पकड़ी और आगे बढ़ गयी.....

उन्ही अंजानी सी गलियों से आगे बढ़ते हुए वो रोशनी की तरफ कुछ कदम आगे बढ़े थे कि प्रतिक को वही बच्चा खुशी से उछलता आता दिखाई दिया...

"दीदी.. मुझे ले चलो ना साथ!" उसने कहा और पास आकर खड़ा हो गया... उसके चेहरे पर वैसी ही मासूमियत थी.. वैसा ही सूनापन....

"ये कुमार था.. हमारा छोटा भाई.. आज इसकी मुक्ति का समय आ गया है... इसका हाथ पकड़ लो.. और दूसरे हाथ से मेरा हाथ थामे रहो..." तनवी ने कहा...

प्रतिक ने अचरज से उसकी और देखते हुए खुश होकर अपना हाथ उसकी और बढ़ा दिया... बच्चा भाग कर आया और प्रतिक से बोला," चलो.. आप भी हमारे साथ रहोगे क्या?"

प्रतिक मुस्कुरा दिया.. उसको अब लेशमात्रा का भी डर नही लग रहा था...," हाथ पकड़ लो मेरा....!"

"पकड़ा हुआ है इसने.." तनवी ने कहा और चलती रही...

पीपल के उस पेड़ तक पहुँचने में आज उनको उतना ही टाइम लगा जितना विपिन को दिन में आने पर उसके पास जाने में लगा था... प्रतिक आश्चर्य से पीपल की एक उँची शाखा पर किसी तारे की तरह चमक रहे लॉकेट को देखने लगा कि अचानक चौंक पड़ा..," वो.. बच्चा कहाँ गया... सॉरी.. तुम्हारा भाई..."

तनवी मुस्कुरकर बोली," चला गया वो.. उसको रास्ता मिल गया.. इस जहाँ से रुखसत होने का.. कितने सालों से भटक रहा था बेचारा... " तनवी आँखों से आँसू पोंछते हुए बोली...," जाओ.. उस लॉकेट को उतार कर ले आओ अब!"

"हम्मम. अभी चढ़ता हूँ..." प्रतिक का उत्साह देखते ही बन रहा था... वह बिना डरे पीपल के पेड़ पर चढ़ा और लॉकेट के पास जाकर उसको निहारने लगा... लॉकेट किसी हीरे की तरह लग रहा था... प्रतिक ने टहनियों में अटकी हुई उसकी डोर सुलझाई और उसको लेकर नीचे आ गया...," ले आया मैं.. अपना लॉकेट... अब इसको पहन लूँ क्या?"

तनवी हँसने लगी," इसको आप हमें भेंट कर चुके हो.. याद नही है क्या..?" तनवी ने कहा और लॉकेट को देखने लगी...

"तो क्या करूँ इसका ?" प्रतिक ने पूछा....

"हमें पहना दो.. और क्या करोगे....?" तनवी मुस्कुराती हुई बोली.. और फिर अचानक अपना हाथ उठा दिया....," हमें ले चलना यहाँ से.. कहीं यहाँ छोड़ कर भाग जाओ...!"

प्रतिक उसकी और देख कर प्यार से मुस्कुराया और किसी वरमाला की तरह उसके गले में लॉकेट पहना दिया.... लॉकेट पहनते ही पहले से ही उसके हाथ पकड़ कर खड़ी तनवी उसकी बाहहों में झूल गयी....

प्रतिक एक पल के लिए तो घबरा ही गया था... अचानक उसको तनवी की कही बात याद आ गयी.. प्रतिक ने उसको बाँहों में उठाया और वापस चल पड़ा....

तनवी को अपने कंधे पर उठाए जैसे ही प्रतिक धीरज और निहारिका को दिखाई दिया.. दोनों भय और आशंका के मारे उछल पड़े...," क्या हो गया?" दोनों के मुँह से एक साथ निकला....

प्रतिक के पास आने पर जब उन्होने उसको मुस्कुराता हुआ देखा तो दोनो की जान में जान आई...

"क्या हो गया भाई, भाभी जी को?" धीरज ने पूछा...

"कुछ नही.. ठीक है.. पर अब तक तो होश आ जाना चाहिए था..." प्रतिक ने कहा..," ज़रा बोलना इसको..."

"तनवी.. तनवी.. आए अक्षरा..." निहारिका ने उसके गालों को थपथपा कर देखा," क्या हो गया इसको?" निहारिका एक बार फिर घबरा गयी....

"कुछ नही.. हो जाएगी ठीक.." प्रतिक ने कहा.. पर अब उसको भी चिंता होने लगी थी," चलो.. जल्दी.. गाड़ी में चल कर देखेंगे..." प्रतिक उसको यूँही अपने कंधों पर डाले रहा.....

गाड़ी तक पहुँचते पहुँचते प्रतिक की साँस फूल गयी थी...," ज़रा अंदर की लाइट ऑन करना.. मैं इसको पिछे लिटाता हूं.." प्रतिक ने धीरज की तरफ चाबियाँ उछाल दी...

लॉक खुलते ही प्रतिक ने दरवाजा खोला और तनवी को अंदर लिटा दिया... चिंता में उसके चेहरे की ओर देखते हुए प्रतिक ने जैसे ही उसके गाल थपथपाए.. तनवी की हँसी छूट गयी और उसने बैठ कर अपना चेहरा छिपा लिया....

उसके हंसते ही सबके चेहरे खिल गये.. निहारिका भी दूसरी तरफ से दरवाजा खोल अंदर आ चुकी थी," तुम ठीक तो हो ना....!"

तनवी की रेशमी लटे प्रतिक से उसका चेहरा छुपाए हुए थी.. उसने शर्मकार निहारिका की तरफ देखा," हां.. ठीक हूँ.. मुझे क्या हुआ है....?"

"तुझे नही पता? तू बेहोश हो गयी थी... प्रतिक तुझे कंधे पर उठाकर यहाँ तक लाया है.. ४-५ किलोमीटर तो होगा ही..." निहारिका ने कहा....

"हां.. पता है..!" तनवी ने जवाब दिया...

"क्या पता है...?" निहारिका ने फिर पूछा....

तनवी उसके कान के पास अपने होठ लेकर गयी," यही कि ये मुझे इतनी दूर से उठाकर लाया है.. मुझे वहीं होश आ गया था.. " तनवी ने कहा और खिलखिला कर हंस पड़ी....

"हैं? पता था तो बोली क्यू नही? हम कितने डरे हुए थे.. तुझे पता है.. और प्रतिक बेचारा कितनी दूर से तुम्हे गोद में लेकर आया है... ये परेशान नही हुआ होगा क्या?" निहारिका ने राज बनाकर कान में कही गयी बात का खुल्लम खुल्ला ढिंढोरा पीट दिया... तनवी ने शर्मकार फिर से अपना मुँह छिपा लिया.. प्रतिक से!

"ले बेटा... अपने बड़े सही कहकर गये हैं.. आदमी शादी के बाद गधा बन जाता है.. हा हा हा.. तू तो पहले ही भाभी जी को ढोने लगा..." धीरज भला मिला हुआ मौका कैसे छोड़ता....

पर प्रतिक तो दूसरी ही दुनिया में खोया हुआ था... गाड़ी चलाते हुए वह सोच रहा था.. 'काश! गाड़ी थोड़ी और आगे खड़ी होती'

"तुम बोली क्यू नही पहले..? निहारिका ने बनावटी गुस्से से कहा और हँसने लगी...

"मुझे शर्म आ रही थी.. नीन्चे उतारने की कहते हुए..." तनवी ने ये बात भी उसके कान में कही....

"अब बताओ! क्या हुआ वहाँ?" धीरज ने पूछा...

"नही.. वो सब बाद में पूछेंगे.... गीता का घर आ गया है.. पहले उनके घर चलो..." निहारिका ने कहा.....

"पर इस वक़्त.. रात के १:३० बजे...?" धीरज ने कहा....

"हां हां.. क्या पता हमें कल ही वापस जाना पड़े.. तनवी के पापा आ रहे हैं ना...!" निहारिका ने कहा....

प्रतिक ने थोड़ी देर सोच कर गाड़ी गीता के घर के बाहर ही खड़ी कर दी... सब नीचे उतरे और दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये....

प्रतिक सबसे आगे था.. उसने दरवाजा खटखटाया.. पर कोई जवाब नही मिला....

२ - ४ बार और दरवाजा खटखटने पर अंदर से गीता के पिता जी की आवाज़ आई," आता हूँ भाई.. कौन है?"

प्रतिक के मुँह से आवाज़ निकल ही नही पाई...

"नमस्ते अंकल जी!" जैसे ही छर्ररर की आवाज़ के साथ दरवाजा खुला.. सबने प्रणाम किया...

"कौन?" गीता के पिता जी ने ध्यान से देखा तो वह प्रतिक को पहचान गया," अरे आओ आओ.. बेटा.. आज फिर इतनी रात को...? आओ.. अंदर आ जाओ..."

प्रतिक को कुछ कहते सुनते ही नही बन रहा था.. अब कहे भी तो क्या कहे.. इतनी पुरानी बात को फिर से ताज़ा करके वह गीता के पिता जी के ज़ख़्मों पर नमक छिडकना नही चाहता था....

"ये.. बच्चियाँ कौन हैं..?" उन्होने पूछा और अंदर जाकर कमरे का दरवाजा खटखटा कर बोला," गीता बेटी.. ज़रा उठना एक बार !!!!!!!!!!!!

"गीता!" सबके मुँह से अचानक एकसाथ निकला....

"हां.. मेरी बेटी है.. ये..." अंकल जी ने नाम याद करते हुए कहा," प्रतिक तो जानता है..." अंकल जी ने शायद ध्यान ने दिया कि सबसे पहले आश्चर्य से उसी के मुँह से नाम निकला

था.....

तभी दरवाजा खुला और बला की हसीन गीता अंगड़ाई सी लेते हुए बाहर निकली.. पर २ लड़कों को सामने खड़ा देख शर्मा गयी और अचानक अपने हाथ नीचे कर लिए.. उनमें से एक को वा अच्छी तरह जानती थी......

प्रतिक और धीरज को तो जैसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नही हुआ.... ," ययए.. यहाँ... कैसे आई....?"

गीता के साथ ही चौंक कर पिता जी ने भी धीरज को देखा..," सपना देख रहे हो क्या बेटा... रात को ये अपने घर पर नही तो कहाँ होगी... !" तुम अंदर बैठो.. मैं आता हूँ.. बेटा.. कुछ खाना वाना....?"

"जी बापू... अभी बना देती हूँ... " कहकर वो रसोई घर की ओर चल दी... निहारिका और तनवी भी हैरत से कुछ जाने को उत्सुक होकर उसके साथ ही चली गयी....

धीरज से अंदर बैठे ना रहा गया...," एक मिनिट अंकल जी... मैं अभी आता हूँ..." कहकर वो बाहर निकला और लड़कियों की आवाज़ सुनकर रसोई में ही घुस गया....

अब तक खिलखिला रही गीता धीरज को देखते ही एकदम चुप हो गयी... निहारिका और तनवी धीरज की ओर देखने लगी...

"एक मिनिट... तुम्हे छू कर देख लूँ क्या?" धीरज ने मरा सा मुँह बनाकर कह दिया....

गीता ने चौंक कर उसकी ओर देखा... वह उसकी बात का मतलब नही समझ पाई...

पर इतनी देर धीरज को शांति कहाँ होती... उसने उंगली से गीता के हाथ को छुआ और आश्चर्य से बोला..," तुम तो.. बतला....?" कहकर वो चुप हो गया...

"बतला? क्या कह रहा है ये?" गीता ने तनवी की ओर देख कर धीरे से पूछा....

"तुम जाओ.. हम बात कर लेंगे...!" निहारिका ने कहा और धीरज की ओर घूर कर देखा...

धीरज तो उसपर बतला से ही फिदा हो गया था...," तुम्हारी शादी हो चुकी है क्या?" उसने निहारिका की बात पर गौर नही किया....

गीता हंस पड़ी..,"क्या बोल रहे हो? मुझे कुछ नही पता...!"

"नही... मैं भी कुँवारा हूँ.. इसीलिए..." धीरज अपनी बात को पूरी कर भी नही पाया था कि निहारिका ने उसको धक्का देकर रसोई से बाहर निकाल दिया....

"ये मुझे हाथ लगाकर क्यू देख रहा था..?" गीता ने मुस्कुराते हुए पूछा....

"वो तो हमने भी लगाकर देखा था.. तुमने ध्यान नही दिया होगा..." निहारिका ने कहा," बहुत अजीब कहानी है .. तुम्हे विश्वास नही होगा....!"

"क्या? क्या हो गया?" गीता ने पूछा....

निहारिका को जितनी कहानी पता थी.. उसने गीता को सुना डाली... और फिर बोली," ज़रूर वो तुम्हारी कोई हमशकल होगी....."

निहारिका की आँखों से विपिन के साथ बिताई वो रात याद करके भर आई...," हां.. वो कमीना मुझे ज़बरदस्ती बतला ले जा रहा था, यही सब करवाने के लिए... और मजबूरी थी.. मुझे जाना भी था.. पर खुशकिस्मती से जाने कैसे वो मुझे नही ले गया.... उसने जहाँ मुझे बुलाया था.. वहाँ मैं १ घंटा इंतजार करके वापस आ गयी.... वो नही आया... मैं तो ३-४ दिन तक डरी डरी कॉलेज जाती रही.. कि कहीं वो हरामजादा फिर ना आ जाए....!" गीता ने अपने आँसू पौच्छे....

"तो.. तो फिर वो कौन थी...?" तनवी और निहारिका के मुँह आश्चर्य से खुले के खुले रह गये......

# ४७

"अंकल जी!" सुबह प्रतिक ने हिचकते हुए बात शुरू की....

"हां.. बेटा.. बोलो?"

"ववो... आप कह रहे थे मुझे... वो.. कि अगर गीता के लिए कोई अच्छा.. रिश्ता मिले तो बताऊं..." प्रतिक ने धीरज के ज़ोर डालने पर बात कह ही डाली....

"हां.. कोई हो तो ज़रूर बताओ बेटा.. अब तो गीता भी शादी करने को मान गयी है....

"मैं हूँ!" धीरज प्रतिक के सोच कर टुकूर टुकूर बोलने का इंतजार कर ही नही पाया...

"हम्म..." अंकल जी की समझ में नही आया कि अचानक दागे हुए इस गोले का जवाब कैसे दे..," मैं पूछ कर बताता हूँ बेटा......" कहा और बाहर चला गया...

अंकल जी के जाते ही प्रतिक ने खींच कर धीरज के कान के नीचे बजा डाला..," तुझे ये भी नही पता की कौनसी बात कब करते हैं.. मेरी भी इन्सल्ट करवा दी.. मैं बात कर रहा था ना....."

"अच्छा.. साले.. मतलब निकलते ही अपने आपको प्यार का पीएच.डी. मानने लग गया.. कल तक तो फट रही थी तेरी.... देख लेना.. वो जवाब हां में ही देगी......!" धीरज बत्तीसी निकाल कर बोला....

कुछ देर में गीता के पिता जी वापस आ गये...," बेटा.. हम ग़रीब लोग हैं.. लेने देने को तो कुछ खास होगा नही.. सिर्फ़ मेरी बेटी के अलावा...!"

"कैसी बात कर रहे हो पापा.. मेरा तो इसीमें जीवन धन्य हो जाएगा.... दहेज के तो मैं एकदम... बिल्कुल... पूरा खिलाफ हूँ.." धीरज चहक कर बोला.....

"ठीक है बेटा.. गीता को कोई ऐतराज नही है.. मैं तुम्हारे घर आ जाता हूँ रिश्ता लेकर.... वो मान तो जाएँगे ना..." अंकल जी ने पूछा...

"आप चिंता मत करो पापा.. उनको तो मैं आपके आने से पहले ही मना कर रखूँगा... कहो तो मैं ही आ जाऊ.. उनको लेकर..." धीरज भी धीरज था....

# ४८

"तुम्हे गाड़ी चलानी आती है क्या?" तनवी ने धीरज से पूछा...

"हां.. आपके शहर में ही सीखी है.. संकेत भाई से.... क्यू?" धीरज ने पूछा...

"तो तुम क्यू नही चलाते...." तनवी ने उसको कहा...

"ठीक है.. मैं चला लेता हूँ... नो प्राब्लम..." धीरज ने प्रतिक के हाथ से चाबी छीन ली....

"तुम्हे इसका पता नही है.. चलते हुए भी पिछे देखता रहेगा बात करते हुए.. कहीं भी घुसा देगा..." प्रतिक ने तनवी की तरफ देख कर कहा....

"तू चुपचाप बैठ जा.. भाभी जी ने क्या कहा है.. सुना नही क्या?" धीरज ने कहा और खिड़की खोल कर धम्म से ड्राइविंग सीट पर जा बैठा... बेचारा प्रतिक साथ वाली सीट पर बैठ गया... निहारिका और तनवी के बैठते ही वो गीता और अंकल जी को बाइ करके निकल लिए.....

कुछ ही दूर गये होंगे.. अचानक प्रतिक को अपनी शर्ट खींचती हुई महसूस हुई... उसने पिछे देखा.. तनवी उसकी शर्ट को पिछे खींच रही थी....

"हम्म..." प्रतिक ने प्यार से उसकी और देखते हुए पूछा....

तनवी ने उसको आँखों ही आँखों में कुछ इशारा किया..

"सॉरी मैं समझा नही..." प्रतिक ने जवाब दिया.....

तनवी के होठ धीरे से हीले.. पर वो बात भी प्रतिक के कानों के उपर से गुजर गयी....

"पता नही क्या कह रही हो.... ज़ोर से बोलो ना....!" प्रतिक ने थोड़ा तेज बोला.....

तनवी अंदर की बात को लीक होते देख गुस्सा हो गयी....," चुपचाप पिछे आ जाओ.. निहारिका बैठ जाएगी आगे...!"

तनवी की बात सुन सबके चेहरे पर मुस्कान खिल गई. प्रतिक चुपचाप पीछे वाली सीट पर बैठ गया और निहारिका आगे बैठ गई.तनवी और प्रतिक का यह हंसो का जोड़ा एक दूसरे के हाथ थामे अपने भविष्य के सपने देखते हुए नींद के आगोश में चले गए. मानो दोनों का सदियों का इंतजार आज खत्म हो गया था. मानो प्यासी हंसिनी की प्रेम की तृष्णा शांत हो गई हो. निहारिका भी कब नींद के आगोश में चली गई उसका पता भी धीरज को नहीं चला.वो अपनी ही मस्ती में गाड़ी चला रहा है.आज उसे भी तो अपना प्यार मिला है.यह सुबह मानो इन सबके लिए एक नई जिंदगी लेकर आयी है. और सुबह का उगता सूरज मानो इन लोगों की इस नई जिंदगी में रोशनी भरने का काम कर रहा है.

******* समाप्त *******